शशि प्रकाशन

स्वतंत्रचेता

अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व



संपादक
आशीष अनचिन्हार

स्वतंत्रचेता अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व
संपादक
आशीष अनचिन्हार
शशि प्रकाशन

स्वतंत्रचेता अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व

संपादक
आशीष अनचिन्हार

शशि प्रकाशन



शशि प्रकाशन

स्वतंत्रचेता

अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व



संपादक

आशीष अनचिन्हार

अरविन्द ठाकुर अपन भौतिक व्यक्तित्व मे जतेक दिव्य छथि, ततबे दिव्य अछि हुनक भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभा। जेहने दिव्यता कविता, कथा, गजल मे, तेहने स्तंभ लेखन आ सम्पादकीय अग्रलेख मे। इएह दिव्यता हुनक सामाजिक सरोकार मे सेहो सदैव उपस्थित। विविध विधा मे हुनक लेखन पाठक कें चमत्कृत करैत अछि आ ई निर्णय करब कठिन भऽ जाइत अछि जे हुनक दिव्यताक श्रेष्ठतम कोन विधा मे छै। विविधता सँ भरल हुनक जीवन-कर्म हुनक रचना-संसार कें एहन अभिनव भाव-भूमि प्रदान कएलक अछि, जे मैथिलीक लेल अखन धरि अज्ञात आ अबूझ रहल अछि।

अरविन्द ठाकुर व्यवस्थाक प्रति चिर-असंतोषी आ शाश्वत विद्रोही मानसिकताबला एक्टिविस्ट रचनाकार छथि। एकरा अहि तरहें सेहो कहल जा सकैत अछि जे व्यवस्थाक विरोध आ सुन्दरम् केर खोज लेल संघर्षरत हुनक व्यक्तित्वक एकटा महत्त्वपूर्ण हथियार साहित्य सेहो अछि। हुनक जीवन-वृत (द्रष्टव्य – 'अन्हारक विरोध मे' संग्रहक अंत मे उद्धृत) मे वर्तमानक प्रति तीव्र असन्तोष, अकुलाहटि, छटपटाहटि आ बेहतर भविष्यक लेल एकटा अनुसंधानात्मक विश्लेषणात्मक आ क्रियात्मक गतिशीलताक उपस्थिति साफ-साफ देखाइत अछि। राजनीतिक, साहित्यिक, सांगठनिक आ अन्य कोनो सामाजिक-जीवनक गतिविधि मे हिनकर संलिप्तता आ निर्लिप्तता दुनू विशेष गौर करऽ जोगर अछि। सत-रज-तम तीनू गुणक जेहन अद्भुत समन्वय हिनकर अपन जीवन मे छनि, से प्राय: ओहने समन्वयक संग हिनकर रचनासभ मे सेहो देखल जा सकैत अछि–जीवन आ रचना मे कोनोटा विरोधाभास नहि। जीवनक जाहि क्षेत्रसभ कें हुनकर सक्रियताक सानिध्य भेटल अछि ओतय अरविन्द ठाकुरक रचनाधर्मिता प्रचुर दिप्तीक संग प्रकट भेल अछि। ओ विश्वकर्माक तल्लीनता आ कर्तव्यबोध सँ एक-एक वस्तु कें यत्नपूर्वक रचै छथि, मुग्ध होइ छथि, रचैत जाइ छथि, मुग्ध होइत जाइ छथि।

वैचारिक धरातल पर अरविन्द ठाकुर सुच्चा प्रगतिशील आ परम स्वतंत्रचेता छथि। ओ अपन विशाल अध्ययन सँ छानि-छानि कऽ ओतबे वस्तु लए छथि, जे हुनका जनहिताय आ परिवर्तनकामी लगए छनि। हुनक उद्देश्य अपन प्रशंसक बनाएब, ओकरा विमुग्ध कऽ ओकरा सँ थपड़ी आ जयकारा लेब नहि छनि। ओ जन-समाजक रुचि परिष्कृत करऽ लेल कोनो भौतिक वा

शेष अगिला फ्लैप पर...

साहित्यिक रचना करऽ मे विश्वास रखए छथि आ ताहि लेल ओ दोसर पक्ष केँ कुपित करबाक हद धरि जा सकै छथि। हुनक निर्भीक स्पष्टवादिताक साक्षी हुनक प्रत्येक कार्य-परिसर रहल अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे ई कहल जा सकैत अछि जे अरविन्द ठाकुर अपन सम्पूर्णता मे कोनो कविक पद्य जकाँ लालित्यपूर्ण नहि, कोनो गद्यकारक गद्य जकाँ यथार्थवादिताक प्रतिरूप छथि।

अरविन्द ठाकुर लेखन-कर्म केँ सऽख वा प्रसिद्धि लेल नहि, परिवर्तनकामी अभियान मानिकऽ अपनैने छथि। अपन लेखनक माध्यम सँ ओ लोकप्रियता नहि, सार्थकताक पैरोकारी करै छथि। 'मिथिला आवाज'क प्रत्येक सम्पादकीय अग्रलेख एहि बातक प्रमाण अछि। सदैव किछु नव, किछु विशेष करबा लेल आतुर अरविन्द ठाकुर लीक वा डिडिर पीटैक सख्त विरोधी छथि, भनहि ओ स्वयं हुनकर अपनहि बनाएल वा खींचल किऐ ने होअए। तेँ एकटा रचनाकारक रूप मे ओ मैथिली साहित्य मे अनन्य (Exclusive) छथि–प्रतिद्वंद्वीविहीन। हुनक प्रतिद्वंद्विता वा स्पर्द्धा आन केकरो सँ नहि, स्वयं अपनहि सँ छनि। हुनक तुलना आन केकरो सँ नहि, स्वयं हुनके सँ भऽ सकै छनि।

सम्पादकक रूप मे प्रबन्धनक समक्ष हुनक चट्टानी दृढ़ताक साक्षी भऽ हम गौरवान्वित भेल छी, हुनक मानवीय उच्चताक स्नेह-छायाक सौभाग्य पाबि भाव- विभोर भेल छी, त कलुषता सँ दहाबोर भेल एहि विकराल-काल मे हुनक निष्कलुषता आ प्रेमिल-भावक अक्षुण्णता देखि चकित-विस्मित सेहो भेल छी। एहन अपन ज्येष्ठ 'अरविन्द सर' लेल अनन्त शुभकामना।

–कुमार शैलेन्द्र
14 फरवरी, 2013

आशीष अनचिन्हार



मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) 'अनचिन्हार आखर' http://anchinharakharkolkata.blogspot.com केर संस्थापक ओ संपादक। विशेष परिचय जनबाक लेल विकीपीडिया केर लिंकपर जा सकैत छी- https://mai.wikipedia.org/s/zi

ई-मेल : ashish.anchinhar@gmail.com



शशि प्रकाशन
गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ,
वाया-बलुआ बाजार,
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)

मूल्य : ₹ 400/-



स्वतंत्रचेता

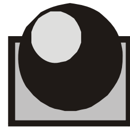
अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व

स्वतंत्रचेता

अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व

संपादक

आशीष अनचिन्हार



शशि प्रकाशन

ISBN : 978-81-948818-0-3

स्वतंत्रचेता (अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व)

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2020

मूल्य : 400.00 टाका

प्रकाशक

शशि प्रकाशन

गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ, वाया-बलुआ बाजार

जिला-सुपौल-854339 (बिहार)

फ़ोन : 9015323779 / 9818443451

ई-मेल : shashi.prakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : दीपक दिनकर

टाइपसेटिंग : बुलबुल मिश्रा

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

SWATANTRACHETA ARVIND THAKUR VYAKTITWA-KRITITWA

(Criticism) Edited by Ashish Anchinhar

Published by Shashi Prakashan

Village-Kalikapur, Post-Lakshminia, Via-Balua Bazar, District-Supaul-854339 (Bihar)

Price : ₹ 400.00

अनुक्रम

संस्मरण

आत्मकथ्य

संक्षिप्त जीवन-वृत

प्रस्तुत पोथीक संदर्भमे...

विदेह पत्रिका केर अंक 189 (1 नवम्बर 2015) अरविन्द ठाकुर विशेषांक छल। प्रस्तुत पोथी ओकरे संशोधित रूप अछि। संशोधन माने किछु रचना यथा अरविन्दजीक अपन मौलिक रचना बला खंड हटाएल गेल अछि तँ किछु ओहन आलोचना-संस्मरण सभकेँ जोड़ल गेल अछि जे कि विशेषांक प्रकाशित भेलाक बाद लिखेलै। जोड़ल रचनामे एक-दू एहन अछि जे कि मूलत: विदेहक विशेषांक लेल लिखेलै मुदा एलै विशेषांक प्रकाशित भेलाक बाद आ तकर बाद लेखक ओकर उपयोग आन पत्रिकामे केलाह। निश्चित तौरपर ई संशोधन प्रस्तुत पोथीक सौंदर्य ओ बलमे वृद्धि केलक अछि।

लेखक रूपमे अरविन्दजीक बहुत रूप छनि। कथा, कविता, गजल, संपादनक अतिरिक्त अरविन्दजी आलोचक ओ चिंतकक रूप सेहो धेने छथि। मैथिलीमे हिनकर एहि रूपपर बहुत कम चर्चा भेल अछि। जँ हम अरविन्दजीक विभिन्न रूपकेँ क्रमबद्ध करी तँ सभसँ पहिने आलोचना-चिंतन, कथा, कविता आ तकर बाद हम गजल देब। एहि पोथीक आलोचना खंड एही रूपमे सजाएल गेल अछि मुदा दुखद जे अरविन्दजीक आलोचक-चिंतक रूप ने विशेषांक समयमे आलेख आएल आ ने एखन अछि। तँइ आलोचना खंड कथासँ शुरू केलहुँ हम। हमरा आशा अछि जे कियो अरविन्दजीक एहि बिसरल मुदा सभसँ प्रभावी रूपपर जल्दिये काज करताह। विशेषांकमे आएल हुनकर साक्षात्कारकेँ यथावत रहए देल गेल अछि। अंतमे हुनकापर केंद्रित किछु संस्मरण सेहो अछि। मने पहिने आलोचना तकर बाद साक्षात्कार एवं अंतमे संस्मरण साथमे आत्मकथ्य आ संक्षिप्त जीवन-वृत।

विदेह मूलत: शब्दमे विभक्ति सटा कऽ लिखैत अछि मुदा ओहिमे छपए बला लेखक लेल स्वतंत्रता छै जे ओ कोन रूपमे लिखै छथि तइँ एहि पोथीमे वर्तनी विभिन्न रूपमे भेटत। हमर भूमिका वा आनो रचनामे विभक्ति सटल भेटत मुदा अलग-अलग

प्रकाशन अपन शैली आनै छथि। खराप ओहो नै छै। ओना हम मानैत छी जे विभक्ति सटल रहने सुंदरता बढ़ैत छै।

हम चाहितहुँ तँ एहि पोथीक नाम 'अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' सेहो राखि सकै छलहुँ मुदा हमर सोचब अछि जे एखन अरविन्दजी क्रियाशील छथि आ हुनकर रचना संसारमे जतेक श्रेष्ठ लेखन छै ताहिमे ओ बेसीसँ बेसी जोड़ताह। पता नै कोन रूप केखन हमरा सभहक सामने आबि जाए तँइ हम एहन नामसँ परहेज केलहुँ अछि आ एकरा उपशीर्षक बनाओल अछि। संग्रहक रचना सभहक पाठोपरांत हमरा मनमे अरविन्द ठाकुरक जे छवि बनल, ताहि लेल संज्ञा अभरल—स्वतंत्रचेता। आ यैह भेल संग्रहक शीर्षक।

कोनो लेखक केर जतेक सामग्री उपलब्ध रहैत छै ताहिपर समग्र रूपसँ काज करब कठिन नै होइत छै मुदा मैथिलीमे एहन नै भऽ पबैत छै तकर बहुत कारण छै। निश्चित तौरपर एहि पोथीमे अरविन्दजीक अधिकांश रूपक दर्शन पाठककेँ हेतनि। मुदा एहि दर्शनकेँ पहिल प्रारूप मानल जाए। साहित्यमे समय-समयपर एकै रचना एकै पोथी, एकै व्यक्तित्वपर विभिन्न दृष्टिकोण अबैत रहैत छै तँइ एहि पोथीमे आएल सभ सहमति-असहमतिकेँ हम पहिल पाठ मानि रहल छी। जँ जीवन रहलै तँ हमरा लोकनि दोसर-तेसर पाठ केर आयोजन सेहो करब। प्रकाशन संबंधी गलती जेना मुद्रण वा वर्तनीक शैली भेटब अस्वाभाविक नै। पाठकसँ आग्रह जे ओ सूचित करथि। यथासमय परिमार्जन हेतै।

—आशीष अनचिन्हार

आलोचना

(एहिमे 14 टा एहन आलेख अछि
जाहिसँ अरविन्द ठाकुरजीक रचनापर
किछु ने किछु प्रकाश पड़िते टा अछि)

अन्हारक विरोध मे : अरविन्द ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

अरविन्द ठाकुर—अन्हारक विरोध मे—क समर्पण काल-अपन कुलदेवी काली बन्नीक स्मरण करै छथि।

गोरैया बहिन बन्दी (बन्नी) क पूजा केने रहथि, बन्नी वाकदेवी छथि, सुवर्णमय छथि, पुरुषोचित खड़ाम पहिरै छथि, छड़ी राखै छथि (खड़ाम आ छड़ी दुनू सोनाक)। हिनकर जनम रविकेँ भेल छलनि, तँ छठिहारी शुक्रकेँ भेलन्हि। ओ काली जकाँ कखनो काल रक्त स्नान सेहो करै छथि तँ हुनका काली बन्नी सेहो कहल जाइ छन्हि।

अरविन्द ठाकुर ऐ लघुकथा संग्रहक आरम्भमे जाँ जेने [Jean Genet (1910-1986)] आ अंतोन चेखव [Anton Chekhov (1860-1904)] क एक-एकटा उद्धरण रखै छथि। जाँ जेने एकटा वैश्याक पुत्र रहथि, एक सालक जखन ओ रहथि तँ एकटा काष्ठकार परिवार हुनका गोद लऽ लेलकन्हि। शुरूमे ओ घरसँ भागि गेल करथि आ छोट-मोट चोरि करथि, फेर ओ लिखनाइ शुरू केलन्हि आ निबन्ध, कविता, उपन्यास, नाटक आदि लिखलन्हि। ओ अपन उपन्यासमे समलैंगिक सम्बन्धक संग, कुरूपतामे सौन्दर्य, अपराधीक चरित्रगत विशेषताक चर्च करै छथि, संगे ओ अपन नाटकमे सभ तरहक बहिष्कृत वर्ग आ ओकर शोषकक विश्लेषण करै छथि। जाँ जेनेक रचनाक जाँ पौल सार्त्र अस्तित्ववादी समीक्षा आ जेक्स देरीदा विखण्डनात्मक विधिसँ समीक्षा केलन्हि।

अंतोन चेखवक लेखनी हुनका मरलाक बाद अभूतपूर्व रूपमे प्रसिद्ध भेल, तकर ओ जिबैत जी अनुमान नै लगा सकला। हुनका लागै छलन्हि जे हुनकर रचना हुनका मरलाक एकाध बर्खे धरि पढ़ल जाएत।

जाँ जेनेक अरविन्द ठाकुर द्वारा उद्धृत कथन—'हम अपन भाषामे एतेक विविध रूपाकारक सृजन ऐ लेल कऽ सकलौं जे हमरा अपन भाषासँ घृणा छल।'—एकटा

यायावरक उक्ति अछि। हुनकर अपराधक क्षमा याचना, जे फ्रेंच राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत भेल, पाब्लो पिकासो आ सार्त्र सहित बहुत गोटे द्वारा देल गेल छल। जाँ जेने अपन आत्म चरित्रमे अपन नेनपनक दुखद स्थितिक चर्च करै छथि, मुदा ई ओ अपन अपराधी चरित्रक रक्षार्थ करै छथि, ओ रक्षात्मक ढाल हुनकर ऐ कथनमे सेहो अबै छन्हि। अत्यधिक घृणा प्रेमक दोसर रूप तँ नै अछि जे धैन सन सँ विपरीत अछि, आ अरविन्द ठाकुर अन्हारक विरोध मे क विरोध ओइ अतिशय घृणा जे प्रेमक दोसर रूप अछि आ धैन सन सँ विपरीत अछि, क प्रतीक तँ नै अछि!-से आगाँ देखब।

अंतोन चेखवक अरविन्द ठाकुर द्वारा उद्धृत कथन—

'हमरा ओइ सगर लोकसभसँ बेसी भय लगैत अछि जे हमर कथा सभकेँ लोकप्रिय आ प्रचलित मान्यताक कसबट्टीपर परखबाक प्रयास करै छथि वा ओइमे कोनो प्रकारक सैद्धान्तिकता खोजबाक प्रयास करै छथि।

ने तँ हम रुढ़िवादी छी, ने उदारवादी आ ने विकासवादी। हम कोनो पादरी, उपदेशक वा निरपेक्ष व्यक्ति हेबाक स्वांग सेहो नै भरि सकै छी। हम एकटा स्वतंत्र लेखक छी आ स्वतंत्र लेखक बनल रहब टा हमर अभिलाषा अछि। हमरा लेल मनुष्यक देह, ओकर बुद्धि, ओकर ज्ञान, ओकर आशा-निराशा, ओकर प्रेम, सभ किछु पवित्र अछि मुदा ऐ सभसँ बेशी आदरणीय अछि ओकर स्वतंत्रता, जे झूठ, अहंकार, ढोंग आ क्रूरतासँ मुक्त अछि।'—आ तँ ओ अपन भाए द्वारा अपन पत्नी संग कएल क्रूरताक विरोध करै छथि कारण से हुनका अपन पिता द्वारा (जे एकटा किरानाक दोकान चलबै छला) अपन माता (जे भरि रूस घूमि कऽ कपड़ा बेचैबला व्यापारीक पुत्री छली आ बड़का खिस्सा कहबैका छली) पर कएल क्रूरताक स्मरण करबै छल। से अरविन्द ठाकुर अपन लघुकथा सभकेँ लोकप्रिय आ प्रचलित मान्यताक कसबट्टीपर नै कसल जेबाक पक्षमे छथि।

जाँ जेने आ अंतोन चेखव ऐ तरहेँ परस्पर विरोधी मान्यताक अनुगामी छथि!

आ अरविन्द ठाकुर ऐ दुनू प्रतिगामी मान्यताक अनुगामी बनि लघुकथा रचै छथि।

खिस्सा सियार यार क समर्थक, विरोधी आ मनबढ़ू शब्दावली लोकतांत्रिक राजनीतिक यथार्थक विवरण दैत अछि, एक्के व्यक्ति कोना क्रमसँ पूजित, घृणित आ हास्यरसिक भऽ जाइ छथि। प्लेटो लिखने छथि जे पढ़ल लिखल लोक राजनीतिसँ दूर रहै छथि, एकर सजा हुनका यएह छन्हि जे ओ मूर्ख द्वारा शासित होथि। नीक, अधलाक बीच रामसोगारथ मण्डलक आदर्श अडिग अछि।

पियासल पानि: नारायणपुरवाली क्षणिक आवेशमे सूत्रधारक चुम्बन करै छथि। कथामे ट्विस्ट छै, लगैए ओकरे दोख छै, ओकर पति लखनाक नै। ओकरा बच्चा नै होइ छै, भगतैक बाद ओ भागि जाइ छै। मुदा लखनाक दोसर बियाह ओकर बाप रामचरण करा दै छै, ओकरा होनिहारी छै, लखना बाहर गेल छै, घुरतै तँ बताह भऽ जेतै। मुदा घुरलै तँ ओ सत्ते बताह भऽ गेलै, ओ कहै छै जे ओकर ई बच्चा नै छिऐ। तँ नारायणपुरवाली सूत्रधार आ रामचरन दुनूकेँ आब बुझेलै जे ओ बेकसूर छलै। भाव, प्रेम आ चरित्रक मान्य शब्दावलीकेँ तोड़ैत अछि ई कथा। चारित्रिक अवधारणा कखनो काल सापेक्ष भऽ जाइ छै, खास कऽ तखन जखन चरित्र महिलाक हुअए।

अन्हारक विरोध मे : टाइटल कथा। अलीमुद्दीन अपन टोलमे अपन हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर लज्जित अछि, हबोढकार भऽ कानऽ लगैत अछि। शाहबाज हुसैन, जे सुपौलसँ छथि आ आइ काल्हि भागलपुरसँ सांसद छथि, क एकटा भाषण सुनने रही, ओ कहैत रहथि जे सुपौले एकटा एहेन शहर अछि जतऽ गाइ केर वध नै कएल जाइ छै कारण मुस्लिम समुदाय ओतऽ कहियो कसाइखाना नै खुलऽ देलकै। अरविन्द ठाकुरक ई लघुकथा पढ़ि अनायास ओ गप मोन पड़ि गेल जे ऐ लघुकथाक सफलता सिद्ध करैए।

ढाँचा-1992-पत्र-शैलीमे लिखल ई लघुकथा। अग्निपुष्पक पत्रिकामे गुजरात दंगापर लिखबापर वर्माजीकेँ कबिलपुरक (जे आब साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य छथि) जातिवादी लेखकक गारियुक्त पत्र प्राप्त भेलन्हि, ऐ वातावरणमे अरविन्द ठाकुर, समधानि कऽ, ई लघुकथा लिखने छथि। ढेर रास एम्हर-ओम्हरक गपक बाद क्लाइमेक्समे ढाँचा-1992 खसबाक खबरि टी.वी.सँ बहराइत अछि।

मूस: मूस मारबाक दवाइ भरि महाराष्ट्रमे अहाँकेँ नै भेटत, जखन प्लेग आएल रहै तहियो नै भेटैत रहै। ओतऽ गणपति बप्पाक ई वाहन पूजनीय अछि। मुदा ऐ कथाक 'ओ' महाराष्ट्रमे नै रहैए। आइ साँझमे ओ मूस मारबाक दवाइ आनत। मूसक बहन्ने मनोविश्लेषण करैत ई कथा आगाँ बढ़ैए।

प्रजातंत्र परिकथा : एकटा हत्या भेलै। ई छपलै। ओ डॉक्टर छलै, ओकर हत्या भेलै, ओ डॉक्टर बड्ड मामूली फीस लै छलै, गरीबक डॉक्टर नामसँ ओ ख्यात छलै, से किए नै छपलै ? ओइ पत्रकारक असली रूप बुझल छै कमलकेँ। फणीश्वर नाथ रेणुक परती परिकथा क तर्जपर प्रजातंत्र परिकथा बहुत रास प्रजातांत्रिक (!!) कथाक कथा सोझाँ अनैए। ई ऐ संग्रहक सभसँ पैघ लघुकथा अछि, जइमे कोनो घटनाक

राजनैतिक लाभ उठेबाक मानसिकताक सूक्ष्म विवरण भेल अछि। तइयो बात खतम नै भेलै, शुरुहो नै भेलै।

अथ गिरगिट कथा : गिरगिट रङ बदलबा लेल ख्यात अछि, मुदा जखन मनुक्ख रङ बदलैए तँ गिरगिटो लजा जाइए। पोद्दारजी आ जयसवाल जीक गैंग वार कोना एक दोसराक कम्यूनिटीक वोट बैंक राजनीति बनि गेल, तकर कथा अछि ई, एक गोटे चेयरमैन आ दोसर वाइस चेयरमैन बनि गेला आ नग्रमे पूर्ण शान्ति अछि। कारण अशान्ति हिनके दुनुक कारण छल!!

अय्यासी : सूत्रधार 'ओ' छथि, ओ घर घुरला, पत्रिका, सिकरेटमे पाइ खर्च केलन्हि मुदा घरक लेल तरकारी आ बेटाक किताब कॉपी नै कीनि सकला। अय्यासीक अनुभव आ परिभाषा ताकि रहल अछि ई कथा।

बैकबा-फोड़बा : बैकवर्ड आ फॉर्वर्डक राजनीतिक कथा अछि ई। जखन एकटा बभना उधारी ओसूलीले जाइए तँ से स्वार्थवश बैकवर्ड आ फॉर्वर्डक राजनीति बनि जाइए। मूल समाचार, घटना आ झलकी (दृश्य एक-चारि) मे बँटल ई लघुकथा मैथिली लघुकथाक शिल्प आ कथाक संघर्ष सेहो देखबैत अछि। झलकी दृश्य चारिमे बाल नाटकक बहन्ने कथाकार पूर्ण घटनाक दऽ दै छथि, ई बच्चा सभक बैकबा-फोड़बा खेला बनि गेल अछि।

विष-पान : कचहरीक विवरण आ न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रियाक विश्लेषण अछि ई कथा। तारीख, मेडिकल एक्स-रे गाएब हएब, मोकदमाक सुनबाइ, दोसर कोर्टमे केसक ट्रांसफर आ सभ किछु।

अन्हारक विरोध मे लघु कथा संग्रह अपन विषय-वस्तु, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आ शिल्पगत प्रयोग लेल मोन राखल जाएत। चाहे ई खिस्सा सियार यारक तीन तरहक शब्दावली हुअए बा बैकबा-फोड़बाक तीन भागमे कथाकेँ बाँटब आ तेसर भागकेँ चारि भागमे बाँटब, आ चारिम भागकेँ लोक सभटा बुझैए, ऐ तरहेँ बुझेबाले बाल नाटक-खेलामे परिवर्तित करब। चाहे ई ढाँचा-1992 क पत्रात्मक शैली हुअए बा मूसक मनोविश्लेषणात्मक पद्धति। आकि प्रजातंत्र परिकथाक एकटा न्यूजपेपर रिपोर्ट आधारित कथा। शिल्प आ कथ्यक मेलक ई प्रयोग, नव विषय-वस्तु आन लघुकथा लेखककेँ सेहो प्रयोग करबाक चाही।

अरविन्द ठाकुर (1954-) एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिलीमे लघुकथा लिखै छथि। अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष छन्हि राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा सभ। मैथिली कथाक जड़ता कम होइत अछि। सामाजिक-

राजनैतिक-आर्थिक कथा तत्वकेँ जोड़ि कऽ लिखल ई मैथिली लघुकथा सभ ढेर रास रिक्तताक पूर्ति करैत अछि। समाज-राजनीति, ब्यूरोक्रेसी-जूडिसियरी सभक साङोपाङ विवेचन भेल अछि।

खिस्सा सियार-यार-रामनारायण महराज-एक्स एम.एल.ए. आ भूतपूर्व चेयरमैन सरकारी प्रकाशन कमिटी, तहिया कोनो घोटालामे मुख्यमंत्रीक भाइ रामाधार पांडे, एम.एल.ए. हिनका बचेने रहथिन्ह। गरीबदास आजाद जिला कमिटीक महामंत्री, अनेक बर्ख धरि सोशलिस्ट आ आब महासभा पार्टीमे, बेटा सेहो ट्रेनमे डकैती धरि करऽ लागल छन्हि। शालिगराम राय आ लखन यादव-मनबढ़ू सभ। मीटिंग। राजनाथ झा आ जीबछ मंडलक मुँहे राजनीतिपर किछु पैराग्राफ अबैत अछि। सदानन्द विद्रोही महासभापार्टीक विरोधी दलक स्वयंभू नेता तोफान सिंहक शागिर्द आ हुनका संग एकटा बम विस्फोटमे दहिना हाथ गमेने एकटा जुआन। हुनकर अफसोच करब, रघुबंश मंडलक जिला कमिटीक भाइस प्रेसिडेन्ट बनबामे पांडेजीक दाँव-बैकवार्डकेँ जगह भेटबाक चाही, आ चौधरीजीक प्रतिष्ठाकेँ देखि हुनकर चुप भऽ जाएब! राजमंगल श्रीवास्तव आ सतीश सिंह परमार (छत्तीस बाबू छत्री-मनबढ़ू शब्दावली)। एकावन गोट मेम्बरबला संस्था धेला कमिटीक सर्वेसर्वा परमारजी। श्रीवास्तव आ परमारक जोड़ी कुख्यात-अलग-अलग रहलापर दुनू गोटे एक दोसराकेँ गारि पढ़ै छथि मुदा रहै छथि संगे। पूर्व प्रखण्ड अध्यक्ष शनिचर 'शनि' गाजा आदिक अनवरत सेवी आ वर्तमान युवा अध्यक्ष गणेश गुरमैता पेटीशनबाज। चटर्जी दा-पटनासँ फोनपर रहै छथि-चौधरीजी आ पांडेजीक विरोधमे चौबेजीक संगे फ्रंटक नियार छन्हि। शनि-गुरमैताकेँ परमार गपमे ओझरा लै छन्हि तँ क्यो गोटे दुनू गोटेकेँ फुसियाहीं कऽ सोर करै छन्हि आ त्राण दियाबै छन्हि। जटाशंकर मलिक प्रसिद्ध माखन बाबू (सभ नट वोल्टपर फिट हुअएबला सलाइ-रिंच-मनबढ़ू शब्दावली)। अपनापर ध्यान आकर्षित करबा लेल पारसमणि चौधरीकेँ सोर करै छथि आ हुनकर प्रणामक उत्तर तीन प्रणामसँ दै छथि। हुनकर कार बेटा बौका बाबू (सम्प्रदायवादी पार्टीक मेम्बर) लऽ गेल छन्हि आ जीप खराप छन्हि, दुसधटोली बलाक पंचैती करबाक छलन्हि से रिक्शा मँगबाबऽ पड़लन्हि। च्यवनप्राश खाइते रहै छथि-राघोपुरसँ होमियोपैथिक इलाज करेने छथि। सीता बाबू महासभा पार्टीक प्रखण्ड अध्यक्ष (माखन बाबूक बहु-मनबढ़ू शब्दावली)। सुबोधनारायण सिंह प्रसिद्ध सुबोधजी। एक्स. एम.एल.ए. आ एक्स अध्यक्ष जिला महासभा पार्टी (समर्थक शब्दावली-जिलाक गाँधी, विरोधी शब्दावली-नटवरलाल आ मनबढ़ू शब्दावली-मुँहदुबरा)। सादगी रहन-सहन, विनम्र। रामाधार पांडेजीक

भाए मुख्यमंत्री शिवाधार पांडेक प्रति समर्पित। मुदा चौधरीजीसँ बेसी सटबाक सजा शिवाधारजी हिनका पार्टीक उम्मीदबारी वापस लेबा लेल कहि कऽ देलखिन्ह। राजीव शर्मा–गलतफहमीक शिकार–जे छल–प्रपंच, फूसि आ विश्वासघातक बिना सेहो राजनीति कएल जा सकैत अछि। ठाँइ–पठाँइ बजै छथि आ से मनबढ़ू सभ कटाह कहै छन्हि। सुबोधजीक कहलापर जे शिवाधार बाबूक फोन एलन्हि तँ हुनका नाम आपिस करऽ पड़लन्हि, ओ कहै छथि जे ऐ लुच्चा–लफंगा सभक सरदरबाक गोल्हड़ी झाड़ि देबनि हमरा सभ। ओतै रामसोगारथ मंडल सेहो छथि, स्वतंत्रता सेनानी मुदा सम्मान–पेंशन अस्वीकार कऽ चुकल छथि। कियो कहै छन्हि तँ कहै छथिन्ह जे जाउ बाउ जाउ, ई गप सुन्नर ठाकुरकेँ सिखेबन्हि जे मुनिस्टर सभक केश–दाढ़ी बनबैत सुराजी पेंशन हथिआ नेने–ए। आ तखने अनघोल, फेर बाजी मारि लेलन्हि चमोक्कनि! आ माखन बाबू बड़का गाड़ीसँ उतरैत रामाधार पांडेक गरामे माला पहिरा दै छथि। फेर एकाएकी माला पहिरेबाक चलन आ फेर एकाएकी भाषण–भाख। आ ओम्हर रामसोगारथ मंडलक सपनामे कारी–कारी भयावह आकृति सोनहुला सपनाकेँ चारू कातसँ घेरि लै छन्हि।

पियासल पानि–रामचरनक खेती करब, आब हरबाही मुदा ओकर बेटा लखनाक माथपर छै आ तखने ओकर गौना होइ छै आ अबैए नारायणपुरवाली। लेखक वा कथाक सूत्रधार कनियाँक मुँहदेखाइ लेल जाइ छथि आ देखै छथि ओकर अपार रूप–राशि। लखनाक काकी बेरियाबाली ठट्ठा करै छन्हि आ ओ बहार भऽ जाइ छथि। नारायणपुरबाली एक दिन सूत्रधारक पएर जाँतऽ लगै छथि। रोपनी, डोभनी, कटनी आ कमौनी, कोनो काजमे नारायणपुरवालीक जोड़ नै। एक दिन अन्हरगरे सूत्रधार खेतमे कटनी करबऽ बिदा होइ छथि तँ आमक कलम लग नारायणपुरवालीक आतुर ठोर हुनकर गाल, माथ आ कंठपर निशान छोड़ि दै छन्हि। मुदा तखने घरैया नोकर सरजुगबाक अबाज अन्हारसँ अबै अछि आ बज्जर खसाबथुन भगवान ऐ दुसमनमापर–कहैत निराशा, लालसा आ घृणासँ कुंडाबोर नारायणपुरबाली आगाँ बढ़ि जाइ छथि। ओम्हर नारायणपुरवालीपर डाकनी सवार छै से घोल होइए, देहपरक कपड़ा–बस्तर ओ फेकि लैए। मोतिया दुसाध दारू पिबैए, बरहम बाबाक परसादी आ फेर भगता बनि सात टा काँच करची नारायणपुरवालीक देहपर तोड़ि दैत अछि। आ डाकनीकेँ हरदुआरक श्मशान पीपर गाछपर भगा दैत अछि! भागि जाइए नारायणपुरवाली। दोसर बेर लखनाक बियाह होइ छै मुदा ऐबेर सूत्रधार एगारह गो टका अनका दिया पठा दै छथि। कनियाँक होनहारिक खबरि सुनि रामचरन प्रसन्न भेल मुदा लखना अपन

कपार फोड़ि लैत अछि, कारण ओ नामरद अछि। नारायणपुरवाली... लछमी छलै, बेकसूर, बेचारी, अभागलि।

अन्हारक विरोधमे–हो हल्ला। कथाकार वा सूत्रधार बहराइ छथि आ पहुँचै छथि अलाउद्दीन लग। कहै छन्हि अलाउद्दीन, मुसलमान कुजड़ा। जनारदन चौधरी ओकर यार। ओकरे टोलमे बिकुआ ओकर ऐ यारक भाइकेँ गारि पढ़लकै। ओकर बेहुदपनीक शिकाइत लऽ कऽ जनारदनक भाइक आएब, भैया कहि सोर पारब, मुदा तखने बिकुआक मारब आ तखने ओकर घरक मौगी सभक ओकरा गारि पढ़ब शुरू भेलै। आ उनटे हिन्दू–मुसलमानक शगूफा सेहो छोड़ै रहै। कोन इज्जति रहि गेलै ऐ टोलक। आकि तखने, चारू दिस अपन डराओन छाँह पसारने अन्हारक छातीकेँ चीरैत बिजलीक जगमग इजोत दूर–दूर धरि पसरि गेल।

ढाँचा–1992–कथाक सूत्रधारक चिट्ठी। स्वीकारोक्ति जे, जे किछु लिखा गेल छन्हि से वातावरणक दवाबमे। हालेमे जॉन्डिस भेल छलन्हि, जीहकेँ रास लगा कऽ पड़ल छला। रौद, गरदा आ धुँआसँ अकच्छ छथि। एकटा आर विचित्र बेमारी, देहमे तेज हउहटि आ चमरापर नहुँ–नहुँ चकत्ता उभरऽ लगै छन्हि। एक दिन सहरसासँ घुरै छला आकि स्कूटर खराप भऽ गेलन्हि। मिस्त्री आधा घंटामे स्कूटर ठीक करबाक गप कहलकन्हि मुदा पाट–पुरजा खोलि कऽ छिड़िया देलकन्हि आ चारि घंटा लगलन्हि। सुपौल घुरि डॉ. दासक क्लिनिक गेला, होमियोपैथिक दवाइक बुन्न असरि केलकन्हि मुदा घंटा लागि गेलन्हि। एक बेर सासुरसँ घुरै काल सेहो एहिना भेलन्हि। एक तँ पत्नीसँ बिछोह आ दोसर हाड़ कंपकपाबय बला ठार आ सिहकैत हबा! गोष्ठी, प्रो. राजेन्द्र, डॉ मुखर्जी आ के.के.इन्स्टीट्यूट ऑफ मैडोलॉजीक प्रिंसिपल झा। प्रो. राजेन्द्रक डॉ मुखर्जीसँ कहलापर जे इलाजक फीस पाँच टका तँ दऽ देब मुदा दबाइ देबऽ पड़त मुफ्तिया, फिजिशियन सैम्पल। तइपर मुखर्जीक कहब जे मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव सभ हुनका घासो नै दै छन्हि आ ऐ लेल तँ डॉ. दास लग जाए पड़त। फेर अयोध्यामे बाबरी मस्जिदक ढाँचाक ध्वस्त हएब। सूत्रधारक देहक कँपकँपी, हउहटि, चकता आ सूजन फेरसँ। कोनो प्रत्यक्ष कारण नै रहए एकर, मुदा तैयो हुनकर देह एकरा भोगने छलन्हि।

मूस–ओ आ ओकर दवाइक दोकान। नवका ड्रग इंस्पेक्टर ऐ दुर्गा पूजामे पाँच सए टाका सलामी लऽ गेलै। दोकान थसे जकाँ लेने छै। अनुज बैसै छै दोकानपर। भुमिहार पेंच भिड़ाओत आकि दोकान करत! बैंकक पुरना लोन, घरक पाँच सालक बिजलीक बिल।.. जेठका सार नागपुरमे एकाउन्टेन्ट छै, सनगर नोकरी आ सेहन्तगर कनियाँ छै। जे ओ जादूगर रहैत आ तखन गिली–गिली–फू आ अलाउद्दीनक चिराग

जे रहितै ओकरा हाथमे तखन! मुसबा तँ परेशान केने छै, खाइतो काल, मुदा एखन ओकरा एक्को रत्ती तामस नै उठै छै। ई शहर अनुमण्डलसँ जिला मुख्यालय भऽ गेल छै, जमीनक दाम बढ़ि गेल छै। जमीन बेचि सभटा कर्जा-बर्जा सधा देत। निन्नक बदलामे पारदर्शी बुनबुना आ विभिन्न आकृतिक आ रूपक मूस, कुतरैत, लड़ैत, नचैत, प्रेम करैत, पोथी पढ़ैत आ रम्मी खेलाइत मूस। दोसर बेर बड़का टा बुनबुन्ना, मूसक कारणसँ प्लेग। मेहनतकश मूस बिहरि बनबैत अछि मुदा साँप ओइमे रहैत अछि। अचकचा कऽ ओ उठि गेल। स्वर्गीय पिताक चित्र देखैत अछि। पूर्वजक अर्जित सम्पत्तिक उपयोग साँपे जकाँ करत? केआरीमे अनेरुआ घास-पात खुरपीसँ साफ करऽ लागल।

प्रजातंत्र परिकथा-एकटा हत्या आ दू टा घरमे डकैती। कमल कुमार शर्मा ऐ खबरिकेँ देखैत अछि, सेन्सर्ड सन खबरि। ऐ गपक चर्चा नै जे ओ डॉक्टर के.पी.भगत सेवानिवृत्त छल आ मामूली फीस लै छल। ओकर घरमे डकैत सभ गरीब मरीज आ ओकर परिजन बनि पैसल छल। ओइ पत्रकारपर कालाबाजारी आ मिलावटक केस अखनो लटकल अछि से ओ कोना लिखितए जे ओइ घरसँ पुलिस थाना अगबे एक सए डेगपर आ आरक्षी महोदयक निवास अगबे साठि-सत्तरि डेगक दूरीपर छलै। फेर डॉक्टर ओइठामसँ ओ सभ, राष्ट्रपति पदक प्राप्त हालेमे रिटायर भेल शिक्षक विक्रम प्रसाद वर्माक घर पहुँचि गेल, डकैती सेहो केलक आ खेनाइ बनबाकऽ सेहो खेलक। विक्रम बाबूक भाइ गजानन बाबू आरक्षी अधीक्षकक ओइठाम नजरि बचा कऽ पहुँचि गेला। मुदा तैयो किछु नै भेल। अस्पतालक हाताक मुख्यद्वारपर लोक सभ जुटि गेल। मधुरेश किशोर द्विवेदीक केमिस्ट आ ड्रगिस्ट एसोसियेशन एकरा नेतृत्व दऽ रहल छलै। स्कूलसँ घुरैत बेदरा सभकेँ किछु भऽ जाए..। वक्ता सभ शुरू-दलाल ईश्वर चौधरी, भड़ुआ मुरलीधर अग्रवाल, मटिया तेल फेंटि कऽ पेट्रोल बेचनिहार पत्रकार, चोरिक माल खरीद-बिक्री केनिहार नगरपालिका चेयरमैन बुचनू बाबू, मुनीमक कृपासँ चारिटा संतानक बाप पचीस वर्षीय सेठानीक साठि वर्षीय पति कालाबजरिया सेठ कनकधारीमल-ध्वनि विस्तारक यंत्रपर ओकर हँफसबाक स्वर छोट-मोट अन्हड़क भ्रम दै छल। बार एशोसिएशनक अध्यक्ष ज्ञाननाथ सिंह जे खूनी आ डकैत सभक पैरवी करै छथि, बाढ़ि प्रभावित इलाकाकेँ डिजनीलैण्डमे परिवर्तित करबाक मुफ्त योजना प्रस्तुत करएबला गंजेड़ी छुटभैया कृष्णानन्द तिवारी.. गोरका डाक्टर धरमचन्द सहाय जकरा बुझनुक लोक सभ डी.सी.एस. माने दारू, छौड़ी, सार-बहानचो कहै छथि... ओकर धीपल-तबधल शब्द सभ। फेर भीड़क नेतृत्वहीन हएब, प्रतिनिधिमंडल

नै जन-समूह द्वारा डाइरेक्ट वार्ता करबाक गप, आ एनामे टैरेसपर ओल्ड फॉक्सक अंतर्राष्ट्रीय समस्या सभपर बकथोथी। तखने मोटरसाइकिलक एकटा सवार भीड़केँ नियंत्रणमे लेमऽ चाहैत अछि, ओ बंदा एकटा संप्रदायवादी दलक नव्यतम रंगरूट छल। मधुरेशजी सावधानी बरतै छथि। एकटा धग्गर आ टटका जनमल नारा कमल आ अनकर ध्यान आकृष्ट करै छन्हि। फेर अबै छथि प्रदीप क्रान्तिकारी जे समाजसेवाक वशीभूत अभियन्त्रणक पढ़ाइ छोड़ने छथि वा निशाबाजी आ बलात्कारक कारण निष्कासित कएल गेल छथि। अनुमंडलाधिकारीक जीपपर आक्रमण होइत अछि। प्रदीप क्रांतिकारी कहैत अछि-कोयला लाइसेंसमे सात हजार टका चाही हरामजादाकेँ। देखलहक तूफान। मधुरेशजी किछु आर गोटेकेँ संगमे लऽ लेने छला जेना गजेन्द्रजी- स्थानीय कॉलेजक व्याख्याता आ व्यापारी संगठनक माधवजी आ कृष्णमोहनजी। बिना अप्रिय घटनाक भीड़ गाँधी चौक आ जयप्रकाश चौक पहुँचल। तखने मिठाइ दोकानपर बैसऽबला गोल्डिया जे क्रिकेट सेहो खेलाइ छल आ तहूमे बॉलक सुविधाक ध्यान रखै छल-बैटपर आबि गेलै तँ छक्का आ नै तँ क्लीन बोल्ड-से सरकारी गाड़ीकेँ देखि मार..आगि लगा दे.. बाजि उठल। किछु लोक गाड़ी दिस दरबर मारलक, मुदा गाड़ीक चालक गाड़ी भगौलक। न्याय चौक वा नबाब चौक पर विश्व हिन्दू सेनाक सेनानी सभ बजरंगबलीक स्थापना कऽ देने छल कारण तराजू आ आँखिपर पट्टी बला मूर्ति नै लागि सकल रहए। बजरंग चौकक बोर्ड लागि गेल रहए। प्रशासनमे ओइ समए दलित अधिकारी सभक बाहुल्य छलै आ ओ सभ चौकक नाम अम्बेदकर चौक करऽ चाहै छला से ओ सभ बजरंगबलीकेँ गिरफ्तार कऽ थाना लऽ गेला जतऽ सुनै छिऐ आइयो हुनकर पूजा कएल जाइ छन्हि। से ई चौक नगरपालिकाक पार्श्वमे रहलासँ आब नगरपालिका चौक कहाइत अछि। अनुमंडलाधिकारी फोर्स लऽ कऽ एतऽ आबि गेल आ सभ मिलि लाठी भाँजऽ लागल। पुलिसबला सभ दूर धरि दरबर मारि रहल छल। मुदा फेर लोक सभ गर धऽ कऽ रोड़ा फेकब प्रारम्भ केलक। पुलिस असबार भऽ भागल.. एकटा हिटलर कट मौँछबला इंस्पेक्टर आएल.. बरगाँही सभ ओकर गाड़ी लऽ भागल रहै! अनुमंडलाधिकारी आ दोसर सभ हाँइ-हाँइ जीपमे बैसि कऽ पतनुकान लऽ लेने छल। कमल नजरि खिरओने छल। गोल्डी ओकरासँ बहस केलकै तँ अमजद अली कमलक बाँहि गसिअयने ... क्रुद्ध चीता आ कूढ़मगज महिषक बीच दर्जन भरि लोक..। राजनैतिक आ सामाजिक गुटबन्दीसँ बाहरक लोक ठकुरसोहाती नै जनै छला। ने छल... कथी लेल एकर सभक मुँह लागै छी। दू गोट गिरफ्तार संगीक रिहा करबाक माँग... मुदा अधिकारी सभ अपन रक्षार्थ तइ लेल

तैयार नै छला। लोफरकट डी.एस.पी.क मबालीकट अशिष्ट बोली...। मधुरेशजी बजला–अहाँ सभकेँ निखत्तर जेबाक सिहन्ता हुअए आकि निछक्क जयपंथीए घेरने हुअए तँ..। बन्हककेँ छोड़बापर सहमति भेल। मनुक्खक कोन कथा कोनो कागपंछी नै देखाइ छलै.. महाभारत समाप्त भेलापर की कुरुक्षेत्रो एहिना निसबध भेल हेतै। बेदरा सभक एकटा गोल क्रिकेट खेलेबाक लेल मैदानमे प्रवेश कऽ रहल छल।

अथ गिरगिट कथा–मुक्कन बाबू माने मुकुन्द जायसवाल–जनवितरण प्रणालीक दोकानक एकटा डीलर। ऐ नामक एकटा दरोगा सेहो आएल छल आ खूब हँसोथि कऽ गेल छल। रामलखन पोद्दार, बी.एस.सी. ऑनर्स, वल्द किशन पोद्दार, चाह-पान बेचऽबला, टॉपर मुदा नोकरी लेल जुत्ता खिआ गेलै। नगर–हबाक नापबाक यंत्र–कायराना भद्रताक पचहत्तरि प्रतिशत, स्वार्थाना यारीक बीस प्रतिशत आर मिसलेनियस वाइरस पाँच प्रतिशत अनुपातमे उपस्थित रहत। एकटा गोदाम सन मकानमे अछि पुलिस फाँड़ी आ तकरे सटल दारूक भट्ठी! एक दिन अनायासे दुनूक अहं सोझाँ–सोझी होइ छन्हि जखन मुकुन्द पुलिस फाँड़ीसँ फराकैत भऽ निकलै छथि आ रामलखन भट्ठीसँ। झगड़ाक बाद पुलिसबला सभक सहानुभूति मुकुन्दक प्रति रहए आ भट्ठासँ बहराइबला सभक पोद्दारक पक्षमे। रामलखन पोद्दार गिरफ्तार भऽ गेल आ भोरमे ओकर बाप पुलिसबलाकेँ फूल–पत्ती चढ़ा कऽ ओकरा छोड़ओलक। फेर मुक्कन बाबू एक सोड़ह लोक लऽ नशा विरोधी नागरिक मंच बनेलन्हि आ भट्ठीपर धरना देलन्हि। ई सोलह गोटे छला सात गोट पितिऔत–ममिऔत–पिसिऔत–मसिऔत, दू टा हरबाहा, धनकुट्टा मशीनक आपरेटर, तीन कुख्यात मित्र आ कुलपुरोहितक दू टा लफंगा पुत्र। मुदा एम्हर पोद्दारजी अधिकार सुरक्षा हेतु 36 गोटेक संगे आबि गेला। नशा विरोधी नागरिक मंचक सेनापति लंक लऽ पड़ेला तँ शेषकेँ धरपटांग उठा देलकन्हि। फेर मारि–पीटक क्रम शुरू भेल। रंगबाजी स्पेशलिस्ट सुब्रत मुखर्जी एकरा गैंगवार कहै छथि। मुदा तखने नगरपालिकाक चुनावक घोषणा भेल। स्वार्थाना यारीक वाइरस शीवाज रीगलक सोझाँ रंग धेलक। मुक्कन बाबू चेयरमैन छथि, पोद्दारजी वाइस–चेयरमैन। नगरमे शान्ति अछि।

अय्यासी–दोसराक संग बैसलमे मौज मुदा पत्नीक बोल–तरकारी लेल दसटकही.. किराना समान काल्हियो–परसू जे आबि जाए। दोसक ओतऽ बिदा भेल, बेटाक गप नै सुनऽ चाहलक। पटेल चौक... महात्मा गाँधी चौक पहुँचल। संगमे बिसटकही। रिक्शाबला अपन टोपर तानि कऽ सुस्ताइत रहए। रिक्शापर बैसल, रस्तामे दोस लेल दू टाकाक सिकरेट लेलक, अपन फेवरिट पत्रिका मोर बारह टाकामे, आ चारि टाका

रिक्शाबलाकेँ देलक। दोसक घरमे पंखाक हबासँ किछु आफियत अनुभव भेलै। बचल दू टाका ओकरा मुँह दुसलकै, घरक तरकारी आ बेटाक किताब-कापी.. घर घुरल देह घामसँ कुंडाबोर। पत्नीक फुलल-लाल आँखि देखि लगलै जे अय्यासी कऽ घुरल हुअए।

बैकबा-फोड़बा-मूल समाचार-मतायल हवाक पेट्रोलकेँ स्वार्थक सलाइ देखौने छल। घटना-प्रकाश अगरवालक फर्म 'वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार'-उधारीक रकम लाख ठेकि गेलै तँ स्वरगीय रघुनाथ झाक पुत्र अठमा फेल मातृविहीन अबंड सिकन्दर झाकेँ वसूली लेल राखलक। ऐ क्रममे ओ पहुँचल एक दिन रामचन्द मड़र लग, ओकर बेटा कालेश्वर मड़र जे आब नाममे यादव लिखै छल चारि बरख पहिने तीन हजारक थ्री-पीस सूट बनबेने छल। मुदा बाप ओकर ऋणक मादेँ मना कऽ देलकै। रस्तेमे पान खेबाक क्रममे मुन्ना ठाकुरक दोकानपर कालेश्वर यादवसँ ओकरा भेँट भेलै, कालेश्वर संगे परिवारक लोक आ कुटुम्ब सेहो छलै। पहिने सिकन्दर जे फिरंटगिरी करै छल सएह आइ काल्हि कालेश्वर करै छल से तगेदापर मारि बजड़ि गेल। सिकन्दर ओकरा छातीपर चढ़ि गेल। सिकन्दरक पुरनका संगी सभ जुटि गेल आ कालेश्वरक कुटुम्ब सभकेँ धोपलक। फेर दोसर दिन पिछड़ा एकताक जुलुस निकलल आ वस्त्र भंडारक शीसा फोड़लक। मुदा लठैत सभ आबि लाठी बरसाबऽ लागल। जकर जेने सिंग अंटलै, ओम्हरे पड़ाएल। लूट, अराजकता..पसरि गेल। झलकी-दृश्य एक: जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम मंडलक स्वर, अठारह कोठली आ दू टा बड़का-बड़का हॉलबला राजनीतिक दलक कार्यालयमे। सद्भावना जुलुस निकलत.. शिष्य चिरंजीव सिंह, पार्टीक युवा मंचक अध्यक्ष आ मंडलजीक घोर समर्थक। मुदा ओ तामसे घोर भऽ जाइत अछि-अहाँ सेहो छोट जातिक छी से ओकरा सभक पक्ष लेबे करबै। बहरा जाइत अछि। दृश्य दू: फूसक घर। धनीलाल, रामनारायण। बैकबा-फोड़बा की होइ छै। मटरू की जानय। किछु काल चुप रहलाक बाद आल्हा टेर देने अछि। दृश्य तीन: कामरेड रामसेवक साहुक चाह-नाश्ताक दोकान। बहस.. विद्यानिवासजीक भाषण, जाति नामक कोनो वस्तु नै। हुनका पागल कहि क्यो छौड़ा बहरा जाइत अछि। दृश्य चारि: टिफिनमे बच्चा सभक खेल: घास-फूस बला घर हमर आ हम बनब जादब। दोकान बिरजूक आ ओ बनत बाभन। दुनूमे झगड़ा हएत आ लल्लू, मोहन, नरेन आ बबलू आएत आ हमर घरमे आगि लगा देत। तखन सुरेश बनत नेता आ विनोद बनत दरोगा। सुरेश दरोगाकेँ कहत जे एकरा दुनूक घर-दोकान बनबा दियौ आ पकड़ि कऽ लाउ। सुरेश दुनुक हाथ मिलबाकऽ दोस्ती कराएत।

बैकबा-फोड़बा खेल भरि टिफिन चलैत रहल।

विष-पान-वकालतखानाक कुर्सीपर बैसल गोपालजी कछमछाइ छथि। कचहरीक द्वारपर सुग्गाबला जोतखी बैसल छथि। ओतै एकटा बैनर सेहो अछि, आँखिक रोशनी बढ़बऽ बला ममीरा सुरमा। अदालतिक बरंडापरसँ अर्दली रामेसर मंडल वल्द जागेसर मंडलकेँ चिकड़ैत अछि, मोकील वकीलकेँ अगिला तारीखपर बाँकी-बकियौता देबाक गप कहै छन्हि मुदा ओ कलमक उनटा छोरसँ कान खोदैत रहै छथि। गोपाल सुनै छथि। गोपाल, एक दिन पानबला दोकानपर चतुरानन लाठी लेने आएल आ बरसाबऽ लागल। ओ खसि पड़ला। बाबूजीक पुरान नोकर नेनिया आबि चतुराननकेँ बजाड़ि दैत अछि मुदा ओ मौका देखि भागि जाइत अछि। रामप्रसादक साठि वर्षीय माय मरौनावाली सभसँ पहिने गोपालक सुधि लेलक। फेर गोपाल अस्पताल आनल गेल। चतुरानन सेहो ओतऽ आएल रहए इलाज आ इन्जरी रिपोर्ट लेल, मुदा क्यो चीन्हि गेलै आ जरनाक चेरासँ ओकरा मारि कऽ भगा देलकै। चतुराननकेँ सभ आदि अपराधी कहै छल मुदा गोपाल ओकरा सुधारै लेल प्रयासरत छला। से आब ओ भस्मासुर बनि गेल। पुलिस चतुराननसँ पाइ असूललक आ ओ घरेमे रहै छल। प्रगतिक तारीख केसमे पड़ैत रहलन्हि आ हुनकर एक्स-रे प्लेट सेहो अस्पतालसँ निपत्ता भऽ गेल। तीन बर्खक बाद गबाही शुरू भेल आ फेर शुरू भेल जिरह, ओइ दिन भरि बाँहुक कमीज पहिरने छला, कालर आ जेबी रहै वा नै, रंग..। जे लाठी बजरलन्हि तकर लम्बाइ, बनावटि..। वकील मित्र.. मुदा एक दिन स्वरक तुर्शी नुकाएल नै रहलै, देखै छिऐ मोकील सभकेँ आखिर पाइ देने अछि तँ ओकर सभक काजकेँ प्राथमिकता तँ देबहि पड़त। आ ओइ दिन गवाही नै गुजरि सकल.. फाइलपर हाकिम विपरीत टिप्पणी कऽ देलन्हि। चतुरानन तीन हजारमे गप फिट केलक जे ओइसँ बेशी अहाँ दऽ सकी तँ..। एंटी-पार्टीक वकीलक मार्फत वकील-मित्र लग ऑफर सेहो आएल छलन्हि। मुदा गोपालक कहलापर कोर्ट ट्रांसफर करेबाक प्रक्रिया शुरू भेल। मुदा कोर्ट ट्रांसफर भेल शीलभद्र झाक कुटमैतीमे जे गोपालजीक राजनैतिक प्रतिद्वन्दी छला आ चतुरानन आइ-काल्हि हुनके छत्र-छायामे छल। मेल पेटीशनपर गोपाल दसखत कऽ दै छथि, आत्मसमर्पण जेना भारत-पाक युद्धमे एक लाख सेनाक संग जनरल नियाजी कएने छल।

अन्हारक विरोधमे : एक दृष्टि

डा योगानन्द झा

श्री अरविन्द ठाकुर आधुनिक मैथिली साहित्यमे निविष्ट रचनाकारक रूपमे परिचिति बनौने छथि। हिनक एक गोट कविता संग्रह 'परती टूटि रहल अछि', एक गोट कथा संग्रह 'अन्हारक विरोधमे' आ एक गोट गज़ल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेशमे' प्रकाशित छनि। राजनीतिक चेतनासँ ओतप्रोत हिनक लेखन रचनाकारक ओहि प्रतिबद्धताकें इंगित करैत देखि पड़ैत अछि जकर निर्वाह कोनो रचनाकारकें मानव जीवन, समाज, राष्ट्र ओ सम्पुर्णतामे मानवताक हितैषी, मानवीय गरिमाक उन्नायकक रूपमे प्रतिनिधित्व प्रदान करैत अछि।

'अन्हारक विरोधमे' कथा संग्रह हिनक दस गोट कथाक संग्रह थिक। कथा सभक शीर्षक थिक क्रमश: खिस्सा सियार यार, पियासल पानि, अन्हारक विरोध मे, ढाँचा-1992, मूस, प्रजातंत्र परिकथा, अथ गिरगिट गाथा, अय्यासी, बैकबा-फोड़बा आ विष-पान। एहि कथा सभक माध्यमे कथाकार आधुनिक परिवेश मे व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक ओ प्रशासनिक विद्रुपताक खण्ड चित्र प्रस्तुत कऽ ओकरा प्रति असन्तोष, विरोध ओ विद्रोहक चित्रण मनोवैज्ञानिक विश्लेषणपुर्वक कयलनि अछि।

'पियासल पानि' नारी जीवनक करुण कथा थिक। पुरुष प्रधान समाजमे नारी-शोषणक अविश्रृंखल परम्परा रहल अछि। अन्धविश्वास सँ जकड़ल समाज नारीक मनोभाव केँ कहियो विशेष प्रश्रय नहि दैत रहल अछि आ अपन संस्कारक कारणे नारी निरन्तर उत्पीड़नक शिकार होइत अयलीह अछि। एहि कथाक नायिका नारायणपुरवाली सेहो उत्पीड़नक शिकार छथि। ओ अपन क्लीव पतिक कारणे अपन कामवासनाक परितृप्ति नहि कऽ पबैत छथि आ ओकर आलम्बनक दिस उन्मुख होइत देखि पड़ैत छथि। तथापि सामाजिक व्यवस्थाक कारणे ओ सीदित जीवन जीवैत छथि

आ मानसिक रूपें रुग्ण भऽ जाइत छथि। हुनक एहि रुग्णता कें हुनका पर डाकनी सवार होयब बुझल जाइछ आ हुनक झाड़-फूक शुरु कयल जाइछ। भगैत हुनका झोंटा पकड़ि लिरयअबैत अछि, मरचाइक झोंक दैत अछि आ सौंसे पीठक चाम काँच करची सँ पीटि उधेसि दैत अछि। परिणामत: ओ घर छोड़ि पड़ा जाइत छथि आ कुलकलंकिनीक उपाधिसँ विभुषित होइत छथि, अपवाद मे पड़ि जाइत छथि। मुदा हुनक पति लखना कें केओ क्लीव कहि प्रताड़ित नहि करैत अछि। बात तखन फुजैत अछि जखन लखना दोसर विवाह करैत अछि आ एहि दोसर विवाहसँ ओकरा पुत्ररत्नक प्राप्ति होइत छैक। क्लीव लखना ओहि पुत्र कें अनजनुआ जानि अपन दोसर पत्नीक चरित्र पर आक्षेप करैत ओकरा जान सँ मारि देबाक प्रयास करैत अछि। एहि तरहें कथाकार पुरुष प्रधान समाज मे नारी मात्र कें दोषी मानबाक रूढ़ विचारक प्रतिरोध कय समाज मे नारी-स्वातंत्र्यक स्थापनाक आग्रही देखि पड़ैत छथि। नारी मनोविज्ञानक क्रमिक विकासक दृष्टिऐ ई कथा कथाकारक सिद्धहस्तताक परिचय दैत अछि।

पोथीक शीर्षक रूप मे व्यवहृत कथा 'अन्हारक विरोध मे' स्वातंत्र्योत्तर भारत मे विकासमान सम्प्रदायवाद सँ सम्बद्ध अछि। अनेकता मे एकता भारतीय जीवन-पद्धतिक अन्यतम विशिष्टता थिक। एहि ठाम अनेक धर्म-सम्प्रदायक लोककें आन सम्प्रदायक लोकक संग अपने सम्प्रदायक लोक जकाँ सम्बन्ध रहैत अछि। विभिन्न सम्प्रदायक लोक एक दोसराक दु:ख-सुख, हानि-लाभ, जीवन-मरण मे संग देखि पड़ैत छथि। यैह भावनात्मक समन्वय एहिठामक राष्ट्रीय समन्वयक कारक तत्व थिक। मुदा आधुनिक राजनीति जे वोटक राजनीति थिक, संख्याबलक राजनीति थिक क्रमश: सामाजिक समरसता मे विष घोरि देलक अछि। ई समाज कें छिन्न-भिन्न कऽ रहल अछि। हिन्दू आ मुसलमान कें दू खीमा मे बाँटि देलक अछि। परिणामत: राष्ट्रीय ओ सामाजिक एकता नष्ट भऽ रहल अछि। कथाकार एहि राजनीतिक विद्रुपताक प्रतिरोध करैत छथि।

अन्हारक विरोध मे कथाक नायक रंजनक हिन्दू होइतो मुसलमानक बस्तीमे निशाभाग राति मे जायब, ओहिठामक लोक सभक ओकरा प्रति सम्बन्धिक जकाँ व्यवहार तथा अलीमुद्दीनक उक्ति 'कक्का! ओहि हरमजादाक खूने गरम भेल रहैत' हमरा मारितय, हम सहि लेतौं। खुदा कसम, हम सहि लेतौं मगर अप्पन टोल मे हमर यारक भाइ... हमर भाइ कें...आ सभ सँ बढि एक गोट हिन्दू केँ ओ मारलक। बाप-दादाक देल मोहब्बतक तालीम कें माति मे मिला देलक ई हरामजादा। कोन

इज्जत रहि गेलै एहि टोलक आ हमरा सभक... ।' मे सामाजिक समरसताक आह्लादकारी आस्वाद भेटैत अछि। दोसर दिस खलनायक बिकुआक कृत्य जे हिन्दू कें नहि केवल मारैत अछि अपितु हिन्दू-मुसलमानक शगुफा छोड़ि दंगा करबय चाहैत अछि, सम्प्रदायवादी घृणाक अभिव्यक्ति थिक। एहि कथाक माध्यमे लेखक ओही सम्प्रदायवादी घृणाक प्रतिकारक संदेश देलनि अछि जे हुनक राष्ट्रवादिताक प्रतीक थिक आ सम्प्रदायवादी राजनीतिक विद्रुपताक प्रति विद्रोही प्रवृतिक निदर्शन सेहो।

श्री अरविन्द ठाकुर लोकजगतक अत्यन्त गंभीर पारखी छथि। हिनक कथा 'विष-पान' हिनक एहि प्रवृति कें जगजियार कयने अछि। साम्प्रतिक न्याय-व्यवस्था कोना अर्थबलक वशीभूत भऽ गेल अछि आ अर्थहीनक हेतु अर्थहीन भऽ गेल अछि तकरा ई एहि कथा मे अभिव्यक्ति प्रदान कयलनि अछि। समाज मे जे गुण्डा तत्व अछि से खुलेआम अपराध करैत अछि आ न्यायप्रणाली ओकर किछु बिगाड़ि नहि पबैत छैक। दोसर दिस पीड़ित व्यक्ति अर्थाभाव मे न्यायालयक प्रक्रिया मे झुरझमान होइत अपन अर्जितो सम्पत्ति बोहाबैत रहैत अछि आ सीदित भेल रहैत अछि। अंततः विजय गुंडे तत्वक होइत छैक जे अर्थबल सँ प्रशासन ओ न्यायतंत्रहु कें किनबा मे समर्थ रहैत अछि। 'विष-पान'क गोपाल जी चतुरानन द्वारा पिटलो जाइत छथि, न्यायालय मे जयबाक कारणे अपन व्यक्तित्वक अवमुल्यन सेहो अनुभव करैत छथि, वकीलक फज्झति सेहो सुनैत छथि मुदा न्याय हुनका सँ दूरे रहैत छनि। जखन कि चतुरानन पाइक बलें ने तं पुलिसक द्वारा पकड़ले जाइत अछि, ने ओकरा विरुद्ध गवाहिये भऽ पबैत छैक आ अंततः विभिन्न छल-छद्म द्वारा ओ गोपाल जी कें सुलहनामाक हेतु बाध्यो कऽ दैत छनि। एतावता कथाकार न्यायपालिकाक विद्रुपता पर एहि कथाक माध्यमे कशाघात कयने छथि।

'अय्यासी' कथा मे निम्नमध्यवर्गीय जीवनक मनोविश्लेषण कयल गेल अछि। ई कथा समकालीन आर्थिक परिवेश मे जीबैत मानवक संक्रान्त मनःस्थिति कें उजागर करैत अछि। व्यक्ति सापेक्ष ई कथा निम्नमध्यवर्गीय मनुष्यक आर्थिक विडम्बनाक यथार्थ सँ अवगत करबैत अछि। एक दिस ओकरा घर मे दैनन्दिन आवश्यकतोक वस्तुक अभाव छैक तं दोसर दिस बच्चाक शिक्षा हेतु किताब-कापी सेहो ने जुटि पाबि रहल छैक। तथापि ओ अपन शौकक वस्तु सिकरेट, पत्रिका कीनब ओ रिक्शाक सवारी करब नहि छोड़ि पबैत अछि आ आत्मवंचना सँ प्रतारित होइत रहैत अछि।

'मूस' कथा सेहो यथार्थक अन्वेषण थिक। एकर पात्र खने पेट्रोलक बढैत

दाम सँ खिन्न अछि तँ खने पत्नीक हेतु गैस चुल्हा नहि कीनि सकबाक कारणे चिन्तित। खनहि ओ ड्रग इन्सपेक्टरक भ्रष्टाचारी प्रवृति पर विचार करैत अछि तँ खनहि अपन आर्थिक दु:स्थिति पर जकर कारणे ओकर कतोक मनोरथ पूर होयबा सँ रहि जाइत छैक। अंतत: ओ अपन सकल दैन्य सँ पार होयबाक एकमात्र उपाय अपन पुरखाक अरजल जमीन कें बेचि पाइ एकट्ठा करबा मे तकैत अछि। मुदा जेँ लऽ कऽ ई ओकर अकर्मण्यताक प्रतीक होइतैक, ओ ओहि जमीन कें जोत-कोड़ कऽ उत्पादन करबाक विचार करैत अछि। एहि तरहें ई कथा वर्तमान कालक युवा लोकनि मे कर्मयोगक प्रति निष्ठाक सिद्धान्त कें प्रतिपादित करैत अछि। एहि कथा मे मूस कर्मशील मानव समुदायक प्रतीक थिक जे सर्वहारा वर्ग जकाँ निरन्तर कर्मठतापुर्वक श्रम कय बीहरि बनबैत अछि आ साप सुविधाभोगी वर्गक प्रतीक थिक जे सर्वहाराक श्रम सँ अर्जित सम्पदा पर छल-बल द्वारा कब्जा कऽ लैत अछि आ ओकर श्रमक शोषण करैत अछि। कथाकार श्रमजीवी मानव समुदायक प्रति एतय संवेदनशील छथि।

'ढाँचा-1992' कथा ओहि त्रासद घटना सँ सम्बद्ध अछि जे भारतीय हिन्दू आ मुसलमानक भावनात्मक एकता पर एकटा प्रहार सदृश छल। ई घटना छल बाबरी मस्जिदक विध्वंशक घटना जाहि सँ समस्त भारतीय समुदाय जेना मानसिक रूपें बीमार ओ स्तब्ध रहि गेल छल। एहि कथा मे कथानक सँ बेसी सामयिक यथार्थ कें नूतन शैली मे प्रकट कयल गेल अछि जे पाठककें सहजहिं प्रभावित कऽ दैत अछि।

राजनीति व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्रक प्रगति एवं चतुर्दिक विकासक हेतु अत्यावश्यक तत्व थिक। मुदा वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य अत्यन्त विकृत देखि पड़ैत अछि। जे राजनीतिक चिन्तन सामुहिकता ओ एकताक प्रतीक होइत छल से सामाजिक वैमनस्य, अलगाव ओ पारस्परिक संघर्षकें प्राथमिकता दैत देखि पड़ैत अछि। विभिन्न सामाजिक असमानता कें आधार बना कऽ व्यक्ति-व्यक्ति ओ जातिगत समूहक बीच राजनीति द्वारा जे रेखा खींचल जा रहल अछि से ततेक गहींर भऽ गेल अछि जे परस्पर दुर्भावना, विद्वेष ओ विनाशक प्रवृतिक कारक भऽ गेल अछि। जाति, धर्म ओ सम्प्रदायक नाम पर समाज कें खण्डित कऽ वोटक संख्या स्थिर ओ पर्याप्त करब आधुनिक राजनीतिक धर्म भऽ गेल अछि। जाहि राजनेता कें शासन, सत्ता ओ अधिकारक उपयोग जनताक भलाइ आ कल्याणक हेतु करबाक चाहियनि से अपन क्षुद्र स्वार्थ ओ अहंकारक हेतु व्यक्तिक भावना कें भड़का कऽ सामाजिक ढाँचा कें क्षतिग्रस्त करबापर तुलल छथि। कथाकारक 'बैकबा-फोड़बा', 'खिस्सा सियार

यार', 'प्रजातंत्र परिकथा' आ 'अथ गिरगिट गाथा' मे आधुनिक राजनीतिक यैह यथार्थ अंकित-टंकित भेल अछि।

'बैकबा-फोड़बा' मे सिकन्दर अगड़ा जातिक अछि आ कालेश्वर पिछड़ा जातिक। कालेश्वर एकटा कपड़ाक दोकान सँ उधारी लेने छैक आ सिकन्दर ओहि दोकानक उधारी ओसुलबाक काज करैत अछि। मुदा सिकन्दर जखन कालेश्वर सँ तगादा करैत छैक तँ ओ एकरा अगड़ा जाति द्वारा पिछड़ा जाति कें अवमानित करबाक हवा दैत छैक। परिणामत: कालेश्वर ओ सिकन्दरक बक-झक दुनू जातिक बीच वैमनस्यक कारण भऽ जाइत छैक आ दुनू समूह ओझरा जाइत अछि। वर्तमान राजनीति कोन तरहें जातीय विभेद कें प्रश्रय दऽ समाज कें तोड़ने जा रहल अछि तकर यथार्थपरक दृश्य उपस्थापित करब एहि कथाक उद्देश्य अछि।

एहिना 'खिस्सा सियार यार' मे निजी स्वार्थक हेतु निरन्तर विभिन्न क्रियाकलाप मे लागल आधुनिक राजनेता सभक चरित्र कें उद्घाटित कयल गेल अछि। एकर पात्र गरीबदास एकटा एहन राजनेताक चरित्रक प्रतिनिधि अछि जे पार्टीक कोनो पैघ नेताक चमचागिरी कऽ कऽ नीक पद प्राप्त कऽ लेने अछि आ चुनावी टिकट प्राप्त करबामे सफल होइत अछि। ओ लायसेंस, परमिट आ चंदा-कमीशनक धंधा कऽ कऽ येन-केन-प्रकारेण जनप्रतिनिधि बनबाक लेल उताहुल अछि। दोसर पात्र राजनाथ झा निरन्तर पार्टीक काजमे लागल रहलोपर अपन पुत्रक हेतु नोंकरी प्राप्त करबामे पार्टी-नेताक अभिरुचि नहि देखि मोहभंग कें अङेजि लैत छथि। तेसर पात्र सदानन्द विद्रोही पार्टीक वाइस प्रेसिडेन्ट बनबाक लेल छात्र संगठन ओ युवा मंच कें हथकण्डा बनौने छथि। चारिम ओ पाँचम पात्र क्रमश: राजमंगल श्रीवास्तव ओ सतीश सिंह परमार अपन स्वार्थसाधन करबाक हेतु फुसिक सहारा लैत छथि। छठम ओ सातम पात्र क्रमश: शनिचर 'शनि' आ गणेश गुरमैता आत्मप्रशंसी छथि आ अपन कद बढयबाक हेतु विभिन्न उच्चपदस्थ राजनेता सँ अपन सम्पर्क होयबाक फुसि कथन द्वारा लोक कें मुड़बाक व्यापारमे लागल रहैत छथि। आठम पात्र माखन बाबू एम एल सी बनबाक सपना पोसने छथि आ अपन पुत्रो कें नेता बनयबाक हेतु प्रयत्नशील छथि। एहि तरहें कथाकार अनेकानेक स्वार्थी राजनेता सभक चरित्र प्रस्तुत कयलनि अछि जे सभ पार्टी कार्यालयक कार्यक्रममे समुपस्थित भेल छथि। हिनका लोकनिक चरित्रक अंकन कऽ कथाकार आधुनिक राजनीतिक विद्रूप चेहरा कें समक्ष अनबाक प्रयास कयलनि अछि। स्वार्थपुर्ण राजनीतिक ई यथार्थ व्यक्ति, समाज ओ राष्ट्रक उन्नति, समृद्धि ओ विकासक हेतु उपयुक्त नहि भऽ सकैछ। मुदा कथाकार एकटा एहनो राजनेताक

उपस्थापन कयलनि अछि जे स्वतंत्रता सेनानीक रूपमे राष्ट्रक हेतु बलेदान देलाक बादो पेंशन एहि आधारपर अस्वीकार कऽ चुकल छथि जे ओ स्वतंत्रताक युद्ध सम्मानक हेतु नहि अपितु राष्ट्रसेवाक भावना सँ लड़ने छलाह। एतावता कथाकार साम्प्रतिक स्वार्थपुर्ण राजनीति ओ स्वतंत्रता सँ पूर्वक राष्ट्रहितक हेतु राजनीतिक वर्णन कऽ हेय ओ प्रेय दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट कयलनि अछि। हेय राजनीतिज्ञ लोकनिक समूहक तुलना ई सियारक समूह सँ कयलनि अछि जे अपन स्वार्थ मात्र मे तल्लीन अछि आ समाज, राष्ट्र कें खखोरि कऽ चिबा जयबाक हेतु यत्नशील अछि।

'प्रजातंत्र परिकथा' सेहो राजनीतिक कथा थिक। एहिमे प्रजातंत्रक दुरुपयोगक चित्रांकन भेल अछि। शहरमे अपराधी लोकनि दू टा परिवारक सम्पत्ति लूटि लैत छथि आ एकटा गृहस्वामीक हत्या कऽ दैत छथि। जनिक हत्या कयल जाइत छनि से डाक्टर छलाह आ गरीब सभ कें मुफ्त आ सस्त इलाज करबाक कारणें डाक्टरी व्यवसायमे लागल एहन लोकक हेतु बाधा छलाह जे रोगीक अधिकाधिक शोषण करबाक हेतु कुख्यात छलाह। दोसर गृहस्वामी जनिका ओहिठाम केवल लूटपाट भेल छलनि से राष्ट्रपति पदक प्राप्त सम्मान्य शिक्षक छलाह। एहि हत्या ओ लूटकाण्डक सूचना पाबि पुलिस प्रशासन अपन खानापुर्ति कऽ चुकल छल। तत:पर केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसन एहि हत्याक विरुद्ध जुलूस निकालैत अछि जाहिमे शहरक अधिकांश भ्रष्टेलोकनि सम्मिलित होइत छथि। परिणामत: जुलूसक लोकसभ अनुमंडलाधिकारीक जीप कें क्षतिग्रस्त कऽ दैत अछि आ अनुमंडलाधिकारी कें सेहो कूहि दैत अछि। क्रमश: अनुमंडलाधिकारीक आदेश सँ जुलूसपर लाठी चार्ज होइत छैक आ अनेक एहने लोक प्रताड़ित होइत अछि जे कानूनकें अपना हाथमे लेबाक दुस्साहस नहि कऽ सकैत छल। पछाति गुंडा तत्व सभक द्वारा पुलिस पर सेहो रोड़ाबाजी होइत छैक। किछु गोटे गिरफ्तार होइत छथि। ओहि गिरफ्तार लोकसभ कें छोड़यबाक हेतु प्रशासनक संग वार्ता कयल जाइत छैक आ प्रशासन ओकरा सभ कें छोड़ि कऽ जुलूस आ नारेबाजी सँ त्राण पबैत अछि। एहि तरहें ई कथा प्रजातांत्रिक व्यवस्थामे सामाजिक-सार्वजनिक हितक हेतु कयल गेल प्रयास कें नेतागिरीक धंधा किंवा निजी उद्देश्यक हेतु कयल गेल अनुशासनहीनताजन्य अराजकता ओ भटकावक चित्र प्रस्तुत करैत अछि जे साम्प्रतिक राजनीतिक यथार्थ थिक।

'अथ गिरगिट गाथा' सेहो राजनेतालोकनिक अपन स्वार्थपुर्तिक हेतु भ्रष्टाचरणक अतिरेक कें उद्घाटित करैत अछि। एहि कथाक पात्र मुकुन्द जायसवाल आ रामलखन पोद्दार परस्पर विरोधी छथि आ हिनका दुनूक समूहक बीच निरन्तर मारि-पीट होइत

रहैत छनि जाहि सँ शहर अशांत रहैत छैक। मुदा जखन नगरपालिकाक चुनावक अवसर अबैत छैक तँ ई दुनू परस्पर यारी कऽ लैत छथि आ जाहि वार्डमे जनिक समर्थकक संख्या अल्प रहैत छनि ताहि वार्डमे अपन प्रतिद्वन्दीक समर्थन कऽ दैत छथि आ दुनू गोटे नगरपालिकाक क्रमश: चेयरमैन आ वाइसचेयरमैन बनि जाइत छथि।

एतावता संकलनक कथा सभकें पढ़ला उत्तर ई स्पष्ट होइत अछि जे श्री अरविन्द ठाकुर कथालेखन मे वस्तुवादी ओ वास्तविकतावादी छथि। ई यथार्थकें यथावत प्रस्तुत कऽ ओकर विरूपताकें पाठकीय संवेदना सँ जोड़ि लोकजगत मे व्याप्त विसंगति सभ पर कशाघात करैत छथि। वस्तु, पात्र, परिवेश ओ घटनाक निर्माण मे अपन कुशलता द्वारा ई कथाक मूल कथ्य कें सहृदयजनसंवेद्य बना दैत छथि आ सामाजिक-राजनीतिक जगत मे व्याप्त विसंगति सभहिक पोल खोलि ओहिमे सुधारक हेतु सुझाव किंवा चिन्तन प्रस्तुत करैत छथि।

अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर

आशीष चमन

यदि अपन प्रथम काव्य संग्रह 'परती टूटि रहल अछि' प्रकाशन वर्ष—1993 के बाद श्री अरविन्द ठाकुर एतेक बरख धरि चुप रहलाह त हुनका प्रति हमर धारणा यैह बनैत छल जे ओ बहुत दिन घरि मोह भंगक स्थिति मे रहल होयताह मैथिली साहित्यक प्रति, जे जेबीक पाइ अकारथ गेल...। मुदा परमात्माक लीला देखल जाउ, ओ पुन: अवतरित भेलाह खूब चमकैत-दमकैत संग्रह 'अन्हारक विरोध मे' ल क...। हम स्पष्टीकरण दऽ दी जे हमर धारणा भौतिक उपलब्धिक शून्यता पर छल मुदा जखनि आदरणीय भाइ श्री अजित कुमार आजादक ओहि लिपिबद्ध टिप्पणी पर नजरि गेल जाहि मे ओ लिखित गारन्टी सन देने छथि जे एक बेरि अहाँ मात्र एकटा कथा पढ़ि क त देखू, अहाँक पाछाँ पोथी आ पोथीक पाछाँ अहाँ फेभीकोल जेकाँ खरकटि जाएब त सहज उत्सुकता जागि गेल...। जागि गेल ओहि व्यक्तिक प्रति जे सदति हमर नजरि के सोझाँ रहल छथि। जे किसान, दोकानदार आ परिवारिक कर्ता पुरुष रूपें अपन जय-पराजय दुनु के देखैत भोगैत रहल छथि आ चाबस्सी त देखियौक ओहि मर्दे के जे अपन समस्त कार्य व्यापार ओ व्यवहार केँ कोठीक ताक पर राखि अपना केँ खेतिहर कहबाक सामर्थ रखैत छथि जाहि में केवल पराजयक पीड़ा, जीवनक वर्तमान ओ भविष्य अन्धकारमय रहैत छैक...।

हम बिना आओर बेशी भूमिकाक कहि सकैत छी जे अजित आजाद गँहिकी नजरिबला छथि तेँ ओ एहि कथा संग्रहक एहन तीव्र प्रशंसा कयलनि अछि।

एहि संग्रहक पहिल कथा अछि 'खिस्सा सियार यार।

ई कथा, बिहार मे आइ सँ किछु दिन पूर्व धरि जे लालटेन युग छलैक ओहि स्थितिक अयबाक पूर्व सँध्या केँ इंगित क रहल अछि...। व्यंग्यात्मक शैली में लिखल

ई कथा मूलत: हमर लोकतांत्रिक परम्परा केँ मरणासन्न अवस्था मे दर्शाबैत अछि, जाहि मे नेतृत्वशून्यताक स्थिति छैक..., सत्ता, संगठन मे गुटबाजी छैक, भ्रष्टाचार केँ आम सहमति भेटल छैक..., पुरान नीति सिद्धान्त केँ माननिहार आइ परिदृश्य मे नहि छथि त सिद्धान्तहीन व्यक्ति सेहो कारूणिक स्थिति मे रहि रहि क अबैत अछि...। एहि दुनू प्रकारक व्यक्तिक चरित्र चित्रण करबा मे रचनाकार तखनि सफल भेलाह जखनि नबका छओड़ा रामसोगारथ मंडल केँ कहैत अछि जे 'नबका जमानाक नारा लगाबू...।' माने सत्ता प्रतिष्ठानक अधिष्ठाताक जयकार करू त बूढ़ असोथकित मंडलजी उपेक्षा सँ प्रतिकार करैत छथि।

आइ लुच्चा लफाँड़ि अपराधी तत्व सभ निर्णायक आ नियन्ता बनल अछि आ सुच्चा जनसेवक सभ करोट लागल छथि...। एहि कथाक मूल तत्व यैह अछि, कथावस्तु प्राय: नवीन नहि अछि..., ई समस्या समान्यत: सभ केओ अवधारि नेने छथि तथापि प्राय: एक्कहि साँस में ई कथा लिखल गेल अछि एकदम निस्पृह ओ असम्पृक्त भ' क' तेँ कथा बहु रूचिगर। कथाकार अपन क्षमता आ अनुभव संग न्याय क लेलनि अछि।

'पिआसल पानि' कथाकारक ओ रचना अछि जाहि मे हम अपन परिवेश, जाहि में रचल-बसल छी तकरा प्रति एकटा हीनता बोध होअए लगैत अछि...। एहि कथा मे कुल जमा तीन गोट पात्र छैक, प्रधानत: जाहि मे ''नारायणपुरवाली'' केन्द्रीय अछि...।

कथा मुख्यत: नारायणपुरवालीक चारूकात घुमैत अछि आ अपना सभक सामाजिक पाखण्ड पर सेहो फोकश दैत अछि...। हमर समाज स्त्रीक मामिला में बड्ड कोनादन रहलैक अछि, एकसरि पयला पर चीड़-फाड़ि क काँचे खा जयबा लेल उताहुल...। एहिठाम स्त्रीक दुइये गति होइत अछि, ओकरा संग बलात्कार करू जेना किछु मास पूर्वहि आ एखनि किछु दिन पहिने एक गोट स्त्री ससुर पर्यन्त सँ बलत्कृत भेलैक अछि, आ नहि त ओकरा विभिन्न कारण सँ व्याभिचारिणी घोषित क दिऔक...।

नारायणपुरवाली बलत्कृत त नहि भेलि मुदा ओ हत्भागिनी छलि जे ओकर स्वामी ओकरा भरि पेट अन्न नहि द सकल त ओ गिरहथ ओतऽ कमाब जा लागलि ओ संगहि अपन पति सँ दैहिक सुखो सँ वंचित छलि। विडम्बना त देखू जे प्रारम्भिक अवस्था में नारायणपुरवालीक प्रति एकटा वितृष्णाक भाव जगैत छनि गिरहथ राजा बाबू केँ, जे ई स्त्री की थिक त चरित्रहीना... पाठकगणपर्यन्त नहि बूझि पबैत छथि आ अंत में ओ स्त्री निराश भ पड़ा जाइत अछि, त ओकर स्वामी लखना दोसर बिआह

करैत अछि।

ओकर दोसरकी स्त्री केँ बच्चा होनहारी छैक ई सूनि लखना अपन कप्पाड़ फोड़ि लैत अछि जे ई हमर जनमल नहि अछि। आ प्रथमत: पर्दाफाश होइत अछि जे लखना नपुंसक अछि त अचानक नारायणपुरवालीक प्रति सभक करूणा जागि जाइत छैक जे ओ बेकसूर छलि...। ओकरा प्रति समाजक ई बदलल धारणा रामचरण केँ प्रवक्ता बना स्थापित कयल गेल छैक...।

एहिठाम कतेको प्रश्न उठैत अछि जे हमर सामाजिक मान्यता सँ ढाही लैत अछि जे एहि स्थितिक जिम्मेदार के? स्वभाविक रूप सँ पुरुष प्रधान ई समाज। जे पुरुष अपन पत्नी केँ कमा क खुआ नहि सकैत अछि, ओकर दैहिक आवश्यकता केँ पूरा नहि क सकैत अछि, तकर पत्नी केँ चरित्रहीन घोषित करू आ पुन: ओहि व्यक्ति केँ पाग, दोपटा, मौर पहिरा दोसर स्त्रीक वध करू वा कराबू...।

मुदा हमरा नारायणपुरवाली कायर लगैत अछि..., ओ कियैक पड़ाइलि? गिरहथ नहि त, आन दोसरे केकरो पकड़िते भागैत नहि, वरन् ओहिठाम स्थापित भ रहैत आ साँयक कमजोरी केँ ओकर पाखण्ड केँ जगजियार करैत जे लखनाक दोसर बहु क सकबा में सफल भेलि...। त ई कथा नीक सुतरलनि अछि रचनाकार केँ आ सत्तहि अन्हारक विरोध मे ठाढ़ छथि ओ पेट्रोमैक्स ल' क'...।

कथा पाठ केरि क्रम मे जखनि हम कथा 'अन्हारक विरोध मे' केँ देखैत छी त हमरा स्वाभाविक रूपे ई भान होइत अछि जे कथा कखनहु काल क बनाओल सेहो जा सकैत अछि...। कथाक केन्द्रीय पात्र सूत्रधारक रूप में स्वयम् रचनाकार छथि...। ओ जे घटनाक भूगोल केँ दर्शोलनि अछि ताहि सँ ज्ञात होइछ जे ओ कुजड़टोलीक कातहि मे बसल छथि, संगहि इहो ओ देखबैत छथि जे ओहि समाजक जनानी सभ भरि दिनुक मामिला केँ नून तेल सानि कऽ देर राति मे घुरैत अपन-अपन साँय के सुनबैत अछि...। तकर बाद कचका ताड़ी पीने कुजड़ा सभ अपना मे गारि-गंजन, मारि-पीट करैत रहैत अछि आ रातिक नीरवता भंग होइत रहैत अछि प्राय:।

मुदा हमरा जनैत कथा लिखबाक हड़बड़ी में रचनाकार कतहु-कतहु चुकि गेलाह अछि कियैक त ओ कहैत छथि 'सभ राति स्त्री पुरुष सभ मारि-पीट करैत झौहरि करैत रहैत अछि आ तकरा ओ सामान्य रोजनमचा सन मानने छथि, माने अपन स्वीकृति द देने छथि मुदा ओहि राति ओ कियैक बहरेलथि? जखनि की ओ हंगामा सभ केँ सामान्य सन मानैत छथि...। पुरुषवर्ग लड़ैत छैक अपना मे त जनानी सभ

ओहिना चिकरैत छैक-'हौ बचाब..., मारि देलकैक..., लूटि लेलकै...।' ई कथाक मादे सामान्य सन गप्प भेल मुदा एकर दोसरो पक्ष अछि जे एकर उपादेयता केँ रखैत अछि। लेखक एहि कथाक माध्यमे सामाजिक भाइचारा जाहि मे सभ एक दोसराक भाइ बहिन, माम, पित्ती अछि, धर्मिक, आर्थिक देवाल केँ तोड़ि क, तकरा दर्शोलनि अछि आ ताहि मे कमोबेश सफल रहलाह अछि...। ई कथा प्राय: हुनक उन्मेषकाल केँ दर्शाबैत अछि...।

अध्ययन यात्राक क्रम मे हमरा जाहि चीज सभ स बेसी अखरल ओ अछि तारतम्यताक अभाव... एहि संग्रह मे ''मूस'' पहिने आयल अछि ''अय्यासी'' बाद मे...।

हमरा विचार सँ ''अय्यासी'' के ''मूस'' स पहिने राखल जयतैक त दुनू कथा अपन अनिवार्यता केँ आओर बेसी सुसंगत बना सकैत छल...। कथा आब उद्देश्यपरक ओ उपदेशपरक भ गेल अछि तैँ...। चूँकि हमर अप्पन मान्यता अछि त हम ''अय्यासी'' के ''मूस'' स आ ''मूस'' के ''अय्यासी'' संग गेठजोड़बा क रहल छी...। अय्यासीक प्रधानपात्र अपन घरक कर्ता-धर्ता छथि, पत्नी छनि, पुत्र छनि, स्वयं अपने छथि, घरक खर्च छनि..., पत्नी केँ आवश्यकता छनि गैस चुल्हा के, पुत्र के चाही कॉँपी, पढ़ब लेल, अपनो मनोरथ छनि, मैगजीन पढ़ताह, दोस्तक संग सिकरेट पीताह..., घर मे तीमन तरकारीक खगता छनि ताहि पर ओ तेना ने लहोछि के बजताह जे श्रीमतीजी अपरतीव भ जाइत छनि, बच्चा सेहो आतंकित छनि हुनक मुख मुद्रा सँ...। मुदा अपना टाका ल' क' पत्रिका कीनैत छथि, सिकरेट कीनैत छथि, रिक्शा यात्रा करैत छथि...। वस्तुत: हम सभ एखनहुँ अपन आदिम भावना केँ प्राय: प्रकट करैत रहैत छी... जाहि मे हम अपना सँ दुर्बल मातहत केँ दबोचि क रखैत छी..., मुदा रचनाकार संवेदनशील छथि तैँ ओ मुख्यपात्र केँ अंतत: विगलित देखबैत छथि...। ओ केन्द्रीय पात्र के अंतत: ई भान करबा देबा मे पूर्णत: सफल होइत छथि जे ई समस्त कार्य-कलाप जाहि मे ओ अपना आप केँ खर्च कयलक अछि अंतत: अर्थहीन अछि ओ हितगर नहि, सर्वथा गैर जिम्मेदार छथि...। एहि कथा अय्यासीक पूर्णता हमर दृष्टि मे ''मूस'' पर जा क होइत अछि...। दुनू कथा मादे पता नहि कियैक हमरा लगैत अछि जे दुनू केन्द्रीय पात्र आ ओकर परिवेश दुनू परस्पर मिज्झड़ सन छैक..., एक पढ़ू आ दोसर केँ पढ़बैक त लागत जे—'अरे! इ मूस कथा त अय्यासीक उत्तर कथा अछि..., ठीक ''गतांक से आगे'' के स्टाइल मे...।

देखल जाइ त अय्यासीक मुख्य पात्र मूसो मे ओहिना ''वर्कलेस'' छथि, हाँ

आब ओ सोझ हुड़दंगी नहि अछि... ई जरूर जे ओ जमीन बेचि क स्कूटर लेलक अछि मुदा पेट्रोल खर्चक चिन्ता जरूर ओकरा मे छैक, ओकरा रोजी रोजगार के चिन्ता छैक, व्यवसाय कर्ज ल' क' कयने छलैक से मूलधन आब सूदि जोड़ि क पँचगुन्ना भ गेलैक अछि, लोक हँसैत छैक अलग, भाइ जे छैक सेहो एकदम्म गैर जिम्मेदार... ओ फटोफट्ट मे अछि कोना जीवन जीअत ? खन ओ मार्केटिंग कॉम्प्लेक्स, खन सिनेमाहाल त खन होलसेल दबाइ विक्रेता बनबाक लेल विचारमग्न अछि... । कुल्लम ई जे आब अय्यास व्यक्ति सद्गृहस्थ बनबाक प्रक्रिया मे अछि..., मुदा बाट नहि भेट रहल छैक... । कथा अपन ऊँचाइ पर तखनि सांकेतिक दृष्टि सँ अबैत अछि जखनि ओ अपन बुनल काल्पनिक संसार मे देखैत अछि कर्मठ मूस सभक बनाओल बिहरि मे एकटा अजोध विषधर अबैत अछि आ बलात् ओहि मे पैसि जेबाक यत्न क रहल अछि... ।

ओ विषधर अछि, ओकर विशालकाया छैक, ताकतवर अछि, मुदा ओ की नहि अछि त पुरुषार्थी.. ।

ओकर तुलना मे वएह हीन, स्वेदकणयुक्त मूस बेसी आकर्षक छैक, कियैक त ओकर जीवन बेश जीवन्त छैक... आ नायक के नजरि अपन पिताक फोटो पर जाइत छैक त ओकरा होइत छैक जे ओहो वएह मूस छलाह जे अपन अध्यवसाय सँ धनार्जन कयलनि हमरा लेल..., एकटा हम छी जे साँप जेकाँ सभ साधन सँ युक्त भेलाक बादहु रचनात्मकता सँ हीन छी, एना कियैक ? हम कियैक एहन छी जे पिताक सम्पत्ति केँ बेचि क गाड़ी लैत छी, त बैंक कर्ज अदाए करैत छी..., दोकान नहि चला पबैत छी, हम कर्महीन छी कर्महीन... । एकटा ग्लानि ओकरा आब चोट द रहलैक अछि आ ओ आब उठैत अछि संकल्पक संग आ केवाड़ फोलैत अछि, अपन खुरपी लैत अछि, तखनि जे नव आ टटका हवा छैक से बन्न कोठली केँ ऊर्जा स भरैत छैक... । वस्तुत: ओ हवा अछि कर्मशक्ति सँ भरल जे एकटा कर्महीन केँ कर्मठ बना दैत अछि... । ई कथा मनुक्खक स्वभाव केँ चित्रित करैत अछि। ई कथा मनुक्खक नैसर्गिकता केँ अद्वितीय रूप सँ चित्रित करैत अछि जे मानव दर्शन मे अछि चरैवेति— चरैवेति... ।

ई कथा सवोत्कृष्ट अछि आ रचनाकार केरि प्रखर अनुभूति, प्रतिभाक संगहि जीवनक प्रति हुनक प्रचण्ड आस केँ इंगित करैत अछि... । संकलन यात्राक मध्य मे दुइटा कथा आगाँ अबैत अछि-प्रथम ''ढाँचा 1992'' आ दोसर अछि ''प्रजातन्त्र परिकथा''। दुनू दुइ अलग-अलग कलेवर सँ युक्त... । एकर विस्तार पर चर्चा बाद

मे, पहिने एहि कथा संकलनक एक गोट मोहक आकर्षण पर हमर संक्षिप्त टिप्पणी ई जे ई संग्रह ''आल इन वन'' सन लगैत छैक...। प्रथम कथा ''खिस्सा सियार यार'' शुद्धतम रूप सँ व्यंग्य मिश्रित हास्यक श्रेणी मे अवैछ, स्मरणीय अछि जे एहि विधा मे मैथिली मे बहुत कम रचना भेल अछि, कथा पढ़बैक त बहुतो काल धरि बिसबिस्सी सन लागत। आगाँ बढ़ू, त ''पिआसलि पानि'' सन विचारोत्तेजक रचना सँ भेंट होइत अछि। पुन: आगाँ बढ़ला पर ''मूस'' आ ''अय्यासी'' सँ भेंट होइत अछि। एकर विषय मे आर विशेष की कहू, हमरा लगैत छल जे कथाकार संकलन मे श्रेष्ठ द' चुकल छथि मुदा हुनक झोरा मे बहुतो रास माल छनि...। ''ढाँचा 1992'' शिल्पक दृष्टि सँ आकर्षक अछि। पत्र लेखनक एकटा विद्या छैक जेकरा मैथिली मे बहुत कम्म स्थान भेटलैक। मुदा हम तीनटा पत्रक शैली मे लिखल रचना देखि चुकल छी आ सेहो मैथिलीक दुइ जाज्वल्यमान नक्षत्र डॉ. हरिमोहन झा ओ स्व. मणीन्द्र नारायण चौधरी उर्फ राजकमल द्वारा रचित...।

जतऽ डॉ. झा ''पाँच पत्र'' ओ ''रसमयीक ग्राहक'' मे अपन बात केँ विनोदक शैली मे लिखलनि अछि ओतहि राजकमल अपन ''पाँच पत्र'' मे ममता, दारिद्र्य, अभाव बिछोह केँ चित्रित कयलनि अछि। भ सकैत अछि जे आनो रचना एहि शैली मे आओल होइक मुदा से हमर सोझाँ नहि आबि सकल अछि, मुदा ई दुनू रचनाकार अपन रचना बलेँ माइल स्टोन छथि...।

एहि शैली मे 'ढाँचा 1992' लिखल गेल अछि जाहि मे समष्टि रूपेँ एकटा राष्ट्र, एक राष्ट्रीय उपराष्ट्रवादक पीड़ा, ओकर जय, पराजय, ओकर इतिहास केँ अपन-अपन दृष्टि सँ देखबाक प्रयत्न कयल गेल अछि। एहि कथा मे राष्ट्रीय पीड़ा केँ व्यक्तिगत पीड़ाक रूप मे अभिव्यक्त कयल गेल अछि...। अफसोच एहि बात के अछि जे स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी आ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक बाद केओ एहि समष्टि पीड़ा केँ वैयक्तिक पीड़ा मे बदलि सकबाक सामरथ नहि प्रदर्शित कयलनि...। एहि राष्ट्ररूपी शरीर जाहि मे अनेकानेक व्याधि; अबैत रहैत छैक, मारिते रास चाक-चौबन्द सुरक्षाक बादो तकरा हल करबा लेल कोनहुटा सर्वमान्य ओ सर्वग्राह्य उपचार नहि निकलि सकल अछि आ हमर सामाजिक ढाँचा भीतरे-भीतर घुनाइत अंतत: माटि मे मीलि जाइत अछि आ हम सभ मात्र ओहि विडम्बना पर अपन कप्पार पीटि क रहि जाइत छी...।

मुदा कने विलमि जाउ। लेखक केर वैचारिक शृंखला भंग नहि भेलनि अछि। जतय ''ढाँचा 1992'' मे लेखक सामाजिक चेतना केँ लुप्तप्राय देखौलनि अछि

ओतहि एहि भकोभन्न अन्हार मे एकटा छोट छीन डिबिया ल'क' ठाढ़ छथि ''प्रजातंत्र परिकथा'' मे।

स्थिति प्राय: समाने छैक दुनू कथा मे, मुदा ओकर अन्वेषण ओकर हल करबाक शैली अलग-अलग अछि...। जतय 'ढाँचा' कथा मे उन्मादी भीड़ कुटिल नेतृत्व द्वारा संचालित भ आदमखोर बनल अछि, जत राजसत्ता तूर तेल ल'क' सूतल अछि आ एक गोट सांस्कृतिक ऐतिहासिक प्रतीक चिन्ह मेटाओल जा रहल अछि, ओकर ठीक विपरीत 'प्रजातंत्र परिकथा'' मे एकटा संवेदनशील प्राणी द्वारा भीड़ संचालित भ रहल अछि...। एहू कथा मे उन्मत राजसत्ता छैक, कुटिल नेतृत्व वर्ग छैक, मुदा एकर विरोध मे ठाढ़ अछि एकटा सजग प्रहरी जे ओहि समस्त वर्ग पर भारी आ हावी रहैत छैक। ई व्यक्ति ''ढाँचा 1992'' मे निपत्ता अछि...।

''ढाँचा 1992'' के संवेदना, आत्मचिन्तन, आमोद-प्रमोद मे लीन आत्मरतिक शिकार एक निर्वीर्य बौद्धिकक हाथ मे छैक त ढाँचा खसि जाइत अछि, मुदा जखनि ओ व्यक्ति उठि जाइत अछि त हमर प्रजातांत्रिक मूल्यक संरक्षणे टा नहि ओकर विकास सेहो होइत अछि...। दुनू कथा बहुत सशक्त बनल अछि अपना आप मे...।

कथा संग्रह अपना आप मे लगैत अछि जे ई कथा एवं उपकथा मे विभाजित अछि...। आदरणीय स्व. प्रभाष कुमार चौधरी ''अप्पन लोक'' मे लिखैत छथि जे हम आ बैजू भैया परस्पर अभिन्न छलहुँ। आगाँ ओ अप्पन आ भाइक तुलना क्रमश: इंजन आ डिब्बा सँ करैत छथि...। तहिना लगैत अछि जे एहि कथा-संग्रहक लेखक जे गप्प कह चाहैत छथि से ओ दृष्टिफलक केर व्यापकता ओ संवेदनशीलताक कारणे एक गोट कथा मे नहि कहि पबैत छथि...। हुनक कथा यात्रा बहुत इत्मीनान संग आगाँ बढ़ैत अछि। ओ अप्पन बात केँ एक कथा ''अथ गिरगिट गाथा' सँ शुरू करैत छथि आ तकर समापन ''बैकबा फोड़बा'' मे करैत छथि, एकदम अलिफ लैला सन...।''अथ गिरगिट गाथा'' मे हमर महान ओ पुरान गणतांत्रिक व्यवस्था के कुरूप आनन केँ सार्वजनिक करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। ओ व्यवस्था जेकर स्थापना नीक उद्देश्य सँ कयल गेल छलैक से आब पटरी पर सँ हँटि गेल अछि...। त्याग तपस्याक क्षेत्र मानल जाइबला राजनीति, शासन ओ समाज नीतिक नियन्ता पहिने नीचा खसल त अपराधी आ गुण्डावर्गक हाथ मे आइलि...। एकरा कमोबेश बर्दाश्त कयल जा सकैत छलैक मुदा आब त एहि बदनाम वर्गक बीच मे 'स्पाइल्ड जीनियस' सेहो सभ आबि गेल अछि। वएह 'स्पाइल्ड जीनियस' रामलखन पोद्दार दरोगा सँ ल'क' दारूबाज, रंगबाज रामलखन पोद्दार अछि। मुक्कन बाबू छथि पुरान आउटडेटेड,

आ अपन अस्तित्वक लेल संघर्षरत सुब्रत मुखर्जी सेहो अछि...। इ लोक प्रकटत: सैद्धान्तिक रूपेँ एक दोसराक विरोधी छथि किन्तु तरे तर एक दोसराक हितचिंतक सेहो छथि...। हिनका सभक कुचक्र मे पड़ि नीक नारा हास्यास्पद भ जाइत अछि, लोक सभ मरैत कटैत रहैत अछि। वस्तुत: ई मात्र एक नगरक टा नहि वरन् सम्पूर्ण देशक गाथा अछि...।

कथाकार आगाँ बढ़ैत छथि आ ''बैकबा फोड़बा'' नामक कथाक लाथेँ सार्वजनिन चिन्ता केँ व्यक्त करैत छथि। एतहु वएह 'स्पाइल्ड जीनियस' सिकन्दर अछि त रामचन्दर मड़रक बेटा कालेश्वर छथि...। एत जत सिकन्दर अपन अतीत सँ भागि श्रमसाध्य काज कर' लेल उताहुल छथि ओतहि ओकरा बिनु जानकारी देने ओकर बाहुबल केँ अपन लाभ लेल दोहन करयबला ''भंवरलाल वस्त्र भंडार'' के मालिक प्रकाश अगरवाल छथि। नतीजा कालेश्वर आ सिकंदर के बीच पाइ असूलीक तगादा दुइगोट रंगबाजक लफड़ा मे तब्दील होइत-होइत अगड़ा-पिछड़ाक लड़ाइ मे बदलि सम्पूर्ण नगर मे लूटपाट मचा दैत छैक...। ई दंगा वैचारिक समानता केँ सेहो झमाड़ैत अछि जखनि पिछड़ा वर्ग सँ आएल सर्वमान्य सर्वप्रतिष्ठित एक राजनैतिक दलक जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम मंडल मात्र एहि आकस्मिक घटनाक चलैत अपनहि दलक अगड़ावर्ग सँ आइल कार्यकर्त्ता चिरंजीव सिंह स अपमानित होइत छथि...। लेखक केर चिन्ता आगाँ बढ़ैत अछि आ ओ देखबैत छथि जे वैचारिक दृष्टि सँ दृढ़ व्यक्ति एहि तात्कालिक उन्माद मे तहिना अप्रासंगिक होइत छथि जेना बिहाड़ि मे बगुला.।

एहि सभसँ लेखक तीव्र वेदनाक अनुभव करैत छथि, मुदा ओ पुन: आशाक एक किरण देखबैत छथि जे समाजक पैघ वर्ग एखनहुँ एहि वितंडा सँ दूर अछि आ उत्साहक गप्प ई जे एकर संख्या बेसी छैक...। ई अछि एकटा विशाल श्रमिक वर्ग जेकरा लेल भरि दिनुक मेहनतिक बाद केवल ''नून रोटी आ तानि कमरिया'' सुतबाक अभिलाषा रहैत छैक।

एहि वितण्डा केँ मनोरंजन ओ खेलक रूप देनिहार नव मुकुलित सभ जाति ओ वर्ग सँ आइल बच्चा सभ सेहो अछि...।

एहि प्रकार सँ एहि दुनू कथा समेत सम्पूर्ण कथा-संग्रहक विषय मे यैह कहल जा सकैत अछि जे ई नीक ओ बेजाएक परीधिसँ बहुत दूर भ गेल अछि। अनन्य!!! अतुलनीय!!! अद्भुत!!! अद्वितीय!!!

अन्हारक रखवार

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

प्राकृतिक नियम छैक अन्हार स्थायी नहि होइत छैक। अन्हार आ इजोतक चक्र चलैत रहैत छैक। मुदा समाज मे पसरल अन्हार लगैत अछि प्रकृतिक एहि नियम कें नहि मानैत अछि। अन्हार मात्र रातिए टा कें नहि होइत छैक। जखन प्रशासन तंत्र कानून व्यवस्थाक प्रति उदासीन भऽ जाइत छैक अथवा पक्षपातपूर्ण आचरण मे लागि जाइत छैक तखन दिन देखार अन्हार पसरि जाइत छैक। तखन लगैत छैक जे प्रशासन तंत्र समाजक अबांछित तत्वक संग मिल कए अन्हारक रखवार भऽ गेल।

आ तें अरविन्द ठाकुरजी अन्हारक विरोध करबा लेल फाँड़ कसलनि।

अन्हारक एहि विरोध मे हुनका भेटैत छनि नायक अलीमुद्दीन '...कक्का, ओहि हरामजादाक खूने गरम भेल रहै तऽ हमरा मारितए, हम सहि लैतौं। खुदा कसम, हम सहि लैतौं मगर अप्पन टोल मे हमर यार भाइ कें...हम्मर यार भाइ कें आ सब सँ बढ़ि कए एक गोट हिन्दू कें ओ मारलक। बाप दादाक देल मोहब्बतक तालीम कें माटि मे मिला देलक ई हरामजादा। कोन इज्जति रहि गेलै एहि टोलक आ हमरा सबहक ?'

नायक अलीमुद्दीन ताड़ी दाड़ू पीबि मारि पीट झगड़ा झाँटी केनिहार एकटा हाड़ मांसक मनुक्ख नहि अपितु एकटा संस्कार, एकटा विचारधाराक द्योतक भेल अछि। समाज मे अलीमुद्दीन बहुत छैक, गाम गाम मे छैक जतए हिन्दू मुसलमान सैकड़ो साल सँ एक ठाम रहि रहल अछि। कोनो हिन्दू किसानक हरवाह आ कि जन मजदूर मुसलमान भेनाइ कहियो ककरो अखरलै नहि, आ ने मुसलमाने नबाबक राज मे हिन्दू रैयत कें सुख सँ रहबा मे बाधा एलैक।

मुदा जकरा फूटक दोकान चलेबाक छैक आ ओही मे राजनीतिक रोटी पकेबाक छैक तकरा लेल अलीमुद्दीन नहि, बिकुआ सँ काज छैक। ओहने लोक

बिकुआ कें आगाँ बढ़ेबा लेल सहायता सेहो करैत छैक। एही सम्बन्ध मे एकटा घटना मोन परैत अछि।

हमरा गाम मे पैघ मुसलमान टोल छैक जाहि मे गरीब धनीक सब तरहक लोक छैक। ओही मे कियो जेठरैयत सेहो कहबै बला भेलाह, मुखिया सरपंचक पद सेहो सुशोभित केलनि। एहने टोलक एकटा गरीब नवयुवक कें देखल हाट पर लोक कें 'जय रामजी' कहि अभिवादन करैत। शहर मे बहुत दिन रहलहुँ से गामक लोकक बीचक आपसी सौहार्दक बात बहुत किछु बिसरिये गेल छलियैक। कने कालक लेल हम अकचका गेलहुँ—रहमतबा बताह तऽ ने भऽ गेलैक? जय रामजी बाजि रहल छैक। सुनलियै ओकरा मसजिद मे एक दिन अजानक बेर मुल्ला टोकि देलकै जे ई ठीक नहि करैत अछि। ओ एकदम मुहँफट जकाँ जबाब देलकै 'हौ तों अपन अजान सँ मतलब राखऽ, हमरा नहि पढ़ाबऽ जे हम कोना बाजी। जय रामजी बजला सँ मुँह मे घाव भऽ जेतै की ओतबे सँ हमर धरम चलि गेलै की?' आ से रहितै तऽ की बाबा अमरनाथक सेवक कोनो मुसलमान होइतए?

छोट बात मुदा गम्भीर विचारक मसाला। बहुत बेसी तीरब एहि लेख कें तऽ साम्प्रदायिकताक आरोप लागि जाएत। मुदा सत्य ई जे दुनू पक्षक जनसाधारणक लेल नित्यक्रिया मे धर्मक देवाल कहाँ ठाढ़ होइत छैक? अन्हार पसारनिहार आ देवाल ठाढ़ केनिहार तेहल्ले होइत छैक।

अन्हारक स्वरूप किछुओ भऽ सकैत छैक। गोपालजी कें आशा छनि 'ई साँच अछि जे भ्रष्टाचारक अन्हार बेस तेजी सँ पसरल अछि मुदा एहि घटाटोप अन्हार मे न्यायपालिकाक प्रज्ज्वलित दीप भ्रष्टाचार लेल चुनौतीक रूप मे मौजूद अछि आ देखबै अहाँ सब जे एक दिन ई प्रज्ज्वलित दीप भ्रष्टाचारक पसरल गुज्ज अन्हार कें समूल नष्ट कऽ कए छोड़त।' मुदा गोपालजीक आशा टुटि जाइत छनि। कारण न्यायपालिकाक हाथ पैर फेर प्रशासन तंत्रे होइत छैक आ कि बदनाम वकील समुदाय। जज की करतैक यदि दरोगा ठीक सँ केस एन्ट्री नहि केने रहतैक अथवा गवाह कें रस्ता सँ हटा देल गेलैक? अनेको उदाहरण छैक जे साक्ष्यक अभाव मे पैघ-पैघ अपराध मे सजा नहि भऽ पबैत छैक। अन्हार सँ मुक्तिक शपथ लैयो कए बेचारा जज असहाय भऽ जाइत अछि।

अन्हारक रखवारक रूप मे अरविन्दजी कें ओ पत्रकारो भेटैत छथिन जे समाचार कें मोड़ि तोरि कए प्रस्तुत करैत छथि। जतए लोक पत्रकारिताक चोला ओढ़त मात्र अपना कें बचबैक लेल ओतए अन्हार कें पसरैत रहबा सँ के रोकतैक? इएह

कारण छैक जे सब प्रमुख राजनीतिक दलक अपन अखबार रहैत छैक, जाहि मे ओहने खबरि छापल जाइत छैक जे ओहि दलक मुखिया कें सूट करतैक। फल छैक अन्हारे अन्हार। 'प्रजातंत्र परिकथा' अन्हारक रखवार सब सँ भरल अछि आ ओकर विभिन्न खेला देखबैत अछि। अन्हारक रखवार सब अपना मे एकटा मजगूत किन्तु अदृश्य सूत्र सँ जोड़ल अछि। ओहि सूत्र कें चिन्हिओ कए हम सब ओकरा काटि नहि सकैत छी। ओ एकटा जेलीफिस जकाँ अथवा सहस्त्र मुँह बला राक्षस जकाँ अछि। ओकरा पर कोना प्रहार करबैक से बूझल नहि अछि। जेना कमल कुमार शर्मा कें बूझि पड़ैत छैक 'शहरक डगर सब पर एकाध घंटाक अंतराल पर गुजरैत पुलिसक जीप सब वातावरण मे पसरल भकोभन्न आ लोक सबहक मनोमस्तिष्क मे गतानल अन्हार कें कने काल लेल चिरीचोंत करैत निकलि जाइत छलै आ फेर फेर ओएह अन्हार आ भकोभन्न अपन अतिक्रमित ठाम पर घुरि अबैत छलै।'

अन्हार कें भगेबा लेल प्रयास होइत रहलैक अछि, मुदा असंगठित समाजक बीच फेर रखवारे सबहक तत्व हमरा सबहक बीच घुसिया कए सब प्रयास विफल कऽ दैत अछि। तैयो किछु होइत छैक जरूर। अंत मे लेखकक आशा 'ई तऽ चलैत रहैत अछि, चलिते रहत, अनवरत'।

हारि नहि मानबाक अछि। बेर बेर अन्हारक विरोध मे स्वर उठबाक चाही। साहित्यकारक काज इएह ने। एहि मे जरूर अरविन्द ठाकुरजी किछु सफल भेलाह अछि।

स्खलनक प्रतिरोधमे—अन्हारक विरोधमे

परमानन्द प्रभाकर

आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यमे जाहि कथाकार सभपर गर्वसँ निधोख माथ उठाओल जा सकैछ ताही पाँतिमे मन्द-मन्द मुस्कैत उन्नत ग्रीव ठाढ़ छथि श्री अरविन्द ठाकुर।

मनुखक सभ्यताक विकास कालहि सँ अन्हारक विरोध होइत आयल अछि। वेद मे अही बातकेँ किछु दोसर तरहेँ कहल गेल छै जे द्रष्टव्य अछि—

''असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय।''

सभ्यताक विकास काल सँ पूर्व प्रकृतिमे पसरल अन्हारकेँ दूर करबाक लेल, ओहि सँ सुरक्षाक लेल मशालक आविष्कार भेल छल। हिन्दी साहित्यक कथाकार बेनीपुरी जीक एहि माँदे कहब छनि—

''जिस दिन मशाल बनी, दुनिया की सबसे बड़ी क्रांति उसी दिन हुई''

मशाल भौतिको छै आ आत्मिको। आत्मिक मशाल ज्ञानक प्रतीक छै, जकरा माध्यमे अज्ञानताक अन्हारकेँ मिटाओल जा सकैत अछि। आजुक वर्त्तमान परिस्थिति मे प्रकृतिक सभटा अन्हार मनुखक चेतना मे समाहित भ' गेल छै आ तैं चारूकात उत्पीड़न, मारि-काट, खून-खराबी, झूठ-फरेब, छटपटाहटि, शोषणक त्रासद स्थिति पसरल छै। मनुख एहि स्थिति सँ अपना केँ उबारि सकत तकर ज्ञान सेहो ओकरा मे छै। ओ सभ किछु जनैत अछि, तखने त राष्ट्रकवि दिनकर कहै छथि 'कुरूक्षेत्रक' षष्ठम् सर्ग मे—

''यह मनुज विज्ञान मे निष्णात
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।''

तथापि मनुख छटपटा रहल अछि आ उपर्युक्त त्रासदक स्थिति सँ त्राणक दिशि ओकर प्रवृति नइँ भ' रहल छै। दुर्योधनक उक्ति छै—

''धर्म को जानता हूँ प्रवृत्ति नहीं है।
अधर्म को जानता हूँ निवृत्ति नहीं है।''

एहि मानसिकताक कारणें मनुखक दशा ओ दिशा दिनानुदिन खरापे भेल जा रहल छै। मनुख सभ्यताक विकास काल सँ पूर्व जतेक आतंकित नइँ छल ओहि सँ बेसी आतंकित एखन अछि। तैँ त हिन्दी साहित्य मे 'कलम के जादूगर' नाम ख्यात बेनीपुरी जी कहै छथि—''अब जहाँ अंधकार है, वहाँ पहले से भी ज्यादा भयानक और वीभत्स है।'' बेनीपुरी जीक इशारा मनुखक हृदय मे व्याप्त अज्ञानता रूपी अन्हारेक दिशि छनि।

समाज मे पसरल बहुत रास जे चारित्रिक स्खलन, सामाजिक विद्रुपता रूपी अन्हार छै तकरे विरोध मे श्री अरविन्द ठाकुर ठाढ़ छथि, अपन पोथी 'अन्हारक विरोधमे' हाथ मे नेने। मुदा ओ जे बाट पकड़ि क' चलि रहल छथि आ जाहि क्रांतिकारी तेवर मे बढ़ि चुकल छथि, ताहि लेल त हम एतबे कहबनि—

''शीशे का महल आपने बनवा तो लिया है
पत्थर का जमाना है मगर ये नहीं सोचा''

सम्पूर्ण पोथी केँ पढ़ला सँ ज्ञात भेल जे ठाकुरजी एकटा कुशल शब्द शिल्पीए नहि अपितु एक गोट मसिजीवी क्रांतिकारी व्यक्ति छथि। हम एहि बातक लेल पूर्ण आश्वस्तो छी जे जँ अरविन्द ठाकुर जी कलम सँ क्रांति करबाक लेल निकलि चुकल छथि त' क्रांति हेतै आ खूब नीक जकाँ हेतै। किऐक त कलम मे बड्ड तागति छै। तखने त हिन्दी साहित्य मे 'नेपाली' नाम सँ प्रख्यात कवि कहै छथि—

''हम धरती क्या आकाश बदलने वाले हैं
हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले हैं
हर क्राँति कलम से शुरू हुई सम्पूर्ण हुई
चट्टान जुल्म की, कलम चली, तो चुर्ण हुई''

प्रस्तुत पोथी मे दसटा कथा संकलित अछि। एहि कथा सभ मे कथाकार समाज मे परिव्याप्त सभतरहक समस्याकेँ उठौलनि अछि। जिनगीक सभटा पक्ष अभरिक' आयल अछि। हम एतय उदाहरणक लेल खिस्सा-सियार यार, पियासल पानि, अन्हारक विरोध मे, 'मूस', विषपान कथाक किछु प्रसंगक मादे समाजक वर्त्तमान दशाक दिग्दर्शन करा सकैत छी।

पोथीक पहिल कथा 'खिस्सा-सियार यार' वर्त्तमान राजनीति सँ जुड़ल अछि। एहि मे जनता आ राजनेताक बीच उपजल नवका संस्कृतिकेँ फरिछाक' राखल गेल

अछि। राजनाथक ई कथन ''हमर अहाँक महत्व ओकरा सभक नेता लेल तखने घरि अछि जा घरि हमरा सभक नसमे खून अछि। खून खतम-सम्बन्ध खतम'' राजनेताक सौंसे चरित्र उघारि क' राखि दैत अछि। एहि ठाम हमरा मोन पड़ैत अछि एक गोठ ढीठ नेताक उक्ति जे उपर्युक्त बातक पूष्टिए करैत बुझि पड़ैत अछि —

''रूसवा करो जलील करो, सब कबूल है।
बन्दा तो उम्मीदवार है, चरणों की धूल है।
लेकिन रहे यह याद कि चुनाव जीतकर,
मुड़कर न देखना मेरा पहला वसूल है।।''

अही कथा मे सदानन्दक चरित्र ठाढ़ क' क' लेखक महोदय ई कहबा मे सार्थकता प्राप्त केलनि अछि जे प्रजातान्त्रिक व्यवस्था मात्र कहबाक लेल छै, ओना ई व्यवस्था छै शक्ति तंत्रक। अथवा एकरा अहुना कहि सकैत छी जे ''जक्कर लाठी तकरे भैंस।'' ई कथा राजनीति मे पसरल भाइ-भतीजावादक नीति केँ सेहो उघार करैत अछि।

कथा कृतिक दोसर कथा 'पियासल पानि' नारी शोषण पर आधरित अछि। एहि मे नारायणपुरवालीकेँ जाहि रूप मे प्रस्तुत कैल गेल छै ओहि सँ नारीक दशा-दिशा ओ पुरुष वर्गक किरदानी जगजियार भेल अछि। एतबे नइँ ई कथा अंधविश्वास सँ जकड़ल सामाजिक सोचकेँ नाँगट करैत अछि।

तेसर कथा अछि 'अन्हारक विरोध मे'। ई कथा हिन्दु-मुस्लिमक टकराहटिक समस्या केँ जगजिआर करैत अछि। सामाजिक एकता केँ खण्डित कर' वाली प्रवृति पर ई कथा सोझे प्रहार करैत अछि। हमरा लगैत अछि जे ई कथा जिनगीक सान्ध्य बेला मे लेखक महोदय सँ किछु आओर चिन्तन आ समयक लेल लेखक दिश टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि।

'मूस' नामक कथा वंश परम्परा पर आधारित रहितो प्रकारान्तर सँ राजनीति मे उपजल वंश परम्पराक नबका संस्कृति पर चोट करैत अछि। गहन चिन्तन केला पर स्पष्ट होइत अछि जे एखनो राजतंत्र व्याप्त अछि। तखने त' बहिनोई, सार, बाप-बेटा, बेटी-पुतोहु सभक जमावरा छैक राजनीति मे।

अहिना 'विषपान' नामक कथा न्यायालय मे पसरल भ्रष्टाचारकेँ नाँगट करैत अछि। ओकीलक छुद्रता केँ उघार करैत अछि।

एहि तरहेँ एहि कथा संग्रह मे सामाजिक सभ तरहक समस्याकेँ उठाक' लेखक महोदय अपन खोजी प्रवृतिक तथा क्रांतिकारी व्यक्तित्वकेँ जगजिआर केलनि अछि।

एहि ठाम बच्चन जीक पाँती लेखक महोदय पर सटीक बैसैत अछि ''बूँद के उच्छ्वास का भी अनसुनी करता नही वह''

अर्थात् लेखक कोनो वर्गक छोट आ पैघ सामाजिक समस्या सँ मुँह फेरि क' नइँ चलैत छथि। आ ने एहि कथाकृतिक कथाकार चलला अछि।

एक गोट मैथिलीक अध्येता हेबाक कारणे हम एहि कथाकृतिक स्वागत अभिनन्दन करै छी आ लेखक महोदयक लेल किछु अपन शुभकामना हम अपन एहि पाँती मे दैत विराम लैत छी—

''सृजन-शीलता राति-दिन अहिना चलै अमन्द
कहियो पड़ै बेराम नइँ कविता जीवन छन्द
तन-मन पौरूष मे रहै ऊर्जस्वित नव हर्ष
रचना मे सभदिन रहै भरल सौम्य उत्कर्ष।।''

लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता

आशीष अनचिन्हार

'सबद' मने शब्द। 'मितारथ' मने मितार्थ। श्री कविराज विश्वनाथजी अपन पोथी 'साहित्यदर्पण'मे तीन प्रकारक दूतक वर्णन केने छथि ताहिमेसँ 'मितार्थ' दोसर प्रकारक दूत अछि आ एकर लक्षण ई जे कम बात कऽ जे ठीक काज कऽ लैत हो। मने कम बातमे बेसी काज। वेदमे एहन ऋचाकेँ धाय्या मानल गेल जे कि यज्ञ कालमे गाएल जाइत कोनो सूक्तमे अतिरिक्त रूपसँ जोड़ल गेल हो। धाय्या मने समिधा सेहो होइत छै 'क्रोधाग्नौ निजतातनिग्रहकथाधाय्यासमुद्दीपिते'। समिधा मने—गद्य सेहो कि तँ सभ तरहँक। प्राचीन कालमे पत्नीक बहुत प्रकारक होइत छलै जाहिमे 'महिषी'केँ सेहो धाय्या कहल जाइत छलै (मूलतः भरण-पोषणक हिसाबें। हमर अनुमान अछि जे 'धाय' शब्दक जन्म एही ठामक हएत। 'सबद मितारथ धाय्या' अरविन्द ठाकुरजी द्वारा लिखल कविता संग्रह केर नाम अछि।

1

पहिल कविता 'सुनू जयद्रथ' अछि। प्रतीक रूपमे जयद्रथक तते ने प्रयोग भेल छै जे एकर उपयोग करए बलाकेँ बहुत सावधानी राखए पड़ैत छै से सावधानी एहि कवितामे नै राखल गेल अछि। एहि कविताक अंतिम किछु पाँति एना अछि —

'सुनू जयद्रथ
एहि बेर कृष्णक मायाक मुँह नहि जोहल जाएत
शुरू करब अहाँ जँ समर
सूर्यास्त धरि प्रतीक्षा नहि करब हम'

आन प्रसंग बादमे पहिने तँ हम इएह कहब जे जाहि तेवरक संग ई पाँति अछि

ताहिमे हमरा हिसाबें 'मुँह' शब्दक उच्चारण सही नै छै। एहि कविताक पाठमे 'मूँह' स्वत: एतै। बहुत संभव जे लोक एकरा वर्तनी दोष मानथि मानथि मुदा हम एकरा मैथिली कवितामे लय कोना उपेक्षित होइत अछि तकर उदाहरण मानि रहल छी। आब एहि कविताक पहिल किछु पाँति देखी—

'एकरा काठी जुनि देखायब कि
हमर कविताक अनगिनत पृष्ठ सभहक बीच
अखनि सूतल पड़ल अछि बारुद'

कविताक शुरूआतसँ पाठक बुझैत छथि जे ई कविक अपन मनोभाव छै मुदा अंतिम पाँतिसँ ई बुझाइत छै जे कविक भीतर बैसल अर्जुनक मनोभाव छै आ तँइ हमरा बुझने कविताक शुरुआत ओ अंतमे संबंध नै छै। ई पूरा कविता एही तरहँक अछि। एकटा सकांक्ष पाठक लेल ई कविता साधारण हएत तँ साधारण पाठक लेल जटिल।

दोसर कविता 'हम हत्या करय चाहै छी' केर सभसँ नीक बात जे ई कविता कोनो स्थूल नायक लेल नै लिखल गेल अछि। ई कविता विभिन्न प्रवृतिपर लिखल गेल छै। आब ई अलग बात जे विभिन्न प्रवृति एकै नायकमे हो वा कि अलग-अलग नायकमे। ई तरीका कोनो कथनकेँ कविता बना दै छै खास कऽ ओहन स्थितिमे जखन कि कविता गद्यात्मक हो। एहि कविताक नकारात्मक पक्ष ई जे कवि हत्या करबा लेल तते ने व्यग्र छथि (भने ई व्यग्रता चरम दुखसँ हो) जे ओ विभिन्न प्रवृतिकेँ साँप बनि सेहो डँसबाक लेल तैयार छथि। बदला लेबाक कोनो तरीका जायज भऽ सकैए मुदा कविसँ हम कहबनि जे साँप बनबाक क्रममे जहर तँ हुनकोमे आबि जेतनि तँइ बदला लेबाक लेल साँप बनबाक तरीका हमरा उचित नै बुझाइए।

तेसरसँ सातम कविता इनार सिरीज अछि। वस्तुत: कविता संग्रह हम एहीठामसँ शुरु मानैत छी। मितार्थ एहिठाम पहिल बेर आएल अछि। इनार-1 मे वैष्णव सन शांतिप्रिय विरल ओ बहुअर्थी अछि। इनार-2 मे इनारक लालाटपर जे लिखल छै से वस्तुत: इनारपर नै आजुक आर्थिक परिवेशमे कमजोर लोकक ललाटपर लिखल छै। इनार-3 मे 'अनठीया बेंग', 'रक्तहीन क्रांति' आ 'ढोरिया साँप'क प्रयोग कविताकेँ अलग दिशामे लऽ जाइत अछि जाहि ठामसँ प्रवासक चिंता सामने अबैए। इनार-4 कविता एहि सिरीजक कमजोर कविता अछि कामी पुरुषक दोष इनारपर नै थोपल जेबाक चाही। इनार-5 अकादेमी राजनीतिकेँ देखार करैए मुदा एहि कविताकेँ आर धरगर बनाएल जा सकैए।

'अलिखित कविता सभहक पक्षमे' नामक कवितामे ओहन साहित्य सभकेँ अकानल गेल अछि जे कि मुद्रित नै भऽ सकल, अथवा पुरस्कृत नै भऽ सकल। ई नीक गप्प मुदा ईहो कविता अपन बात मुद्रित भैए कऽ कहि रहल अछि। बहुत संभव जे भविष्यमे पुरस्कृत सेहो भऽ जाए। किछु दिन पहिने रवीश कुमार नामक हिंदी टी.वी पत्रकार सेहो टी.वीक माध्यमे बजैत छलाह जे टी.वी नै देखल जेबा चाही। खएर माध्यम जे हो वंचितक पक्षमे बाजब बेसी जरूरी छै।

'बुद्धिबोर्धलक्षणा' नामक कवितामे कवि टी.वी चैनल आ अपन पोतीक माध्यमे स्क्रीनक पाछूक अन्हार देखेबाक प्रयास केलाह अछि। एहि कविताक नीक पक्ष ई जे आन कवि जकाँ जबरदस्ती नै देखेने छथि। कवि ई स्वीकार करै छथि जे आने जकाँ हमर पोती सेहो एहि अन्हारमे फँसल अछि मुदा कविकेँ उम्मेद छनि जे एक दिन हमर पोती एहि अन्हारकेँ जरूर जानत। जँ हम पोती बदला पाठक पढ़ी तँ ई कविता आन अर्थ दिस लऽ जेबामे सेहो सक्षम अछि।

'हलफनामा' कविता मैथिलीक आधुनिक कविताक सर्वथा विपरीत अछि आ एकरा हम बहुत नीक मानै छी। एहि कविताक माध्यमसँ कवि मम्मट (प्राचीन आचार्य)केँ नकारै नै छथिन बल्कि मम्मटक विचारसँ आगू बढ़ए चाहै छथि। मैथिलीक कथित प्रगतिशील कवि अरविन्द ठाकुरकेँ पारंपरिक आ जड़ कहि सकै छथिन कारण ई कथित प्रगतिशील सभ बिना जड़िक नवीनता चाहै छथि। एहि कवितामे जे सत्तामे कील ठोकबाक बात कहल गेल छै ताहि लेल बहुत कथित प्रगतिशील कवि अरविन्दजीकेँ साधुवाद देताह मुदा हमर अनुभव ई अछि अधिकांश कविक लिखल क्रांति पोथिए धरि रहि जाइत छै मुदा आलोच्य कविक तेवर जे कवितासँ बाहर रहल अछि ताहिसँ उम्मेद जरूर जागल अछि जे ई कवि सत्ताक माथमे कील जरूर ठोकताह।

'बुद्धिजीवी सन ओ-1' नामक कवितामे कवि कोनो सुनिश्चित आशंकासँ दहलल ओ सिहरल छथि मुदा एकटा पाठकक तौरपर हम ई कहब जे जँ कविक आशंका सच भेल तँ कविकर्म लेल सौभाग्यदायक रहत। मितार्थ फेर आएल अछि 'बुद्धिजीवी सन ओ-2' नामक कवितामे। भारतीय समाजमे बहुधा देखल जाइए जे कुकुरक अवशेषपर मजार अथवा गहूँम आदि अँकुरा कऽ मंदिर-मजार बना देल जाइत छै। एहि कवितामे 'लाल लंगौटी' अपन एही अर्थमे अछि। जेना किछु दबंग उपरोक्त विधिसँ मंदिर-मजार बना अपन आय निश्चित कऽ लैत अछि तेनाहिते किछु बुद्धिजीवी अपन पिता-संबंधी-गुरुक ओ नायाब लाल लंगौटी पहीरि बुद्धिजीवी बनि अपन नाम-इनाम निश्चित कऽ लैत अछि। जरूरी नै जे ई लाल लंगौटी मात्र बुद्धिजीवी

पहिरै छथि सत्ता ओ बेपार दुनूमे इएह लंगौटी पहिरल जाइए। मैथिली कविताक इतिहासमे 'लाल लंगौटी' प्रतीक विरल अछि।

'हमर चेहरा पर हिंदुस्तान' नामक कवितासँ हम प्रभावित नै भऽ सकलहुँ आ ई हमर सीमा सेहो भऽ सकैए। जरूरी नै छै जे माथपर टोपी, गट्टामे ताग आ कन्हापर किछु रहत तखने अहाँ सर्वधर्म समावेशी कहाएब। महात्मा गाँधी बिना ई सभ केने सर्वधर्म समावेशी छलाह एवं आजुक नेता ई सभ कइयो कऽ कट्टर छथि।

'मुंबइमे स्वतंत्रता दिवस-1 एवं 2' नामक दूटा कविता अछि जकरा जोड़ि कऽ एकै कविता बूझब जरूरी बुझाएल हमरा। एहि दू कवितामे कवि अपन आ रेलिंगपर चहचहाइत फुद्दी बीचक स्वतंत्रताक वर्णन केने छथि आ अपनासँ बेसी स्वतंत्र फुद्दीकेँ मानै छथि। आगू बढ़बासँ पहिने हम पाठककेँ हिंदीक उपन्यास 'चित्रलेखा' केर ओ अंश पढ़ए कहब जे कि नायक बीजगुप्त आ सहनायिका यशोधराक बीच भेल छै। कविए जकाँ यशोधरा सेहो कहै छथिन जे चिड़िया सभ कतेक आनंदसँ रहैत अछि ताहिपर बीजगुप्त कहलखिन जे चिड़िया सभ सेहो इएह सोचैत हेतै जे देखियौ आदमी सभ कतेक सुख-सुविधासँ रहैत अछि। आ ई नमहर कथन छै से देब अहिठाम संभव नै। कविकेँ एहि दुनियाँमे कतेक स्वतंत्रता भेटल छनि सेहो आकलन करब जरूरी।

'वाहक महान घटनाक' नामक कविता किनको चरित्रगत खसबाक प्रक्रियापर अछि आ से नीक अछि मुदा किछु पाँति बेसी बेर एलाक कारणसँ प्रभाव कम भेलैए—

'सोचय छी
सोचैत रहै छी
उठबाक हुअए कूबत त
खसैक खतरा मोल लएमे कोनो बुराइ नहि'

ई पाँति सभ कवितामे दू बेर प्रयोग भेल अछि जे कि प्रभाव कम करैत छै।

समझ कवितामे आएल भाव जे 'केकरो बुझाबक लेल कनियों ओकरा सन होमए पड़तै' ताहिसँ हम सहमत छी।

'अन्यपुरुष' केर नामसँ 5टा कविता अछि। अन्यपुरुष-1 मे कांता, प्रभु, आ सुहृद ई तीनू शब्द एहि कविताक जान अछि जकर फैलाव निच्चासँ उपर धरि होइत अछि क्रमश: 'सेक्ससँ सेंसेक्स' आ 'शिलाजीत-मुसली' धरि पहुँचैत अछि। ओना हम कनी-मनी आयुर्वेद शास्त्रक जानकारी राखैत छी तँइ हम पाठककेँ कहबनि जे शिलाजीत-मुसली-अश्वगंधा मात्र यौन रोग लेल नै समान्य दुर्बलता हटेबाक लेल

सेहो देल जाइत छै तँइ एहि सभहक अर्थ मात्र यौने रोग धरि नै राखथि।

अन्यपुरुष–2 ब्राह्मणवाद विरोधी कविता अछि आ एहन समयमे एहने कविता लिखल जेबाक चाही। जे लोक ब्राह्मण आ ब्राह्मणवादकेँ एकै बूझै छथि तिनका लेल ई कविता पढ़बा योग्य नै अछि।

अन्यपुरुष–3 नामक कविता दरभंगाक भूतपूर्व मठाधीशक वर्तमान पुत्र सभ लेल लिखल गेल अछि कि 60 बर्खमे किछु नै भेलै से प्रलाप करए बला राजनीतिक दल लेल से कहब कठिन अछि मुदा मितार्थ एहिठाम चरमपर अछि आ तकर परिणति अन्यपुरुष–4मे भेटत।

अन्यपुरुष–4 नामक कविताकेँ हम वास्तु ओ ज्योतिषक किछु समान्य शब्दक माध्यमसँ देखाएब। वास्तुमे दिशा तँ ज्योतिषमे ग्रह केर प्रधानता छै। वास्तुक हिसाबें हरेक दिशा लेल देवता आ ग्रह निर्धारित छै जकर विवरण निच्चा अछि—

उत्तर दिशा–देवता कुबेर, ग्रह बुद्ध

ईशान दिशा (उत्तर–पूर्व कोना) देवता शिव, ग्रह वृहस्पति

पूर्व दिशा–देवता इंद्र, ग्रह–सूर्य

आग्नेय दिशा (पूर्व–दक्षिण कोना) देवता अग्नि, ग्रह–शुक्र

दक्षिण दिशा–देवता यम, ग्रह मंगल

नैऋत्य दिशा (दक्षिण–पश्चिम कोना) देवता राक्षस, ग्रह राहु–केतु

पश्चिम दिशा–देवता वरुण, ग्रह शनि

वायव्य दिशा (उत्तर–पश्चिम)–देवता वायु, ग्रह चंद्र

ऊर्ध्व—देवता ब्रह्मा, ग्रह उल्लेखित नै

अधो–देवता शेषनाग, ग्रह उल्लेखित नै

ई कविता ईशान दिशा (उत्तर–पूर्व कोना) कोनसँ शुरू होइत अछि। एहि कोनक देवता शिव छथि ग्रह गुरु जे ज्ञानक प्रतीक छथि। एकर बाद वायव्य (उत्तर–पश्चिम) दिशा अछि जकर देवता वायु छथि आ ग्रह चंद्र जे कि गुरुक पत्नी संग व्यभिचार केने छथिन। एकर बाद नैऋत्य दिशा (दक्षिण–पश्चिम कोना) अछि जकर देवता राक्षस ओ ग्रह राहु–केतु छथि। राहु–केतु चंद्रक दुश्मन। जँ राजनीतिकेँ मानी तँ दुश्मनक दुश्मन दोस्त होइत छै अर्थात बृहस्पति आ राहु–केतु दोस्त भऽ सकै छथि चंद्रक विरुद्ध। मुदा ई बृहस्पतिसँ शुरु कएल ई कविता आग्नेय कोन धरि नै पहुँचि सकल आ एकर कारण थिक जे आग्नेय कोनक ग्रह शुक्र छथि आ बृहस्पति ओ शुक्र दुनू दुश्मन दुनू दू ध्रुव। अकारण नहि जे कवि अपन कविताकेँ अध–सीझल

कहै छथि। ई कविता विशुद्ध रूपसँ लोकक अपन मानसिक द्वंदक व्याख्यान कहैए। कविता अन्यपुरुष (5) मे सहज-सरल रहबाक कामना छै मुदा सहज-सरल रहब एते सरल कहाँ छै। 'जँ अहाँ गुरु छी' ई कविता स्थूल भऽ गेल अछि। साफे-साफ पता चलि जाइत छै जे ई गुरुघंटाल सभपर लिखल गेल छै। एहि कविताक अंतिम पाँति अधिकांशत: फूसि थिक। असली चेला कहियो गुरु छोड़ि इजोत दिस नै जा सकै छथि। असली चेला रूकल रहै छै गुरुक वध कऽ गुरुआइक आसन लेल। लाल लंगोटी कविता मोन पाड़ू। 'उन्टा साँस लैत लोक आ विद्यापति' एहि विषयपर बहुत विचार विभिन्न विधामे आएल अछि आ भरिसक तँइ प्रभावति नै कऽ सकल हमरा। पृष्ठ 49 सँ 61 धरि 11 टा कविता दरभंगाक विभिन्न भंगिमापर अछि मुदा काजक कविता मात्र पहिल कविता (दरभंगा राज आ ओकर विरासति) अछि। दरभंगापर दोहा सेहो अछि। किछु दोहामे मात्रा ओ यति-गति सही अछि मुदा किछुमे गड़बड़।

'सहज सुमति माँगलनि विद्यापति' ईहो कविता सहज-सरल विषयपर अछि। हमरा विचारे ई कविता 'अन्यपुरुष-5 सँ नीक अछि। आब फेर आएल अछि मितार्थ। दुर्योधनक कनियाँक नाम रहनि भानुमती आ भानुमती केर प्रयोग करैत 16 टा कविता अछि पृष्ठ 64 सँ 82 धरि। 'तिरहुत आ भानुमती' नामक कवितामे मिथिलाक कथित महानता ओ मान्यतापर आक्षेप कएल गेल अछि। आ एकटा नमहर बहसक माँग करैत अछि। एहि कवितामे जँ 'रिंग लीडर' शब्दक बदला 'किंग मेकर' रहितै तँ बेसी नीक।

'भानुमतीक लिंग' नामक कवितामे मितार्थ जुत्ता पालिशसँ चंडी पाठ धरि कऽ रहल अछि। कवि लेल भानुमतीक लिंग चाहे जे हो मुदा एकटा पाठकक तौरपर हमरा लेल भानुमतीक लिंग 'गरीब आ प्राइभेट' नौकरिहारा अछि। पाठक समुदाय एहि कविताकेँ पढ़िए कऽ मजा लऽ सकै छथि।

'भानुमती आ चुनाव' नकली वामपंथी सभपर अछि जे चुनाव वा आर कोनो तात्कालिक फायदा लेल अपन पुरुखाकेँ गरिआबैए। आ कविक मोताबिक भानुमती चुनाव लड़बा लेल एहन करैए। ओना बहुत बेर भूतकालक गलतीकेँ उजागर करबाक प्रक्रियाकेँ गरिआएब वा उकटब बूझि लेल जाइत छै। पाठक एहि कवितापर बिलमि एहि बिंदुपर सोचथि।

'भानुमतीक पुश्तैनी क्रम' वस्तुत: एकट्ठे हमरे सभहक क्रम अछि। ई कविता मितार्थक अद्‌भुत नमूना अछि। 'भानुमतीक हँसब' एहि कवितापर जाएसँ पहिने हमरा एकटा लोककथा मोन पड़ल। एकटा गरीब बच्चा कोनो राजा लग सभ दिन जाइक

आ राजा ओकरा लग सोना आ चानीक सिक्का राखि दै ओ बच्चा चानीक सिक्का उठा चलि दै। राजा ओ दरबारी से देखि हँसै जे देखियौ केहन निर्बुद्धि छै जे सोना रहितो चानी उठबै छै। एक दिन ओकर माए वा बाप पुछलकै जे सोना किए ने उठबै छीही तँ ओ बच्चा जबाब देलकै जे जहिया हम सोना उठा लेबै तहियेसँ ई खेल खत्म भऽ जेतै। तँइ हम मूर्ख बनि चानी उठा लैत छी। आब कवितापर आबी। कविताक अंतिम पाँति अछि 'हँसी सन पवित्र वस्तुओ भानुमती सन चंगला लग आबि धंधा भऽ जाइत अछि। आ एहिठाम आबि पाठक बूझि सकै छथि जे कवि कोन खेलक रचना कविता माध्यमसँ केने छथि। एहि कवितामे भानुमती कियो भऽ सकैए लोकथाक बच्चा सेहो, गरीब सेहो आ चमचा सेहो। बेसी बुझबाक लेल पाठक कविता पठथि।

'भानुमतीक उत्स' हम एहि कविताकेँ दू भागमे बाँटब। पहिल...'गाछक जड़ि...कंठस्थ कए उदरस्थ कएने अछि' आ दोसर–' जखनि कखनिओ उठैत अछि...एकाकार भऽ जाइत अछि भानुमतीमे'। हमरा हिसाबें पहिले भाग कविता अछि। दोसर भाग एहि रचनाकेँ एकपक्षीय बना देलकै। जँ कवि एहि रचनाकेँ पहिले भागपर खत्म करतथि तँ ई दुनियाक हरेक भानुमतीक प्रतिनिधित्व करितै ओतबे शब्दमे मुदा एकर दोसर भाग आबि एहि रचनाकेँ एक भानुमतीपर केंद्रित कऽ कमजोर बना देलकै।

'कवि भानुमती' नामक कविता जाहि विषयपर अछि ताहिपर बहुत रास व्यंग्य, चुटकुला आदि रचल जा चुकल अछि। आ प्रस्तुत कविताक शिल्पो तेहन नै जे आकृष्ट करए।

'भानुमती आ काछु' नामक कविताक वएह दिक्कत जे ई दू भागमे अछि आ मात्र पहिले भाग कारगर अछि (काछु चारि इंचक...कतेको साल तक)। जँ एहि कवितासँ दोसर भाग (एहि धरतीपर...अपसियाँत भेल अछि भानुमती) हटा देल जाए तैयो एहि कविताक अभीष्ट पूरा भऽ रहल छै। 'भानुमती आ घोंघा' नामक कवितामे भानुमतीकेँ घोंघा अपन लोक बुझाइत छै कारण घोंघेक दाँत सन भानुमतीक दाँत छै जाहिसँ ओ दुनियाँक हरेक वस्तुक भक्षण कऽ सकैए।

'भानुमतीक चिन्ता' ईहो कविता दू भागमे अछि आ हमरा हिसाबें एकर पहले भाग (नवकी बहुरिया बिना गहना... नहि जीबि सकैत अछि किन्नहुँ) कारगर अछि आ एकर दोसर भाग (परम बूड़ि अछि ई प्रधानमंत्री...चिन्ताक हमशकल भेल भानुमती) एहि कविताकेँ एकपक्षीय बना दैत छै।

'भानुमती आ समाजिक न्याय' एहि कवितामे भानुमती ओहन लोकक अवतारमे

अछि जे लोकतंत्रमे समतावादकेँ पचा ने सकल। कविताक अंत एहिसँ होइत अछि जे तमाकू खाएब राड़-रोहियाक अमल छै आ एहिसँ हम ई मानैत छी जे कवि 95 प्रतिशत कथित ब्राह्मणकेँ राड़-रोहिया मानै छथि एहि अमलक कारणे। 'कापरेटिभ भानुमती' नामक कवितामे भानुमती जोगाड़ीक रूपमे अछि। आब ई जोगाड़ी कोनो क्षेत्रमे पहुँचि सकैए। पाठक अपन क्षेत्रक हिसाबें एकर व्याख्या कऽ सकै छथि। 'इतिहासवेत्ता भानुमती' ई कविता भानुमतीक ओहन रूपपर अछि जाहिमे ओ अतीतजीवी बुझाइत अछि। मुदा जेना-जेना कविता अंत दिस बढ़ैत अछि तेना-तेना बुझबामे आबि जाइत छै जे भानुमती अतीतक आवरण वर्तमानक अपन स्वार्थपूर्ति लेल केने अछि। एहि कवितामे मितार्थ चरमपर अछि। भानुमतीक ई रूप कोनो राजनीतिक दल सेहो लऽ सकैए। 'भानुमती आ खबासी' ई कविता मठ ओ मठशिष्यपर अछि। कविताक अंत एना अछि 'जखनि जखनि नेत्रपट खोलताह / श्री कृष्णरूपी मठाधीश/ तँ पहिने देखथिन ओकरे युधिष्ठिर रूप' मुदा ई तथ्य तँ दुर्योधन-अर्जुन ओ कृष्णक बीचक छनि एहिमे युधिष्ठिर कोना एलाह से शोधक बात। बहुत संभव जे भावनामे बहि गेल हेता कवि। वा ईहो भऽ सकैए जे आर आन कोनो मिथक हेतै जे कि हमरासँ छुटि गेल हो। पाठक एहि कविताक एहि मिथकपर धेआन राखथि। 'भानुमती आ बतहबा' ई कविता भानुमतीक ओहन रूपपर अछि जे कि कोनो अवसरपर किछु पाँति मैथिली बाजए बलाकेँ देवता मानि लैत अछि। पाठक एकर विस्तार कोनो संस्थाक वार्षिक आयोजनसँ लऽ कऽ चुनावी सभा धरि कऽ सकै छथि। 'अयनामे भानुमती' एहि कवितापर एबासँ पहिने विश्व साहित्यमे अंतरात्माक अवाज देखी तँ पता लागत जे जे मात्र किछुए नीक लोक अपन अंतरात्माक अवाज सुनि सकलथि आ बहुत खराप लोक अपन अंतरात्माक अवाजकेँ अनठा देलाह। एखनो वएह स्थिति छै आ बादोमे वएह रहतै। एहि कवितामे भानुमतीकेँ सेहो आयनामे आएल अपने रूप पसंद नै पड़लै। बात पुरान छै मुदा कहबाक शैली नव, इएह एहि कविताक विशेषता भेल। 'सूर्यकेँ चिन्हह भानुमती' नामक कवितामे कवि भानुमतीक डर दूर कऽ रहल छथिन मुदा कोन डर से अज्ञात अछि। समान्यत: डर वा तँ शारीरिक कमजोरकेँ होइत छै वा नैतिक कमजोरकेँ। भानुमती कोन तरहक कमजोर अछि से पाठक अपना समयपर जानि सकताह। 'जाउ महाप्रकाश' एवं 'कुमार शैलेंद्र' संस्मरणपरक कविता अछि आ मैथिलीमे एहन कविताक आवश्यकता छै। 'प्रेतकेँ मुक्ति नइँ चाही' ईहो कविता कुमार शैलेंद्रजीपर केंद्रित अछि मुदा एहि कविताक किछु पाँति पूरा संसार लेल बनल अछि...

'आब किन्तु मरलाक बाद पछताइत छी / जीवैतमे कयल अपन ओहि करनीपर'

'जीवित प्रेत सभहक बनायल छल-छद्मक चक्रवातमे नहि फँसू'

'मानसिक खबासीक महापात्रीय मकड़जालसँ मुक्त होउ'... आदि।

'श्रीमान् कपरगर' नामक कविता ओहन चरित्रपर लिखल गेल अछि जनिक बाहरी आवरण चिक्कन-चुनमुन मुदा भीतरक आवरण छल-छद्मक छनि। जेना जीवन बिंदुसँ बिंदु धरिक यात्रा अछि तेनाहिते ई कविता कपरगरसँ कपरजरू धरिक यात्रा अछि।

'शहादत' कविता बुझबाक लेल कुंडलिनी योग बुझए पड़त कारण एहिमे एहि योगसँ संबंधित शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि। मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र, अनाहत चक्र, विशुद्धि चक्र, आज्ञा चक्र, सहस्रार चक्र। मूलाधार चक्र सभसँ नीचा होइत छै आ सहस्रार सभसँ उपर। ई चक्र सभ पीठक पाछू रीढ़क हड्डीमे होइत छै। एहि कवितामे कविक बिंदु विसर्ग (सहस्रार)पर एकटा मच्छर बैसि जाइ छनि आ कवि ओकरा आज्ञा चक्रक, विशुद्धि चक्रसँ खेहारैत मणिपुर चक्र लग ओहि मच्छरकेँ मारि दैत छथिन। कविकेँ आशंका छनि जे ई मच्छर हुनके स्वाधिष्ठान चक्रक कोनो कीड़ा छलनि। कुंडलिनी साधना नीचासँ उपर होइत छै मने मूलाधार जागरण करैत साधक सहस्रार धरि पहुँचै छै। एकर मतलब ई जे जेना-जेना साधनाक ज्ञान उपर बढ़ैत छै तेना-तेना अज्ञानता नीचा घटैत छै। जँ एहि कवितामे मच्छरकेँ अज्ञानता-दुर्गुणक प्रतीक मानी तँ ई सूचित होइए जे ओ नीचाक दू चक्र धरि नहि पहुँचि सकल आ अप्रत्यक्ष रूपसँ ई देखबैए जे साधक केर साधना एखन दू चक्र धरि उपर नहि पहुँचल अछि मने साधक एखन विशुद्धि चक्रपर जा कऽ अटकल छथि हुनका एखन आज्ञा चक्र ओ सहस्रार चक्रक भेदन करए पड़तनि। योगी सभहक मोताबिक विशुद्धि चक्र कंठक पाछू होइत छै। आ एकरा भेदन कऽ देलासँ अपार उर्जा भेटैत छै। साहित्य केर हिसाबसँ देखी तँ साहित्यमे बिना रीढ़ बला सभ साहित्यकार बेसी भेटताह तेहन स्थितिमे प्रस्तुत कवि ई साबित केलथिहए जे हम रीढ़क हड्डी मामिलामे पाँचम चेतना स्तरपर छी। योगक मोताबिक सांसारिक आदमी मूलाधार चक्रमे जीबि मरि जाइत छै तेनाहिते साहित्योमे साहित्यकार बिना रीढ़क हड्डीक मरि जाइत छै। 'चेत सम्हार' कविता मैथिली भाषा मध्य विजातीय शब्दक घुसपैठकेँ रेखांकित करैए आ कवि ताहि लेल अपने घरक उदाहरण देलथि ई एकटा नीक पक्ष भेल। अपना ओहिठाम तँ सभ अपने घरकेँ बारि अनका घरक उदाहरणसँ शुरू करै छथि। 'नागफनी पंडित' एहन कविता मैथिलीमे लगातार एबाक चाही। प्राय: जीवकांतजीक बाद कियो एहि

तरहँक कविता नै लीखि पाबि रहल छथि। ई कविता कवि ओ प्रकृतिक बीच मौन संवाद अछि। 'हम कए रहल छी गीर्वाण नृत्य' एहि कवितामे प्रयुक्त शब्द गीर्वाण केर मतलब छै 'देव-देवता' मने कवि देव नृत्य कऽ रहल छथि मुदा किए? प्रस्तुत कवितामे कवि सुगंध, स्पदन, तरलता आदि जमा कऽ रहल छथि, विश्वामित्रसँ नव-नव रचबाक प्रेरणा लऽ रहल छथि। अधम-निकृष्ट आदिकेँ बाहर फेकि रहल छथि आ कवि अपन आंतरिक आनंदमे मग्न छथि स्वाभावत: एहन परिस्थितिमे कवि देवे-नृत्य करताह मुदा की देवता नीके छलाह? जँ पौराणिक कथा सभ देखबै तँ देवि-देवताक छल-छद्म सभ सामने आबि जाएत तखन ई गीर्वाण नृत्य छल-छद्मसँ दूर कोना रहत। एकर विपरीत बहुतो एहन मानव भेटत जे छल-छद्मसँ दूर रहि नैतिकतामे देवतोसँ आगू गेलाह। कविसँ आग्रह जे धरतीपर सहज-सरल मानव नृत्यक आयोजन करथि ओ।

'कविता लिखैत गेलहुँ' नामक कवितामे कवि अपन लिखबाक कारण दै छथि। ओना तँ सभ कवि कविता लिखबाक कारण मोनक शांति-आत्मसुख गनबै छथि। प्रस्तुत कविक मनोभाव एहने सन छनि जे हम हलाहल पिबैत गेलहुँ आ कविता लिखैत गेलहुँ। एकटा भिन्न कविताक रूपमे ई साधारण कविता अछि मुदा जखन अहाँ एही कविता संग्रहक दोसर कविता 'हम हत्या करय चाहै छी' सँ जोड़ि कऽ देखबै तँ सुखद अनुभूति हएत। आखिर जे कवि शुरूमे हत्या करए धरि उताहुल छलाह से अंतमे आबि कहै छथि 'पीबैत गेलहुँ सभटा हलाहल/ कविता लिखैत गलहुँ/ छोड़ैत गलेहुँ सभटा प्रमाण'। नकारात्मकसँ सकारात्मक दिस एबाक संकेत अछि। 'दृष्टि'। राजस्थान उच्च न्यायालयक न्यायाधीश महेश चंद शर्मा द्वारा बयान देल गेल छल जे मयूरक नोर पीबि मोरनी गर्भवती होइत छै। पक्षी विशेषज्ञ सभ एकरा गलत कहलाह। बहुत संभव जे शर्माजी जनमानसमे पैसल भ्रमकेँ अपन बयान बना लेलाह। 'दृष्टि' कवितामे कवि सेहो मोरनीक संबंधमे एकटा बात कहला जे ओ अपन पएरक कुरूपता देखि खूब कनैत छै। मिथिला क्षेत्रमे कियो पक्षी विशेषज्ञ हेताह तँ कहियो एहिपर अपन मंतव्य देता। ओना कोनो वस्तुक सुंदरता स्थिति आ ग्रहण करबाक क्षमतापर निर्भर छै आ ई बात सच छै से हमहूँ मानैत छी। 'टिमटिम' ई कविता जतबे केकरो प्रयास, संघर्ष, जीजिविषा आदिकेँ देखार करैत अछि ओतबे सुविधा, षड्यंत्र, ईर्ष्या आदिकेँ सेहो। मुदा प्रश्न ई जे ई बात सभ जनितो दीप असावधान ओ आश्वस्त किए रहैए? 'तीनहि टा कविता' कवि अपन पुत्रपर केंद्रित कऽ लिखने छथि। 'धन्य कुशहा' ई कविता 18 अगस्त 2008मे आएल कोशी बाढ़िपर अछि। कोशी बाढ़िपर

बहुत साहित्यकार द्वारा लीखल गेल अछि ताही सिरीजक एकरो बूझू। एहि कविताक मर्म वएह बूझि सकत जे कि बाढ़ि देखनो हो आ से प्राय: सभ मैथिल देखिते छथि। 'बड़की माँक बक्सा' कविता संभवत: दाइ वा बड़की काकीपर रचित अछि। तेनाहिते 'माँ देलनि ओलहन' माए केंद्रित कविता अछि। पहिल कवितामे कवि अपन बचपन लेल औनाइत छथि तँ दोसर कवितामे माए केर ओलहनसँ हुनक रचना संसारमे कोना वृद्धि भेल तकर वर्णन अछि। 'टाइगर हिल पर सूर्योदय' ई कविता भ्रमण कविता अछि। मुदा अंत धरि अबैत कवि एहि कविताक माध्यमसँ अपन पिताक स्मरण कऽ लै छथि। 'हमरा नहि छल बूझल' कविता मोह भंगक कविता अछि। से मोह भंग चाहे जीवनक हो, सुख-सुविधाक हो। एहि कविताक अंतमे कवि एक बेर फेर अपन बचपन लेल औनाइत देखल जाइत छथि। 'आयु, अंक, अभिलाषा आ जीव' कविता आशा केर कविता अछि। कवि कोनो हालतिमे निष्क्रिय नै रहए चाहैत छथि। 'अहाँ उठू, जागू' कविता कवियत्री प्रतिभा लेल अछि मुदा लागू हरेकपर होइत अछि। 'विदा कालमे' ई कविता कवि अनाम मुदा चिन्हार लेल लिखने छथि। कवि ओहि अनामकेँ चीन्है छथिन ओकरा बारेमे किछु स्वीकार करए चाहै छथिन मुदा लीखि कऽ नै। ई कविता कविक क्षण-विशेषक कविता होइते सभहक कविता अछि। सभहक जीवनमे एहन समय आबै छै जखन ओ बहुत किछु कहए चाहै छै मुदा से कहि नै पाबैत छथि। एहन कविता मैथिलीमे बेसी लिखल जेबाक चाही। 'स्मृति मित्र अछि' कवितामे कवि स्मृतिसँ मैत्री करबाक सलाह दै छथि। कहै छथि 'समृतिमे हम सभ/ बीतल घड़ीकेँ फेरसँ जीबैत छी/ बेर-बेर जीबैत छी'। मुदा ई अनुभवसिद्ध गप्प अछि जे अवस्था भेलापर स्मृति बेसी जरूरी भऽ जाइत छै युवाक मोकाबिलामे। अतीतजीवी सेहो स्मृतिक मित्रे होइत छथि। 'खांहिस' कवितासँ पहिने हमरा शिकायत छल जे एहि संग्रह किछु कविता दू भागमे बाँटि देल गेल अछि जाहिमे ओकर पहिले भाग कारगर अछि। मुदा ई कविता 'खांहिस' एकै भागक छोट कविता अछि आ अपन अर्थ देबामे समर्थ अछि। ई कविता कविक नास्तिक स्वरक अछि मुदा कवि एहि शर्तपर आस्तिक बनि सकै छथि जे केकरो वैधानिक संग हुनका अगिला जन्ममे सेहो भेटनि। एहि कवितासँ ईहो पता चलैए जे कविक अभीष्ट कवि लेल बहुत महत्वपूर्ण छनि अन्यथा के अपन वैचारिकताकेँ छोड़त। एहि कविताक दोसर अर्थ ईहो भऽ सकैए जे जँ अभीष्ट पूरा हो तँ वैचारिकताकेँ छोड़ल जा सकैए मुदा एहि कवितामे आएल 'वैधानिक' शब्द कविताकेँ नैतिक उर्जा दैत अछि। 'दू मित्र' कवितामे एकटा मंच भोगी तँ दोसर एकांत सेवी छथि। मंचभोगीक मोकाबिलामे एकांत सेवीक क्रियाकलापसँ

साबित होइए जे दोसर बेसी संवेदनशील छथि आ असल कविता लेल इएह संवेदनशीलता चाही। 'बजारसँ घुरैत काल' जँ पाठक एहि कवितामे आएक शब्द बजारक बदला जीवन पढ़थि तँ अर्थविस्तार हएत। बजारक हवा जँ गूँह-मूत-घामसँ गन्हाइत अछि तँ जीवन विभिन्न कुकर्मसँ। एहि कविताक अंत ओतेक समाधनल नै अछि। 'जँ अहाँ कवि छी' नामक कवितामे कविक मंतव्य छनि जे वृद्धावस्था अबिते शारीरिक तौरपर लोक कमजोर होइत अछि मुदा जँ कियो कवि छथि तँ ओ मानसिक तौरपर बलगर भऽ जाइ छथि। बहुत संभव जे एहन होइत हो मुदा मैथिली भाषामे कतेक ताहि प्रश्नपर मंथन करब उचित। ई कविता एहि संग्रह अंतिम कविता अछि।

2

मैथिली भाषाक परंपरानुसार विभक्ति सटबाक चाही, मैथिलीक सहोदरी भाषा (सहोदरी शब्द राजनैतिक बला नै)मे सेहो विभक्ति सटै छै,, एतए धरि जे गीता प्रेस, गोरखपुरसँ प्रकाशित सभ हिंदी किताबमे सेहो विभक्ति सटल रहै छै। प्रस्तुत संग्रहमे 'पर' छोड़ि सभ विभक्ति मूल शब्दमे सटल अछि मुदा पता नै किए 'पर'केँ छोड़ि देल गेलै। बहुत लोक मानै छथि (हमरा सहित) जे रचना सहज सरल भाषामे हेबाक चाही तँ बहुत लोक क्लिष्ट भाषाक प्रयोग सेहो करै छथि। ओना ई तँ निश्चिते कहल जा सकैए जे क्लिष्ट भाषाक एकटा फायदा ईहो जे ओकरा बुझबाक लेल मेहनति करए पड़ैत छै आ अंतत: ई अध्ययन पाठक-आलोचक सभ लेल नीक होइत छै। प्रस्तुत कविता संग्रहमे अधिकांशत: क्लिष्ट भाषाक प्रयोग भेल अछि। प्राय: एहन भाषा बला कविता संग्रह वा पद्य संग्रह बहुत कम प्रकाशित भेल अछि 1990 केर बाद (अपवादमे विजयनाथ झाजीक गजल संग्रह अछि जे कि 2008मे प्रकाशित भेल)। बहुत वर्तनी क्षेत्रीय उच्चारणक हिसाबसँ अछि आ कमसँ कम मैथिलीक हितमे अछि। बहुधा देखल जाइए जे कवि सभ अपन क्षेत्रीय उच्चारणकेँ बिसरि केंद्रिय उच्चारणपर बल देबए लागैत छथि (कारण जे हो) मुदा एहि संग्रहमे क्षेत्रीय उच्चारणकेँ राखल गेल अछि। हरेक लोकमे किछु ने किछु गुण-अवगुण रहिते छै, कवि सेहो लोके होइत अछि तँ कविक रचनामे सेहो गुण-अवगुण रहबे करतै। प्रस्तुत संग्रहमे सेहो नीक-साधारण कविता दुनू अछि। किछु कविताकेँ पुनर्लेखन कएल जेबाक चाही तँ किछु कविता मैथिलीक विरल कविता बनि कऽ आएल अछि। गुण-अवगुण समेत ई कविता संग्रह वर्तमानक नै भविष्यक अछि आ एकर अन्य पाठ निर्धारण बीस-पचीस बर्खक बाद संभव हेतै।

सामंती सभहक विरुद्ध तैयार कवि
अरविन्द श्रीवास्तव

लगतार तेज होइत संगीतक कारणें लोक बहीर भऽ रहल अछि मुदा ओ सभ बहीर छथि तँइ आर बेसी जोरसँ संगीत बजाबऽ पड़ि रहल छै—मिलान कुंदेरा।

अरविन्द ठाकुरक रचनात्मक धमक साहित्यिक क्षेत्रमे एनाहिते सुनाइ पड़ि रहल अछि। अरविन्द जी अपन रचनाकालमे संवेदनहीन उत्तर आधुनिकता संगे-संग साम्यवादी सत्ता के खंडित होइत देखने छथि। ई साम्यवादी सत्ता जे पूरा संसारमे अपन बात छाती ठोकि कहबाक तागति राखै छल। ई साम्यवादी सत्ता जे धरतीपर सह-अस्तित्व केर भावना आ ओकर पक्षमे ठाढ़ छल। ई साम्यवादी सत्ता जे जनताक संग ठाढ़ छल सएह साम्यवादी सत्ता आइ अपन घर तोड़ि लेलक। आ आब जखन की केबाड़ खोलिते हाट-बजार चौअनियाँ मुस्कानक संग वेलकम करैए हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नै जे अरविन्द ठाकुरक रचनात्मक दुनियाँ एही परिस्थिति सभहक उपजा अछि। हम ऐ उपजा के नव नै कहि सकै छिऐ किएक तँ ई रचनाक्रम कोनो एक काल खंडमे नै अबैए आ ने ई रचनाक्रम कोनो एकटा सत्ता, विधा वा विचारधारापर अछि। अरविन्द जीक बहुरंगी लेखनक सभसँ बड़का विशेषता अछि—सच लिखबाक साहस।

अरविन्द ठाकुरकेँ पहिल बेर हम करीब पचीस बर्ख पहिने पूर्णियासँ प्रकाशित 'कला' पत्रिकामे पढ़ने छलहुँ। आ ओही दिनक आस-पास ओ हमर साहित्यिक परिचयमे एला। मधेपुरामे पुलिस कप्तान मनमोहन सिंहक पोथी 'मेरे में चांदनी' केर लोकार्पण आ कवि सम्मेलन आयोजित करबाक क्रममे अरविन्द जीकेँ आमंत्रित करबाक अवसर भेटल छल। ऐ सम्मेलनमे पटनासँ गीतकार गोपीवल्लभ सहाय, सिद्धेश्वर आ पंजाबक किछु शाइर सहित कोसी इलाकाक अधिकांश कवि-रचनाकारक भागीदारी छल। अरविन्द जीसँ एही आयोजनमे पहिल भेंट भेल आ अपन पत्रिका

'सिलसिला'मे हुनक गजल प्रमुखतासँ प्रकाशित केलहुँ। अरविन्द जीक संग विरासतक गहींर संबंधक चर्चा हम अपन पिता हरिशंकर श्रीवास्त 'शलभ'सँ कतेको बेर सुनैत रहलहुँ। अरविन्द जीक पिता बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'जीक कतेको खिस्सामे हुनक समाजवादी विचारधारा, समाजिक समरसता, नैतिकता आ आत्मसम्मानक विचार भरल छल। अरविन्द जी अपन लेखनमे एही विरासतकेँ बचा कऽ रखलनि अछि। 'परती टूटि रहल अछि' नामक पोथीसँ—...'मान्यवर हम अहाँक नै दोसर पार्टीक कूकुर छी' ऐ अढ़ाइ पाँतिमे कतेक दर्द कतेक आत्मसम्मान छै तकरा शब्दमे कहनाइ मोश्किल छै।

अरविन्द जी अपन कवितासँ समाजिक बदलावक जरूरतिकेँ सोझाँ-सोझी जोड़ै छथि। हुनक कविता सामंती मोहफिलसँ निकलि जनताक पक्षमे ठाढ़ होइत अछि आ ओकरा संघर्षक हिस्सा बनबासँ आपत्ति नै छै। अरविन्द जीक लेखकीय सक्रियता साहित्यिक आ समाजिक सरोकारसँ प्रेरित रहल अछि इएह कारण अछि जे साहित्यिक सृजनक संग-संग ओ समाजिक प्रतिबद्धताकेँ सेहो अपन सजगताक हिस्सा मानलनि। अरविन्द जी पटनासँ प्रकाशित 'लोक-प्रसंग' पत्रिका मे 'ठाकुर का ठाँव' नामक शीर्षकसँ समसामयिक राजनीतिक घटनाक्रमकेँ बहुत बेबाकी आ बेखौफ भऽ कऽ पाठक सामने आनैत रहला।

दरभंगासँ प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'मिथिला आवाज' मे बतौर संपादक अरविन्द जी साहित्य आ समाजक प्रति अपन दायित्वक निर्वाहमे कनिको पाछू नै हटला। बिहार प्रगतिशील लेखक संघक प्रति हुनक समर्पण देखैत हुनका उपाध्यक्ष पदक जिम्मेवारी देल गेलै। मूलत: कवि अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व हिंदीक कवि राजेश जोशीक एक पाँतिमे समेटल जा सकैए...'हम कविक ब्रह्मांडक एकटा नुकाएल अकासगंगा छी'।

परती टूटि गेलै
मुन्नाजी

सनातनी रचना प्रकियामे आबि रमि गेला। अगिला पाँतिक पछिला सेवक जकाँ नै। अपन लूरि–बुद्धिसँ बनाओल लीख धऽ लेलनि। आगाँ बढ़ि संगोर भेटलनि। मुदा ओइ संगोरसँ उत्साहित रहितो चौबटिया तकैत रहलाह। जतै गर लगलनि अपनाकेँ कतिया अपन सोच–विचारसँ अड्डा जमा लैत छलाह। संगबैया सभकेँ लागनि कठाइन। तखन ओ सभ शुरू कऽ दै छलाह हुनक अदगोइ–बदगोइ। अपन आन–बान–शानक रक्षार्थ सोचि आगाँ बढ़बाक चेष्टा करैत रहैत छलाह। मुदा फेर वएह रामा वएह कठोलबा। किएक तऽ अपनाकेँ कतिया कऽ रखबामे हानि होइन। कियो अहंकारी तँ कियो निरंकारी कहनि। मुदा हम हुनकर सोचें हुनका चमत्कारी बुझै छी।

अपन नव आँखि–पाँखिसँ ओ उत्कृष्ट रचनाकारक रूपें देखार भेला। अरविन्दजी जखन कविता लिखब शुरू केलनि तखन ओ खेत उपजाउ नै छलै। उस्सर छलै, परती पड़ल छलै। अपने नित नव रचनासँ ओकरा जोति कोड़ि दुनू पक्षकेँ चित्रित करबाक सफल–असफल प्रयास करैत रहलाह। एक दिस वंशानुगत वा परंपरानुगत अपन सनातनी सोचकेँ रखलनि तँ दोसर दिस सामंती सोचसँ पीड़ित समाजक ओइ वर्गकेँ चिन्हित कऽ रचनात्मक रूपें चरियबैत रहलाह। हुनक रचनामे उच्च वर्गक संग निम्न वर्गक समाजिक दशा–दिशा एकै संग अभरि कऽ सोंझा अबैत रहल।कतौ अहंकारक समावेश नै। सगरो अपन सोचक चिरहारा खेलैत सब रचना समाजक सब वर्गसँ उखड़ि सोंझा आएल अछि। एक कविक मानसिकता जे झाँपल चीजकेँ उघारि सोंझा आनए तकर माँजल कलाकार छथि अरविन्द जी। एखनो अपन उत्कृष्ट समाजिक आ गमैया परिवेशकेँ सहेजि कऽ रखने छथि। समाजक सब पक्ष जाहिमे अपन समवेत स्वर उभारबाक प्रयासमे सफल देखाइ छथि।

गाममे रहि कऽ अरविन्दजी गमैया सोचकेँ उभारबाक पूर्ण प्रयास करैत रहलाह। ओ जमींदार मात्र नै एकटा गिरहथक भूमिकाक निर्वाह करैत रहलाह अछि। तें हिनकर रचनामे गमैया जीवन आ गामक आचार-विचार संस्कार प्रस्फुटित भऽ सकलनि। किछु गोटे अपनाकेँ गाममे रहि गमैया रचनाकारक दंभ भरैत छथि मुदा अरविन्दजी गामसँ शहर, महानगरक जीवनक सुख-दुख भोगियो कऽ गमैया जीवनक उत्कृष्टता अपन रचनामे देखबै छथि। गमैया शब्दक ठाम-ठीम प्रयोग जगदीश प्रसाद मंडलजीक पछाति हिनक रचनामे सहजहिं अभरत। 2011 मे विहनि कथापर किछु गोटे जहन झौहरि शुरू केलथि तखन अरविन्दजी ओहि शब्दक पुरान प्रयोगी रहथि। बात विहनि शब्द दऽ उठलै तँ अरविन्दजी कहलखिन जे झौहरि करऽ बला सभ गिरहत नै हेता। बटैयापर खेती करबैत हेता। हम अपने खेतपर रहि सभ दिनसँ 'विहनि' केर उपभोगी छी। आगाँ कहलनि जे हमर कविता आ गजलमे विहनि शब्द आ ओकर अभिप्राय बहुत पहिने अभरि सोझा आबि चुकल अछि। हमरा कहबाक जे अरविन्दजी गमैया शब्दावलीपर सेहो मजगूत पकड़ बनौने छथि।

कविताक पछाति अपन कथामे सेहो ई गमैया परिवेशकेँ देखौने छथि। गामक सामाजिक रूपरेखाके उजागर करैत रहलाह अछि। हिनक कथा समाजक सभ वर्गक प्रतिनिधित्व करैए। कविते जकाँ उच्चा आ निम्नवर्गीय सोचक बीच पुल जकाँ काज करैए हिनक रचना। कविता संग्रह 'परती टूटि रहल अछि' केर हिन्दी अनुवाद (अनुवादक अजित आजाद)सँ हिंदी जगतमे सेहो हिनक रचना पसरल। ऐ सभहक पछाति आएल 'बहुरुपिया प्रदेशमे'। ई गजल संग्रह हिनका रचनात्मक रूपें आरो सक्कत केलक अछि। ओना तँ ऐमे प्रकाशित गजल सनातनी गजल वा संगोर जकाँ बहरहीन, छंद मुक्त अछि। मुदा बहरमुक्तो होइत हिनक गजल सभमे गमैया सोच, गमैया शब्दक समावेश अछि जै कारणसँ हिनक गजलमे प्रवाह जकाँ आबि गेल अछि। ऐ तरहें अरविन्दजी रचनारत रहि गमैया शब्द आ एकर चित्रणसँ परती पड़ल रचनाक जमीनकेँ तोड़बाक सफल प्रयास केलनि। तँइ हिनका गामक कथाकार वा कवि कहबामे हमरा कोनो संकोच नै। विशेष कऽ गाम-समाजक आ ओकर शब्दक कोनो घटनाकेँ देखार करबाक नीयत हिनका अपन समकालीन रचनाकार सभसँ बेसी आगू बढ़ा दैत अछि।

बहुरूपिया रचनामे
ओमप्रकाश

गजलमे हम रूचि राखैत छी। संगहि मैथिली मे थोड बहुत गजल सेहो लिखै छी आ गजलक पोथी सब पढबाक इच्छा रहै ए। मैथिलीमे बहुत कम गजल संग्रह अछि आ ओहो सुलभ नै होइत रहै ए। एहन परिस्थितिमे हमरा श्री अरविन्द ठाकुरजीक सद्यः प्रकाशित मैथिली गजल संग्रह 'बहुरूपिया प्रदेशमे' पढबाक अवसर भेंटल आ हम एहि पोथीकेँ आद्योपान्त पढ़लहुँ।

सबसे पहिने हम श्री अरविन्द ठाकुरजीकेँ मैथिली गजलक पोथी लिखबाक लेल बधाई दैत छियैन्हि। मैथिली गजलक उत्थान लेल प्रत्येक डेग हमरा महत्वपूर्ण लागै ए। पोथीक गेट अप बड्ड सुन्नर अछि। टाईप आ कागतक कोटि सेहो उत्तम अछि। पोथीक भूमिका गजलकार अपने लिखने छथि आ ओहि मे गजल आ एहि संग्रहक सम्बन्ध मे बहुत रास गप सब कहने छथि। जेना पृष्ठ संख्या सातक दोसर पारा मे गजलकार कहैत छथि जे 'मैथिलीक मिजाजक सीमा (इ मैथिलीक नहि, हमर अपन सीमा भऽ सकैत अछि) केँ देखैत गजलक व्याकरण (रदीफ, काफिया, मिसरा, मतला, मकता आदि)क स्थापित मापदंडक कसबट्टी पर हमर सभ गजल खरा उतरत तकर दाबी तऽ नहिए टा अछि बल्कि हम तँ इ सकारय चाहै छी जे...हमर सीमाक कारणेँ प्रस्तुत गजल मे कएक जगह सुधि पाठक लोकनि केँ त्रुटि भेटि सकैत छनि।' एहि पाराक अंत मे ओ कहै छथि जे बहरक दोख किछु शेर मे भेटि सकैत अछि। हम गजलकारक सराहना करैत छी जे ओ भूमिका मे अपने कएक ठाम बहरक आ आन दोख हएब स्वीकार कएने छथि। पोथी केँ आद्योपान्त पढ़ला पर हमरा इ नै बुझाएल जे एहि संग्रहक गजल सब कोन-कोन बहर मे लिखल गेल अछि। अरबीक कोनो टा बहर मे कोनो गजल नहिए अछि, मैथिली मे आइ-काल्हि प्रयुक्त

होइ बला सरल वार्णिक बहर मे सेहो कोनो गजल नै अछि। गजलकार केँ प्रत्येक गजल मे इ लिखबाक चाही छल जे कोन बहर मे गजल लिखल गेल अछि। जँ इ 'आजाद-गजल'क संग्रह थीक, तँ हुनका एहि बातक उल्लेख करबाक चाही छल। भूमिकाक उपरोक्त पाराक शुरू मे गजलकार कहै छथि जे मैथिलीक मिजाज केँ देखैत एहि मे उर्दू-हिन्दी गजलक मिजाजक नकल करबाक प्रयास कएल जाइत तँ एकरा बुधियारी नहिए टा कहल जायत आओर सफलता सेहो नहि भेंटत। हम हुनकर गप सँ सहमत छी जे नकल करब उचित नहि। मुदा एकटा गप हम कहऽ चाहैत छी जे प्रत्येक विधाक एकटा नियम होइत छै आओर जाहि क्षेत्र मे ओहि विधाक उदय भेल रहैत छै ओहि क्षेत्र मे स्थापित भेल नियमक पालन केने बिना कोनो रचना मूल विधा मे कोना भऽ सकैत अछि। जेना मैथिली मे समदाउन आ सोहरक परम्परा छैक आ जँ पंजाबी मे वा गुजराती मे वा की कोनो आन भाषा मे समदाउन आ सोहर गाबऽ चाही तँ नियम कोना बदलि जेतैक। जँ नियम बदलतै तँ ओ दोसर चीज भऽ जेतैक। तहिना गजल अरब क्षेत्र मे जन्म लेलक आ इ स्वाभाविक छै जे एकर नियम (व्याकरण) ओहि क्षेत्रक स्थापित मानदण्डक आधार पर बनल। स्थापित मानदण्डक पालन करब नकल नहि कहल जा सकैत अछि। आ जे नकलक गप करी तँ 'गजल' कहब अरबी-हिन्दीक नकल थीक। एक दिस गजलकार 'गजल' कहबाक लोभ नै छोडि रहल छथि आ दोसर दिस गजलक व्याकरणक नियम पालन केँ नकल कहै छथि, इ उचित नै बुझाएल। गजल स्थापित मानदण्ड पर जँ नै कहल गेल तँ रचना केँ गजलक स्थान पर दोसर नाम देल जा सकैत अछि। पृष्ठ संख्या दस पर दोसर पारा मे गजलकार कहै छथि जे ओ जीवन सँ सिदहा लैत छथि। इ स्वागत योग्य गप भेल। जीवनक सिदहा सँ तैयार व्यंजन सोअदगर हेबे करतै। मुदा भोजन बनबै काल चाउरक सिदहा पानि मे सोझे फुला कऽ परसि देला सँ भात नहि कहाइत अछि। चाउरक सिदहा केँ अदहन मे देल जाइ छै तखन भात तैयार होइ छै। तहिना जीवनक सिदहा जँ व्याकरण, नियम आ चिन्तन-मननक अदहन मे पकाओल जाइत अछि तँ सोअदगर रचना भेटैत अछि। विधा विशेषक मापदण्ड तोडबाक क्रांतिकारी घोषणा कएला टा सँ किछु विशेष फायदा वा उमेद तँ नहिए जगै ए। जँ कियो मापदण्ड तोडै छथि, तँ मापदण्ड पर चलै बला केँ नकलची आ बाजीगर कहब उचित नहि। गजल आ फकरा आ दोहा मे थोडेक अंतर तँ छै जे रहबे करतै। अस्तु, इ गजलकारक अपन विचार छैन्हि आ आब प्रकाशित सेहो छैन्हि।

गजल संग्रहक सब गजल पढ़लौं। विषय वस्तु सब नीके लागल। गजलक

व्याकरणक आधार पर कहि सकैत छी जे बहरक दोख तँ प्रत्येक गजल मे छैक आ जँ इ आजाद–गजलक संग्रह थीक तँ गजलकार इ गप कतौ नै कहने छथि। गजलकार केँ स्पष्ट करबाक चाही छल जे कोन कोन बहर मे गजल सब लिखल गेल अछि। हमरा बुझने गजलक कोनो शीर्षक नै होइत अछि, मुदा प्रत्येक गजल केँ एकटा शीर्षक देल गेल अछि। बहरक अतिरिक्त रदीफ आ काफियाक नियमक सेहो कएक ठाम पालन नै भेल अछि आ इ गप गजलकार भूमिका मे सेहो स्वीकार कएने छथि। जेना पृष्ठ बाईस मे मतलाक दुनू पाँति, दोसर शेर आ पाँचम शेर मे काफिया मे 'आयब' प्रयोग भेल अछि, तँ दोसर आ चारिम शेर मे 'अब' क प्रयोग अछि। पृष्ठ चौबीस मे मतलाक पहिल पाँति मे काफिया मे 'अ' आयल अछि आ दोसर पाँति आ अन्य शेर मे 'आत' आयल अछि। पृष्ठ पच्चीस मे काफिया की छै, से नै बुझाएल। पृष्ठ तिरपन मे प्रत्येक पाँति मे काफिया एकदम फराक फराक अछि। पृष्ठ अनठाबन मे मतला, दोसर शेर आ चारिम शेर मे काफिया मे 'अल' प्रयुक्त अछि आ आन सब शेर मे काफिया मे 'अ' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ उनसठि मे सेहो रदीफ आ काफियाक स्पष्टता नै अछि। पृष्ठ छियासठि मे काफिया मे कतौ 'अल' आ कतौ 'आओल' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ सडसठि आ तिहत्तरि मे सेहो काफियाक नियमक उल्लंघन भेल अछि। तहिना संयुक्ताक्षर बला काफियाक नियम सेहो एक दू ठाम हमरा हिसाबेँ ठीक नै अछि। एकर अतिरिक्त आओर कएक ठाम काफियाक नियमक पालन नै भेल अछि। हम उदाहरण स्वरूप किछु पृष्ठक उल्लेख कएलहुँ। हमर इ उद्देश्य नै अछि जे खाली दोख ताकल जाय, मुदा जँ गजल कहै छियै तँ गजलक नियमक पालन हेबाक चाही। सब गोटे केँ जानकारी लेल इ बता दी की बिना रदीफक गजल तँ भऽ सकैत अछि, मुदा बिना दुरूस्त काफिया भेने गजल नै भऽ सकैत अछि।

भूमिका सँ एकटा बात आर स्पष्ट होइ ए जे गजलकार मई 2008 सँ मैथिली मे गजल लिखब शुरू केलथि, ओना ओ हिन्दी मे पहिनहुँ गजल लिखैत छलाह। एकर मतलब इ भेल जे गजलकार 'अनचिन्हार आखर' (मैथिली गजल केँ समर्पित ब्लाग) सँ बहुत बाद मे मैथिली गजल लिखब शुरू कएने छथि आ मैथिली गजलक वरीयता मे बहुत बाद मे आयल छथि। 'अनचिन्हार आखर' ब्लाग देखला सँ पता चलै छै जे गजलकार एहि ब्लाग पर सेहो अपन कएक टा गजल 2009 सँ एखन धरि देने छथि। ओ 'अनचिन्हार आखर' ब्लाग सँ चिन्हार छथि, तँ इ उमेद अछि जे एहि ब्लाग पर प्रकाशित मैथिली गजलक विस्तृत व्याकरण केँ जरूर देखने हेताह। इ उमेद छल जे प्रस्तुत गजल संग्रह मैथिली गजलक नब पीढी लेल एकटा उदाहरण

बनत। मुदा एहि संग्रह मे गजलक व्याकरणक जे उपेक्षा भेल अछि, जे गजलकार भूमिका मे स्वयं स्वीकार कएने छथि, निराशा उत्पन्न करैत अछि। मुदा इ संग्रह गजलकारक पहिलुक मैथिली गजल संग्रह अछि, तँ गजलक व्याकरणक गलती भेनाई स्वभाविक अछि। आशा व्यक्त करै छी जे हुनकर आगामी गजल संग्रह मैथिली गजल मे अपन अलग स्थान राखत।

बहुरुपिया प्रदेश मे : एक दृष्टि

राम चैतन्य धीरज

'एकोऽहं बहुस्याम'क अवधारणा ई अछि जे आत्मा एकहिटा होइत अछि, मुदा प्रवृतिभेदक कारणेँ ओ बहुतो रूप मे देखार पड़ैत अछि। वस्तुत: जे भिन्नता अछि ओ भिन्नता प्रकृति वा प्रवृतिक थिकै, आत्मा वा चेतनाक नहि। प्राय: प्रवृतिए भोग आ युद्ध मे लिप्त होइत अछि मुदा जखन प्रवृति आत्मस्थ होइत अछि तँ ओ निर्द्वंद्व अवस्था केँ प्राप्त क' लैत अछि। वर्गहीन भ' जाइछ। अर्थात प्रवृति अपन अज्ञानता सँ मुक्त भ' जाइत अछि; तखने व्यक्ति केँ वास्तविक मुक्ति वा स्वाधीनता भेटैत छैक।

संयोग सँ एम्हर तीन-चारिटा मैथिली कार्यक्रम मे भाग लेबाक अवसर भेटल। प्राय: देखबा मे आएल जे हमर उपस्थिति नगण्य अछि। जहिना राजनीति मे विचार आ व्यवहारक द्वैधता छैक, तहिना प्राय: साहित्यकारो मे विचार आ व्यवहारक द्वैधता छैक। जहिना राजनेताक लेल जनताक भूख, गरीबी आ ओकर रोजगार समस्या राजनीतिक लेल गरमागरम मुद्दा होइत अछि, तहिना प्राय: साहित्यकारोक लेल यैह सभ कथ्य वस्तु होइत छैक। कोनो वैचारिक क्रांति नहि, कोनो व्यवहारिक आन्दोलन नहि। लगैत अछि सभ किछु थम्हि जकाँ गेल अछि। टोली-टोली आ व्यक्ति-व्यक्ति मे बँटल साहित्यकारक लेल अपन-अपन मथनियाँ छनि, जाहि मथनियाँ सँ ओ साहित्यिक सृजन आ क्रिया-प्रतिक्रिया करैत छथि। सुनयबला, पढयबला आ बूझयबलाक सर्वथा अभाव। लगैए जे साहित्य साहित्यकारेक लेल रहि गेल अछि।

हमर उपस्थिति नगण्य अछि माने—दर्शन-दृष्टि सँ सृजन करैबला साहित्यकार नगण्य छथि। दर्शनक एकहिटा दिशा छैक, जे विश्वशांतिक ताना-बाना बुनैत अछि आ प्रेम तथा संघर्षक भाव मे सहयोग आ सहानुभूतिक विवेक प्रस्तुत करैत अछि—ओ थिक वेदांत। वेदांत चेतनाक अखण्डता मे 'सर्वे भवन्तु सुखिन:। सर्वे सन्तु निरामया'क आकाश सजबैत अछि आ ओहि आकाश मे सभक सुखक कामना ओहिना

करैत अछि, जेना तारा अपन प्रकाश सँ प्रकाशित हो। कविता हो, गीत वा गजल जे हो सगरे उत्साह आ उत्सवक अभाव बुझना जाइत अछि। सगरे प्रभाहीन तारा देखार दैत अछि। मुदा प्रतिरोध आ यथास्थितिक वर्णन, चित्रन सगरे देखार दैत अछि।

की कविता वा साहित्य कलात्मक रेचन मात्र थिक, जे बिना व्यवहारिक सोच-विचारक अभिव्यक्त होइत अछि? एखनो साहित्यकारक लग संस्कृति चुनौती बनल अछि आ साहित्यकार सहित अन्य सभ वर्गक लोक हजारो-हजार वर्ष पूर्वक संस्कार मे बन्हाएल छथि—ई प्रश्न गंभीर बनल अछि। एक मात्र सर्वहाराक पक्षधरता मे लिखब साहित्यक उद्देश्य नहि होएबाक चाही, अपितु एकरा संगहि व्यवहार मे ओहि रुढिवादी जड़ता केँ तोड़ब सेहो उद्देश्य होएबाक चाही, जे आत्मोत्कर्ष मे बाधा बनल अछि। तेँ आत्म खोज आवश्यक अछि, जकर सर्वथा अभाव सन लगैत अछि। एही सँ भोगवाद आ अंधविश्वासक परिधि नष्ट होएत, जाहि मे लोक सभ घेराएल अछि।

मित्र अरविन्द ठाकुरक गजल सेहो सर्वहारे प्रेमक अभिव्यक्ति थिक, जे हमरा समाजक अंतिम आदमी आ ओकर आर्थिक मुक्ति तक ल' जाइत अछि। ई बात सत्य छैक जे आत्मवत भाव मे वर्गभेद नहि होइत छैक, मुदा प्रवृतिगत भाव मे वर्गभेद छैक। उपभोग आ संतुष्टिक बाजार गर्म छैक, एहि स्थिति मे वैचारिक दृष्टिक उपयोगिता प्रश्नांकित अछि। अधिकाधिक उपभोग आ अधिकाधिक संतुष्टि क्रय-शक्ति, बाजार आ वस्तु पर निर्भर होइछ। वैचारिक दृष्टि मे तँ आवश्यकता निर्धारित अछि, मुदा अधिकाधिक उपभोग आ अधिकाधिक संतुष्टि जीवनक मापदण्ड भ' जाइक तँ नैतिक पाठ पढाबएबला साहित्य क्षणभंगूर आ मनोरंजनक दृष्टि बनि जाएत आ कि नहि? भोग आ युद्ध मे सभक मन स्थिर भ' गेल अछि, ओहि स्थिति मे दर्शन आ विचारक की हेतैक? मनुष्य केँ की चाही—बाजार, वस्तु आ क्रयशक्ति—तखन विचार ल' क' की हेतैक? यैह कारण छैक जे राजनीतिक दृष्टि असफल भ' रहल अछि। क्रयशक्तिक वृद्धि होअए तेँ राजनीति मे अनीति आ पाप बढि रहल अछि। अपराध प्रवृति वा हिंसात्मक मनोभावक पाछू एकमात्र कारण क्रयशक्तिक होड़ अछि; प्रतिस्पर्धा अछि आ अंतत: अनैतिकता अछि—जे कोनो वर्ग केँ छोड़ि नहि रहल अछि। तेँ ओ साहित्यकार आइ प्रभावी छथि जे साहित्यक व्यवसाय करै छथि। यैह अज्ञानता थिकै, तेँ दर्शन-दृष्टिक आवश्यकता स्पष्ट भ' गेल अछि; जाहि सँ प्रवृति आत्मस्थ भ' सकय। वस्तुत: एहि अज्ञानता केँ भेदरहित ज्ञाने समाप्त क' सकैत अछि। जाधरि मानव मे ज्ञानक संबर्द्धन नहि होएत, बौद्धिक निष्ठा नहि होएत आ निश्चयात्मक चेतनाक व्यवहार नहि होएत, ता धरि मुक्ति संभव छै की? मित्र अरविन्द ठाकुरक

गजल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेश मे' जे कह' लेल चाहैत अछि, ओकर चित्र एहि गजल-संग्रहक नामकरणेँ सँ स्पष्ट भ' जाइछ जे कोनो एहन ज्ञान नहि छैक, जे मानव मे एकात्मकता आनि सकय।

एकहि राजनेता बहुरुपियाक भूमिका मे स्वयं केँ प्रदर्शित करै छथि आ एकर प्रभाव मे जनसामान्यक बाध्यता सेहो छैक। तेँ ओ सर्वहारा हो वा अन्य वर्ग सभ मे क्रयशक्तिक होड़ मचल अछि। बौद्धिक रुप सँ जे पिछड़ि रहल छथि, आजुक परिवेश मे वैहटा पछुआएल छथि, नहि तँ प्रतिस्पर्धा मे सभ लागल अछि। श्री ठाकुर स्वयं साहित्य मे द्वैध चरित्रक स्थिति केँ स्वीकार करैत एहि पोथीक भूमिका (अर्ज करक अछि जे...) मे लिखलनि अछि जे — 'बहुत रास रचनाकार कलाक अनेकानेक आवरण मे स्वयं केँ प्रस्तुत क' अपन रचना मे अपन वास्तविक जीवन सँ भिन्न जकाँ व्यक्त होएबाक बाजीगरी करैत छथि।' विचार आ व्यवहारक सामंजस्य जखन टुटि जाइत छैक तँ एहीठाम सँ वैचारिक स्खलन प्रारंभ होइत अछि आ संवेदनशीलताक समस्या उत्पन्न होएत छैक। हमर ई अनुभव अछि जे कविता मे, गीत वा गजल मे जे भाव व्यक्त होइत अछि ओहि मे प्रतिरोध तँ अवश्य होइत छैक, मुदा व्यवहार मे ओहो क्रयशक्तिक बढोतरीक लेल अपस्याँत होइत छथि। चारित्रिक द्वैधता मे वैचारिक समस्याक जन्म होएब स्वाभाविक अछि। जे विचार व्यक्त करै छथि वैह जखन प्रोफेशनल छथि तँ फेर हुनक विचारक प्रभाव जनसामान्यपर जतेक होइ। तेँ साहित्य नहि तँ अंधविश्वास सँ लड़ि सकैत अछि आ नहि भोगवाद वा अधिकाधिक संतुष्टिवाद सँ।

विज्ञानक कारणेँ जे परिवर्तन भ' रहल अछि आ ओकर प्रभाव जे समाज पर पड़ि रहल छैक आ ओहि सँ जे खतरा उत्पन्न हेतैक तकर भविष्यवाणी करैत श्री ठाकुर अपन गजलक पाँति केँ सजबैत छथि, देखबाक थिक —

नइ पूजीक आन-बान, नहि ओकर शान बचत
नइ जखन खेतिहरक ठोर परहक गान बचत
दूध लेल नेना आ रोगी हाकरोश करत
नइ जखन गाम मे मालक बथान बचत
यूरो आ डालर सँ पेट भरैक भांज करू
जँ खेतक आरि नइ आ ने मचान बचत
आयातित बीया आ पटौनी अकास सँ
दैव आ विदेश बलेँ कोना किसान बचत

हरदी नइ हर्रे नइ बनियाँ सरकार मे
'अरबिन' पेटेन्ट सँ की बासमती धान बचत

समाजक अंतिम आदमी कथी लए अंतिम आदमी अछि? वस्तुतः शारीरिक सेवा लए अंतिम आदमी होइत अछि। जाहि ठाम बौद्धिक चालाकी छैक वा तकनीकी ज्ञान छैक, ओहि ठाम पूंजीवादी क्रयशक्ति होइत छैक आ जाहि ठाम नहि छैक, ओहि ठाम शारीरिक सेवा होइत छैक। आइयो समाज मे शारीरिक श्रम करयबलाक विपन्नता छैक, किएक तँ ओ तकनीकी ज्ञान नहि राखैत अछि। एहि वर्गक क्रयशक्ति सभ सँ कमजोर होइत छैक। ई सत्य छैक जे पूंजीपति वा मालिक वर्गक शान खेतिहर मजदूर होइत अछि, मुदा ओकर महत्व सामाजिको दृष्टि सँ कमजोर अछि— श्री ठाकुर एकर पक्षधरता मे अधिकाधिक गजलक भाव केँ प्रस्तुत कयलनि अछि। हिनक चिन्ता भारतक ओहि अवस्था सँ अछि, जाहि अवस्था मे भारत साम्राज्यवादी शक्तिक उपनिवेश बनल जा रहल अछि। देश आ गामक चिन्ता हिनक गजल मे प्रमुखता सँ आयल अछि आ सभ सँ बेसी प्रभाव ओहि चिन्ता मे अछि जाहि मे भारतीयता नष्ट भ' रहल अछि।

व्यक्तिक इच्छा आ ओकर संतुष्टिक प्रश्न पर हिनक लेखनी बहुत किछु कहैत अछि, मुदा अज्ञानता सँ मुक्तिक बाट नहि देखा पबैत अछि। तँ सामाजिक यथार्थक चित्रन आ वर्णन होइतो कुण्ठा, संत्रास, निराशा आ प्रतिरोधक स्वर हिनक गजलक मूल राग बनल अछि। संगहि वर्तमान समाजक बदलैत चित्र आ पूंजीवादी मानसिकता मे उबडुब करैत व्यक्ति-व्यक्तिक इच्छा आ ओकर कार्यरुप तथा प्राचीन उत्पादन-व्यवस्थाक टूटैत स्थिति हिनक अभिव्यक्तिक प्रतिमान बनल अछि, संगहि हथियारक होड़ आ विश्वस्तर पर शान्तिक समस्या सेहो हिनका प्रभावित करैत छनि। तथापि हिनक चेतना अंततः साम्राज्यवादी खतरे सँ आहत होइत अछि। वस्तुतः ई प्रभावन ओहि वर्गक प्रति वैचारिक प्रेमक आख्यान थिक, जे मानवीय रुप सँ उपेक्षित अछि।

परमात्माक इच्छा थिकै संसार, तँ द्वन्द्वक स्थिति बनिते अछि। मुदा सत्यक प्रत्यक्षणक संगहि द्वन्द्व निवृत भ' जाइत अछि—तँ सत्यक अनुभव मे परमात्माक अस्तित्व इच्छा रहित भ' जाइत अछि, कामना रहित भ' जाइत अछि। अर्थात इच्छा आ कामना सँ मुक्ति। वास्तविक मुक्ति यैह थिकै, एहि मे क्रयशक्तिक चाहना आवश्यकतानुकूल उपभोग आ क्षमतानुसार कार्य मे सीमित भ' जाइत अछि। तँ राग-द्वेषक प्रवृत्यात्मक परिधिक बन्हन टूटि जाइत छैक आ लोक परम्परागत कर्मकाण्डो सँ मुक्त भ' जाइत अछि। ई बात सत्य छैक जे वेदांत आत्माक अस्तित्व सँ अभेद

केँ स्वीकार करैत अछि; मुदा लोक ई नहि बुझैत अछि जे आत्मा प्रवृति कारण सँ भेदात्मक जगत मे होइत अछि। तेँ आत्माक अभेद होइतो प्रवृतिक भेद भ' जाइत अछि आ एही लेल प्रवृतिक दोष सँ उतपन्न आक्रामकता आ अराजकताक प्रतिकार वा प्रतिवाद अवश्य भ' जाइत अछि। अस्तु, ई नहि मानबाक चाही जे आत्मोत्कर्ष मे शांतिक लेल प्रयत्न एवं मानव मात्र मे समान भावक चेतना वेदांतेक थिक। यैह चेतना विश्व मानवताक स्थापना करैत अछि।

गजलकार श्री ठाकुर वस्तुत: वेदांत केँ एहि विचार सँ नहि देखलनि अछि, तेँ लिखैत छथि—

निगमागम-पुराण सम्मत छै-जीव अंश परमात्मा के
मच्छर लेल कछुआ सुनगाबी, ई केहन दन गप लगैए

ओना वेदांत सभहक रक्षक अछि आ विवेक सम्मत विचारक प्रधानता दैत अछि, तेँ दोसरा केँ उत्पीड़ित करबा एहन प्रवृतिक विरोध करैत अछि। आजुक रिश्ता-नाता वस्तुत: विवेक वा ज्ञान सँ नहि अछि, अपितु अर्थप्राप्ति आ भूख सँ अछि। एहि अर्थ मे मनुष्य सेहो वस्तुए मानल जाइछ, तेँ भेद-भाव सामान्य गप थिक। जा धरि इच्छा वा भूख ज्ञान वा विवेक सँ नियंत्रित नहि होएत ता धरि की वर्गहीन आत्मा वा चेतनाक समाज भ' सकैछ; ई प्रश्न हमरा सभक समक्ष मुँह बौने ठाढ अछि। श्री ठाकुर वर्तमानक बास्तुक-विद्रुपता केँ रेखांकित करैत लिखैत छथि—

मारू, मारू, मारि भगाबू—सगर टोल मे एक्के बोल
तखन करी रक्षक के दाबी, ई केहन दन गप लगैए
पेट बनाबैछ अपन ढंग सँ सभटा रिश्ता-नाता, तेँ
हम बिहारी, तू पनिजाबी, ई केहन दन गप लगैए

वस्तुत: ठाकुर जी अपन गजल मे सामाजिक यथार्थ केँ आ व्यवसायिक विद्रुपता केँ सूक्ष्म रुप सँ रेखांकित कयलनि अछि। महत्वपुर्ण तथ्य ई अछि जे गजलक व्याकरण केँ ई ओतेक स्थान नहि देलनि जतेक शब्द आ भावात्मकता केँ। तेँ भावक क्षोभ हिनकर गजल मे नहि अछि। प्रतीक, बिम्ब आ नव उपमानक सृजनशीलता एवं कलात्मकता हिनक गजल मे महत्वपुर्ण रुपेँ व्यक्त भेल अछि, जाहि सँ व्यंजनाक मार्मिकता सिद्ध भ' जाइत अछि। अस्तु, मित्र श्री ठाकुरक दृष्टिक पैनापन मे वेदांतक समीचीन बोध अयबाक चाही, एही विश्वासक संग हिनक सारगर्भित भावक प्रति संवेदनशील छी—एही बातक संग हिनका बहुत-बहुत साधुवाद!

अरविन्दजीक आजाद गजल

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'

मैथिलीयोमे गजल पर खूब काज भेल अछि आ एखनो भ' रहल अछि। गजेन्द्र ठाकुर गजलक व्याकरण विस्तार सँ प्रस्तुत केलनि आ अपनो बहुत गजल लिखलनि. आशीष अनचिन्हार मैथिली गजल ले' स्वतंत्र साइट बनाक' व्याकरण कें स्थापित करबामे अपनो योगदान करैत अपनो बहुत गजल लिखलनि आ आओर बहुत गोटे सँ गजल लिखबौलनि आ से काज एखनो क' रहल छथि हिनका दुनू गोटेक अतिरिक्त आर बहुत गोटे मैथिली गजलकें समृद्ध करबामे योगदान क' रहल छथि ई प्रसन्नताक बात थिक। हमरा जनैत गजलकारक मुख्य तीनटा वर्ग अछि। एक वर्ग ओ अछि जाहिमे रचनाकार पहिने गजलक व्याकरण पढ़लनि आ तकरा बाद ओही अनुसारे गजल लिख' लगलाह. दोसर वर्गमे ओ गजलकार सभ छथि जे पहिने गजल लिख' लगलाह, बादमे गजलक व्याकरण दिस ध्यान गेलनि आ ओहि अनुसारे लिखबाक प्रयास कर' लगलाह. तेसर वर्गमे ओ लोकनि छथि जे गजल सूनि क', पढि क' लीख' लगलाह आ लीखैत चल गेलाह, पाछां उनटि क' नहि तकलनि.ओ मात्रा अथवा वर्ण गनि क' शेर लिखबाक-कहबाक चक्करमे नहि पड़ि अपन बातकें केंन्द्रमे राखि धड़ाधड़ लिखैत चल गेलाह आ लिखैत जा रहल छथि।

'बहुरूपिया प्रदेशमे' मात्र 24 दिनमे लीखल गेल 66टा गजलक संग्रह थीक जाहिमे गजलकार अरविन्द ठाकुरजीक कथन पर ध्यान देल जाए: 'हम जे कहय चाहैत छी से महत्वपूर्ण छैक,ताहि लेल व्याकरण टूटय कि विधा विशेषक मापदंड,तकर हमरा परवाहि नहि अछि। ओकरा भल चाही त'हमर सहायक हुअए,बाधा ठाढ नहि करए।' गजलकारक एहि कथनकें ध्यानमे राखि जँ हिनक गजल पढब त नीक लागत। 66 टा गजलमे 10टा गजल एहेन अछि जाहिमे रदीफ अछि, काफिया नहि। 16 टा एहेन अछि जाहिमे काफिया अछि,रदीफ नहि. 40 टा गजलमे रदीफ आ काफिया

दुनू अछि। किछुए गजल एहेन हएत जाहिमे बहरसँ सम्बन्धित दोष नहि हो.मुदा,बहुत रास शेर सभमे जे बात कहल गेल अछि से व्याकरणक त्रुटिकें झांपन देबामे बहुत समर्थ लगैत अछि। सभ गजलक अंतिम शेरमे गजलकारक नामक प्रयोगक प्राचीन परंपराक निर्वाह नीक जकाँ कएल गेल अछि जे बहुत गजलकार नहि क' पबैत छथि। गजलकारक समक्ष सामाजिक,राजनीतिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यनक विशाल क्षेत्रक अनुभवक संपदा छनि जे जहां-तहां विभिन्न गजलक विभिन्न शेर सभमे प्रगट भेल छनि। एकर बानगीक रूपमे प्रस्तुत अछि निम्नलिखित किछु शेरः

दूध लेल नेना आ रोगी हाकरोस करत
नै जखन गाममे मालक बथान रहत

एहि समाजक रूढि भेल अछि घोडनक ओछाओन सन
प्रेममे भीजल बतहबा ताहिपर ओंघरा रहल अछि

गाममे डिबिया जरल अछि रातिसं लडबाक लेल
मेट्रोपॉलिटन टाउनमे अछि राति दुपहरिया बनल

पात बिछैबाक बेर लोकक करमान छल
यार सभ अलोपित भेल ऐंठ उठेबाक बेर

रातिक जे एकबाल बढल
दुर्लभ सगर इजोरिया भेल

संसद केर फोटोमे किछुओ नहि हेर-फेर
सांपनाथ, नागनाथ, इएह दुनू बेर-बेर

कार खोजै छै एम्हर फूटपाथ पर सूतल शिकार
यम अबै छथि एहि नगर विभिन्न वाहन पर सवार

संसदमे घुसिआयल जे
सात जनम लेल केलक जोगार

गजलकारक भयंकर आत्मविश्वास एहि शेर सभमे देखू :

धन्य 'अरबिन'तों एलह गजलक जगतमे
फेर केओ 'खुसरो'की तोहर बाद हेताह

नै पाठक के चिन्ता अरबिन
नीक गजल के पढबे करतै

एहने आर बहुत रास नीक-नीक शेर वला गजल पढ़बाक लेल देखू श्री अरविन्द ठाकुरक रचल आ 'नवारंभ' द्वारा 2011 मे प्रकाशित आ बहुत सुंदर कागतपर 'प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स', नई दिल्ली द्वारा बहुत सुंदर मुद्रित गजल संग्रह 'बहुरूपिया प्रदेशमे'। अंतमे हम गजलकारक उक्तिक उल्लेख कर' चाहब: '...हाथक जेना सभ बान्ह टूटि गेल। एहन धारा-प्रवाह जे गजलक मिसरा,शेर,रदीफ,काफिया,बहर,गिरह सभकें सम्हारब कठिन...' भरिसक, इएह कारण थीक जे गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा हिनक गजल सभकें आजाद गजल कहल गेल अछि। हम एहि विचारसँ सहमत छी।

अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व आ कृतित्व

अरविन्द मिश्र नीरज

व्यक्ति-व्यक्तिक अपन व्यक्तित्व होइत छैक आ एहि मे कोनो व्यक्ति अपन कृतित्व ल' क' व्यक्तिक जेर मे पंक्ति सँ फराक अपन पहिचान बना लैत छथि। जेहन व्यक्तित्व आ तेहने हुनक कृतित्व। ओ सभ संस्कारजन्य संस्कृति केँ अपना लैत छथि। सहजा, जेकर दोसर नाम संस्कार थिक, ओ जन्म-जन्मान्तर सँ संचित होइत अछि। संस्कृति होइत अछि ओहि सहजा प्रतिभाजन्य व्यक्तिक वंश, परिवार, पितृत्व प्रभाव आदि। समाज, संगी आ अध्ययन आदिक सहयोग जकरा उत्पाध्या कहल जाइत अछि आ जकर दोसर नाम थिक अभ्यास, तँ सहजा आ उत्पाध्या दुनू परस्पर मिलि व्यक्ति केँ एक सृजनकर्ता बना दैत अछि आ हुनका द्वारा 'क्रिएशन' यथार्थ होइत अछि— वर्तमान मे प्रशंसनीय जे भविष्य मे कालजयी भ' जाइत अछि।

एतेक बात कहबाक अभिप्राय ई जे हमर जे एखन आलोच्य थिक से एक एहने काव्य-प्रतिभा सँ प्रभावी रचनाधर्मक पालन मे प्रतिबद्ध एवं प्रसिद्ध व्यक्तित्व एवं कृतित्व। हम कह' चाहब जे मात्राक दृष्टिकोण सँ ओ कतेक लिखने छथि आ ओ किताबक रुप मे छपि क' पाठकक सोझाँ कतेक आयल अछि, से तँ बुझल नहि अछि। मुदा जे दू-चारि पोथी हमरा कोनो ने कोनो रुप मे प्राप्त भेल अछि तकर आधार लैत स्थालीपुलाक न्याय सँ रचनाकारकक व्यक्तित्व पर पहिने दृष्टिपात होइत अछि। रचना पढैत-पढैत जखन आगू बढैत छी तँ रचनाकारकक व्यक्तित्वक परिचय मानसपटल पर सिनेमाक रील जकाँ उभर' लगैत अछि आ कोनो कविक पांति मनहि मन गुनगुना उठैत छी— ' जिनकी रचना इतनी सुन्दर वो कितना सुन्दर होगा ' ।

तँ रचनाक आधार पर व्यक्तित्वक परिचय सुनिश्चित भ' जाइत अछि। आगू बढैत छी तँ बरबस पता लगैत अछि कि कोना नहि! कोसी अंचलक एक कस्वानुमा गाम सुपौलक चकला निर्मली नामक एक टोल जे आइ नगर परिषदक वार्ड मे अछि,

ताहि टोल परक एक रचनाधर्मिताक पालन करैत बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी महान समाजसेवी, प्रगतिक नव-नव बाटक अन्वेषी कोसीक श्लाका-पुरुष स्वनामधन्य महनीय बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव' जीक जिनक आत्मज इएह अरविन्द ठाकुर थिकाह तँ अरविन्द जीक यथार्थक पता लागि जाइत अछि। विप्लव जी केँ जनैत छलहुँ। हुनकर लेखनी मे समाजवाद की राष्ट्रवाद आ जे से मुदा अरविन्द हुनक रचनाक स्वरुप थिकाह से नहि बुझल छल। विप्लव जीक एक परिचय हुनक' उद्बोधन गीत' शीर्षक सँ—

साथियो, तुम रो रहे क्यों?
कौन है उसका सहारा
कर्म को जिसने बिसारा
सत्य है संसार ही यह
तुम अकर्मठ हो रहे क्यों?
साथियो, तुम रो रहे क्यों?

हम विषयान्तर नहि छी। हम रचनाक कारण पर चलि गेल छलहुँ। आउ, कनी अरविन्द जीक व्यक्तित्व केँ देखी, स्वरुप आ स्वभाव केँ परखी। गौर वर्ण, प्रसन्न मुद्रा पर चश्माक तर मे गंभीर आँखि, प्रत्यक्षहु मे परोक्ष होइत, अत: केर भाव, लगहु रहैत किछु क्षणक लेल दूर चलि जाइत स्वभाव। आ जाहिठाम छथि ताहिठाम ठेकानल वस्तुजात। चारू कात रैक पर सैंतल पुस्तकक बीच मे कुर्सी आ टेबुल। टेबुल पर पिताक परम्परा केँ प्रतिष्ठित करैत अरविन्द जी। परिष्कृत परिसर, कण-कण मे आकर्षण आ ओहि सँ टपकैत सहितस्य केर भावना मे साहित्य साधना अरविन्द जीक व्यक्तित्व केँ आकर्षित करैत अछि। बेटा-पुतहु आ अंगना मे डेगा-डेगी दैत पोता-पोती केँ देखि हिनक सहज मन साहित्य साधना दिस खिंचा जाइत अछि। अपन साधना कक्ष (स्टडीरुम) मे आसन जमा लैत छथि साधक जकाँ आ बिसरि जाइत छथि अपन संसार केँ। बरबस लेखनी सँ नि:सरित होम' लागैत अछि—'बहुरुपिया प्रदेश मे'। आ तेँ ने भूमिका मे कहि उठैत छथि अपन पौत्री आर्या, क्षिति आ पौत्र दिव्यांशु केँ शुभकामना दैत जे ओ सभ एहि बहुरुपिया प्रदेश केँ नीक जकाँ चिन्हथु आ चिन्हि केँ अपना लेल सुन्दर आ सुगम मार्ग प्रशस्त करथु। आ इएह भाव मे आगू बढैत गजल संग्रह केर एक एक गजल कि शेर यथार्थहि वर्तमान मे भविष्यक द्रष्टा बनि आबयबला स्थिति सँ चेतैबाक प्रयास करैत छथि—

नइ पूजीक आन-बान नहि ओकर शान बचत

नइ जखन खेतिहरक ठोर परहक गान बचत
हरदी नइ, हर्रे नइ, बनियाँ सरकार मे
'अरबिन' पेटेन्ट सँ की बासमती धान बचत

कहू, कतेक चेतनायुक्त संकेत देलनि कवि। एहिठाम कविक/शायरक दृष्टि भारतक भविष्यक हेतु कतेक चिन्तित अछि। किताबक पहिले गजल मे गजलक परिभाषा परिपुर्ण होइत अछि। गजल मे दर्द होइत अछि, वर्तमान मे भविष्यक चिन्ता होइत अछि। यथार्थ समवाद होइत अछि। जाहिठाम किछु कल्पने टा नहि, किछु आधार होइत अछि। पुन: देखू एकटा एहि गजलक पांति मे कविक उक्ति-वैचित्र्य जकरा काकोक्ति कहल जाइत अछि, प्रकारान्तर सँ यथार्थक भाव—

छोड़िक' सत्यक डगर बइमान बनबह
हओ कोना केँ आब तों बलमान बनबह

पुन:-

आब अयोध्या मे पुजाबय छथि दशानन
जान नहि बचतह जँ तों हनुमान बनबह

केहन कटगर लोकोक्ति सन गजल भेल अछि! कवि अरविन्द जीक गजल मे सहज शब्दक संगति एकर सुन्दरता केँ कोना बढा रहल अछि, बानगीक रुप मे देखू—

कलयुग असवार अछि 'अरबिन' कपार पर
जे हमर ठोंठ धरत, तकरे भगवान कहब
दोसर उदाहरण देखू—
दिन मे पाकेट मारै छै
राति मे जे छै पहरेदार
बेचिक' घोड़ा सुतल बुड़ि
सिरहौना सँ तकिया पार

केहन सहज शब्दक सहज यथार्थ ! कियो-कियो कहैत रहलाह अछि जे मैथिली मे गजल की, ओ तँ अरबी, तुर्की, उर्दूक आ कनी-कनी हिन्दीक थिकै। मुदा अरविन्द जी एहि अनरगल प्रलाप केँ निराधार क' गजल केर जे यथार्थ परिभाषा थिक तकरा अक्षरश: समेटैत एहि चुनौती केँ स्वीकार केने छथि, से देखू—

चान पर बस्ती बसाओल जा सकै छै
मैथिली मे गजल लिखल जा सकै छै

असीमित विस्तारक आकास छल सपना हमर
आसक ताग मे ओ बान्हल जा सकै छै

आ तखने ई गजल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेश मे' पोथीक रुप मे प्रकट भ' सकल।

एहि गजल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेश मे' सँ पहिने कथाकारक रुप मे अरविन्द जीक परिचय भेटैत अछि। हुनक कथा संग्रहक नाम अछि—'अन्हारक विरोध मे'। 'खिस्सा सियार यार' शीर्षक सँ 'विष-पान' शीर्षक धरि दस गोट कथा एहि पोथी मे गुथल गेल अछि। कथा मे कथानकक भाषा मे प्रांजल्यता शीर्षकक अनुकूले अछि। कथा मे जिज्ञासा कथाक महत्ता बढा दैत अछि। सभ सँ बढि क' बात ई जे कथाक पहिल पांति बिना थकानक कथाक अंतिम पांति तक यात्रा करा दैत अछि। कथाकार केँ अपन माटि-पानि संग, आत्मीयताक संग समाजक हर वर्गक गतिविधि सँ परिचय कथाक विशेषता प्रकट करैत अछि। अभिजात वर्गक संग रचल-पचल लेखकक सर्वहारा समाजक प्रति संवेदना कोना साकार भ' उठल अछि, कथासभमे तेकर यथार्थ परिचय अछि।

'अन्हारक विरोध मे' कथा-संग्रह नामक पोथी सँ पहिने लेखक कविक रुप मे प्रस्तुत भेला— ' परती टूटि रहल अछि' नामक कविता संग्रह ल' क', जाहि पोथी मे कविक आध शतक सँ उपर 'यात्रा' शीर्षक सँ प्रारम्भ होइत 'बुलबुल' शीर्षक सँ अंत होइत कविता सभ अछि। मुक्त रचना मे उन्मुक्त भावधारा कविताक विशेषता मे कविक सहज स्वभावक परिचय होइत अछि। जतय धरि हम एहि संग्रहक कविता पढि सकलहुँ ताहि मे कोनो वादक प्रभाव नहि, कविक व्यापक यथार्थभाव परिलक्षित होइत अछि। एतबा धरि अवश्य जे यथास्थिति बनल नहि रहय, ओ टूटय। तखने जड़ता सँ त्राण होयत, गति प्राप्त करैत दुर्गति सँ दूर करत, तेँ परती टुटबाक चाही। 'यात्रा' कविताक 'मा' शब्दक संबोधन मे कवि आत्मभावक यथार्थता देखै चाहै छथि। ओ कहैत छथि—'हम' केर रुप मे के 'हम', सांसारिक मकड़जाल मे ओझराओल हमर आचरण आकि आचरण मे आत्मबोध ?

'सुखि गेल गाछ' कविता मे पुरखा द्वारा लगाओल गाछ पर कविक झुलैत नेन्हपन आ ओ गाछ सुखैलाक बाद घरक बनल उपकरण मे कविक संवेदना, जखन ओ उपकरणक रुप मे सुखाओल गाछ सँ बनल चौकी पर कविक जुआनीक थकान केँ मेटाबैत अछि, पुरखाक लगाओल आ पुन: सुखाओल गाछक बनल उपकरणक उपभोग करैत कविक संवेदना देखू—

'कहियो नेन्हपन मे

एहि ठारि सभ पर झुलैत
हँसैत-गबैत
चिबौने छलहुँ टिकुला
लाल-पीअर-सनहुला फलमे
गड़ौने छलहुँ दांत
पओने छलहुँ अमृत-रस
तृप्त भऽ गेल छल मोन-प्राण...'

आ ओ गाछ जखन सुखा जाइत अछि तखन कविक ओहि गाछ सँ आत्मिक भाव आत्मसंतुष्टि प्रदान क' रहल अछि। यथा—

'...
दिन भरिक भागमभागसँ
थाकल आ निस्तेज
पड़ैत छी अपन चौकी पर
आ जखन अबैत नहि अछि निन्न
तखन थपकी दैत
आ लोरी सुनबैत अछि
पुरखाक ममत्वसँ लबालब
ओ सुखि गेल गाछ'

अंतत: इएह जे कवि-कथाकार श्री अरविन्द ठाकुरक साहित्य-साधना सहितस्यक भावना केँ पल्लवित आ पुष्पित करैत अछि। जखन पल्लवित आ पुष्पित होइत अछि ओ साहित्य-साधना रुपी वृक्ष, तखन तकर जे फल अबैत अछि, ओ अमरत्व प्रदान करैत अछि अर्थात कालजयी होइत अछि। एहन कालजयी रचनाकार अरविन्द ठाकुरक प्रति हमर शतश: साधुवाद। बदला मे समर्पित हमर अभावक भाव।

परती टूटि रहल अछि : यात्रा-कथा

केदार कानन

पछिला बरखक फागुन। फगुआसँ तीन दिन पूर्व अरविन्द भाइ एकटा प्रस्ताव देलनि— नवीनजीक बैसकीमे। हमसभ प्राय: प्रत्येक साँझ नवीनजीक ओतय बैसी। साहित्य-चर्चा, काव्यपाठ। अरविन्द भाइक उपस्थिति नीक लागैत छल मुदा अकस्मात बैसकीमे आबि प्रस्तावक चर्चासँ कनेक विस्मय भेल। हमर आ नवीनजीक दृष्टि एक्के संग अरविन्द भाइक चेहरा पर जमि गेल। कहलनि अरविन्द भाइ—फगुआक पूर्व संध्या पर महामूर्ख सम्मेलनक तर्ज पर कोनो आयोजन हम सभ नहि कऽ सकै छी?

मोन थिर भेल। हम हुनका दिस तकैत रहलहुँ। मोन पड़ल 1981क एकटा दुपहर। अपन दवाइक दोकान पर बैसल अरविन्द भाइ हमरा बजौलनि। गेलहुँ तँ मैथिलीमे एकटा लघुकथा देलनि। तकरा हम 'मिथिला मिहिर'मे पठा देल आ से प्रकाशितो भेल छल।

अरविन्द भाइ फेर टोकलनि—की विचार?

अगिला दू दिन गहन व्यस्ततामे बीतल। फगुआक पूर्व संध्या पर 'थोल समागम'क अपूर्व आयोजन सुपौलक व्यापार संघक सभा भवनमे सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल। अद्‌भुत उल्लास आ औत्सुक्यसँ भरल श्रोतागण, दर्शकगण। वन्स मोर, वन्स मोरक समवेत स्वर। फगुआक फगुअहटिमे मातल दर्शक। मंत्रमुग्ध भेल। करतल-ध्वनिक स्वरसँ सम्पूर्ण परिवेश आच्छादित। एहि थोल-समागमक आयोजक रहथि अरविन्द भाइ। एक आध सप्ताह ओही उल्लासमे बीति गेल। तकरा बाद सभ किछु पूर्ववत।

आइ अरविन्द भाइक एहि प्रथम कविता-संग्रहक 'यात्रा-कथा' लिखैत हमरा अनेक-अनेक प्रसंग मोन पड़ि रहल अछि।

पछिले बरखक गरमीक एकटा साँझ। डॉ. नवीनजीक संग अरविन्द भाइकेँ देखबा लेल गेलहुँ। हुनका जौण्डिस भऽ गेल रहनि। अत्यन्त कमजोर, असोथकित।

दवाइ चलैत रहनि नवीनेजीक। धीरे-धीरे स्वस्थ होइत अरविन्द भाइ।

मोन लागय। जाइ आ हुनक कुशल-क्षेमक बाद साहित्य-चर्चा। घंटा, दू घंटा। समय कोना बीति जाइत छल—थाह नहि लागय। साहित्यक चर्चा हो तँ समयक थाह ठीके नहि लगैत छैक।

अरविन्द भाइसँ परिचय बड्ड पुरान छल, मुदा थोल-समागमसँ पूर्व एतेक घनिष्ठता आ निकटता नहि। जाइत-अबैत उज्जर धपधप कुरता-पायजामामे भेटथि। नमस्कार-पाती। कुशल-क्षेम। बस। मुदा समयक चक्र परिवर्तित भेल।

मोन पड़ल ओहुसँ पूर्व 'अकेला' आ 'प्रॉब्लेम्स' नामक स्थानीय पत्र। आ ताहिमे अरविन्द भाइक कविता, व्यंग्य, पत्र आदि-आदि। ओहू समयक लेखनमे एकटा अन्तर्भेदी दृष्टि। जीवन आ तकर विडम्बनासँ परिचित लेखन।

सुपौलक ऐतिहासिक साहित्यिक वातावरण। किसुनजीक अथक प्रयास आ निरन्तर संघर्षसँ साहित्य आ संस्कृति हुनक जीवन कालमे एतय अपन चरम पर छल। भाषा कोनो देबाल नहि। कोनो अवरोध नहि। मुदा, मैथिलीक प्रति एकान्त निष्ठा। सुपौलमे साहित्यिक-सांस्कृतिक वातावरण बनयबामे किसुनजी एकटा आधार-स्तम्भ रहलाह। एकटा दीर्घ परम्पराकेँ स्थायी आधार भेटलैक। प्रो. मायानन्द मिश्र, रामानुग्रह झा, प्रो. महेन्द्र, प्रो. धीरेन्द्र धीर, डॉ. सुभाष चन्द्र यादव, सुकान्त सोम, महाप्रकाशक उर्वर-भूमि। तकरा बादक अनेक पीढ़ी। संघर्षशील पीढ़ी। कतेक-कतेक रास बात इतिहासक गर्भमे दबल पड़ल अछि।

किसुनेजीक समकालीन छलाह स्व. बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'। प्रख्यात लेखक, व्यंग्यकार आ पत्रकार। अपन निर्भीक आ निधोख पत्रकारितासँ अपन चोखगर व्यंग्य आ कवितासँ ओ निरंतर साहित्य सेवा करैत रहलाह। जन-जीवनमे व्याप्त विसंगतिकेँ अपन धारदार लेखनसँ उघारैत रहलाह।

ओना, 1970क पश्चात सुपौलक साहित्यिक परिवेश अकस्मात समाप्त भऽ गेल। सुपौलक साहित्य अंधकारक कोनो गह्वरमे चलि गेल हो जेना। छोट-छीन इजोतक प्रकाश अवश्य छल मुदा से दीप जकाँ टिमटिमाइत। सभ केँ संग लऽ कऽ चलनिहार किसुनजीक बाद एहिठाम प्राय: दस वर्ष धरि कोनो साहित्यिक आयोजन नहि भेल। परती जकाँ निस्पन्द रहल सुपौलक उर्वरा धरती। मुदा...

मुदा धरती उर्वरा होइत अछि। फसिलकेँ लहलहबैत देरी कहाँ लगैत छैक।

अन्नसँ लदल, गर्वोन्नत फसिल अपन मूड़ी अलगबैत धरतीकेँ चूमबाक लेल व्याकुल-उताहुल रहैत अछि...।

पिता स्व. बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'क लेखन-परम्परा अरविन्द भाइकेँ विरासतमे भेटलनि। घरक साहित्यिक वातावरण आ परिवेश लेखन लेल प्रेरित करैत रहलनि आ ओहि वातावरणमे रमल सेहो रहलाह ई अलग बात थिक जे ओ तखन स्वान्तः सुखाय बेसी लिखैत छलाह। मुदा, 1984 मे पिताक निधनक पश्चात एक टा पैघ लेखन विमुखताक यातनासँ गुजरैत रहलाह अरविन्द भाइ।

मोन पड़ैत छथि सघन राजनीतिमे लीन अरविन्द भाइ। युवक कांग्रेसक अध्यक्ष। बुढ़बा कांग्रेसक नगर अध्यक्ष। बिहार युवा कल्याण परिषदक जिला अध्यक्ष। मेला समितिक सचिव। नगर, प्रखण्ड, जिला आ राज्यक राजनीतिमे व्यस्त, अतिव्यस्त। डूबल। राजनीति केर गीत गंधमे मातल। मुदा तखनो राजनीतिमे यथास्थितिवादक पोषक तत्वक विरुद्ध निरन्तर संघर्षरत।

मुदा, ओहू राजनीतिमे एकटा स्वच्छ छवि। उन्मुक्त आ उदार। लोकोपकारमे लागल। वर्तमान राजनीतिक अन्धकारमे लगातार एकटा खोज। प्रकाशक खोज। अमावश्याक बाद पूर्णिमाक प्रतीक्षा।

राजनीति केर ओहि चादरिमे कतहु कोनो दाग नहि। बेदाग। स्वच्छ। साफ-सुथरा। जतनसँ ओढ़ल गेल राजनीति केर चादरि। जस की तस रख दीनी चदरिया।

समय बीति रहल छल। समय बीतैत रहल। आ ओहि राजनीतिसँ मोहभंग भेलनि हुनक। सब किछु छोड़ि देलनि। तटस्थ द्रष्टा जकाँ देखैत रहलाह देखिते टा रहलाह। ने कोनो गतिविधि, ने कोनो उपचाप।

उपचाप भेल साहित्यमे। 1970मे लेखनक बीज-प्रस्फुटन भेल छलनि। डायरीमे चुपचाप लिखब, अपने पढ़ब। डायरीमे सहेजल-समेटल कविता, कथा, गीत, गजल। सभकिछु सैंतल।

मुदा ई जौण्डिस जेना जीवनक सुच्चा सुवासकेँ उतारलक धरती पर। अस्वस्थतामे समय भेटैत छैक लिखबाक आ पढ़बाक। से समय भेटलनि। खुशफैल समय। निर्बाध गतिएँ लिखैत रहबाक समय। अपन समय। अपन लेखन। अपन अभिव्यक्ति। मोनक जतेक रिक्तता रहनि, प्राणक जतेक आकांक्षा रहनि-से जेना सभटा साहित्यिक प्रवाहमे उतरैत रहल।

उतरैत रहल आ आकार लैत रहल। कवितामे, कथामे, लघुकथामे, विचारमे आ हमर सभक प्रतिदिन होबऽबला सान्ध्य गोष्ठी। डॉ. नवीनजीक आवास आ हमर

सभक काव्य पाठ। कथा पाठ। एहि गोष्ठीमे कहियो जीवकांत आबि जाथि। कहियो डॉ. मायानन्द मिश्र। कहियो उपेन्द्र दोषी। कहियो कालीपद कोनार। कहियो सुभाष भाइ, कहियो महाप्रकाश। गोष्ठी चलैत रहल। चलैत रहल काव्य-पाठ।

नवीनजीक कविता, शिवेन्द्रजीक कविता, अरविन्द भाइक कविता, हमर कविता। आ ताहिपर जमिकऽ चर्चा। काट-छाँट। मैथिलीक स्थिति, मैथिलीक चिन्ता, मैथिलीक प्रदूषण। गप होइ आ चर्चा होइ आ संगमे होथि अशोक अशु, प्रो. राजेन्द्र झा, विनोद कुमार वर्मा, सुब्रत मुखर्जी, अरुण झा, निर्भय, प्रकाश आदि-आदि। एखनो ई गोष्ठी चलैत अछि। संग-संग आयोजन लेल सदैव तत्पर उपरलिखित सभटा नाम।

एहि चेष्टा, एहि चिन्ता, एहि गोष्ठीक प्रतिफलन थिक प्रस्तुत काव्य-संकलन—परती टूटि रहल अछि। एहि संग्रहमे 1992-93क कविता मात्र संकलित भेल अछि।

ई परती थिक यथास्थितिक। यथास्थितिक दानव। एकर टूटब, एकर मृत्यु आवश्यक अछि। एहि संग्रहमे तकर बोध मैथिलीक पाठककेँ हेतनि, से विश्वास अछि।

शुद्ध रूपसँ नारेबाजी, जनवादी चेतनाक गलत प्रसार, जनविरोधी आ प्रगति विरोधी कविता मैथिलीमे बहुत लिखल गेल अछि आ लिखल जा रहल अछि। एहन कविक संख्या ठीके अत्यल्प अछि जे भारतीय आ विश्व मानवताक सोझाँ ठाढ़ भेल अनेक-अनेक संकटक जटिलताकेँ चीन्हि रहल छथि आ मनुक्ख होयबाक अनेकानेक पहलूसँ अपन परिचिति बनौने छथि। कवि अरविन्द ठाकुर अपना उपर निर्मम नियंत्रण आ संयम राखि विवेकसम्मत ढंगेँ कविता लिखैत छथि।

अरविन्द ठाकुर आस्थावान कवि छथि, ई हुनक कविताक स्वरसँ प्रमाणित अछि। ओ एकटा एहन भाषाकेँ विकसित कयलनि अछि, जे हुनक स्वभावक अनुरूप अछि। हिनक कवितामे हिनक वैचारिकताक सक्रिय भूमिका रहल अछि। ई ओहन कोनो घटना, भावना आ दृश्य केँ अपन काव्य विषय नहि बनबैत छथि जे हिनक अनुभव संसारमे रचि पचि नहि गेल हो आ जे हिनक जीवनक अंग नहि बनि गेल हो—यैह कारण थिक जे हिनक कवितामे विश्वसनीयता एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता थिक।

हिनक अनेक कवितामे मानव-समाजक आत्मीय आ यथार्थ चित्रण भेल अछि आ तहिना दोसर दिस प्राकृतिक परिवेशक सूक्ष्म चित्रण। जतबे विस्तृत अछि हिनक

ऐन्द्रिय-बोध, ततबे सक्रिय अछि हिनक अभिव्यक्ति-सामर्थ्य। दैनन्दिन जीवनक एकदम परिचित परिवेशसँ अरविन्द ठाकुर सामान्य आ साधारण बिम्बकेँ उठबैत छथि आ तकरा अपन क्षमता आ सामर्थ्यसँ कवितामे वैशिष्ट्य प्रदान करैत छथि।

सहजता आ स्वाभाविकता अरविन्द ठाकुरक कविताक पैघ आ रेखांकित करयवला गुण थिक। ई जटिल स्थिति आ भावक कवि नहि छथि। हिनक स्वर संयत, गम्भीर आ तेँ प्रभावी अछि। अपन अनुभवकेँ कम सँ कम शब्दमे, बिना कोनो लाग-लपेटक, बिना कोनो अतिरिक्त कलात्मक प्रयास अथवा शिल्पगत चमत्कारकेँ मूर्त्त कऽ देब हिनक विशेषता थिक। अपन अनुभव-संसारक सहज-संयत अभिव्यक्ति।

राजनीतिसँ जुड़ाव हिनक कविकेँ एकटा स्वानुभूत भूमि प्रदान कयलक। राजनीति हिनक कविताक एकटा महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक। प्रस्तुत संकलनमे तकर रूप-दर्शन होइत अछि। हिनक कविता ओहन राजनीति केर विरोध करैत अछि, जे पाखंडपूर्ण आ ध्वंसात्मक अछि। हिनक कविता लोक-जीवनसँ जुड़ल अछि आ ई ओतहिसँ अपन काव्यात्मक ऊर्जा प्राप्त करैत छथि। शोषणक तमाम अस्त्र-शस्त्रसँ कवि अरविन्द ठाकुर परिचित छथि। ओ व्यवस्थाक धूर्त्तता आ मक्कारीक रेशा-रेशासँ परिचित छथि। ओ जनैत छथि जे कोना शासन-व्यवस्था लोक-संस्कृतिक अनेक उपकरणक उपभोग अपन हित, अपन विकास लेल करैत अछि आ लोक-संस्कृतिकेँ अपन विलासिताक वस्तु बुझि तकरा आरक्षित रखैत अछि। ओहन तमाम स्थितिक विरोधमे हिनक कविता ठाढ़ अछि आ जनताकेँ तकरा लेल खबरदार करैत अछि।

(1993)

कृषकक अन्नदायी चेतना, परिपक्व ज्ञानानुभूति आ अन्वेषण–वृत्तिक सहमेल सँ रचल कविता : 'परती टूटि रहल अछि'

सीए. किसलय अरविन्द ठाकुर

धरती परत सभ मे विभक्त छै। जे परत हमसभ देखए छिऐ, से परत माटिक बनल छै, माटि–पाथरक, माटि–बालुक, आ तकर बाद मात्र बालु वा मात्र पाथर वा मात्र पानि, फेर गैस, खनिज पदार्थ, फेर लावा, फेर आगि, फेर जानि नहि की–की।

आकाश सेहो परत सभ मे विभक्त छै। ओ सतही परत जाहि मे हम सभ सहजता सँ साँस लए पाबए छी, फेर बादलसभक ओ परत जे एतेक सघन होइ छै कि साँस लए मे कठिनाह भए जाइ छै; फेर ओजोनक ओ परत, जतय सूर्य–प्रकाशक विनाशकारी तत्वसभ छनाइ छै, ओकर आगू एकटा और परत जेतय पृथ्वीक गुरुत्वाकर्षण–शक्ति समाप्त भए जाइ छै आ फेर ओकर उपर अनेक ग्रह, नक्षत्र, तरेगण, सौरमंडल; फेर सौरमंडलक समूह आ जानि नहि की–की।

शरीर विज्ञान सँ जे अवगत छथि, हुनका बुझल छनि जे मानव–शरीर सेहो परत–सभ मे विभक्त छै। एपिडर्मिस, डर्मिस, हायपोडर्मिस—पहिने चर्म, फेर छोट–छोट धमनीसभक जाल आ फेर शरीर केँ चलबएबला महत्त्वपूर्ण अंग सभ, ओकर भीतर और जानि नहि की–की।

वर्तमानक हमरासभक स्थिति–अस्तित्व सेहो परतीसभक एकदम टटका अध्याय छै। हमर–अहाँक अस्तित्वक पृष्ठभूमि मे परतसभक एक अतिविशाल परत छै। मानल जाइ छै जे छोट–मोट कीड़ा–मकौड़ा सँ बढ़ैत, बानर सँ होइत वर्तमान मानव धरिक यात्रा हम सभ तै कयने छी। मानवक इतिहास दिस देखू। अनुमान कएल जाइ छै आ अनेक साक्ष्य–प्रमाण सेहो भेटल छै जे हजारक–हजार वर्ष पहिने मानव शारीरिक रूप सँ बहुत विशाल रहए आ मानसिक रूप सँ कमजोर। अजुका मानव

शारीरिक रूप सँ क्षीण आ मानसिक रूप सँ बेस बलशाली भेल छै।

कोनो तरहक खोज केँ बिना एहि परतसभ केँ तोड़ने, अलगयने पूर्ण नहि कएल जाए सकए छै, आ ने सत्य-तथ्यक प्राप्तिए कएल जाए सकए छै। आन क्षेत्रसभक समानान्तर साहित्य सेहो एहि दिशा मे अग्रसर छै। मानसिक आ बौद्धिक धरातल पर जाए कए, अनुभव-अनुभूतिक मशाल जराए कए, विचार-ब्रह्माण्ड केँ परत-दर-परत अलगाए-विलगाए कए साहित्यिक वर्ग प्रत्येक युग केँ अनमोल भेंट दैत रहल छै।

अजुका दौरक सफलतम साहित्यिक रचनासभक कड़ी मे एक यादगार, संग्रहणीय आ सशक्त रचना छै—अरविन्द ठाकुर द्वारा मूल रूप सँ मैथिली भाषा मे रचित आ कालान्तर मे अजित आजाद द्वारा हिन्दी मे अनूदित काव्य-संग्रह 'परती टूटि रहल अछि'। (प्रसंगवश कहि दी जे हिन्दीक पाठक समुदाय केँ अजित आजाद जीक ऋणी हेबाक चाही जे ओ एहि संग्रह केँ मैथिलीक सीमित सीमा सँ बाहर निकालि एकटा विशाल आकास देलनि।)

परती की छिऐ? परत पर परत जखनि जमा हुअए, जमए लागए त वएह कालान्तर मे परती होइत एक दिन उजाड़ भए जाइ छै, धीरे-धीरे कठोर भए जाइ छै आ कोनो टा बीज केँ अपन ऊर्जा सँ विकसित करए मे असमर्थ भए जाइ छै। ई परती परत-परत जमए छै आ परतहि-परत टूटितहु छै।

श्री अरविन्द ठाकुर इएह परत-दर-परत जमैत आ परत-दर-परत टुटैत परती-कथाक पृष्ठभूमि मे क्षिति समान दृढ़, जल समान विरल, अग्नि समान पवित्र आ मारक, वायु समान जीवन्त आ गतिमान आ आकाश समान विशाल व गंभीर अपन बहुमूल्य अनुभूतिसभ केँ गलाए-मिलाए कए 'परती टूटि रहल अछि' नामक टाइटैनिक-कृतिक निर्माण कएने छथि, जे साहित्यक एहि विशाल महासागर केँ सदैव शोभायमान करैत रहत। एहि संग्रहक कवितासभ केँ पढ़ैत हम ओकरा ठीक ओहि रूप मे ग्रहण नहि करए छी, जाहि रूप मे सामान्य पाठक ग्रहण करए छथि। एकर अक्षर, शब्द, पंक्ति आदिक परत-परत मे हमरा भूर्भवः स्वः—तीनहि टा लोक नहि, अखिल ब्रह्माण्डक अनन्त परतसभ मे बसल अनन्त लोक सभक संरचनाक दर्शन होइत अछि।

कवि एक किसान परिवार सँ छथि आ ई किसान एहि कवि केँ कखनियो असगर नहि छोड़ए छै, आ ने कविए कखनियो किसान केँ विलगाए पाबए छथि। किसानक संग अस्तित्वक एकत्व आ तत्जनित भावनात्मक आवेगहि एहि कविता सभ केँ मर्मस्पर्शी आ अविस्मरणीय बनबए छै। सृजन शब्दक मूर्त पर्यायवाची

किसानहि त छै। संग्रहक शीर्षक चयन मे सेहो किसानहिक भूमिका हमरा देखाइ पड़ैत अछि।

यदा-कदा एहि संग्रह केँ पढ़ैत हम एहि सोच मे पड़ि जाइ छी जे ई कवितासभ कलम सँ लिखल गेल छै आकि हरक फार सँ। 'सामा चकेबा खेलाइत स्त्रीगण' हुअए, 'बुलबुल' हुअय आकि अन्य कविता—हरक सृजनधर्मा कमाल सभ ठाम देखए लेल भेटैत छै। एहि संग्रह केँ 'परती टूटि रहल अछि' नाम सँ छपयबाक इएह प्रमुख कारण भए सकै छै। कवि आ किसानक एकत्व सभ ठाम अक्षुण्ण जकाँ छै। तेँ कवि अपन व्यवसाय मे किसान लिखनहु छथि। हर जोतय मे, बीया बाउग करए मे, खेत केँ सिंचित करए मे, फसिल केँ काटय-सुखाबय-दाउन करए मे अर्थात् प्राय: प्रत्येक कृषिकर्म मे समय-चेतना आ अभूतपूर्व अनुशासनक आवश्यकता होइ छै। संग्रहक कवितासभ मे एहि समय-चेतना आ अनुशासन केँ पंक्ति-पंक्ति मे देखल जाए सकै छै। हमरा तँ एहि संग्रहक कवितासभ एक टा एहन आलोकित भाव-भूमि पर लेने चलि जाइत अछि जेतय अक्षरक पंच-तत्व नित नव भाव-मूर्ति गढ़ैत अछि जे अन्तत: जगतपालक अन्नदेवक रूप लए लैत अछि।

जनतब दएत चली जे कविक जीवनक एकटा जे दीर्घ आ महत्त्वपूर्ण अवधि बीतल अछि, से सक्रिय राजनीतिक छल। सामाजिक स्तर पर व्याप्त परती केँ तोड़ैक ई हुनक पहिल आ प्राय: सभ सँ दीर्घकालीन प्रयास रहल। फेर साइत हुनका लागलनि जे कलमक माध्यम सँ एहि परतीक उद्धार बेसी तीव्रता सँ कएल जाए सकए छै। एहने आशाक संग ओ अपन हाथ मे कलम थाम्हलनि, किएक तँ एतहुका भूमि-प्रसार कनेक विशाल भए जाइ छै। एतय सामाजिकक संग-संग बौद्धिक आ वैचारिक धरातल सेहो जुड़ि जाइ छै। आ तखनि जाए कए मैथिलीक भाषा-जगत एहि संग्रह सँ मातबर भेल।

कविक जीवन धाराक प्रवाह पर गौर करी तँ देखब जे एहि संग्रहक बाद हुनक दोसर संग्रह (अन्हारक विरोधमे—कथा-संग्रह) चौदह वर्षक पश्चात आएल। देखब जे साहित्य सँ कूच कएलाक बाद ओ परिवार दिस बढ़ए छथि। परिवार मे बच्चासभक पढ़ाइ-लिखाइक जिम्मेदारी केँ प्राथमिकताक संग निर्वहन करए छथि। हमरा बुझने परिवारक क्षेत्र कनेक बेसी विस्तार राखए छै, किएक तँ एतय सामाजिक, बौद्धिक आ वैचारिक धरातल संग एकटा अतिरिक्त धरातल और जुड़ै छै—भावनात्मक धरातल, जे सृष्टि-क्रमक अबाधता केँ सुनिश्चित करए छै। आब लोक परिवार सँ साहित्य आ फेर समाज दिस प्रस्थान करए छथि, किन्तु 'परती टूटि रहल अछि'क

कविक क्रम आन सभ सँ भिन्न छनि। कखनियो-कखनियो हमरा ई चौदह वर्षक अवधि रामक बनवासक समतुल्य लागैत अछि—एक दीर्घ तपस्या जकाँ, जाहि सँ उपलब्धिक विस्फोट सेहो होइ छै।

अध्यात्म सेहो स्थूल सँ सूक्ष्म दिसक प्रवाह केँ सफलताक सूचक मानैत अछि। कवि अरविन्द ठाकुर केँ ई दैवक प्रेरणा सँ सदाशिवक भाँति जेना पहिने सँ ज्ञात रहनि। स्थूल आ सूक्ष्मक निर्धारण प्रति प्रत्येक व्यक्तिक भिन्न धारणा भए सकए छै। हमर धारणाक अनुसार समाज केँ स्थूल, साहित्य केँ सूक्ष्म आ परिवार केँ अति-सूक्ष्म मानी तँ कविक जीवन यात्रा 'परती टूटि रहल अछि' सँ 'अन्हारक विरोध मे' के बीच अति-सूक्ष्मता दिस अग्रसर भेलनि आ 'अन्हारक विरोध मे' सँ 'बहुरुपिया प्रदेश मे' होइत 'सबद मितारथ धाय्या' दिस बढ़ैत पुनः स्थूल दिस गतिवान छै। ई स्थूल सँ सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म आ अतिसूक्ष्म सँ सूक्ष्म, स्थूलक बीचक यात्रा कविक साहित्यिक मानस केँ निरन्तर गतिमान रखने छनि आ एहि अनवरत यात्राक विभिन्न पड़ाव साहित्यिक निधि केँ बेर-बेर उत्तरोत्तर मातबर करैत गेल छै, मातबर करैत रहत। मनीषी लोकनिक इएह लक्षण होइ छै, जेकरा पकड़ि नवतुरिया पीढ़ी केँ आगू बढ़बाक छै।

जीवन तँ वएह छै आ सामान्य लोक केँ तेहने देखाइतहु छै। ई त दृष्टिक भिन्नता छै जे एकरा असामान्य, अतिसामान्य कोटि मे राखए छै आ विशिष्ट, अतिविशिष्ट कोटि मे सेहो। एहि दृश्यमान जगतक सामान्यता आ विशिष्टताक सरलीकरण सँ एकदम अलग भए कए ओकर अदृश्य परत तक जेकर अन्तर्भेदी दृष्टि जाइ छै, सएह कवि-मनीषी लोकनिक दृष्टि होइ छै। अरविन्द ठाकुर लग ई दृष्टि तँ छनिहे, हुनक अतिरिक्त विशिष्टता ई जे हुनक दृष्टिक प्रसार-क्षेत्र अनन्त छनि—स्थानीयता सँ लए कए राज्य, देश, विश्व आ अखिल ब्रह्माण्ड तक पसरल। कवि अरविन्द ठाकुरक लेखनी जाहि विराट दृष्टि सँ जीवन-जगत केँ चिन्हित करै छै आ जाहि तरहेँ महान 'विप्लव'जीक विरासत केँ विशिष्ट आभाक संग बढ़बै छै, ताहि पर स्वयं 'विप्लव' जी केँ गर्व हेतनि।

जीवन अनेक अप्रिय शुष्कता, कठोरता आ नकारात्मकताक बादो खुशी, प्रेम, प्रतिष्ठा आ सकारात्मकता सँ भरल छै, किंतु कम लोक एहन सधल छथि जे अथाह मूल्यवान शक्ति-स्रोत सभ केँ अपना भीतर सहेज सकबाक सामर्थ्य राखए छथि। अरविन्द ठाकुर जीवनक नकारात्मक पक्षक उपस्थिति केँ चिन्हय छथि, किन्तु ओकरा रस्ताक काँट जकाँ एक कात राखि दए छथि। हुनक अन्तस मे प्रेम, आनन्द आ

विश्वासक एक टा अथाह समुद्र अनवरत हिलोर मारैत रहै छै आ ओहि हिलोर सँ आप्लावित होइ सँ कोनो एहन व्यक्तिक बचब संभव नहि छै जे अपन जीवनकाल मे एकहु बेर हुनका सँ साक्षात भेल होथि। ई अलग गप जे वर्तमान समाज ओहि हिसाब सँ परिपक्व नहि भए पाएल छै जे हुनक शुद्ध-स्वच्छ भावना केँ यथारूप स्वयं केँ संप्रेषित कए सकए आ ने एहि समाजक हृदय एतेक विशाल भेल छै जे सद्गुण-सद्वृति केँ ओकर भीतर व्याप्त मौलिक तत्वक संग ग्रहण कए सकए। कुम्हारक थाप केँ चोट आ हरक फार केँ ठोकर बुझबाक भूल आइयो समाजक एकटा नमहर वर्ग कए बैसै छै। एहि वास्तविकताक अछैत अरविन्द ठाकुरक चुम्बकीय आकर्षण अक्षुण्ण छनि आ अपन एहि शक्तिक बल पर ओ मुंबइक अपरिचित-अंजान श्रोता-समूहहु सँ ताली पर ताली लए सकए छथि।

समाज मे व्याप्त तमाम तरहक परती तोड़बाक मुहिम मे अरविन्द ठाकुर कतेक सफल भए सकल छथि, सफल भेल छथि किंवा असफल भेल छथि, तेकर आकलन आबयबला समय करतै। साहित्यिक कर्मवीर तँ अपन कर्म करए छथि आ कर्म करैत-करैत अक्षर-सेनानी जकाँ अपन कर्महि मे समाहित भए जाइ छथि—कर्मफलक आशा-प्रत्याशा सँ निर्लिप्त।

गीता मे कहल गेल छै—

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स सन्यासी च योगीच न निरग्निर्नचाक्रियः।। (6/1)

आ फेर—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमो ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। (2/47)

कर्म फलक प्रति निर्लिप्तीक भावना सँ उत्पन्न अभूतपूर्व शांति आ सदानंदी मुद्रा अरविन्द ठाकुरक मुख पर सहज देखल जाए सकै छै।

फलक ई एकटा गुण होइ छै जे ओ जखनि पूर्णतः पाकए सँ पूर्वक स्थिति मे होइ छै, स्वादिष्ट होइ छै। मनुष्य सेहो ज्ञान आ अनुभव केँ आधार बनाए परिपक्वता दिस बढ़ै छै। मनुष्य जँ मानि लिअए जे आब ओ पूर्णरूपेण पाकि गेल छै तँ ओ अति-परिपक्व भेल फल जकाँ स्वादहीन भए जाइ छै। किन्तु जँ ओ परिपक्वताक दुष्टाभास सँ दूर रहैत सदैव गतिशील रहए, स्वयं केँ सदैव प्रयोगरत अन्वेषी मानए, तँ निरंतरता मे पारदर्शी आ संवेदनशीलता बनल रहए छै, अपन स्वाद केँ अक्षुण्ण राखए छै। महान सँ महान लेखक लेल आचार्यत्व-भाव प्राप्तिक बाद अपन रचना

मे स्वाद कायम राखि पायब मुश्किल होइ छै। किन्तु मैथिली साहित्यक ई सौभाग्य छै जे अरविन्द ठाकुर ज्ञानानुभवक परिपक्वताक बादहु अपन रचनासभ मे स्वाद बनाए-बचाए कए रखने छथि। एकरा पाछू हुनक अन्वेषण-रत रहब, सतत खोजी बनल रहब महत्त्वपूर्ण कारक अछि आ साहित्यिक-अहं त हुनका छुबिओ नहि सकल छै। गीताक उपरोक्त श्लोकक सन्यासी व योगी हुनक रचना केँ विशिष्टता प्रदान करए छनि, जेकरा चलते पाठक केँ हुनकर रचनाक प्रति आकर्षण पूर्ववत बनल छै।

रोहन्डा बायर्ने (Rhonda Byrne) रचित प्राचीन विज्ञान पर आधारित एकटा पुस्तक वर्ष 2006 मे आएल रहय—'द सिक्रेट' अर्थात 'रहस्य'। ओहि मे लिखल गेल छै जे जखनि अहाँ भलमन सँ कोनो कामना करए छी, किंवा शब्द आ वाक्य केँ भरपूर इच्छा सँ दोहराबए छी तँ ओ ब्रह्माण्ड मे जाए कए गुंजायमान होइ छै। उपस्थित ग्रह एवं नक्षत्र ओकर श्रवण करै छै आ ओ अनुकूल वा प्रतिकूल (जेहन अहाँ कामना करए छी) भए कए वापस अहाँक दिस परावर्तित होइ छै—कएक गुणा बेसी प्रभावशाली बनि कए। अपना सभ एहिठाम मंत्रोच्चारणक ई पद्धति अतिप्राचीन छै, जेकरा विदेशीसभ सामान्य भाषा आ भाव मे अनुवाद मात्र कए अरबों-करोड़ कमाए रहल छै।

जखनि अहाँ 'परती टूटि रहल अछि' दस बेर उच्चारित करए छी तँ ब्रह्माण्ड मे उपस्थित अखण्ड शक्तिसभक संग अहाँक संवाद कायम होइत अछि आ चुकाबएबला परिणाम भेटैत अछि। अपन स्मृति केँ प्राचीनकाल दिस लए जाउ। सतयुग मे सत्य केँ आधार बनाए राजा हरिश्चन्द्र, त्रेता युग मे भगवान श्रीराम, द्वापर युग मे भगवान श्रीकृष्ण आ कलियुग मे संत कबीर इएह काज कएने छथि आ अपन दृढ़ विचार सँ मानवीय मानस केँ आन्दोलित कएने छथि। आ ई आन्दोलन की छिऐ—समाजक मानसिक परती केँ तोड़नाइए ने!

साक्षात्कार

अरविन्द ठाकुरजीक साक्षात्कार जे की मुन्नाजी आनलाइन लेने छथि...

वर्तमान गज़ल कोन दिशा मे अछि?

वर्तमान गज़लक दिशा हमरा बहुत स्पष्ट आ सोझराएल नहि बुझाइत अछि। कने भुतलाएल आ भ्रमित जकाँ अछि। हमर अपन गज़ल (जेकरा किछु गोटे आजाद गज़ल वा गज़लनुमा कहए छथि) मे जोर विचार आ विषय पर रहल अछि, बात कहबा पर रहल अछि आ एहिमे कनेक हद तक व्याकरणक सभ अंगक खेयाल नहि राखल गेल अछि। ई व्याकरणक अनदेखी सप्रयास नहि, संशयसँ त्रान पएबाक लेल अछि। 'संशयात्मा विनश्यति' हमर ध्यानमे रहए आ जखनि व्याकरण बाधा बनि संशय उत्पन्न करए, हमर अवचेतनक अनायास प्रयासक परिणामस्वरुप कात होइत चलि गेल अछि। व्याकरणक बन्धनसँ भागब आ ओकर समझक कमी सेहो हमर सीमा भए सकैत अछि किन्तु ओ बात अलग। एक बातमे हमरा कनिकहु संशय नहि अछि जे मुकुट पहिर लेब मथदुख्खीक उपचार नहि अछि आ अपन घड़ीसँ संसारभरिक घड़ी मिलाएब उचित नहि अछि। अन्य बहुतरास गजलगोसभक जोर गज़लक व्याकरणपर छनि किन्तु हुनकासभक नाराजगीक संभावनाक बादो हमरा ई कहएमे संकोच नहि जे एहि बेसीतर गज़लसभमे 'क्या बात है!' बला बात नहि आबए छै, कहनमे डंक नहि बुझाइ छै। एतय हमरा महर्षि अरविन्दक कथन 'मात्र ब्रेन-माइण्डसँ जुनि लिखू। भावना आ विजनक आत्माक भीतर पहुँचिकए लिखब कविता लिखबाक सही ढंग अछि' आ दिनकरक कथन 'किछु कवि एहनहु अवश्य होइ छथि जे मात्र काफ़िआ आ अन्त्यानुप्रासक संकेतपर अनुकूल भाव जुटाकए पूरा गज़लक-गज़ल लिखि जाइ छथि, किन्तु काव्य-रचनाक सामान्य पद्धति ई नहि अछि। कविता त प्राय: एहि लेल रचल जाइत अछि जे कविक हृदयमे पहिने भाव आबैत अछि आ तखनि ओ ओकर अनुकूल छंद, रीति आ तुकक चयन करैत अछि अथवा आवश्यकता पड़लापर छंदोबद्धहिकें तोड़ि दैत अछि...' उद्धृत करबाक बेगरता बुझाइत अछि। कतओ हम

पहिने लिखि वा कहि चुकल छी जे मैथिलीक मिजाज गज़लक बहुत नजदीक नहि छै। ई अलग बात जे मैथिलीमे गज़ल लिखब असंभव नहि छै किन्तु कठिन त छैहे। जखनि साहित्य अकादमीसँ विधिवत स-राशि प्रमाणपत्र प्राप्त माया बाबू सन दिग्गज एहि मामलामे थस मारि सकए छथि आ एहि थस मारएकेँ सकारि सकए छथि त किछु ने किछु गड़बड़ त कतहु छै! तेँ हमरा लागैए जे साहित्यकार लोकनि गज़ल कहैत रहबाक दुस्साहस त करिते रहता किन्तु गज़लक स्थान मैथिलीमे बहुत सम्मानप्रद रहत आ एकरा महत्वक विधा मानल जएतैक,से संभावना कम जकाँ छै।

अहाँसभ हिन्दीक दुष्यन्त कुमार, अदम गोंडवी आदिकेँ अपन आदर्श मानै छिऐ मुदा हुनकर सभहक गज़ल पूरा-पूरी बहर-ओ-व्याकरण मे अछि, तखन मैथिली गज़ल मे अहाँ व्याकरण नै मानै छिऐ तकर की कारण ?

साहित्य लेखन कोनो आइसँ प्रारम्भ भेल काज नहि छै। ई आदिकालसँ अनवरत चलि रहल अछि आ एकदमसँ विभिन्न आ विरोधाभाषी दौरसभसँ गुजरल अछि। कहिओ वन आ ओतय निर्मित आश्रमक एकान्तमे एकर साधना होइ छल आ कहिओ महल-राजमहलक प्रश्रयमे एकरा बुनल-गुनल जाइत रहल अछि। आश्रमक लिखल साहित्य प्रकृतिक बुनल सांसारिक संरचना आ स्वयंकें बुझबाक प्रयासक प्रतिफल छलै जखनिकि राज्याश्रयक साहित्य अपन मालिक-मलिकारक आमोद-प्रमोद आ हुनक कृपा प्राप्त करबाक लेल होइत छलै। अजुका युग ताहिसभसँ बेलगट अलग युग अछि आ एकर साहित्यक उद्देश्य बदलि गेल अछि आ तें वर्तमान साहित्यक ओजन आ तरजू-बटिखरा वएह नहि भए सकैत अछि जे पहिनुका युगक छल। जखनि मम्मटक कहब छनि जे काव्यक लेल सम्मितत्रयीक कान्तासम्मितक उपयोग हएबाक चाही त एकर पाछू ई उद्देश्य आ अभिप्राय रहल हएत जे काव्यमे भावक अभिव्यक्ति पत्नीक लेल निर्धारित हाव-भावसँ कएल जाय जाहिसँ पति-परमेश्वर,राज-राजेश्वर आदि सत्ता-प्रतिष्ठान कें नीक लागनि, रोष नहि होइनि। आइ लोकतंत्र अछि आ साहित्यकारकें अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता प्राप्त अछि, पत्नीक भूमिका सेहो बदलल अछि आ साहित्यकार कोनो प्रजापालकक अधीनक पेटपोसुआ नहि अछि। ओकरा लग चुनौती छै जे ओ वाजिब बात कहए, ठोकिकए कहए आ लोकक रोष-निन्दाक परवाह नहि करए। तखनि कोनो कवि अपन अभिव्यक्ति लेल कान्तासम्मितक ठामपर प्रभुसम्मित या सुहृदसम्मित विधिसँ कविता करत त ओकरा शास्त्रविरोधी कहब उचित हेतए की ? रामधारी सिंह दिनकर कहै छथि जे हुनका समयमे कविता करएसँ पहिने पिंगल पढब अनिवार्य छल। आब कतेक कविकें पिंगलक परिभाषाहु बुझल छनि, पढबाक गप जाए दिअ। पिंगलक अवहेलनाक संग प्रस्तार साधबाक काज आ

गण, मगण, भगण, नगण आदिक, ग्रंथक आदि छंदक प्रथम गण अशुभ नहि शुभ राखबाक परिपाटीसभ सेहो भूतकालक वस्तु भए गेल अछि। अनेक प्रतिष्ठित आधुनिक कवि अपन कविताकें छंदक बंधनसँ मुक्त कए लेलनि अछि।

एहिना गद्यलेखनक लेल सेहो मारिते रास नियमसभ बनल छल। साहित्य दर्पणमे कहल गेल अछि जे 'कथामे सरस वस्तु गद्यमे कहल जाएत आ ओहिमे कतहु आर्या छंद सेहो हएत, कतहु वक्त्र आ अपवक्त्र सेहो हएत। प्रारम्भमे पद्यबद्ध नमस्कार हएत आ फेर साधु-प्रशंसा आ दुर्जन-निन्दा हएत।' आब कतेक कथाकार एकरा जानए छथि,मानि दए छथि आ ओकर पालन करए छथि? आब एकर कोनो आवश्यकता-उपयोगिता नहि रहल आ तें कोनो कथाकार एकर पालन नहि करए छथि आ जँ केओ करता त पुरातनपंथी आ परम-बुड़ि मानल जएता। हजारी प्रसाद द्विवेदी पुरना युगक चर्चा करैत कहए छथि जे' परवर्ती गद्य-काव्यमे नाना-भांतिसँ अलंकृत कए सुललित गद्यमे कथा लिखबहि प्रधान भए गेल छल। एहिमे कविकें कथा कहबाक धड़फड़ी नहि अछि। ओ रूपक आ दीपक आ श्लेष आदिकें अपन प्रधान कृतित्व मानि लैत अछि...ओ कोनो एहन अवसरक उपेक्षा नहि करत जतय ओकरा एकटा उत्प्रेक्षा, दीपक या रूपक या विरोधाभाष या श्लेष करैक अवसर भेटि जाए।' दण्डी, सुबंधु आ बाणभट्ट एहि देशक तीन नमहर गद्यकार मानल जाइ छथि। सुबंधु त अपन ग्रन्थक आरम्भहिमे प्रतिज्ञा कए लेने छला जे आदिसँ अंत तक श्लेषक निर्वाह करता। बाणभट्टक कथन छनि—'सुस्पष्ट मधुरालापसँ आ हाव-भावसँ नितान्त मनोहर तथा अनुरागवश स्वयमेव शय्यापर उपस्थित अभिनवा वधु जकाँ सुगम कलाविद्या संबंधी वाक्य-विन्यासक कारण सुश्राव्य आ रसक अनुकरणक कारण बिन प्रयास शब्द गुंफकें प्राप्त करएबला कथा केकर हृदयमे कौतुका-युक्त प्रेम नहि जनमाबैछ? सहजबोध्य दीपक आ उपमा-अलंकारसँ सम्पन्न अपुर्व पदार्थक समावेशसँ विरचित आ अनवरत श्लेषालंकारसँ किंचित दुर्बोध्य कथा-काव्य, उज्ज्वल प्रदीप जकाँ उपादेय चंपक-पुष्पक कलीसँ गूथल आ बीच-बीचमे चमेलीक पुष्पसँ अलंकृत घन-सन्निविष्ट मोहनमालाक भाँति केकरा आकृष्ट नहि करैछ?' उपरोक्त तीनू श्रेष्ठ गद्यकार जाहि गुणाढ्य पण्डितक वृहत्कथा (वस्तुतः 'बड्डकहा') के ऋणी मानल जाइ छथि ताहि गुणाढ्य पण्डितक कथासभमे भाषागत अलंकरणक दिस ओतेक ध्यान नहि अछि जतेक कथाक वक्तव्य वस्तु दिस। हिनकर कथासभमे 'कहानीपन' ततेक प्रचूर मात्रामे अछि जे आन कोनो अलंकरणक बेगरते नहि बुझाइत अछि आ तें ई ग्रन्थ प्रायः दू हजार वर्षसँ भारतीय कल्पनाकें अभिभूत कएने रहल अछि। ई मूलरूपसँ प्राकृतमे लिखल गेल छल आ प्राकृतहु की त जार्ज ग्रियर्सनक अनुसार

पैशाची प्राकृतमे। नियम-कानून, सिद्धान्त आ व्याकरणक दुरूहता त संस्कृत भाषाक उत्पत्ति अछि आ संस्कृत साहित्यमे विद्रोहक परम्परा नहि रहल अछि। एहि देशमे विद्रोहक पहिल बीया गौतम बुद्ध खसैलनि, ओ अंकुरित चाहे जहिआ भेल हुअए, पल्लवित आ पुष्पित ओ तखनि भेल, जखनि सिद्ध-संतसभक समय आएल। विद्रोहक तेवरहिक संग सिद्ध लोकनिक प्राकृतमे लिखल साहित्य आधुनिकताक वाहक बनल आ एतहिसँ परम्परासभकें चुनौती भेटए लागल। पुरान परम्परासभक टुटलाक बाद जे नव परम्परासभ काएम भेल ओहि मे सभसँ प्रमुख परम्परा ई अछि जे साहित्यिक अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता कोनो नियमकें नहि मानैत अछि। साहित्य आ समाजक एहि स्वतंत्रता, आधुनिकताक युगमे सेहो अनावश्यक बंधनसभकें यथावत मानल जाय से आग्रह-दुराग्रह किऐ राखल जाय ?

एहिना नाटकक लेल आचार्य भरतमुनि सन-सन विद्वानक बनाएल कतेको विधान अछि जे समयक संग अनुपयुक्त होइत प्रचलनसँ बहराए गेल अछि। जयशंकर प्रसादक पहिल चारिटा नाटक पुरनका रुढिक अनुसार नांदी, सूत्रधार, स्वगत, विष्कंभक आदि नाटक शास्त्रक नियमसँ जकड़ल अछि किन्तु बादक नाटकसभमे एहि प्राचीनताक बहिष्कार देखाइ पड़ैत अछि। तें ओहिमे मंगलाचरण, आकाशभासित नांदी, सूत्रधार आ भरतवाक्य नहि अछि। एतेक तक जे हत्या, युद्ध आदि जे बात नाट्यशास्त्रक अनुसार वर्जित अछि, नाटकमे ओकरहु बेरोक-टोक प्रयोग भेल अछि। नाटककारक कवि हएब अनिवार्य नहि रहल आ परम्परागत नौ अंकक वाध्यता टुटि पांच अंकसँ उतरैत एकांकी पर पहुँचि गेल।

एहिसभ उद्धरणक परिपेक्ष्यमे ई बेधड़क कहल जाए सकैत अछि जे सभक सभ प्राचीनहि अर्वाचीन आ शाश्वत नहि भए सकैछ आ तें व्याकरण आ विधान अपन ठामपर रहओ, जिनका अरघए छनि से एकर उपयोग-प्रयोग करथु किन्तु एकर अनुकरणक कोनो वाध्यता वर्तमान आधुनिक युगक साहित्यकारपर लागू करब बहुत समयानुकूल नहि बुझाइछ। पाछू घुरि जएबाक प्रयत्नमे बहादुरी आ उद्‌भटता जतेक हुअए बुद्धिमानी एकदम्मे नहि अछि। अजुका वर्तमान संघर्षमय, संकटमय अछि। सौंसे पृथ्वी जेना ब्रह्माण्डक कड़ाहीक अदृश्य तप्त-रसमे खौल रहल अछि। प्रतिक्षण दुनियाक बाहरी आ भीतरी नक्शा बदलि रहल अछि। कालि तक जे ध्रुव-सत्य छल, आइ ओ अस्थिर आ डमाडोल प्रमाणित भए रहल अछि। आइ जखनि हमरासभक सोझाँ नव-नव ओझराएल समस्यासभ सुरसा जकाँ मुँह बउने उपस्थित अछि तखनि पुरनका कलासभक लेल हाय-हाय करब फिजूल अछि। पुरनका ग्रन्थसभक संस्कृतमे जतए व्याकरणक विरोध भेटैछ ओतय पाठककें मन राखबाक लेल कहल जाइत

अछि—'आर्षवाक्यं प्रमाणम 'अर्थात जुनि देखू व्याकरण, देखू जे ऋषिक वाक्यक आत्मा की अछि। अहाँ त बस ओहि आत्मस्फुर्तिकें लए लिअ, शेषकें ओकरहि चिन्तापर छोड़ि दिअ। मम्मट, भामह, राजशेखर, आनन्दवर्धन, कुन्तक आदि अनेक आचार्यक प्रदत्त शास्त्रीय नियमक बावजूद शास्त्र स्वयं साहित्यक स्वायत्तताक पैरोकारी करैत अछि। कहल गेल अछि जे कविता स्वत:प्रमाण अछि, ओकरा अपन प्रमाणीकरणक लेल अपनासँ इतर कोनो प्रमाणक अपेक्षा नहि। अनुभववैशिष्ट्यक कारणें कविताक उपकरण लौकिक उपकरणसँ भिन्न भए जाइत अछि, ओकर भाषा सेहो लौकिक सामान्य भाषासँ अलग भए सकैत अछि। अज्ञेय कतहु लिखलनि अछि जे लेखक अग्निगर्भा होइत अछि—लीक तोड़ैत अछि, नव-नव प्रयोग करैत अछि आ प्रयोगसँ नव जीवन-सत्य पाबैत अछि।

अपन गज़ल-संग्रह 'बहुरूपिया प्रदेशमे' के अपन बातमे हम एहि दिआ थोड़ेक-किछु कहने छी। आन बहुत गोटे जकाँ हमरो लग बहुत रास अवगुणसभ अछि, धैर्य-धनक कमी सेहो अछि। विश्वविख्यात शायर सभ सम्पुर्ण जीवनमे जतेक रचलनि तेकर बराबरी हमसभ कम समयमे ओतबे लिखिकए करए चाहए छी त ओकर परिणाम इएह होनाइ छै। परिमाण(quantity) त पुरि गेल एकर स्तर (quality) केहन भेल से फैसला त आब भविष्यहिक हाथमे अछि। दुष्यंत कुमार आ अदम गोंडवी प्रिय छथि किन्तु हम हुनकासभक पासंगहुमे नहि छी से हमरा बुझल ए। हम 'समान-विद्या-वयोऽलंकारै: अखिल-कला-कलापालोचन-कठोरमतिभि:, अतिप्रगल्भै: अग्राम्य-परिहास-कुशलै:, काव्य-नाटकाख्यानकाख्यायिका-लेख्य-व्याख्यानादि-क्रिया-निपुणै:, विनय-व्यवहाराभि:, आत्मन:प्रतिविम्बैरिव राजकुमारै:सह रममाण' नहि छी, अरविन्द ठाकुर छी आ अपन सीमासभक संग अभिन्न जकाँ अरविन्द ठाकुरहि रहए चाहए छी।

ओना पुरस्कार त प्रोत्साहन लेल होइछै मुदा मैथिलीमे पुरस्कार भेटिते साहित्यकारक गति रुकि जाइ छै। एना किऐक ?

पुरस्कार जँ प्रोत्साहन लेल देल जाइछै त ई आन कोनो भाषा आ संसारक गप भेल। सएह जँ मैथिलीओमे होइतए त से मैथिली केना भेल। मैथिलीक पुरस्कारक सूचीसभ अपन व्यथा-कथा अपनहि कहि रहल अछि, सुनएबला कान चाही,देखएबला आँखि चाही, सिहरएबला आत्मा चाही। बाल गंगाधर तिलक केर गप मन पड़ैत अछि जे कहने छला जे महान उप्लब्धि सरलतासँ नहि भेटैत अछि आ सरलतासँ भेटल उप्लब्धि महान नहि होइत अछि। एहि कथनक परिपेक्ष्यमे मैथिली पुरस्कार आ पुरस्कृत लोकक मुल्यांकन सरलतासँ कएल जाए सकैत अछि। ओना पुरस्कार

भेटलाक बाद साहित्यकारक गति रुकि जेबाक प्रश्न बहुआयामी अछि। ई बहुत बातपर निर्भर अछि—साहित्यकारक व्यक्तित्वपर, हुनक कृतित्व पर, पुरस्कारक प्रति हुनक दृष्टिकोणपर, पुरस्कारक राशिपर,पुरस्कार-विशेषक विधान आ वितरण-प्रणालीपर आदि-आदि। जीवकान्तक खिस्सा मन पड़ैए। अनेक वर्षसँ कतारमे लागल रहथि आ नम्बर अएबे नहि करनि। जाहि बेर पुरस्कार भेटबाक पुर्वाभास आ संभावना रहए, ताहि बेर हुनक पोथीकेँ फेरसँ नवका गत्ता पहिराएल गेल आ हुनका एलन गिन्सबर्ग आ राजकमल चौधरीक मिलल-जुलल अवतारबला कवि घोषित करएबला अग्निपुष्पक भंगिआएल टिप्पणिक संग पुनर्प्रस्तुतिकरण भेल छल। ओहि पुरस्कारसँ किन्तु जीवकान्तक मन नही अघएलनि आ शिशु-काव्यपर पुरस्कारक घोषणा होइतहि ओ शिशु-काव्यक पथार लगाबएमे भिड़ि गेला आ अंतत: ओहो पुरस्कार ओ लैए लेलनि। युवा पुरस्कार लेल ओ घुरिकए युवा भैए नहि सकैत छला आ जीवन जँ दगा नहि देने रहतिअनि त अनुवादहुक पुरस्कार ओ लैए कए मानितथि।

मैथिलीक अधिकतर पुरस्कार प्रोत्साहन लेल नहि अपन लोककेँ उपकृत करबाक लेल देल गेल अछि। जँ वाध्यतावश कोनो सुपात्रकेँ भेटलहु अछि त से हुनक प्रतिनिधि आ श्रेष्ठ संग्रहपर नहि, बेरपर भेटि गेल जएह-सएहपर। भीमनाथ झाकेँ जहि पोथीपर अकादमी पुरस्कार भेटल ताहिसँ बेसी श्रेष्ठ आ उत्तम पोथीसभ हुनका हाथें आकार लेने अछि आ एकबेर की, चारि बेर पुरस्कार लेबाक पात्रता ओहि पोथीसभक अछि। ई त एक तरहे भीमनाथ झाक संग अन्याय भए गेल। हुनक पुरस्कृत पोथीकें हुनक प्रतिनिधि रचना मानि आन भाषाक पाठक हुनका प्रति तेहने धारणा बनाएत जे वस्तुत: हुनक छनि नहि। भगत सिंह कहने छला जे 'कोनो समाज अथवा देशकें चिन्हबा लेल ओहि समाज अथवा देशक साहित्यसँ परिचित हएबाक परम आवश्यकता होइत अछि किएक त समाजक प्राणक चेतना ओहि समाजक साहित्यमे विद्यमान रहैत अछि।' अखनि जे हालत अछि ताहिमे पुरस्कृत अधिकांश मैथिली पोथीसँ एहि क्षेत्रक जे पहिचान बनैत अछि से अत्यन्त पिछड़ल, अतीतजीवी आ आधुनिकताविरोधीक अछि। पुरस्कार भेटएसँ पहिने राजमोहन झाक 'भनहि विद्यापति' आ 'टिप्पणित्यादि' छपल रहनि त ओ मजाकमे कहैत छला जे कहीं एहि दुनूमेसँ कोनो पोथीपर ने अकादमी हमरा पुरस्कार दए दिअए आ हम लाजे मरि ने जाइ। ओना गति रुकबाक मामला विशेषतया ओहने लोकक संग भेल अछि जिनका पुरस्कार देबाकहि लेल साहित्यकार बनाएल गेल वा मानल गेल।

पुरस्कार-केन्द्रित लेखन छुतहर-लेखन अछि। ई ओहेन लोकक काज अछि जेकरा लेल सफलता प्रमुख छै आ सार्थकता गौण। एहन मानसिकताबला लेखक

भस्मासुर अछि आ पहिने अपनहि निजताक हत्या करैत अछि। एहन लेखकक लेखन निरर्थक अछि, साहित्यक दृष्टिकोणसँ निकृष्ट आ समाज लेल अहितकर अछि। एहन लेखन दीर्घजीवी नहि भए सकैछ आ अधिकतर मामलामे एहन लेखन पुरस्कारक खैरात भेटितहि विस्मृत भए जाइत अछि, मरि जाइत अछि। अपन लेखक आ लेखनक सार्थकताक पवित्र उद्देश्य आ कामनासँ लिखनिहार जे शुद्ध साहित्यकार छथि से पुरस्कार भेटलाक बादो लिखैत रहला अछि, लिखबाक गति भनहि कने कम भए गेल हुअए।

वर्तमान समयमे मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक की हाल छै?

वर्तमान समयमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक हालपर हिन्दीक प्रसिद्ध जुमला कहल जाए सकैत अछि—'वही चाल बेढंगी!' बहुत दिनसँ नियमित प्रकाशित होइत तीन टा मैथिली पत्रिका हमरा देखाइत अछि—'मिथिला दर्शन', 'घर बाहर' आ 'समय साल'। एकटा 'पुर्वोत्तर मैथिल' सेहो एमहर निरन्तर उपलब्ध भए रहल अछि। एहि सभमे 'पुर्वोत्तर मैथिल' मे कखनिओ कए सम्पादकक ओरिआओन आ विवाद मोल लेबाक साहस देखाइ दैत अछि किन्तु एकरा छोड़ि दोसर कोनो पत्रिका लग सम्पादकीय दृष्टि (vision) के अभाव जकाँ बुझाइत अछि। जे अलाए-बकच भेटल से छापने गेलहुँ। अपन दृष्टिकोणक अनुसार कोनो योजना नहि, कोनो परिकल्पना नहि, कोनो मापदण्ड नहि, कोनो स्तर नहि। मिथिला दर्शन पहिने रचनाकारसभसँ विशेष रचनाक लेल आग्रह करैत छल, से बेगरता आब प्राय: हुनकासभकेँ नहि बुझाइ छनि। 'घर बाहर' त ओहि चेतना समितिक प्रकाशन अछि जे राजनीतिक थाल-कादोमे आपादमस्तक लेपित आ ताहिमे मुदित अछि। संस्थाकेँ येन-केन-प्रकारेन अपन चांगुरमे बकोटिकए राखब आ अपन फोटोक संग अपन विज्ञापन आ अभिनन्दन कराएब, एतबे उद्देश्यसँ ओकर मालिक-मलिकारसभ ओहि पत्रिकाकेँ नियमित कए कए राखने छथि। कहबाक लेल एमहर ओहिमे साहित्यिक सामग्री बढल अछि किन्तु छापता ओ सभ ओएह जे हुनक अनुकूल छनि, प्रतिकूल नहि। स्थिति ई अछि जे समीक्षाक नामपर सेहो कोनो आलोचना अपेक्षित नहि, मात्र मुँह पोछबाक लेल प्रशंसा लिखू वा बातकें गोलिआकए निष्कर्षहीन बतकुट्टन कए ससरि जाउ। 'समय साल' त बुझू जे 'सिंगल मैन प्रोडक्ट' अछि। एकहि व्यक्ति द्वारा विभिन्न नामसँ सौंसे पत्रिकाक सभटा आर्टिकिल आ पत्रिका पुर्ण। ई पत्रिका प्रमाणित करैत अछि जे मैथिली बिकट, प्रचण्ड आ धुरन्धर लिक्खाड़सभसँ परिपूरित आ मातबर अछि। ओना ई अपन संपुर्ण कलेवरमे राजनीतीक पत्रिका अछि आ एहिमे साहित्यिक रचना मात्र विध पुरैबाक लेल अचार-चटनी जकाँ देल जाइत अछि आ तें एकरासँ एहिसँ बेसी अपेक्षा करब उचितहु नहि।

आब अनियतकालीन भेल 'अंतिका' एहन एकमात्र शुद्ध साहित्यिक पत्रिका अछि जेकरा लग एकटा फरिच्छ आ स्पष्ट सम्पादकीय दृष्टि छै आ जे योजनाबद्ध तरीकासँ काज करैत रहल अछि। अपवादस्वरूप पुर्वप्रकाशित रचनासभक माध्यमसँ खानापुरीक रूपमे बहराएल एकर किरण-प्रसंग सन अंक सेहो अछि किन्तु एकरा हम सम्पादकक असफलता नहि, हुनक भरोसाक असफलता मानए छी। एहि पत्रिकाक निरन्तरतामे आएल बाधाक जे कोनो कारणसँ हुअए, दुखी करैत अछि।

चेतना समितिमे अखनो दलितवर्गक प्रवेश निषेध छै। एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ?

मिथिला, मैथिलीक नामपर संकीर्णता, पाखण्ड, प्रपंच आ विभिन्न प्रकारक धुर्ततासभ संस्थाबद्ध भेल अछि। सार्वजनिनता—सामाजिक-एकताक नारा पर बनल आन अनेक संस्था-संगठन जकाँ चेतना समिति सेहो स्वयंकें मैथिल-महासभाक क्षुद्र-संकीर्णताक खतियानी उत्तराधिकारी प्रमाणित करबाक लेल जान-परान अरोपने अछि आ एकरा लेल निरन्तर एकटा मुर्दा-संस्कृतिक गौरवगानक अष्टयाम आयोजित करैत रहैत अछि। एकर कर्ता-धर्तालोकनि कें एतबहु ज्ञान नहि छनि जे मुर्दा-संस्कृतिक गौरवगान प्राय: शत-प्रतिशत अवस्थामे जिन्दा-संस्कृतिक उपेक्षा-अवहेलनाक बुद्धि-विहीन प्रयासक क्रममे होइत अछि। क्षुद्र व्यक्तिगत राजनीतीक-आर्थिक लाभक आकांक्षासँ करिआएल-गन्हाएल हाथक उपकरण भए चेतना समिति अपन संपुर्ण संरचनामे साहित्य-संस्कृतिक कब्रिस्तान बनि गेल अछि। एतय जीवन्त लोकक ह्रदय कलपैत अछि आ दिवंगत यात्री जीक आत्मा हबोढकार कानैत अछि जे एकर स्थापनाक गप भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकासक पवित्र उद्देश्यसँ सोचने छला।

चेतना समितिक हम सपत्नीक आजीवन सदस्य छी किन्तु तेकर प्रमाण लेल हमरा लग मात्र एकटा रसीद अछि जे हमर कोनो फाइलमे कतहु घोसिआएल हएत। सदस्यता-प्राप्तिक बादहिसँ एकर कोनो गतिविधि दिआ कहिओ हमरा विधिवत कोनो सूचना नहि भेटल अछि आ तेँ एकर संगठन आ संचालनमे हमर कोनो भागीदारी नहि रहल अछि। एकर कर्ता-धर्तासभक अगुऐत-पछुऐत धरनिहारसभकेँ छोड़ि आनसभक हाल हमरहि सन हएत, से अनुमान करब कठिन नहि अछि। एकमात्र इएह तथ्यसँ एहि संस्थाक सार्वजनिकता आ दशा-दिशाक स्थितिक थाह लगले भेटि जाएत। एहि संस्थामे दलित वर्गक प्रवेश-निषेधक गप छोड़ू, गैर मैथिलहिक कोनो मानि नहि छै। गैर मैथिलसँ हमर आशय गैर मैथिल ब्राह्मणसँ अछि आ जँ केओ दलित विधायक सह साहित्यकार विलट पासवान विहंगम सन सन किछु उदाहरण

दए कए हमर बातकेँ काटबाक ब्योंत करता त तेकरो लेल हमरा लग यथेष्ट तर्क अछि। अंगुरीपर गिनाइत जे गैर-मैथिल अगड़ा, दलित वा पिछड़ा-अतिपिछड़ा कोनो ब्रह्मबाबाक धरिया-ढेका पकड़ि असगरहि पुरस्कार-सम्मान-निमंत्रणक भवसागर तरि गेल त तरि गेल किन्तु से सभ लोक अपन समाजक प्रतिनिधि किन्हु नहि अछि, किन्हु नहि अछि। लटकनियां-कीटसभक एकटा अलगे नसल होइ छै। एकरा कोनो वर्ग आ जातिमे नहि गिनल जएबाक चाही। उदाहरणक रूपमे सांख्यिकीक एकटा अंकमात्र बनल ई लोकसभ केकर धरिया आ केकर ढेका पकड़ि अपन उद्धार कएलनि अछि से नुकाएल गप नहि अछि।

ओना दोष मात्र लोहारहिटाक नहि अछि, लोहाक सेहो अछि। आरक्षण, सामाजिक न्याय आ सुशासनक दू दशकक बादहु जँ चेतनाक हनुमान चेतना समितिक लंकामे घुसि ओकर दहन नहि कए सकल त एहि अचेतावस्थाक दोष केकरापर? चेतना समिति आर्थिक रूपसँ संपन्न अछि आ एतयसँ सत्ताक डगर सेहो बनैत अछि आ तें एहिपर कोनो राजनीतिक व्यक्तिक गिद्ध-दृष्टि लागल रहए से स्वाभाविक, सत्तालिप्सासँ बेचैन आत्मा एकरापर अपन आधिपत्य चाहए-करए सेहो स्वाभाविक। स्थिति विकट आ चिन्ताजनक तखनि भए जाइत अछि जखनि एकरासभकें मखमली बुद्धिजीवी, अचूक अवसरपरस्त, यथार्थ-विरहित यथार्थ स्रष्टा आ साहित्यक सत्ताखोरसभक खलीफ़ावादी गिरोहक स्वार्थपरक सहयोग सेहो भेटि जाइत अछि। किन्तु इहो सत्य अपन ठामपर अछि जे कायर त ओहो अछि जे अपन अधिकार स्थापित नहि कए पाबए। भरि जिनगी ब्रह्म-बाबाक वर्तनीपर चलि अंतिम चला-चलीक बेरामे पचपनियां वर्तनी सूझए, एहन चेतनाक कोन काज? कोनो नीक आ हितकर बात जँ व्यक्तिगत विज्ञापनक उद्देश्यसँ हएत त ओ निरर्थक अछि। भीख, दछिना आ भाभटक चलनसँ प्रवेशाधिकार नहि भेटै छै, ई भेटै छै संघर्षसँ, ई भेटै छै क्रियात्मक आन्दोलनसँ, जेकर दीप्त उदाहरण महाराष्ट्र प्रस्तुत कएने अछि।

दरभंगे पीठ जकाँ आब सहरसा पीठ बनि रहल छै। ई मैथिली लेल नीक की खराप?

मैथिलीमे छातीबला मरद कम छै तेँ एतय ठामहि ठाम पीठहि-पीठ देखाइ पड़त, पीठक बलें अगराइत लोक देखाइ पड़त। सहवासक क्रममे जँ विपरीत-रति नहि हुअए त स्त्री पीठभरें सुतैत अछि, रोगी आ कमजोर लोक सहारा लेल पीठभरें सूतल या ओंगठल रहैत अछि, युद्ध आ संघर्षसँ भागनिहार पीठ देखबैत अछि आ पीठाधीश-मठाधीश अगिला जनममे कुकुर बनैत अछि से कथा वाल्मिकी रामायणमे वर्णित अछिए। हम व्यक्तिगतरूपसँ 'एकला चलो' आ 'चरैवेति-चरैवेति' माननिहार छी

आ पीठबला एहि मौगियाही, नपुंसक खेलमे हमरा कोनो अभिरुचि नहि अछि।

दरभंगहि जकाँ सहरसामे कोनो पीठ बनल छै वा बनि रहल छै तेकर कोनो जानकारी हमरा नहि अछि। हम लेखक छी आ लेखनकेँ अपन कर्तव्य मानए छी। मन पड़ै छथि मराठी साहित्यकार कुसुमाग्रज। नासिकमे हुनक आवासपर हुनकासँ भेंटक क्रममे दीर्घवार्ता भेल छल। चलएकाल हम हुनकासँ लिखित-संदेश मांगलियनि त ओ अपन हस्तलिपिमे हिन्दीमे लिखलनि—'लिखो, लिखते रहो, लिखने से ही कोई भाषा समृद्ध होती है।' हुनक ई संदेश हमरा लेल पाथेय बनल अछि। साहित्यक सहकर्मासभ यदा-कदा कतहु एकत्रित भए एक-दोसराक हाल-चाल ली, एक-दोसराक रचना सुनि ओहिसँ ऊर्जस्वित आ आनन्दित होइ,से मनोकामना रहैत अछि। किन्तु नकार-भावसँ स्वार्थवश कोनो गुट-गिरोह बनैत अछि त ताहिसँ हमरा घिन आबए ए आ एकरा हम कोनो क्षेत्रक क्रियाकलाप लेल अहितकर मानए छी, साहित्यक लेल त आओर बेसी। पीठ-मठ के किछु लघु-रूप हमरा देखल-भोगल अछि। जेकरा पीठ आ मठ बनैबाक औकाति नहि छै से संपुर्ण भोजनक अनुप्लब्धताक स्थितिमे जुट्ठा खाइए या थूक चाटैए आ एहि क्रममे 'तू हमर प्रशंसा करह, हम तोहर प्रशंसा करबह' बला क्षुद्रता करैए। एकर परिणामस्वरूप छोटका-छोटका गुट-गिरोह बनैए आ ई पीठ आ मठक तुलनामे कोनो कम खतरनाक आ हानिकारक किरदानी नहि अछि। ई सिलसिला, ई तौर तरीका छोट-नम्हर साहित्यिक माफ़िआ बनबैत अछि, पाठककें भ्रमित करैत अछि। एहन गिरोहसभसँ धोखाधड़ीक चलन बढैत अछि, केकरो निकृष्ट रचनाकें गुम्बद चढाए अप्रत्यक्ष रूपसँ नीक रचनाक संग अनदेखी आ अन्याय करैत अछि। छोट हुअए कि नमहर, एहि पीठ-मठक स्थापनसँ कठगुरु आ झोलटंगबाक क्षुद्र परिपाटी बनैत अछि आ एकर दुष्परिणामस्वरूप अनेक एकलव्यक अऊंठा कटैत अछि आ कतेको शम्बूक मारल जाइत अछि। दू टा डेनिश कहावत मन पड़ैत अछि। पहिल कहैत अछि जे दरबार(एतय एकर अर्थ मठ या पीठ लए सकै छी) शरीफ आ मशहूर भिखमंगा सभक जमात होइत अछि। दोसर कहैत अछि जे कोनो ईमानदार आदमी हड्डीक लेल स्वयंकें कुकुर नहि बनबैछ। एहि दुनू कहावतक पूरक बनैत अछि एकटा पुर्तगाली कहावत जेकर भाव अछि जे कुकुर अहाँक लेल नहि, रोटीक लेल नांगड़ि हिलबैत अछि। बुझनुक लेल एहि तीनू कहावतक विश्लेषण करब या ओकर आशय बताएब एतय आवश्यक नहि अछि। दुर्भाग्य जे मठ-पीठक छद्मक चकचोनहीसँ चोन्हाएल महंथ आ चटिया—दुनूमेसँ केकरहु ई ज्ञान नहि अछि जे जखनि पंडुकी आ कौआक संयोग होइत अछि त ओकर पाँखि त श्वेतहि रहैत अछि किन्तु ओकर कलेजी कारी भए जाइत अछि। ओना जँ ज्ञान रहितए त ई काजहि

किए करैत। खच्चरसभकें गुमान रहै छै जे ओकर पुरखा घोड़ा रहै। एकर कोन इलाज ? केओ सोंगर लगाकए पछिलका दरबज्जा वा खिड़कीसँ भनहि स्वर्गमे पैसि जाइ, मानल त जाएत ओ चोरहि।

साहित्य तत्कालिक लाभक वस्तु नहि, दूरगामी प्रभावबला शक्ति अछि। जेकरा लग छाती हेतए, छातीमे दम हेतए तेकरे सन्तति (रचना) दीर्घायु हेतए। साहित्य सहितक भाव अछि। एहि सहितसँ रहित कोनो स्वार्थ वा नकार भाव सुपात्रक अहित करैत अछि आ तेँ ई कतहु बनओ, अस्वीकार्य अछि। साहित्यक पावन क्षेत्रमे कोनो अपावन विचार या क्रियाक कोनो स्थान नहि हएबाक चाही।

'अंतिका' आब मृतप्राय पत्रिका अछि मुदा ओकर हरेक अंकमे अधिकांशतः सहरसाबला लेखक रहैत अछि। ई कतेक उचित ?

ई प्रश्न हमरा कनेक विरोधाभाषी लागैत अछि। जखनि अंक बहराए रहल छै त ई मृतप्राय केना भेल ? ई अवश्य जे ई नियमित नहि रहि सकल अछि। तखनि मैथिलीमे एहन अभागल कोनो पहिल पत्रिका त नहि अछि अंतिका। रहल बात एहिमे अधिकांशतः सहरसाबला लेखकक छपब त हम एकरा एहि दृष्टिसँ नहि देखि पाबि रहल छी। हम सुपौलक छी आ अंतिकामे हमरहु रचना छपैत रहल अछि आ मधुबनीअहु-दरभंगा आ अन्य ठामक लेखकसभक रचना हम एहिमे देखैत-पढैत रहल छी। गौरीनाथ पहिनेक तुलनामे बहुत बदललाह अछि—व्यक्ति, साहित्यकार आ सम्पादकक रूपमे, जे समय-काल, परिस्थिति आ माहौलक प्रभावमे स्वाभाविक अछि किन्तु हुनक संघर्ष, क्षमता, योग्यता आदिकेँ नकारब कठिन अछि। अपन अनेक सीमाक बादो गौरीनाथ/अनलकान्त मठ-मठाधीशक प्रति विद्रोह आ आक्रोशक स्वरकेँ अक्षूण्ण राखने रहल छथि आ अपन लेखन आ अंतिकाक माध्यमसँ ओ एकरा निरन्तर प्रकट करैत रहल छथि। ई विद्रोह आ आक्रोशक स्वर अलग-अलग लोकक लेल प्रिय-अप्रिय भए सकैत अछि किन्तु एकरा नहि सकारब कठिन अछि।

क्षेपकमे एकटा गप कहबाक मन होइए। से ई जे सुपौल-सहरसा आ दरभंगा-मधुबनीमे प्रकृतिगत अंतर अछि। एकटा कोशी नदीक उद्दाम तेवरक क्रीड़ाक्षेत्र आ दोसर कमलाक लचगर खेलौरक क्षेत्र अछि। कोशी संघर्ष आ पुरुषार्थ सिखबैत अछि त कमला कोमल सुविधाक पाठ दैत अछि। संभव अछि जे अनलकान्त/गौरीनाथकें कोशीक लेखन बेसी धरगर आ समकालीन बुझाबैत होइनि।

बहुत दिनधरि मैथिलीमे दलित लेखक केर प्रवेश नै छल। एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ? एखनुक केहन अवस्था छै ?

साहित्यकें दलित-लेखन, स्त्री-लेखन आदिक कूड़ीमे बाँटिकए देखब हमरा कनेक

अनसोहांत जकाँ लागैत अछि किन्तु यथार्थ त अपन ठामपर अछि आ एकरा नकारब सेहो ने संभव अछि आ ने उचित। ई स्थिति आन अनेक भाषामे सेहो रहल अछि। मैथिलीपर पुरोहितवर्गक वर्चस्व मलिकाना-अधिकारक सीमा तक रहल अछि तेँ एतए ई कनेक बेसीए मात्रामे रहल अछि आ एतए मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक किछु चुनिन्दा घराना छोड़ि आन सभगोटेक हालत दलितहि जकाँ अछि, से बात अलग। प्रोत्साहनक बदौलत संभव छल जे बहुतो गोटे प्रकाशमे अबितथि आ इहो संभव जे एकर अभावमे अनेक गोटे दुखीभए मोहभंगक अवस्थामे लेखनसँ विरत भए गेल होथि किन्तु कोनो प्रतिभाकें आगू आबएसँ बलात रोकल जाए सकैत अछि से बात सकारब कनेक कठिन अछि। संख्याबल कनेक कमजोर भए सकैत अछि किन्तु आन-आन क्षेत्र आ भाषासँ बाबा साहेब अम्बेदकर, डॉ. तुलसीराम, शरण कुमार लिंबाले, नामदेव ढसाल, दया पवार, आदि अनेक नाम उदाहरणक रूपमे देले जाए सकैत अछि। इहो बात अपन जगह जे दलित साहित्यक पोषण दलित आन्दोलनसँ भेल जेकर अभाव मैथिली-भाषी क्षेत्रमे रहल अछि। मैथिल महासभाक माध्यमसँ भाषा-संस्कृतिपर आधिपत्यक जे षडयंत्र खुल्लमखुल्ला भेल तेकर आशय आ नीयत बुझि ओकर विरोधमे दलित की, दू जातिसँ इतर आनो आन जाति दिससँ विरोधक कोनो स्वर नहि बहराएल त एकर कुफल त एहि सकल आ शेष समाजकें भोगहि पड़तए। अलबत्ता एतए एहन मरौसीबला वातावरण रहल अछि आ जतिआरेसँ दियाद-बाद होइत भाय-भतीजावाद आ परिवारवादक तेहन घिनाओन कठखेल होइत रहल अछि जे अगड़ा वर्गक अनेक लोक सेहो कुंठित भए लेखन-विरत होइत रहलाह अछि। संघर्ष करैत आगाँ बढी, एहि किलर-ईंस्टिंक्टक अभाव त रहले अछि जे हजारो वर्षक मानसिक गुलामीक परिणाम अछि। संघर्ष आ विद्रोहक कठिन डगर छोड़ि, नकल आ देखांओसमे एहि समाजक विभिन्नवर्ग सुविधाभोगक डगर चुनैत रहलाह अछि आ मंचादिपर कनेक जगह पाबि तिरपित होइत रहलाह अछि त एकर दोष कनिके सही, हुनकहुसभपर त आबितहि छै। ओना अनेक गोटे एहि विपरीत परिस्थितिसँ लड़ि अपन व्यक्तिगत क्षमतासँ आगू आएल छथि। जे तीव्रता आ गति वांछित अछि से भनहि नहि हो किन्तु विदेहक माध्यमसँ प्रतिकारक एकटा मजबूत वातावरण बनल अछि आ अनेक गंभीर लेखकलोकनि प्रकाशमे अएलाह अछि आ से वर्तमानक प्रति संतुष्ट आ भविष्यक प्रति आश्वस्त आ आशान्वित करैत अछि। साहित्यमे संख्याँबल महत्वपुर्ण नहि होइत अछि, महत्वपुर्ण होइत अछि बौद्धिक आ रचनात्मक क्षमता। चुट्टीक घर लेल एक बूंद ओसहि तूफान आ सैकड़ो कौआक लेल एकहि टा ढेला यथेष्ट होइत अछि। ओना उचित ई होइतए आ समयक मांग सेहो अछि जे एक हाथ

दोसर हाथकें धोअए, अन्यथा दुनू मैलहि रहि जाएत।

अहाँक साहित्यिक यात्रामे कोन तत्व प्रेरक आ कोन तत्व बाधक रहल ?

हमर पुर्वजलोकनि शुद्धरूपसँ खेतिहर रहथि। खाता-खतियान आ केवाला आदि छोड़ि आन कोनो चीज पढबामे हुनकासभक कोनो अभिरुचि नहि रहनि। एहि किसानी-वंशमे एकटा अवतारी-पुरुषजकाँ हमर पिता बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव' केर आविर्भाव भेल आ ओ खेती-किसानीसँ अविछिन्न प्रेम राखितहु स्वतंत्रता-संग्रामक अग्रिम-पंक्तिक योद्धा भेला आ बादमे समाज-सेवा, साहित्य, पत्रकारिता आदिक विविध क्षेत्रमे अपन हस्ताक्षर दर्ज कएलनि। पुत्र हएबाक कारणें कम-बेसी मात्रामे हुनक प्राय: सभटा गुण हमरहुमे आएल। राजनीतिमे अपन प्रतिभाक समुचित सदुपयोगक संभावना नहि देखि हम साहित्य-लेखनक अपन पुर्व-प्रेमकें गति देल आ तेकरहि परिणामस्वरूप हम आइ एतए छी। एहिमे उत्प्रेरकक काज कएलक 90-92क आसपास डॉ. नवीन कुमार दास, केदार कानन, डॉ. शिवेन्द्र दास आदिक संगति। हमर एकटा मैथिली कथा बहुत पहिने 'मिथिला मिहिर'मे छपि चुकल छल किन्तु हमर छिटपुट लेखन हिन्दीमे होइत रहए। हम हिन्दी जगतमे एक सुपरिचित नाम भए गेल रही आ हिन्दीक अनेक पत्र-पत्रिकामे हमर रचनासभ छपितहु रहए। सुपौलक एहि त्रिमुर्तिक संगतमे अएलहुँ त एकर द्विपक्षीय लाभ भेल। हमरासभक नियमित बैसार हुअए लागल आ एकर सकारात्मक प्रभाव प्राय: सभगोटेक लेखन पर पड़ल। सभगोटे किछु ने किछु लिखिकए आनी आ ताहिपर घमर्थन हुअए आ तहिसँ रचनासभ परिष्कृत हुअए। एहि बैसारमे कहिओ काल महाप्रकाश, सुभाषचन्द्र यादव आबथि। मायानन्द मिश्र, जीवकान्तहुक आबरजात रहनि आ एकाध बेर राजमोहन झाक आगमन सेहो मोन अछि। एहि दौरान बंग्लाक कवि कालीपद कोनार सेहो अएलाह आ मैथिलीक लेल ऐतिहासिक काज कए गेला। सुपौलक अनियतकालीन पत्रिका 'संकल्प'क एक अंकक प्रकाशन आ आन अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक घटनासभ भेल। हम रसे-रसे मैथिलीमे लिखए लागल छलहुँ आ ओ सभ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे छपि हमरा चिन्हार करए लागल छल आ जखनि हमर प्रथम संग्रह (परती टुटि रहल अछि) मैथिलीएमे आबि गेल आ ताहिपर अनेकानेक उत्साहवर्धक टिप्पणीसभ आएल त हम जेना मैथिलीएक भए कए रहि गेलहुँ। ई सभटा गतिविधि तीनहि-चारि वर्षक अंतरालमे भेल। प्रथम संग्रहक बाद प्राय: दस वर्षक अंतराल तक हम एकदमसँ गुम्मी लाधि लेल। किछु गोटेकें हमर ई अनुपस्थिति हमर मोहभंगसँ उपजल बुझाइ छनि त एहिमे आंशिक सत्य अछि। सुपौलक साहित्यिक वातावरणमे आएल एकटा अप्रियसन खतियानवाद एकर जड़िमे छल किन्तु हम कहिओ कोनो

बाधाकें गुदानल नहि त ओकरासँ हारबाक त कल्पनहि नहि कएल जाए सकैत अछि। एहि 'बाधा' पर हमरा भर्तृहरि मन पड़ि गेला। ओ कहलनि अछि—'संसारमे तीन प्रकारक मनुष्य अछि–नीच, मध्यम आ उत्तम। नीच मनुष्य बाधाक डरसँ काम शुरुए नहि करैछ; मध्यम मनुष्य काम शुरु त कए लैछ, किन्तु बाधा पड़लापर ओकरा बीचहिमे छोड़ि दैछ; मात्र उत्तम मनुष्य जाहि काजकें शुरु करैछ, हजार बाधा पड़लहु पर ओकरा पूरा कए कए छोड़ैत अछि'। हमरा उत्तम मनुष्य हएबाक कोनो भ्रम वा गुमान नहि अछि, किन्तु हम अपन नाम मध्यम मनुष्यमे नहि देखए चाहए छी आ नीचमे त किन्नहु नहि। तें हम सदति ई बात मन राखए छी जे जँ अहाँ चाहए छी जे मरितहि आ चितामे सुड्डाह होइतहि अहाँ बिसराए नहि देल जाइ त या त पढबा योग्य चीज लिखू या लिखबा योग्य काज करू। हमर लेखनमे ई अंतराल कोनो बाधा वा बाधाजनित मोहभंगसँ नहि, एहि कारण आएल जे ओहि कालविशेषमे हमर पुत्रसभक शिक्षा अपन निर्णायककालमे छल आ तें साहित्यिक चुनौतीकें तात्कालिक रूपसँ विश्राम दए हम अपन समग्र चेतना–क्षमता–समयकें अपन सन्ततिक भविष्य–निर्माणक प्रयास दिस मोड़ि देल। हमरा दुबारा सक्रिय करबाक श्रेय हिन्दीक साहित्यकार–सम्पादक महेन्द्र नारायण पंकज आ मैथिलीक ओजस्वी–युवा अजित आजादकें छनि। पंकज जी हमरा प्रगतिशील लेखक संघक सुपौल जिलाक अध्यक्ष बनाए साहित्य–समाजसँ हमर संपर्ककें पुनर्जीवित कएलनि आ अजित आजादक चहेटब हमर कलमक गतिकें प्रवाह देलक। अजित आजाद आ गौरीनाथक सहयोगसँ हमर दोसर संग्रह (अन्हारक विरोधमे) सोझाँ आएल आ हम पुनः मैथिलीक मुख्यधारासँ जुड़ि सकलहुँ। हिनकहिसभक उर्जा पाबि हमरा लग ई सत्य उद्घाटित भेल जे प्रत्येक मनुष्य एक नन्दनकानन–च्युत परमात्मा अछि। ओहि कालमे हिन्दीक पत्रकार महाशंकरसँ सुपौलहिमे सुसंयोगसँ भेंट भए गेल आ ओ हमरा अपन पत्रिका लेल कालम लिखबाक वचन लए लेलनि। तखनि ओ विकास कुमार झाक सम्पादनमे बहराइत 'राष्ट्रीय प्रसंग' पत्रिकासँ जुड़ल छला। कोनो अपरिहार्य कारणवश महाशंकर ओहि पत्रिकासँ अलग भए गेला आ हमर आलेख ओहि पत्रिकामे नहि छपि सकल। एन अवसरपर महाशंकर श्यामाकान्त झाक सम्पादनमे नवप्रकाशित 'लोक प्रसंग' मासिक पत्रिकासँ जुड़ि गेला आ ओकर प्रथम अंकमे हमर कालम छापि ओ हमरा खबर कएलनि आ ओतहिसँ हमर कालम–लेखनक सिलसिला चलि निकलल। 'ठाकुर का ठाँव' नामसँ हमर ई कालम बहुत लोकप्रिय भेल आ 'मिथिला आवाज'क सम्पादनक जिम्मेवारी लेबासँ पहिने लगातार तीन वर्ष तक हम ई लिखैत रहलहुँ। बादमे जँ हम 'मिथिला आवाज'क सम्पादक पद लेल अजित आजाद आ डॉ. चन्द्रमोहन झाक पहिल पसन्द

भेलहुँ त हमर मानब अछि जे तेकर आधारमे हमर ओ कालम-लेखन महत्वपुर्ण कारक रहल अछि। तें कहि सकए छी जे अपन साहित्यिक यात्रामे प्रेरक तत्व त हमरा बहुत भेटल आ बाधा सन कोनो चीजकें हम अपन आगू आबि टिकैए नहि देलिअए। कनेक दम धरबाक लेल, कनेक पाथेय जुटएबाक लेल, कनेक अगिलका बाटकें चिक्कन-चुनमुन करबाक लेल कतहु कनेक ठहरि गेल होइ, से बात अलग।

अहाँ अपनाकें मैथिली गज़लक 'अमीर खुसरो' कहै छिऐ आ सरस जी अपनाकें 'साहिर' कहै छथि। ई आत्मविश्वास छै या आर किछु?

हमर काँइत एकदम अलग अछि तें सरस जीसँ हमर कोनो तुलना नहि अछि। ओ अपनाकें साहिर केना आ किऐ कहए छथि से ओएह जानथु। हम अपन एकटा गज़लक मकतामे 'अमीर खुसरो'क नाम लेल अछि,से बहुत सायास नहि अछि। ई प्रयोग हमर अवचेतनक प्रतिफलन भए सकैत अछि। अहाँक प्रश्नक बाद एहिपर हमर ध्यान गेल अछि। आब सोचलापर लागैए जे हमर जे जीवनानुभव अछि से मैथिलीक प्राय: आनसभ लेखकलोकनिसँ एकदम अलग अछि आ एकरा हम बहुत गंभीरतासँ रेखांकित कएने छी। अपन एकदम अलग वा भिन्न हएब (स्तर एकर जे हुअए) आ तेकरा साहित्य-समाजक बीच प्रकट करबाक हमर अवचेतनक ई प्रयास भए सकैत अछि। मिल्टन कहने छथि जे 'यशैषणा श्रेष्ठ मनुष्यक आखिरी कमजोरी अछि' आ युनानी दार्शनिक सिसरोक कहब छनि जे 'जाहि ग्रंथसभमे दर्शनाचार्य यशैषणासँ बचबाक उपदेश दए छथि, ओही ग्रंथमे ओसभ अपन नाम छोड़ि जाइ छथि; जाहि पृष्टसभपर ओ बतबए छथि जे यशैषणा बेजाय चीज अछि, ओही पृष्टसभपर हुनक कीर्ति-वैजयन्ती फहराबए लागैत अछि'। भवभूति त चुनौतीक स्वरमे घोषणा करए छथि—'उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समानधर्मा'। गज़लक जे परम्परा रहल अछि ताहिमे एहि तरहक अत्युक्तिक अनेक रास उदाहरण सेहो अछि। 'कहते हैं कि गालिब का है अन्दाज-ए-बयां और' त प्रसिद्ध रहल अछि आ एकरहुसभक प्रभाव हमर अवचेतन ग्रहण कएने हुअए, सेहो संभव। समाजक क्षुद्रता कलाकारक स्वाभिमानपर आगि राखि दैत अछि, तँ ई कोनो संचित आक्रोशक परिणाम सेहो भए सकैत अछि। अज्ञेय कहैत छला—'अजुका साहित्य अधिकांशमे अतृप्तिक, या कही, लालसाक, इच्छित विश्वास (Wishful Thinking) केर साहित्य अछि। 'अमीर खुसरो' मामलामे इहो कथन सत्य भए सकैत अछि। प्रभाकर माचवेसँ पैंच लएत कहए चाहए छी—'केना कही जे लिखैत काल हम वर्ण्य विषयक संग तन्मय-तल्लीन अवश्य होइ छी, किन्तु मनपर अन्यान्य रचनासभकें पढ़लासँ जे शैलीगत संस्कार अछि, ओकरसभक अप्रत्यक्ष प्रभावसँ अपनाकें विलग नहि राखि पाबए छी। ई दुर्गुण हुअए

कि सद्गुण, तथ्य अवश्य अछि।'

वर्तमान साहित्यकारक मुल्यांकन अहाँ कोना करबै ?

ओकर लेखन आत्मरतिसँ बाहर आबि समष्टिक चेतनासँ कतेक तादात्म्य स्थापित करए छै, ताहिसँ। ओकर लेखनमे कलाक वैयक्तिक पक्षक संग-संग सामाजिक पक्षक संतुलित तालमेल छै कि नहि, ताहिसँ। अपन समयक पहिचान करैत अपन युगक मूल्यक रक्षा आ वांछित परिवर्तनक लेल प्रयास करएमे ओकर लेखक आ लेखन कतेक प्रयत्नशील रहल अछि, ताहिसँ। ओना वर्तमानक निर्वैयक्तिक आ पुर्वाग्रहरहित मुल्यांकन वर्तमानक बुत्ते असंभव केर हद तक कठिन छै आ तें एकरा भविष्य लेल छोड़ि देबाक चाही।

अहाँक प्रिय साहित्यकार के छथि ?

स्वाभाविक अछि जे प्रश्न मैथिलीएक सन्दर्भमे अछि। एकर स्पष्ट उत्तर उकटा-पैंचीक वाहक बनि सकैत अछि। संक्षिप्तमे एतबे जे हमर बादक पीढीक सभ साहित्यकार हमर प्रिय छथि। ओना अप्रिय साहित्यकारक एकटा नमहर सूची अछि हमरा लग!

साहित्यकारक लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचार एक हेबाक चाही की अलग-अलग ? जँ एक हेबाक चाही तँ बैद्यनाथ मिश्र यात्री जीक वैचारिक विचलनकें अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ? आ जँ अलग-अलग हेबाक चाही तँ ओहन साहित्य ओ साहित्यकारक मूल्य की ? मैथिलीकें तोड़बामे दरभंगा मठाधीश सभहंक कतेक योगदान छै ?

साहित्यकार कोनो आन ग्रहसँ आएल जीव नहि होइत अछि। प्रथमत: ओ मनुष्य अछि आ ओकरासँ मनुष्यक लेल तै सभटा आचार-संहिताक पालन हमरा बुझने अनिवार्य अछि। मनुष्य एकटा इकाइ अछि आ रसे-रसे अपनासँ बढि परिवार, समाज, राज्य, देश, विश्व आ ब्रह्माण्डक गतिशील हिस्सा बनैत अछि आ एहि क्रममे अपना लेल विविध क्षेत्रक चयन कए ओहिमे सक्रिय होइत अछि। हमर माननाइ अछि जे जे मनुष्य स्वयं अपना लेल, अपन परिवार आ समाज लेल ईमानदार नहि अछि से अपन गतिविधिक कोनो क्षेत्रमे ईमानदार नहि भए सकैत अछि। तें कोनो सामान्य व्यक्तिसँ अपेक्षित व्यक्तिगत या समाजगत ईमानदारीक अपेक्षा साहित्यकारहुसँ कएल जाएब सर्वथा उचित अछि। लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचारमे जँ एकरुपता या साम्य नहि अछि त ई ओहि व्यक्तित्वक छद्मक द्योतक अछि। एहि सर्वकालिक सिद्धान्तक कसबट्टीपर बैद्यनाथ मिश्र यात्रीएटा किए सभकें कसल जएबाक चाही। किन्तु एतय एकटा 'किन्तु' सेहो अछि। एहि 'किन्तु'क व्याख्या लेल

हमरा गोस्वामी तुलसीदासक शरणमे जाए पड़त। ओ भगवान रामसँ कहबएलनि अछि जे जीव जाहि क्षण हमर सम्मुख होइत अछि त हम ओहि क्षण ओकर कोटि-कोटि जनमक पाप नष्ट कए दए छी—सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जनम कोटि अघ नासौं तबहीं॥ जे केओ अपन समस्त कमजोरी आ त्रुटिक संग महा अज्ञात अंतर्यामीक सम्मुख उपस्थित भए जाइत अछि, ओकर समस्त त्रुटि विच्युतिसभ समाप्त भए जाइत अछि, फेर त्रुटि त्रुटि नहि रहि जाइछ, ओ पूजाक नैवेद्य बनि जाइत अछि। तुलसीदास एकठाम आओर तीर्थवादिक माहात्म्य वर्णन करैत लिखैत छथि जे एहिमे स्नान कए काक पिक भए जाइत अछि आ बक मयूर भए जाइत अछि। एहि परिपेक्ष्यमे जँ साहित्यकें अंतर्यामी तत्व आ तीर्थस्नान मानि ली आ से ओ छहिओ त बैद्यनाथ मिश्र यात्रीकें एहि कथनक लाभ दैत बा-इज्जत बरी कएल जाए सकैत अछि। ओना साहित्यकारक रूपमे यात्री जी जतेक कतबहु सम्मान पाबि लेथि, एकटा मनुष्यक रूपमे त ओ अपन पारिवारिक-सामाजिक कर्तव्यसँ च्युत मानलहि जएता।
(प्रश्नक अंतिम भागक उत्तर सायास की अनायास छोड़ल गेल अछि-**संपादक**)

मैथिल साहित्यकार बहुविधावादी होइत छथि। मुदा जँ अहाँ एके विधामे रहितहुँ तँ ओ कोन विधा होइतै ?

नि:सन्देह गद्य मे।'गद्यं कविनां निकषं वदन्ति' हमरा लेल मात्र एकटा उक्ति नहि, साहित्यिक मंत्र जकाँ अछि। ई हमर प्रिय विधा अछि आ एहिपर हम अपन पकड़ सेहो नीक मानए छी। देखौंस वा शार्टकटक परिणामस्वरूप हम अखनि धरि जे कएने होइ, हमरापर गद्यक कर्जा बांकी अछि। अखनि हमर साहित्यिक पेटारीमे बहुत माल बचल आ संचित अछि आ से आब पाठकक सोझाँ अएबाक लेल व्यग्र भेल अछि।

अहाँ अपन साहित्यिक यात्राक पड़ाव कतऽ आ कोन रुपें देखै छिऐ ?

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'एकला चलो' आ शास्त्रीय वचन 'चरैवेति-चरैवेति' स्मरणमे रहैत अछि आ तत्काल कोनो अवरोधहु नहि बुझाइत अछि, तें ई यात्रा अनवरत चलत से आशा आ भरोस अछि।

पारिवारिक परिचय जानबाक इच्छा अछि।

हम अपन पारिवारिक परिचय छिटपुट रूपमे अपन आत्मकथ्य आ आन ठाम देने छी। संक्षेपमे ई जे हमर पिता (हमसभ हुनका 'बाबूजी' कहि सम्बोधित करैत रहिअनि) बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव' स्वतंत्रता-सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार आ समाजसेवी छला। हुनकर प्रथम विवाह अकबरनगर, भागलपुरक सुभद्रा देवीसँ भेलनि जिनका हमसभ भाय-बहिन 'बड़की मा' कहैत रहियनि। हुनकासँ कोनो

सन्तान नहि भेने बाबूजी शेरपुर, मुजफ्फरपुरक गायत्री देवीसँ विवाह कएलनि जिनकासँ हमसभ पांच भाय-बहिन भएलहुँ—तीन बहिन आ दू भाय। एक बहिन हमरासँ जेठ, हमरा बाद दू बहिन आ सभसँ छोट भाय। हमरासभकें दुनू माक ममतामे कहिओ कोनो अंतर नहि बुझाएल। सभदिन दुनू माकें एकहि थारीमे संग-संग खाइत देखलिअयनि जेकर सिलसिला बड़की माक मृत्युक उपरान्तहि भंग भेल। हमर विवाह 21 जून, 1972 ई. (अद्भुत संयोग अछि जे इएह तिथिकें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनैबाक निर्णय संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2015 ई. मे लेल गेल अछि) मे मानदा, बेगुसराय (आब समस्तीपुर) के बीना देवीसँ भेल जिनकासँ हमरा त्रिदेवक प्राप्ति भेल अछि—तीन पुत्र—अभिनय, किसलय आ अनुनय। घरक नाम बाबू, मिट्टू आ राजा। ज्येष्ट पुत्र दवाक स्टाकिस्टशिपक काज करए छथि, मांझिल पुत्र चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट छथि आ कनिष्ट पुत्र वकालतक पेशामे छथि। ज्येष्ट आ कनिष्ट सुपौलमे हमरा संगहि रहए छथि आ मांझिल मुम्बईमे। वर्तमान तिथि तक तीनू पुत्र-पुत्रवधुसँ संयुक्त उपहारक रूपमे तेसर पीढीक जे चारिटा पुष्प हमरा प्राप्त भेल अछि ताहिमे तीन पौत्री आ एक पौत्र अछि।

अपन इलाकाक जे चलन अछि ताहिमे परिचय पुछबाक आशय जाति आ गोत्र जानबसँ बेसी रहैत अछि। त सामाजिक संरचनाक आधारपर हम ब्राह्मण छी—भुमिहार ब्राह्मण। गोत्र अछि—पराशर आ गोत्र-प्रवर छथि—वशिष्ठ, शक्ति आ पराशर। गोत्र-प्रवरक संख्याँ तीन अछि तें जनेउमे तीन गाँठ लागैत अछि। पुर्वजलोकनि कर्णाटकक मैसूरसँ आएल छला आ तें कर्णाटवंशी कहाइ छी आ मूल अछि मैसूरिया। दुसाध आ मियांसभक संगति आ ओकरसभक छुअल खएबाक-पीबाक चलते देशक स्वतंत्रतासँ पुर्व बाबूजीपर कतेको बेर समाजक पंचैती बैसल किन्तु ओ अपन सामाजिक समताक स्वभाव नहि तजलनि। हमर नानाक घरमे पीर-बाबाक मजार बनल रहय आ ओ नियमित रूपसँ नमाज पढैत छला। ई सभटा संस्कार हमर जीनमे अछि आ हम मोटा-मोटी जाति-सम्प्रदायक पुर्वाग्रहसँ मुक्त रहल छी। एहि बातक चर्चा कए देब एहि कारणसँ आवश्यक बुझाएल जे पारिवारिक परिचयक क्रममे देल हमर विवरणसँ हमरा प्रति कोनो गलत धारणा नहि बनए। हम जे छी, जाहि जाति-गोत्र-सम्प्रदायसँ छी से हमर चुनल नहि अछि, तखनिओ हमरा एहिपर गर्व अछि आ एहिसँ आन जाति-गोत्र-सम्प्रदायक लोकक प्रति हमर सम्मान-भावनापर कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि।

संस्मरण

स्मृतिक अयना मे अरविन्द ठाकुर

बिनय भूषण

वर्ष मोन नहि अछि। संभवत: 1993-94 ई. होयत। गौरीनाथ कोनो कारणवश केदार काननसँ भेंट करय सुपौल गेल। शायद कथ्य-रूपक कविता अंकक सम्पादनक क्रम मे ओ सुपौलक साहित्यकार लोकनि सँ सम्पर्क करऽ गेल छलाह। ओ एकटा एहन समय छल जखन हम हिंदी-मैथिली दुनू भाषा मे रचना करैत छलहुँ। पूर्णत: मैथिलीमे लिखब हमर अभीष्ट नहि छल। जे-से, गौरीनाथ जखन सुपौल सँ घुरलाह तँ ओ किछु मैथिली पोथी हमरा देलन्हि। 'धार नहि होइछ मुक्त' (जीवकांत), 'परती टूटि रहल अछि' (अरविन्द ठाकुर) आ 'आकार लैत शब्द' (केदार कानन) आदि पोथी हमरा भेटल। ई हमर पहिल अवसर छल जखन मैथिलीक कोनो रचनाकार केँ सम्पूर्ण रूप सँ पढ़ने छलहुँ। ई तीनू पोथी हमरा एतेक प्रभावित केनय छल जे हम एहि पोथी सभ पर दीर्घ समीक्षा लिखलहुँ आ केदार जी केँ 'संकल्प' मे प्रकाशनार्थ पठा देलहुँ। ओ आश्वासन देलन्हि जे संकल्प मे नहि तँ कोनो आनो पत्र-पत्रिका मे जरूर प्रकाशित भऽ जायत। 'धार'क संपादनक क्रम मे केदार जी केँ एक-दुइ बेर पुछलियनि तँ ओ कहलनि—चिन्ता नहि करू राखल छै। पता नहि एखन केदार जीक कोनो फाइल मे हेरायल-भुतलायल होयत तँ हमर सौभाग्य। कहबाक आशय ई जे अरविन्द ठाकुर सँ हमर पहिल परिचय 'परती टूटि रहल अछि' काव्य-संग्रहक सहायता सँ भेल। हम एतेक प्रभावित भेल रही जे एहि पोथीक कविता सभ पर विस्तृत चर्चा कयलहुँ। हमरा एहन बुझायल छल जे हिनक कविता मे समय के धड़कन अछि। एहि मे सघन संवेदनाक संगुफन छल।

समय के जड़ताक विरुद्ध आक्रोशक स्वर किछु कविता सभ मे स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत छल। जन-चेतना, लोक-चेतना आ श्रम-स्वेदक प्रति जे संवेदनात्मक भाव होइत अछि से हिनक कविताक मुख्य स्वर छल। मनुक्ख हृदय मे अव्यक्त कोलाहल केँ कवि महसूस केनय छलाह। एखन कविताक समीक्षा करब हमर

अभीष्ट नहि अछि। हम तँ मात्र एतबे कहबाक प्रयास कऽ रहल छी जे इयैह अरविन्द ठाकुर सँ हमर पहिल परिचय छल।

'धार'क सम्पादनक क्रम मे सुपौल मे बेसी आन-जान करऽ पड़ल। एहि क्रम मे निर्भय सँ सेहो मुलाकात भेल। 'धार'क सम्पादनक क्रम मे जखन सुपौल जाइ तँ केदार कानन, अरविन्द ठाकुर, डॉ. शिवेन्द्र दास आ डॉ. नवीन कुमार दास सँ जरूर भेट करी।

हमरा ई कहब आवश्यक बूझना जाइत अछि जे जखन हम अरविन्द ठाकुरक घर पर जाइ तँ पूर्णत: मिथिलांग जकाँ हिनका ओहिठाम स्वागत होइत छल। पहिले भेट मे हमरा हिनक आपकतापूर्ण व्यवहार बेस आकर्षित केनय छल। हिनका सँ गप-सप करबाक क्रम मे हिनक रचनात्मक विचार हमरा प्रभावित केनय छल।

हम जाहि कालखण्डक चर्चा कऽ रहल छी ओहि समय मे सहरसाक छात्र राजनीति मे हम बेस सक्रिय छलहुँ। ऑल इण्डिया स्टुडैंट फेडरेशनक जिला स्तर पर हमरा योगदान देमऽ पड़ि रहल छल। हम बालपने सँ निश्छल स्वभावक छलहुँ। सहरसाक किछु वामपंथी मित्र सभ हिनका सँ परहेज करबाक सुझाव दैत छल। मुदा 'परती टूटि रहल अछि' संग्रहक कविता आ आनो पत्र-पत्रिका सभ मे प्रकाशित कविता सभक मादे हुनका सभ केँ बुझाबियनि जे ई प्रगतिशील धाराक कवि छथि। हमर मित्र लोकनि केँ अरविन्द ठाकुरक प्रगतिशीलता पर प्रश्नचिह्न लगेबाक मुख्य कारण हिनकर कांग्रेसी पृष्ठभूमि छल।

हम सुपौल गेलाक बाद हिनका सँ भेंट करबाक प्रयास जरूर करियनि। 'महावीर चौक' पर हिनक एकटा मेडिकल स्टोर छलन्हि जकर नाम त्रिमूर्ति सिंडिकेट छल। हमर प्रयास रहैत छल जे एहिठाम हिनका सँ भेंट करी। कारण एहिठाम केदार कानन आ सूरज भैया सँ भेंट सुलभ छल। सौरभ प्रेस लगीच मे छलैक। कहियो काल डॉ. नवीन बाबू आ डॉ. शिवेन्द्र दास सँ सेहो भेट भऽ जाइत छल। सुपौल मे सौरभ प्रेस वा त्रिमूर्ति सिंडिकेट साहित्यकारक अड्डा छल। सौरभ प्रेस तँ एहन स्थान छल जतय मायानन्द मिश्र आ सुभाषचन्द्र यादव सँ अक्सर भेंट भइये जाइत छल। 'धार'क सम्पादन हमरा सुपौल सँ जोड़लक। सहजहि अरविन्द ठाकुर सँ हमर निकट सम्बन्ध बनि गेल।

अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व मे हमरा एकटा चीज आश्चर्यजनक लगैत छल जे ओ हमर एक-एक बात केँ ध्यान सँ सुनैत छलाह। किछु देर गुम्मी। लगैत छल जेना ओ बाजऽ सँ पहिले किछु गुनैत छलाह, सोचैत छलाह। आ जवाब तेना दैत छलाह जेना अहाँ केँ लागैत जे ओ अहींक बात हो। कोनो बातक फरिचौंठक लेल हुनका लग स्पष्ट विचार छलन्हि एखनहुँ छन्हि।

हम उपर त्रिमूर्ति सिंडिकेटक चर्चा केलहुँ, जे हम अक्सर ओहिठाम हुनका सँ भेट करैत छलहुँ। जखन हम सुपौल जाइत छलहुँ आ महावीर चौक पर हुनका सँ भेट नहि होइत छल तँ हम हुनका सँ भेट करऽ लेल चकला निर्मली स्थित हुनक निवास 'विप्लव भवन' चलि जाइत रही। ओहिठाम विशेष आग्रहक संग चाय-नाश्ताक बीच साहित्यिक गतिविधि पर चर्चा! से खूब जमि कऽ। हिनका सँ भेंट-घाटक क्रम मे हमरा ई बुझायल छल जे ओ मैथिली साहित्यक गुटबाजी सँ बेस क्षुब्ध छलाह। 'परती टूटि रहल अछि' कविता-संग्रहक प्रकाशनक किछुए समयक पश्चात ओ सुपौलक सामूहिक साहित्यिक गतिविधि सँ अपना-आप केँ कात कऽ लेनय छलाह। मुदा गप-सपक क्रम मे हम ई देखलियनि जे ओ किनको खिद्यांश नहि करैत छलाह। हिनका घर पर विचार-विमर्शक क्रम कहियो-कहियो एतेक नम्हर भऽ जाइत छल जे ओहिठाम सँ घुरबाक लेल बस व ट्रेनक अभाव मे हुनके घर पर ठहरऽ पड़ैत छल। से भोजन-भात मे पर्याप्त मिथिलांग। खूब बढ़िया तरुआ-तरकारी, दूध-दही, घी। एखनहुँ मोन पड़ैत अछि तँ मोन होइत अछि कोलकाता सँ चकला निर्मली चलि जाइ। ताहि संग अनुभव आँच मे पाकल विचारक श्रवण।

संयोग एहन भेलैक जे एक बेर शैलेश कु. पाठकक नेतृत्व मे सुपौल मे राहुल जन्म शताब्दी मनाओल गेल छलैक। ई आयोजन 'शैलेश कुमार पाठक मिशन' के तत्वावधान मे भेल छल। हम आ श्री रामचैतन्य 'धीरज' एहि आयोजन मे आमंत्रित रही। हुनका कहलियनि जे हमरा सभ केँ राति मे एहि ठाम ठहरऽ पड़ि सकैये। ओ खूब प्रसन्न भेलाह ओ अपना घर पर पूर्वक भाँति हमरा सभक लेल भोजनक व्यवस्था कयलनि।

एहि कार्यक्रम मे शशि प्रकाश (आचार्य शिवपूजन सहायक पौत्र) सेहो आयल छलाह। सेमिनार खूब गहमा-गहमी देर धरि चलल। राहुल सांकृत्यायनक प्रासंगिकता पर परिचर्चा छलैक। निर्भय कहलनि जे हमरा सभक भोजन आ ठहरबाक व्यवस्था कोनो मारवाड़ी बासा मे भेल अछि। 'धीरज' जी केँ देखलियनि जे ओ शशि प्रकाश सँ आओर बेसी गप करबाक इच्छुक छलाह। अरविन्द ठाकुरक घर पर जयबाक निर्णय स्थगित भऽ गेल। हम सभ मारवाड़ी बासा चलि गेलहुँ। सम्पूर्ण राति 'धीरज'जी आ शशि प्रकाशक बीच होइत तार्किक विचार-विमर्श हम सभ सुनैत रहलहुँ। एहि बीच एक आदमी आयल आ कहलकन्हि जे अरविन्द ठाकुरक घर पर सँ कियो सहरसा बला लोक केँ ताकऽ आयल छल। हम 'धीरज' जी केँ अवगत करा देलियनि। ओ माथ पीटि लेलन्हि आ कहलन्हि भोरे मे हुनका ओहिठाम होइत जायब। मुदा धीरजजी आ शशि प्रकाशक वार्तालाप अनन्त छलैक। हमरा लेल ई एकटा अविस्मरणीय क्षण छल। अपराध बोध सेहो जे अरविन्द ठाकुर सन संवेदनशील

लोक केँ हमर इन्तिजार करऽ पड़लन्हि। अंततः हम सभ नहिये जा सकलियैक।

जखन हम अरविन्द ठाकुरक संस्मरण लिखि रहल छी तखन अनायास हमरा एकटा घटना मोन पड़ैत अछि। एक बेर एहन भेलैक जे त्रिमूर्ति सिंडिकेट मे केदार कानन, सुभाषचन्द्र यादव, सूरज भाइ, निर्भय आ हम छलहुँ। अचानक पान खेबाक लेल सभ किओ पानक दोकान पर जुमलाह। हमरा पुछलनि अहाँ कोन पान खाइ छी? हम सकुचाइत कहलियनि, ''नञि-नञि, हम पान नञि खाइ छी।'' आब अरविन्द ठाकुर बाजऽ लगलाह—''पान नञि खायब तँ लेखक कोना बनब। नञि-नञि अहाँ लेखक नञि बनि सकब। लेखक बनियो जायब तँ कवि नञि बनि सकब। कवि बनियो जायब तँ प्रगतिशील तँ नहिये टा।'' एखनहुँ कखनो काल अरविन्द ठाकुरक उक्त पाँति हमरा मोन केँ उद्वेलित करैत अछि। हुनक कहबाक आशय छल से छद्म जीवन, छद्म संस्कार आ छद्म व्यक्तित्व लोकक लेखन केँ प्रभावित करैत अछि। अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व फूजल पोथी जकाँ अछि। कतौ-किछु नुकायल नञि।

संयोग एहन भेलैक जे 1995 ई. मे हम कोलकाता आबि गेलहुँ। किछु पारिवारिक आ अन्यान्य कारण सभ सँ साहित्यिक गतिविधि मे हमर सक्रियता कम होमय लागल। जाहि गति सँ सहरसा आ सुपौल मे 'धार', 'जागृति' आ 'कोशी' इत्यादि पत्रिका सभक सम्पादन मे हम अपना आप केँ पूर्णकालिक व्यस्त कऽ लेने छलहुँ ओ हमर अपन जीवन-यापनक प्रति साकांक्षता केँ नष्ट कऽ देनय छल। एक बेर अहिना गप-सपक क्रम अरविन्द ठाकुरक पुत्र चाय-बिस्कुटक ट्रे लऽ केँ अयलाह तँ हुनकर परिचय-पात पुछलियनि। तत्पश्चात साहित्यिक रुचिक बारे मे सेहो पुछलियनि। ओ 'हँ' मे जवाब देलन्हि। अरविन्द ठाकुर हँसैत बजलाह—''रुचि! रुचि खूब छन्हि, पाँच-सात टा कविता लिखलक यै। सेहो स्तरीय छै।'' हम कहलियनि ''ई बढ़ियाँ बात।'' ओ कनी थमिकेँ कहलनि, ''बात तँ बढ़ियाँ छेबे करै। कोनो कुकर्म थोड़बे छियैक। मुदा हमरा ई चिन्ता होइ यै जे जौं, ई साहित्य मे, बेसी सक्रिय भऽ जायत तँ ओ हमरे जकाँ अव्यावहारिक भऽ जायत।'' हम ओहि समय मे लेखन केँ सभ सँ बेसी महत्त्वपूर्ण आ सार्थक काज मानैत छलहुँ। एखनहु मानैत छी। टाका कमायब आ भोग आ ऐश्वर्यक जीवन जीयब हमरा एखनहु आकर्षित नञि करैत अछि। तेँ हुनकर ई 'अव्यावहारिकता' शब्द एखन धरि नहि पचल अछि। ई सत्य अछि जे आजुक आर्थिक युग मे अपन अस्तित्वक रक्षाक लेल टाका कमायब आवश्यक अछि।

कोलकाता मे लूटन ठाकुर सँ भेंट केलहुँ। प्रवासक भेंट सँ हम परिचित छलहुँ। जीवकान्त पत्र लिखनय छलाह जे हम हुनका रचना पठबियनि। एहि क्रम मे लूटन

ठाकुर सँ हमरा परिचय भेल। एहिठाम कम्पनी सिक्रेट्रिसिप (सी.एस.) मे रजिस्ट्रेशन करौलहुँ। फाउंडेशन कोर्स धरि केलहुँ। संगहि कोलकाताक साहित्यिक गतिविधि मे बेस सक्रिय भऽ गेलहुँ।'मिथिला-चेतना'क प्रकाशन भेल। संभवत: 1997मे पुन: जखन गाम गेलहुँ तँ 'मिथिला-चेतना'क वितरणक लेल सुपौल गेलहुँ। पुन: फोन नम्बर लेलहुँ। फोन सँ सम्पर्क बनल रहल। ओ 'मिथिला-चेतना' देखि अत्यंत आह्लादित भेल छलाह। ओ कहनय छलाह एखन जे नवतुरिया सभ लिखि रहल छथि, ई मैथिली साहित्यक स्तर केँ बहुत ऊँच धरि लऽ जायत।

फोन नम्बर भेटि गेला सँ सम्पर्क किछु आओर प्रगाढ़ भेल। बीच-बीच मे कहियो काल जखन हम गाम आबैत छलहुँ तँ सहरसा-सुपौलक सभ साहित्यकार आ अन्य मित्र सभ सँ भेट-घाट करैत रहैत छलहुँ। अरविन्द ठाकुर सँ सेहो भेंट होइत छल। हुनक गप मे प्रेम आ स्नेह रहैत छल। लगैत छल जेना ओ हमर सुख-दुख सँ चिर-परिचित हो। जखन हम हुनका कहलियनि 'कम्पनी सिक्रेट्री'क पढ़ाइ छोड़ देलियनि। हुनक आँखि तमतमा गेल छलन्हि। ओ पुछलन्हि—''कविता नञि ने छूटल?'' हम गुम्म। पुन: बजलाह—''जाहि, चीज केँ छोड़बाक चाही से नञि छोड़लहुँ। जाहि चीज केँ नञि छोड़बाक चाही, तकरा छोड़ि देलहुँ? अहाँ एकदम गलत निर्णय लेलहुँ ये। आबो सम्हरू। मैथिली समाज केहन छै बुझल नञि ये। किओ नञि पूछत। हमहुँ नञि।'' हमर चेहरा पर उदासीक भाव पसरि गेल होयतैक। तामस सेहो। हम गुम-सुम हुनक मुह दिस ताकय लगलहुँ। ओ पुन: बजलाह—''अहाँ केँ खराब जरूर लागल होयत, मुदा वास्तविकता इयैह छैक।'' एहि तरहेँ हुनका संग हम अनेकानेक निजी समस्या सभ पर गप करी। हुनक संवेदनायुक्त सुझाव सँ लगैत छल जेना हमर अन्तश्चेतना आवेशित भऽ जाइत छल।

नव-नव रचनाकारक नव-नव रचना केँ सूनब ओहि पर मन्तव्य देब हुनका बेस प्रिय छन्हि। ओ जखन अपन रचना सुनाबैत छथि, तँ हुनक अपेक्षा रहैत छन्हि जे ओहि पर हम मन्तव्य दी आ ओ ओहि मन्तव्य केँ ध्यान सँ सुनैत छथि।

इस्वी याद नञि अछि एक बेर जखन सुपौल मे 'सगर राति दीप जरय' के आयोजन भेल आ अरविन्द ठाकुर ओहि आयोजनक संयोजक छलाह, तखन हम कोलकाता सँ सुपौल गेल छलहुँ। एहि कथा-गोष्ठी मे देखलहुँ जे सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया आ कटिहार धरिक अनेकानेक नव हस्ताक्षर सभ कथा-पाठ केनय छलाह। किछु कथाकार सभ तँ सुदूर गाम सँ आयल छलाह। सभ सँ बेसी आश्चर्यक बात ई छल जे कोनो कारणवश केदार कानन, डॉ. शिवेन्द्र दास, डॉ. नवीन कुमार दास आ डॉ. महेन्द्र आदि साहित्यकार लोकनि एहि गोष्ठी मे उपस्थित नहि भऽ सकलाह तैयो कथा-गोष्ठी सफल रहल। एहि कथा-गोष्ठी मे अजित कुमार आजाद

सेहो आयल छलाह। ओ गोष्ठीक संचालन केलन्हि। एहि गोष्ठी मे पठित समस्त कथा स्तरीय छल। कथा-सभ पर विवेकसम्मत ढंग सँ चर्चा-परिचर्चा भेल। एहि सँ प्रमाणित होइत अछि जे ओ नव हस्ताक्षर केँ प्रोत्साहित करैत छथि। संगहि साहित्यिक माहौल बनेबाक प्रयास करै छथि।

गाम अयबाक क्रम मे एक बेर पुन: सुपौल गेल छलहुँ। 2014 ई.क बात अछि। हमर गाम मे जयकृष्ण ठाकुरक हत्या भऽ गेल छलैक। हम अकस्मात गाम गेल छलहुँ। अरविन्द ठाकुर सँ जखन भेट करऽ गेलहुँ तँ हमरा मोन मे आयल जे हिनका कोलकाता लऽ जाइ। संयोग सँ 'मिथिला सेवा समिति' द्वारा बेलुड़ मे अधिकार दिवस मनेबाक निर्णय लेल गेल छल। एहि आयोजन मे बाहरक कोनो पाहुन केँ आमंत्रित करबाक भार भेटल छल। हम ठाकुर जी केँ आग्रह केलियनि। ओ सहर्ष गछि लेलाह। आयोजन मे आबऽ सँ पहिने ओ हमरा गछबा लेलन्हि जे हम किनको व्यक्तिगत निवास पर नञि रहब। हुनका लेल एक टा होटल ठीक कयल गेल।

ओ जखन बेलुड़ स्टेशन पर उतरलाह तँ हुनका लेल सुरक्षित कयल गेल होटलक कोठली मे लऽ गेलहुँ। ओहिठाम आराम केलन्हि। जाहि ठाम ओ ठहरल छलाह ओहि स्थानक नाम अपरूपा लॉज छलैक। बेलुड़क सामाजिक कार्यकर्ता आ समितिक पदाधिकारीगण हिनक स्वागत आदर-सत्कार मे लागि गेलाह। सर्व श्री संजय कुमार झा, राजीव रंजन मिश्रा, नवीन चौधरी, राज कु. झा, भरत कु. झा, राघवेन्द्र झा, घनश्याम चौधरी, अशोक चौधरी, शैलेश झा आ भवनाथ आदि अनेकानेक गणमान्य व्यक्ति हिनका सँ भेट-घाट कयलन्हि। ओ कार्यक्रम सँ एक दिन पहिने आबि गेल छलाह, एहि सँ ई लाभ भेलैक जे लोक भरि पोख फैल सँ गप केलक।

ओ कहैत छलाह जे लॉजक आसपासक कोनो होटल मे भोजनक व्यवस्था कऽ दिअऽ। हम हुनका आग्रह केलियनि जे ओ हमर निवास पर भोजन करथि। हँ-नै करैत कोनो तरहेँ ओ तैयार भेलाह। लोकक बीच गप-सप मे व्यस्त रहलाक कारणेँ हुनका भोजन मे देरी भऽ जाइन। हमर पत्नी अकच्छ भऽ जाइत छलथिन। खाना ठंडा भऽ जाइत छैक। जल्दी लऽ आयल करियौन। हम तँ प्रयास जरूर करी, मुदा देरी भइये जाइ।

कखनो काल जखन ओ असगर रहैत छलाह तँ हम किछु देर हुनका लग बैसि जाइत रहियनि। ओ पूछैत—''कियैक बैसल छी ? काज नञि यै तँ कोनो बात नञि। काज यै तँ काज करू।'' हम एक बेर पुछनय रहियनि जे ''अहाँ एसगर उबि जायब तँ कछु देर धरि हम अहाँक संग रहै छी।'' ओ डाँटि केँ कहैत छलाह—''जाउ आराम करू अपन काज करू। हमरा तँ एसगर मे किछु ने किछु लाभ भऽ जाइ ये। किछु लिखा-पढ़ीक काज कऽ लैत छी। ओहनु आब तँ हमरा किछुओ देरक लेल

शांति चाही।'' हमरा ई बूझऽ मे कोनो भांगठ नहि रहल जे ओ एकांत प्रिय छथि।

भोजनक समय हुनका बेसी आग्रह पसिन्न नञि रहनि। ओ बेसी तरल-भूजल भोजन पसिन्न नञि करैत छलाह। जबरदस्ती तँ नहिये। थारी मे किछुओ आँठि अंत मे नञि छोड़ैत छलाह। कखनो काल हम, हमर पत्नी जिद् कऽ दैत छलियैत तँ लऽ तेँ लैत छलाह। पछाति कहैत छलाह जे भऽ गेल। आब आइ दोसरो बेरक हिस्सा भऽ गेल। जा धरि ओ बेलूड़ मे रहलाह। एहिठाम उत्सवक माहौल छलैक। बेलूड़ सँ अपरूपा लॉज धरि लोकक आवाजाही लागल रहलैक।

ओ एकान्त प्रिय छलाह मुदा एहि ठाम आराम कतय। भोरे-भोर अंजय चौधरी आ अमरनाथ झा 'भारती' अयलाह। अंजय चौधरी चिर-परिचित जिज्ञासु मुद्रा मे मैथिली साहित्य सँ संबंधित असंख्य प्रश्न पुछलन्हि। ओ ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ विद्यापति सँ लऽ केँ चन्दन कुमार झा धरि विभिन्न साहित्यकारक रचना सँ संबंधित प्रश्न पुछलन्हि। ओ प्रत्येक प्रश्नक उत्तर बेबाक ढंग सँ देलन्हि। जँ कोनो साहित्यकारक कोनो खास रचनाक संबंध मे अंजय चौधरी पूछैत छलखिन आ हुनका पढ़ल नञि रहन्हि ताहि रचनाक संदर्भ मे ओ स्पष्ट कहि दैत रहथिन्ह जे हमरा पढ़ल नहि अछि। हुनक एहि वार्तालाप मे हुनक आलोचनात्मक दृष्टि केँ स्पष्ट रूपेँ बूझल जा सकैत छल। आधुनिक आ अपसंस्कृति पर सेहो विस्तारपूर्वक चर्चा भेल।

कविताक संबंध मे नव कवि लोकनि केँ छन्द व कोनो वादक बन्धन सँ मुक्त रहबाक ओकालति ओ बेर-बेर कयलनि। कविताक क्षेत्र मे विद्यापति, नागार्जुन, राजकमल, मायानन्द मिश्र, रामकृष्ण झा 'किसुन', सोमदेव, जीवकान्त, महाप्रकाश आ नारायणजी आदि कवि केँ ओ मीलक पाथरक रूप मे रेखांकित कयलनि।

एक बेर अंजय चौधरी हमरा लोकनिक पीढ़ीक कविताक संबंध मे किछु जिज्ञासा कयलनि। ओ किछु देर गुम रहलाह। पुन: बजलाह, ''एखन हिनका सभ पर कोनो चर्चा नञि करब। एखन तँ हमरा अपने पहिचानक चिन्ता अछि।'' एक टा सामूहिक ठहाका।

एहि बीच राजीव रंजन मिश्रा अपन असंख्य गजल सभ सुनेलनि। ओ गजल सभ पर अपन मन्तव्य प्रस्तुत कयलनि। एहि तरहेँ बेरू पहर भऽ गेलैक। हमर पत्नी बेरि-बेरि फोन करथि। ''भोजन ठंढै जेतै, उ की खेथिन।'' एहि ठाम एहन माहौल ककरो डेग ससरय नहि। अंजय जी केँ ऑफिस जयबाक छलन्हि राजीव मिश्रा केँ समिति हॉल जयबाक छलन्हि, हमरा ठाकुर जी केँ भोजन करेबाक लेल घर लऽ जयबाक छल। सभ एहि साहित्यिक संगोष्ठी मे मग्न छलाह। एक टा सार्थक कार्यशाला बनि गेल छल अपरूपा लॉज।

साँझ मे समितिक सभागार मे एकटा कवि सम्मेलनक आयोजन भेल। एहि

सम्मेलनक अध्यक्षता श्री अरविन्द ठाकुर कयने छलाह। भव्य आयोजन। एहि आयोजन केँ एकटा दुखद समाचार मर्माहत कऽ देनय छल। ओ छल क्रांतिधर्मी मैथिली सेवी कुमार शैलेन्द्रक निधन। आयोजन दुई सत्र मे सम्पन्न भेल। पहिल सत्र मे शोक प्रस्ताव आ शोक सभाक आयोजन भेल। एहि सत्र मे समस्त साहित्यकार लोकनि कुमार शैलेन्द्र केँ नम आँखि सँ श्रद्धांजलि देलन्हि। दोसर सत्र मे समस्त कवि लोकनि कविता पाठ कयलनि, अरविन्द ठाकुरक उपस्थिति मे सभागार लोक सँ खचाखच भरल छलैक। सभ लोक हिनका सँ गप-सप मे व्यस्त छलाह। कोलकाताक सभ युवा कवि जेना भास्कर, मिथलेश, रूपेश त्यौंथ, आमोद कु. झा, विजय इस्सर, अमरनाथ झा 'भारती' आ अजय कु. तिरहुतिया आदि हिनका सँ अंतरगताक संग गप-सप कयलनि।

विहान भनै हिनका घर घुरबाक छलन्हि आ गाड़ी राति आठ बजे मे छल। भरि दिनकर समय। पुन: लोकक आवाजाही। ओहिना साहित्यिक माहौल ओहि दिन हमरा स्कूल जायब आवश्यक छल तँ ठाकुर जी केँ सियालदह स्टेशन पहुँचेबाक भार अमरनाथ झा 'भारती' केँ दऽ देलियनि। एहि बीच पाँच बजे साँझ मे मिथिला विकास परिषदक कार्यालय मे ठाकुर जीक सम्मान समारोह भेल। तत्पश्चात तारासुन्दरी सम्मान समारोह भेल। तत्पश्चात तारासुन्दरी पार्क मे अधिकार दिवसक पालन। एहि मे विशिष्ट पाहुनक रूप मे ठाकुर जी अपन विचार राखलन्हि। कार्यक्रम सम्पन्न भेलाक बाद हिनका सियालदह स्टेशन पर पहुँचेलौं। ओ ट्रेन मे बैसि विदा भऽ गेलाह। एखन जखन हुनका पर किछु लिखऽ लेल बैसल छी। समस्त स्मृति आँखिक आगू नाचि रहल अछि।

हमर छोट भाइ संतोषक बियाह छलैक। बारात जेबाक लेल हम सहरसा-सुपौलक समस्त साहित्यकार सभ केँ आमंत्रित केनय छलहुँ। बाँकी लोक सभ तँ कोनो उतारा नहि देलन्हि। संयोग सँ जहिया हमर भायक विवाह तहिये हिनकर कोनो नजदीकी सम्बन्धीक विवाह छलन्हि। ओहि मे हिनका जायब आवश्यक छलन्हि। हमरा फोन कऽ केँ अयबा सँ असमर्थता व्यक्त कयलनि। मुदा बाद मे ओ हमरा घर पर अयलाह। हमरे दुर्भाग्य छल जे जखन ओ हमरा घर पर पहुँचलाह, ताहि सँ एक घंटा पूर्व हम ट्रेन पकड़बाक लेल सहरसा आबि गेल रही। ई हिनकर आपकता केँ बतबैत अछि। स्मृतिक आधार पर लिखऽ लागी तँ ई असंख्य अछि। किछु साहित्यिक आ किछु व्यक्तिगत । ई विशेष कोनो दोसर अवसर पर कोनो दोसर निबंध मे। तत्काल एहि संस्मरणात्मक निबंध केँ ई कहि विराम दऽ रहल छी जे एकटा असम्पूर्ण निबन्ध अछि। पुन: निश्चिन्त सँ बैसब तँ भऽ सकैये जे एकटा आरो संस्मरणात्मक निबन्ध हम लिखि बैसी।

अद्वितीय छथि हमर अरविन्द बाबा

रजनीश कुमार तिवारी (मुन्ना)

बाबा (अरविन्द ठाकुर) सँ हमर पारिवारिक रिश्ता त छलैहे, आब ई बहुत रास सीमा सँ पार भए गेल अछि। नेना रही त हिनक आ हिनक माता-पिता-परिवारक चर्चा हमर घर (गाम-फेंट, मधुबनी) मे उठौना जकाँ होइत रहै। कनेक चेतन भेलाक बाद जखन-तखन सुपौल अबैत रहलहुँ त साक्षाते हिनकर गतिविधिसभकेँ देखल आ तकरा बाद निरन्तरता मे ई हमर ध्यान अपना दिस खिंचैत रहला। हिनक राजनीतिक, पारिवारिक गतिविधिक चर्चा सुनी, देखी आ मुग्ध होइ। हिनक बोलब, चलब, पहिरब सभटा एकदम विलक्षण लागै आ हमरा प्रभावित करै। आइ कहि सकै छी जे हमर घरपर होइत हिनक घनघोर चर्चा हिनक व्यक्तित्व-क्षमताक तृणांशहु नहि रहए। हमर अपन बाबा रामप्रताप तिवारी सुपौलक भगिनमान छला आ अरविन्द बाबा हुनक भैयारीक सम्बन्धमे अबै छथिन तेँ हिनको हम 'बाबा' कहि सम्बोधित करैत छियनि। हमर अपन बाबाक सम्बन्ध एहि परिवार सँ एकदम सीधा नहि, बहुत घुमाकए अछि। प्रेम किन्तु एहन वस्तु छै जे केकरा केकर लगीच आ प्रिय कए देतए से पुर्वानुमान करब कठिन। हमर अपन बाबा सुपौल अबैत-जाइत छला आ अरविन्द बाबाक पिता स्व बलेन्द्र नारायण ठाकुरक संग अभिन्न होइत चलि गेला। बलेन्द्र बाबाक विराट-प्रभुताक खिस्सासभ हमर परिवार मे किंवदन्ति जकाँ चलैत छल। हमर अपन बाबाक समय बनल ई प्रेमिल सम्बन्ध रसे-रसे एहन प्रगाढ़ होइत चलि गेल जे हमर पिता आ हमर पीढी तक एकर उष्मता काएम अछि। हमर परिवारक किनकहु कहिओ ई आभास नहि भेल जे दुनू एकहि परिवार नहि अछि। जँ हम स्वयं अपन गप करी तँ अरविन्द बाबाक संग हमर ई सम्बन्ध हमर छब्बीस वर्षक वयस धरि मात्र पारिवारिक रहल। हम हिनकासँ ततेक धखाइत रही जे ता धरि साइते हम कहिओ हिनक पएर छूलाक बाद ई पुछबाक साहस कए सकल हएब—'केहन छी बाबा'। अपन उच्च-शिक्षाक पुर्णता आ निरन्तरताक क्रममे हम रसे-रसे बाबासँ हिलैत-मिलैत गेलहुँ आ

कखन हुनकर प्रियपात्र भए गेलहुँ से समय आ तेकर प्रविधि एकदम ठेकानि कए कहब आब कठिन अछि।

दुनू बाबा-पोताक सम्बन्ध मे एकटा दिलचस्प मोड़ एबाक एक महत्वपुर्ण अवसर आ घटना मन पड़ैत अछि। हिनक ज्येष्ठ पुत्र अभिनयक विवाह तै भए गेल रहनि। बराती कें सुपौल सँ शिवहर लए जेबाक दायित्व हमरा भेटल। एकटा बड़का बस आ एकटा जीप सँ चलि बराती विवाहक दिन पुर्वाह्न दस बजे शिवहर पहुँचि गेल। लड़की पक्ष शिवहर-दरबार कहल जाइत रहै आ ओ सभ अपन प्रतिष्ठानुकूल स्वागत केलक। शेष भरिदिन विश्राम केलाक उपरान्त सात बजे सांझ मे बराती विवाह-स्थल दिस चलल आ एकरे संग शुरू भेल धमाल। आतिशबाजीक आकाशी चकमक आ बीच-बीचमे कानफाड़ू धमाकाक संग हम सभ गोटे डांस करब शुरू केलहुँ। हमर सभक जुआन पार्टीक नाचब शुरू होइते सब नाचब शुरू कए देलक— की सयान, की बूढ। बाबाक पहिल संतानक विवाह रहै आ ओ अतीव प्रसन्न छला। हुनक उल्लास हमरा सभ कैँ शह देलक आ हमरा सभक साहस एतेक बढि गेल जे जिनका आगाँ हमरसभक ठाढ हेबाक साहस नहि छल तिनको हाथ पकड़ि हम सभ नाचबाक लेल बाध्य कए देलियनि। मन अछि जे बाद मे अपन मित्रलोकनिक संग दैत बाबा सेहो एहि मे सम्मिलित भेला आ हुनक डांस-स्टेप देखि हमरासभ कैँ चकबिदोर लागि गेल छल। ओहि दिन ई भान भेल जे लिहाज चलए, हुनक मान-सम्मान मे कमी नहि राखी किन्तु बाबा सँ डरबाक आ धकैबाक कोनो टा औचित्य नहि अछि।

वर्ष 2006 मे जखन हम एक तरहे स्थायी रुप सँ सुपौल रहए लागलहुँ त बाबाक बेसी निकट एबाक आ हुनका आओर नीक जकाँ बुझबाक अवसर भेटल। ओ ताधरि दलीय राजनीति सँ कात भए गेल छला किन्तु रेड क्रॉसक मानद सचिवक रुपमे हुनक सक्रियता बनल छल। कुसहा तटबन्ध टुटलाक बाद कोसी नदी द्वारा मचाएल हाहाकारक बीच बाबाक प्रबन्धन-क्षमताक जे विस्तार हम देखलहुँ से अद्‌भुत अछि। जिलाधिकारी सँ लए कए जिला, अनुमण्डल आ प्रखण्डक विभिन्न पदाधिकारीसभ सँ बाढ़ि पीड़ित सभक समस्याक निदान वा ओकरा रिलीफ पहुँचएबामे ओकरासभ सँ मनोनुकूल काज लेबाक हुनक तौर-तरीका एतेक प्रभावकारी छल जे कोनो मामलामे कोनो असफलताक कोनो गुंजाइश नहि बचैत छल। ओही बेर हम जिला भरि मे पसरल बाबाक विशाल व्यक्तिगत संपर्कक साक्षी सेहो भेलहुँ। बाबा हमरो रेड क्रॉसक सदस्य बना देने छला आ ओहि अभियान मे ओ हमरा निरन्तर संग राखने रहथि। हमरा हुनक

निर्देश छल जे सहायता लेल आएल कोनो वस्तु गलत हाथ मे नहि जाय से हम ध्यान राखी। ओहि क्रम मे बाबाक प्रभुत्व, सार्वजनिक जीवनक इमानदारी आ हमरा प्रति हुनक विश्वास तीनू चीजक अनुभूति हमरा भेल। किन्तु सुपौल एलाक बाद ओहि बेर जे सभ सँ महत्वपुर्ण चीज दिस हमर ध्यान गेल, ओ ई जे बाबा किताब-कागज मे डूबल जकाँ रहथि। हुनक लिखब-पढब गति पकड़ने छल। युपीएससीक तैयारी करैबला विद्यार्थिओ की ओतेक मनोयोग सँ पढत! हुअए जे हमसभ जँ एतेक मनोयोग सँ पढने रहितहुँ त आइ कतहु कलक्टर त अवश्य रहितहुँ। प्राय: ओहि काल बाबाक संयोजकत्व मे सुपौल मे 'सगर राति दीप जरय' के आयोजन 'कथा-विप्लव' नामे भेल। बाबा हमरा कहलनि जे एहि गोष्ठी लेल कथा लिखि पढबाको अछि, आनक कथा सुनबाको अछि आ ओहिसभ पर अपन टिप्पणिओ देबाक अछि। साहित्यक एकटा अनुरागी पाठक कें बाबा दिस सँ एक नव भूमिका भेटल। हमरा पहिने लागल जे कतय फँसि गेलौं किन्तु हुनका दिस सँ ततेक तगादा आ उत्साहवर्द्धन भेटल जे हमहुँ लिखि बैसलहुँ। ओहि गोष्ठी मे अपन भूमिकाक यथासंभव निर्वहनक उपरान्त हमर साहस आ दिलचस्पी दुनू बढल आ ई बाबाक आशीष अछि जे किछु गोटे आब हमरा साहित्यकारो मानैत छथि। एकरे परिणाम छल जे पछाति सहरसाक गोष्ठीमे प्राय: प्रत्येक सत्रक प्रत्येक कथा पर हम निधोख भए अपन विचार राखि सकलौं आ ताहि पर सराहना सेहो भेटल।

बाबा तहिया मात्र सत्ताइस वर्षक छला जहिया हुनक पिता (बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव') के दीर्घ बीमारी सँ मृत्यु भेल छलनि। बाबा पटना मे सात-आठ मास तक रहि हुनक चिकित्सा करबैलनि किन्तु एक सुपुत्रक कएल अथक प्रयास आ सेवा काज नहि आएल आ पिता असमय संग छोड़ि गेलथिन। ता धरि बाबाक छवि एकटा राजकुमारक छल जेकरा पर कोनो जिम्मेदारी नहि, कोनो बंधन नहि। बाबाक दियाद-बाद आ हमरो परिवार मे ई आशंका व्यक्त कएल जाइत छल जे अनायास माथपर आबि गेल जिम्मेदारी सँ ओ लड़खड़ा जेता। किन्तु समस्त आशंका कें ध्वस्त करैत अरविन्द बाबा अपन पिताक श्राद्धकर्म पिताक प्रतिष्ठाक अनुकूल केलनि। अपन एकटा अविवाहित बहिनक विवाह एकटा संभ्रांत आ सुखी परिवार मे केलनि। फेर छोट भाइक विवाह आ अपन पुत्र सभक शिक्षा-दीक्षा सफलतापुर्वक सम्पन्न केलनि। ई सभ करैत अपन सामाजिक-राजनीतिक दायित्व कें सेहो नहि बिसरला आ इहो क्षेत्र मे स्वयं कें अपन पिताक सुयोग्य उत्तराधिकारी साबित केलनि। अचरजक गप जे एतेक दवाबक बादो हुनक निर्भयता आ जनपक्षधरता पर कनिको आँच नहि आएल। सुपौल सँ पटना होइत दिल्ली तक हिनक व्यक्तित्वक दबदबा

रहनि किन्तु जातिगत समीकरण विपरीत रहने बाबा केँ दलीय राजनीति मे ओ हक नहि भेटि सकल जेकर ओ सही माने मे हकदार छला। बाबा अपन राजनीतिक जीवनक चर्चा नहिए जकाँ करै छथि। कहिओ कोनो जिज्ञासा कएलहुँ त एकदम निर्पेक्ष जकाँ मात्र तथ्यात्मक सूचना दए देता, जेना ओहि जीवन सँ कोनो मोह नहि, कोनो संलिप्तता नहि। हुनक सामाजिक-राजनीतिक जीवनक समकालीन सहयोगी सभ सँ जखन हुनकर अतीतक ओहि अध्याय दिआ सुनै छी त रोमांच सँ भरि उठै छी आ छाती गर्व सँ फुलि जाइत अछि।

अपन जीवनक कर्म-विस्तारक क्रम मे हम जे जे नव द्वार खोलै छी ताहि मे कतहु ने कतहु बाबा पहिने सँ उपस्थित भेटै छथि—हमरा चकित-विस्मित करैत। विधि-स्नातक भेलाक बाद जखन हम सुपौल बार-एसोशिएसन ज्वाइन कएलहुँ त ओतहु हमरा बाबाक सम्बन्धक नाते तुरत परिचिति भेटल। अनेको वरिष्ट अधिवक्ता एहन भेटला जे बाबाक चर्चा करिते कहलनि—अरे! अरबिन बाबू त हमर मित्र छथि। कतेको एहन अधिवक्ता भेटला जे अपन अधिवक्ता हेबाक श्रेय बाबा केँ देलखिन। तखन जा कए ई खिस्सा ज्ञात भेल जे 90 के दशक मे बाबा अपन स्वर्गीय पिताक स्मृति मे 'बलेन्द्र नारायण ठाकुर मेमोरियल लॉ कालेज' के स्थापना केने रहथि। ओकर नियमित वर्ग चलय आ सुपौलक प्रतिष्ठित अधिवक्ता सभ ओहि मे शिक्षक छला। विश्वविद्यालय आ कुलपति स्तर पर बाबा अपन व्यक्तिगत क्षमता आ दम पर ओकरा अग्रगामी बनैने रहला। बाद मे सचिवालयक घूस-पैरबीक कुसंस्कृति सँ आजिज आबि ओ ओकरा तीन वर्षक बाद बंद कए देलथिन किन्तु ता तक प्राय: पचास सँ बेसी छात्र केँ ओ अधिवक्ता बनबाक डगर पर आगू बढाए चुकल छला। आब ई घटना इतिहास बनल अछि आ बेर-बेर मन पाड़ल जाइत अछि।

सुपौल मे अनेको एहन लोक हमरा भेटलनि जे बाबा केँ 'वन मैन आर्मी' कहै छथि आ स्वयं हमरो ई अनुभव बेर-बेर भेल अछि। ई अतिशयोक्ति लागि सकैत अछि किन्तु सत्य अछि जे एहि टोल आ शहर मे बाबाक संपर्क मे रहल अनेको एहन व्यक्ति हमरा भेटला जे बाबाक विविध खासियतसभ मे सँ कोनो एक या दू या अनेक चीजक नकल करैत देखाइ छथि। केओ हुनकर परिधानक, केओ हुनकर वक्तृत्व कलाक आ एतेक धरि जे केओ-केओ हुनका सन चलबाक नकल सेहो करै छथि। ओ सभ प्रत्यक्षत: भने एकरा स्वीकार नहि करथु किन्तु हुनक अंतरात्मा एकरा अवश्य बुझैत अछि। ओना एहि मे हुनका सभक कोनो दोष सेहो नहि छनि। बाबाक व्यक्तित्वे एहन सुदर्शन आ प्रभावशाली अछि जे केकरो मन मे हुनका सन बनबाक, देखाइ

देबाक लोभ आबि सकैत अछि। बाबा कुर्ता–पैजामा पहिरथि, कुर्ता–धोती पहिरथि, पैन्ट–शर्ट पहिरथि वा जाढक बेर मे बण्डी, प्रिंस सूट, स्वेटर, इंगलिश सूट पहिरथि, सब मे दिव्य लगै छथि। कपड़ा पहिरैक समझ आ तहजीब केओ हुनका सँ सीखय। अमिताभ बच्चनक ड्रेस–डिजाइन आ मिलिन्द सोमनक रैम्प पर ड्रेसिंग—बाबाक आगू सब फेल। ई हमर अनुभव अछि जे बाबा जखन अपन घर सँ बहराइत छथि त की आंटी, की भौजी, हमरा सन पोताक सारिअहु सभ हुनक बजार जेबाक आ ओमहर सँ घुरबाक प्रतीक्षा करैत अछि—हुनका भरि पोख देखबाक लेल। एक बेर हमर पीढीक एकटा बौद्धिक हिनक 'लार्ड बायरन' नामकरण केने छल किन्तु हमरा लगैत अछि जे बाबा 'सिंगल–विमेन मजनू' छथि। हिनक किशोरावस्थहि मे माता–पिता द्वारा चुनल हिनक धर्मपत्नी बीणा ठाकुरहि हिनक गोपिका छथि, राधा छथि आ रुक्मिणी सेहो।

बाबाक एकटा आओर रुप हमरा सोझाँ आएल जखन हुनक मा केँ कैन्सरग्रस्त घोषित कएल गेल। माक उपचार मे हुनक समर्पण–भाव हमर शब्द–सामर्थ्य सँ बाहर अछि। जेबा लेल हमहु मुम्बई गेलहुँ, टाटा मेमोरियल मे अपन ब्लड डोनेट सेहो कएलहुँ किन्तु अपन प्रौढ़ावस्था मे जाहि युवकोचित सक्रियता आ तत्परताक संग ओ अपन माक समर्पित सेवा कएलन्हि से संसारक सब पुत्रक लेल अनुकरणीय अछि। तीन–तीन पुत्र आ हमरा सन पौत्रक रहितहु ओ ओहिकाज केँ एकदम व्यक्तिगत जिम्मेदारीक रुप मे लेलनि आ मुम्बई सँ पटना तक ताहि लेल सदति मुस्तैद रहला। माक मृत्योपरान्त हुनक शिशु जकाँ कानबाक स्मृति हमरा अखनो दलमलित कए दैत अछि।

बाबा दिआ एक पंक्ति मे कहल जा सकैत अछि जे ओ प्रबल व्यक्तित्वक असीम प्रतिभाशाली पुरुष छथि। हुनकर स्वभाव तेजस्वी आ दोसर पर हावी भए जाइबला अछि। एहन जेकरा पश्चिमी मोहावरा मे 'डायनैमिक पर्सनैलिटी' कहल जाइत अछि आ भारतीय भाषामे प्राय: 'राजसिक वृत्ति' कहल जा सकैत अछि। एहन हमर अरविन्द बाबा जखन 'मिथिला आवाज' के सम्पादक बनि दरभंगाक डगर धएलनि त हमर असहजता शीर्ष धए लेलक। हुनक योग्यता–क्षमता कोनो प्रश्नक दायरा सँ बाहरक चीज अछि किन्तु हुनक जे लाइफ–स्टाइल छल से हमरा मन मे अनेको प्रश्न आनि ठाढ कए देलक। अपन सुख–सुविधाक दुनिया छोड़ि बाबा दरभंगाक अनभुआर वातावरण मे कोना रहि सकता? अपन सुतय–जागैक, खेबा–पीबाक क्रमबद्ध जीवन मे कोनो व्यतिक्रम कोना सहि सकता? कहिओ केकरो

अधीनस्थ नहि रहनिहार बाबा अपन भूमिकाक स्वतंत्र आ निर्बाध निर्वहन कोना करता? स्वान्तः सुखाय लिखनिहार बाबा दवाब मे कोना लिखता? अपन स्टडी-रुमक रैक आ टेबुलक चारू कात पसरल पोथी सभक विशाल भण्डारक बिना सून-बिसून जकाँ नहि लगतनि? महादेवक गण सभ सन अपन मित्रमण्डलीक बीच रहबाक उन्मुक्तता नहि खगतनि? किन्तु दू-तीन बेर दरभंगा गेला पर बाबा केँ जाहि स्फुर्ति आ आनन्द सँ अपन काज मे समर्पित देखलियनि से हमरा आह्लाद सँ भरि देलक। संपुर्ण मिथिला आवाज परिवार आ परिसर हुनके आभा सँ दपदप करैत जकाँ लागल। ओ स्वयं कोनो आन प्रभाव वा छाँह सँ मुक्त आ निर्भार। एकटा पुरान कहावत मन पड़ि गेल—'शहंशाह जहाँ बैठ जाते हैं, दरबार वहीं लग जाता है।'

अपन जीवन-संघर्षक व्यापार सँ फुरसत निकालि हम बाबा ओहिठाम जाइत रहै छी आ हुनका संग बैसि बेसीकाल भोरका चाहक चुस्की लैत साहित्य आ आन-आन विषय सभ पर बतियाइ छी। पछिला अनेक वर्ष सँ बाबा हमर सभसँ नीक मित्र छथि, अभिभावक आ मनोचिकित्सक सेहो। हमरा सभक गपक कोनो निर्धारित विषय नहि रहैत अछि। बात पसरैत अछि त साहित्यक सीमा पार करैत लालू-नीतिश, मोदी-अडवाणी, मोहम्मद रफ़ी-बलराज साहनी, शाहरुख-अक्षय कुमार, धोनी-गावस्कर, फेडरर-अमृतराज आ केदन-कीदन-कहाँदन-कोनदन तक चलि जाइत अछि। बाबाक विविध विषयक अध्ययन आ सूचना हमरा आश्चर्यमिश्रित आनन्द मे डुबबैत रहैत अछि आ हम हुनका लग सँ बहुत-बहुत मातबर भए कए घुरए छी। हमरा लगैत अछि जे बाबाक लेल डिक्शनरी, एनसाइक्लोपीडिया वा गुग्गल सन नामकरणहु यथेष्ट नहि अछि। लागैए जे बाबाक लेल कोनो जानकारी दुर्लभ नही छनि, बाबा लेल कोनो चीज असंभव नहि छनि आ बाबाक संगति कोनो माटिओ केँ सोना बना सकैत अछि।

हाली-हाली बहथु कोसी
शैलेन्द्र आनंद

14 दिसम्बर 2012 ई-। वागमतीक जबकल साहित्यिक-सांस्कृतिक जल वेगमयी भऽ बहय लागल। ओहि समय लागल छल जेना मोनक कल्पना साकार भऽ उठल अछि। मैथिलीमे ढंगक समाचार पत्रक शुभारंभ मोनकेँ आन्दोलित कऽ देने छल। आब मैथिलीक बढ़ैत डेगकेँ क्यो छेकि नहि सकत। नव ऊर्जा सम्पन्न ओहि टीमकेँ देखि, अपार विश्वाससँ भरि गेल छलहुँ। टीम लीडर अजित कुमार 'आजाद' प्रभारी सम्पादक-अरविन्द ठाकुर, फीचर सम्पादक-नरेन्द्र एवं नगर सम्पादक-कुमार शैलेन्द्र।

पहिल दिन जखन 'मिथिला आवाज' कार्यालय पहुँचलौं, तऽ आँखि सम्पादकक केबिन दिस छल। कारण प्रभारी सम्पादकक कुर्सी पर ओ छथि जिनका सँ पत्र-व्यवहारक अतिरिक्त साक्षात्कार नहि भेल छल। एक तरहेँ हमरा लेल ई अजगुत गप्प छल। पूर्व परिचित रहलो उत्तर, ने हम हुनका देखने छियनि आने ओ हमरा देखने छथि। रचनाकारक एहेन मैत्री, वस्तुत: बहुत उत्सुकतासँ भरल रहैत छैक। हमरो लग वएह उत्साह छल। अरविन्द ठाकुर अर्थात 'परती टुटि रहल अछि' केर कवि। जनिक प्रतिभा सँ एहि पोथीक माध्यमे पूर्वहि परिचित रही। 'अन्हारक विरोधमे' कथा-संग्रह पढ़ि चुकल रही। मुदा परिचितो रहैत, अपरिचित रही सदेह। गौरांग, दोहारा शरीरक ई नवयुवक, हमरा देखि मुस्कियाएल। लागल जेना ई हमरा पूर्व मे देखि चुकल छथि। हम आगू बढ़ि बजलहुँ—शैलेन्द्र आनंद। कुर्सीसँ उठि, ओ हाथ बढ़बैत कहलनि—'मिथिला दर्शनमे फोटो देखि चुकल छी, तेँ पहिने अनुमान लगा चुकल रही। दर्शन देबाक लेल कोटिश: धन्यवाद। कुर्सी पर बैसौलनि, चाहक आदेश देलखिन आ साहित्यिक गति-विधिक चर्चा होमय लागल। गप्पमे आठ बाजि गेल। हम हड़बड़ेलहुँ, मुदा ओ निश्चिन्त। एकटा संक्षिप्त वाक्य-अरे जेबे करब। अखन कोन हड़बड़ी छैक। पन्द्रह दिनुक बादहि अखबार निकलबाक संभावना, तावत एतेक दिनुका बाँकी-

बकियौता पूरा कऽ लेबाक छै। मुद्रा ओहिना सौम्य। सौम्य मुद्रामे ठाँहि-पठाँहि बजबाक अद्‌भुत सामर्थ्य छनि हिनकामे। साहित्यकारक असली फकीराना अंदाज। 'परती टूटि रहल अछि' केदार कानन पठौने रहथि। कानन हिनके जकाँ परिचित छथि। हुनकोसँ सदेह भेंट नहि अछि। मुदा लगैए जेना हमरा लोकनि पुरान परिचित रही। एहने भेंट कुणालसँ भेल छल। कुणाल, लोहना आएल रहय, राज आ शैल सँ भेंट करबाक लेल। रस्तामे एकाएक रोकलक आ कहलक-की हमरा समक्ष शैल ठाढ़ अछि? हम सकपकाएल 'हँ' कहने रही कि कहैत अछि-हम कुणाल। हम छातीसँ ओकरा साटि लेने रहियै, आइयो हमरा ओहिना मोन अछि। से अरविन्द ठाकुरक ओहि दिनुका भेंट ओहिना मनमोहक लागल छल। एहि आत्मीयताक तारकेँ मात्र साहित्य जोड़ने अछि। कोसिकाक पानिमे जेना प्रतिभाक वरदान छै। उग्रताराक आशीष जेना ओतुक्का एक-एक साहित्यकारकेँ प्राप्त होइक। सुभाष भाइ होथि कि कानन, नवीन होथि कि अरविन्द सभ चर्चित, सभ कलमक तेज। साहित्यसर्जक लोकनिक गाम, कत्तौ ने कत्तौ अपनत्वसँ भरि दैत अछि। महिषी आ उग्रताराक नाम मात्रहिसँ हमर हृततंत्री झंकृत भऽ उठैत अछि। कारण स्पष्ट अछि—महिषी हमर पुरखाक गाम थिक, हमर मूल ग्राम। महिषी, सहरसा आ सुपौलक लोक भरिसक अही कारणसँ अपन समांग सन लगैत छथि। जाह, हमहूँ की-की कहऽ लगलहुँ? हम अरविन्द ठाकुर पर केन्द्रित छी आ बोहियाइत पहुँच गेलौं सहरसा। ओना सहरसा आ अरविन्दक अटूट संबंध अछि, जेना हमर आ अरविन्दक मैत्रीक प्रगाढ़ता। कहबाक लेल ओ अनुज रचनाकार किएक ने होथि, मुदा मैत्री सभ छान-पगहाकेँ तोड़ि दैत छैक। अरविन्दजी खूजल लोक छथि। ठाँहि-पठाँहि गप्प लिखताह आ बजताह। नीक लागय तऽ बेस, नहि नीक लागय तँ बेस। हुनक मोनमे जे उपचरतनि ओ प्रकट कऽ देताह। छल-छद्मसँ दूर, निर्विकार भावसँ। तँ वर्तमान समयमे जे स्थान हिनका भेटबाक चाही, से अखनि धरि क्यो नहि दऽ सकल अछि। एहेन रचनाकारक प्रति, आलोचक लोकनिक दृष्टि नहि जाएब, कोनो प्रतिभा सम्पन्न रचनाकारक अवहेलना थिक।

अरविन्दजी बहुत जिदियाह लोक। जे सोचताह ओकर कार्यान्वयन कोना हएत से संगहि सोचि लैत छथि। एक दिनुक गप्प सुना रहल छी। हम डेरापर पएर रोपनहि हएब कि फोन रिंग देलक। फोन उठौलहुँ। अरविन्दजी छलाह। कहलनि-भाइ, महाप्रकाश नहि रहलाह। हुनक निधनसँ मर्माहत छी। तँ अहाँसँ विशेष आग्रह जे 6 बजे धरि एक संस्मरण लिखि पठाबी। मात्र डेढ़ घंटाक समय। हम अपन विवशता कहितियनि, मुदा ओ एकर बिना अवसर देने कहलनि—लियऽ अजितजी बात करऽ चाहैत छथि। हम तखनहि बूझि गेलहुँ जे आब बिना लिखने कोनो उपाय नहि। आजाद,

अपन पुरान अंदाजमे बजलाह? हँ सर! कल्हुका अखबारक एक पृष्ठ महाप्रकाशक लेल रहतनि। संस्मरण अपनेक हिस्सामे छै। 6 बजे आबि जैयौ। प्रणाम आ फोन डिस्कनेक्ट भऽ गेल। भारी आफत। एतेक जल्दीमे केहने संस्मरण लीखि सकबै। मुदा नै लिखबै तऽ आजाद आ अरविन्द दुनूक मोन टूटि जेतै। जेना-तेना हुनका लोकनिक फरमाइश पूरा कऽ, मिथिला आवाज कार्यालय पहुँच गेल रही। अरविन्दजी दूरहिसँ स्वागत कएने रहथि-आएल जाउ, आएल जाउ। हम बुझैत छलियै जे एहि कठिन समयमे हमर आवश्यकताक पूर्ति के कए सकैत छथि आ पुन: हिन्दीमे-आज की शाम महाप्रकाश के नाम।

अरविन्दजी अपन कर्मचारीसँ अत्यधिक स्नेह करैत छलाह। ककरो आवश्यकता पड़ि गेला पर, हुनक बटुवा तुरत्त खुजि जाइत छल। कनिएँ दिनमे ओ सम्पूर्ण स्टाफकेँ अपना दिस मोड़ि लेलनि। ई हुनक मिलनसार स्वभावक परिणाम छल। आ हुनक इएह लोकप्रियता हुनक मार्गक काँट भऽ गेल। पत्रकारिताक लौल केनिहार एकटा ईर्ष्यालु व्यक्तिक आँखिमे ओ गड़य लगलाह। शकुनी स्वरूप ओ व्यक्ति पाशा पर पाशा फेकय लागल। अरविन्दजीक लेल धैन सन। मुदा सिंह, सिंह होइत छैक ओ गीदर कथमपि नहि भऽ सकैछ। परिणामत: एक दिन मनोवेगमे ओ इस्तीफा दऽ डेरा चल अयलाह। बहुतो मनयबाक प्रक्रिया भेल, मुदा पुन: घूरि नहि तकलनि। एहिसँ पूर्व आजादकेँ उछन्नर दऽ हटयबामे ओ सफल भऽ गेल छल आ ओकर ई दोसरो दाव सुतरि गेलै। अरविन्दजी संवेदनशील लोक छथि। ओ संवेदनेक कारण अपन पदसँ इस्तीफा देलनि। मुदा देखा गेलाह अपन अस्तित्व, अपन ऊर्जा, अपन लोकप्रियता ओहि नीच व्यक्तिकेँ जे कुकूर सदृश अइँठ खयबा लेल सदरि काल मालिकक आगू नाङरि डोलबैत छल। प्रपंच करैत छल, मैथिलीक संग, स्टाफसँ गारि-फज्जति सुनैत रहैत छल, मुदा जाहि आशासँ ओ एहेन कुकर्म कएलक, से पूरा नहि भऽ सकलै।

अजित आजाद सन तेज-तर्रार, कर्मठ मैथिलीक समर्पित कार्यकर्त्ताक संग प्रपंच-सी-ओ-पद पएबाक लेल, अरविन्द ठाकुर सन प्रतिभाशाली रचनाकार संग प्रपंच प्रभारी संपादक पद पएबाक लेल। कुमार शैलेन्द्र आ नरेन्द्रक संग प्रपंच-फीचर सम्पादक बनबाक लेल, मुदा 'मिथिला आवाज'क मालिक लग कोनो दालि नहि गलि सकल। कुकूर, अँइठ खयबाक लेल नाङरि डोलबैत रहि गेल। अरविन्द ठाकुरक सम्पादकक पदसँ इस्तीफा देलाक बाद किंवा आजादक त्याग पत्रसँ मैथिलक सपना टूटि गेलैक। भहरि गेलैक समर्पित कार्यकर्त्ताक आसाक देबाल। कियो गेलै हाँजीपुर, कियो गेलै पटना। अंतत: 'मिथिला आवाज' बंद भऽ गेल। मैथिलीक आकाशमे उद्दीप्त आसाक तरेगन, धूमकेतु बनि विलीन भऽ गेल। मुदा विलीन नहि भेलाह-अरविन्द। ओ तऽ आओर भकरार भऽ फुलएलाह। मकरंदक संग, महमहाइत,

मैथिली वाङ्मय सुरभित करैत, अपन कलामधुसँ आकर्षित करैत, कहियो नहि बिसरयवला भाषा स्नेहक लेल दू-आखर नित्तो लिखैत छथि। 'अन्हारक विरोधमे' लड़ैत छथि जड़ताक परती तोड़ैत छथि। ओ लड़ैत रहताह, अन्हारक विरोध करितै रहताह। परती टूटत, फसिल लहलहाएत, सर्वजन हिताय, बहुजन सुखाय। हमर अनुज थिकाह, मुदा मित्रवत् छथि। हाली-हाली बहैत रहथु कोसी, अपन वेगमे घृणा अहंकार, तिरस्कार, चापलूसी सभेँ बहाकए ल' चल जाथु। साहित्यक धरती शस्य-श्यामला होइत रहथु।

वागमतीक वेग पुनः अवरुद्ध भऽ गेल अछि। ओकर किन्हेर बोन-झांखुरसँ भरल जा रहल अछि। मऽर खएबा लेल नढ़ियाक जमाति, हुलुक-बुलुक कऽ रहल अछि। कुकूर दोसर मालिकक दरबारमे नाङरि डोला रहल अछि। मालिककेँ भड़का रहल अछि, विभिन्न लोकक मार्देँ। कोनो-कोनो दाव सुतरि जाइत छै ओकरा एक कौर बेसी भेटि जाइत छै। भरिसक एहने स्थितिकेँ देखैत, भाइ उदयचन्द्र झा 'विनोद' लिखलनि अछि—

''सत्य कथा उपराग भऽ गेलै
झूठक माथा पाग भऽ गेलै
पक्षीराजा काग भऽ गेलै
धाजा पर तऽ दाग भऽ गेलै।
मौलिक लक्ष्य विवाद भऽ गेलै
दुष्टक परिसवांद भऽ गेलै
खास लोक आबाद भऽ गेलै
आम लोक बर्बाद भऽ गेलै।।'' (अमलतास, प्रवेशांक 2013)

शाइत मैथिली भाषाक इएह परिणति लिखल छैक। दोयम दर्जाक लोक, गोटी सुतारबाक लेल, मातृभाषाक अनुरागके बिसरि, ओकर मानमर्दन करबा पर तुलल अछि आ दोसरा दिस मातृभाषा अनुरागी विभिन्न प्रताड़ना सहैत, मातृमंदिरमे रचनाक फूल समर्पित कऽ आत्मसंतोष कऽ रहल अछि। बरु कोसी हाली-हाली बहथु, मुदा ओ नहि, नहि-नहि कथमपि नहि। अरविन्द भकरार हएताह, हुनक सुरभिसँ सुरभित सम्पूर्ण मैथिली वांगमय एक दिन महमहा उठत।

अरविन्द ठाकुर : अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व

मिथिलेश कुमार राय

आइ-काल्हि फेसबुकपर व्यक्तित्व नमहर की कृतित्व तैपर विचार पोस्ट कएल जाइत अछि। सभहक अपन-अपन विचार छनि मुदा हम ओहन लोकक विचारसँ बेसी प्रभावित होइत छी जे व्यक्तित्वसँ बेसी कृतित्वकेँ मानै छथि। हमर अपन मानब अछि जे व्यक्तित्व समाजक बड़का वर्गकेँ प्रभावित करै छै आ कृतित्वपर सेहो ओकर छाप पड़ैत छै।

एकर पाछू हमर हमर अपन अनुभव अछि।

खराप समयमे एक आदमी हमरा अन्हारसँ लड़बाक तागति देला।

हम ओना दिल्लीमे छलहुँ मुदा कुसहा त्रासदीमे सभ जकाँ हमहूँ पिसाएल छलहुँ आ ओही पिसाएल समयमे अरविन्द ठाकुरजीसँ हमर पहिल भेंट भेल। गामसँ माए-बाबू जान बचा कऽ भागल छला तँ दिल्ली विश्वविद्यालय पढ़ाइ छोड़ि हम भागि आएल रही। फरवरी 2010केँ शुरूआतमे जा धरि हम प्रभात खबर, सहरसा नै ज्वाइन केलहुँ ता धरि अरविन्दजी हमर दुर्दिनकेँ सम्हारबामे नीक योगदान केला। कोसी बाढिक बाद बेरोजगारीक दिनमे हमरा एकटा आइडिया आएल छल जे हम कोसीपर लिखल गेल पद्य रचना सभहक संकलन करी। आ ऐ लेल हम सूची बनेबाक क्रममे अरविन्दजीसँ भेंट भेल। हम ताहि समयसँ हिनकर दृष्टिकोणक प्रशंसक छी। ओना ओहि समयमे हम जौंडिससँ ग्रस्त रही मुदा स्थिति ओहन छल जे ओहू समयमे हम काज ताकि रहल रही। आ ऐ सभहक अछैत हम रचनाकारक सूची बनाबैत रही। अरविन्दजीकेँ भेंटक क्रमेमे पता लागि गेलनि जे हमर तबीयत खराप अछि तँ जौंडिस आ एकर बचावपर बहुत रास चर्चा भेल आ तै संग कोसी क्षेत्र, क्षेत्रक पानिपर चर्चा भेल संगे संग बेरोजगारीक भयावहतापर सेहो। कनी-मनी साहित्यपर सेहो चर्चा भेलै। खेला-पीलाक बाद चलबा कालमे बाढ़िपर लिखल हिनक दूटा गजल भेटल। हिनक

सुलेख देखि नीक लागल। हिनक चेहरे जकाँ उज्जर कागजपर मोती जकाँ अलगसँ चमकैत। भेंट स्वरूप हिनक कथा संग्रह 'अन्हारक विरोधमे' सेहो भेटल। पूरा रस्ता हम ऐ शीर्षकेँपर सोचैत रहि गेलहुँ, रातिमे निंद नै भेल। आ भोरे लागए लागल जे हम ठीक भेल जा रहल छी...

अन्हारक विरुद्ध बढ़ल डेग आब किछु और तेज भऽ गेल छल। बहुत आत्मविश्वासक संग प्रभात खबरमे पएर रोपबाक जमीन भेटल तँ हमर बेरोजगारीक परती टूटि गेल छल। कनी-मनी हरियरी आबि गेल छल हमरा उपर। जहिया कहियो पात पीयर होबऽ लागैत छल 'अन्हारक विरोधमे' फूँही जकाँ बरसऽ लागैत छल। फोनपर तँ बात-चीत होइते रहल।

सगर राति दीप जरए कार्यक्रमक दौरान हिनक बजबाक क्षमता आ समीक्षीय दृष्टिकोणक हमरा फेरसँ चकित केलक। हमरा सभहक सामने बाजऽमे दिक्कत होइत छल मुदा सुनबाक धैर्य छल। हम अरविन्दजीकेँ पूरा धेआनसँ सुनलहुँ। तेसर भेंट लिच्ची पकबाक समयमे भेल छल। एकटा फरेबी अफसरसँ भेंट कऽ कऽ आएल रही आ दुनियाँसँ आक्रांत रही मुदा अरविन्दजीक घर 'विप्लव भवन'मे पएर रखिते मोन शांत होमए लागल। कनी दुनियाँदारीक गप्प भेल, स्वास्थ्यक गप्प भेल। गप्प भेलाक बाद ओ बाहर गेला आ भीतर अबैत काल हुनका हाथमे लिच्ची भरल पथिया छल। लिच्ची तँ मिट्ठ होइते छै ताहूमे हुनक आग्रह एहन जे हम मना नै कऽ सकलहुँ। आबऽसँ पहिने हम किछु कविताक जन्म-कथाक संबंधमे गप्प भेल आ ओहन लोकक गप्प भेल जे रचना प्रक्रिया लेल जमीन तैयार करै छै। हम ई मानलहुँ जे अन्हारक विरोधमे संघर्ष कऽ रहल लोके हमरा भाव ओ शक्ति दै छथि, हम तँ खाली शब्दकेँ क्रम राखब जानै छी।

अरविन्द ठाकुर : हमरामे अहाँ, अहाँमे हम

अजित आजाद

वर्ख 2012। 'मिथिला आवाज' दैनिकक प्रकाशनक हेतु हम टीम तैयार कऽ रहल रही। मूल संकट छल संपादकक। मैथिली अखबारक लेल जेहन संपादक हम चाहैत रही, चारू भर नजरि खिरओलाक बादो कियो सक्षम आ समर्पित पत्रकार एहि लेल अभरि नै रहल छल। किछु मैथिली भाषी संपादक अवश्य रहथि सोंझामे जिनक हिंदी अखबारक संपादकक रूपमे ख्याति रहनि मुदा हुनका सभ लग असमंजसक स्थिति रहनि। एहनमे एक दिन हम अनचोकेमे अरविन्द ठाकुरजीकेँ फोनेपर आधिकारिक मुद्रामे कहि बैसलियनि—'सर अहाँकेँ मिथिला आवाजक संपादनक दायित्व लेबाक अछि। कोनो अगर-मगर नै'।

ठाकुरजी हतप्रभ रहि गेल रहथि मुदा हमर जिद कहू अथवा हमरा प्रति हुनक विशेष अनुराग ओ तत्काल गछि लेने रहथि। किछुए दिनक उपरांत ओ हमर पटना आवासपर अएलाह, प्राय: चारि-पाँच दिन रहलाह। एहि क्रममे ओ अपन गजल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेशमे' केर मादे मारिते रास बात विचार केलनि मुदा रहि-रहि कऽ मैथिली अखबार निकालबाक आ ओकर संपादन-पक्षपर विमर्श करब ओ नै बिसरथि। किछु दिनक उपरांत हम हुनका डॉ. चंद्रमोहन झाजीसँ मधुबनीमे भेंट करबेलियनि। डॉ. चंद्रमोहन झा मिथिला आवाजक मालिक रहथि। अखबार निकाललाक बाद ओ एहि अखबारक प्रधान संपादक सेहो बनलाह। अरविन्दजी प्रभारी संपादकक काज करब शुरू केलनि। प्राय: जुलाइ 2012सँ। हुनक कुंडलीमे नौकरी करब नै छलनि। ओ ऐसँ पहिने कहियो व्यावहारिक रूपें चाकरी नै केने रहथि। पत्रकारिता जरूर करथि। ई गुण ओ अपन पितासँ अर्जित केने रहथि। हुनक पिता प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी आ कुशल पत्रकार रहथिन।शुरुआतमे ठाकुरजीकेँ मिथिला आवाजक कार्यालयमे किछु-किछु दिक्कत होइन मुदा लगले ओ आदती भऽ गेला। अखबारक पहिल अंक

14 दिसम्बर 2012केँ बहरेलै मुदा डमी अंक जुलाइयेसँ तैयार होइत रहैक। एहि क्रममे हमर दायित्व छल सभकेँ तकनीकी रूपसँ नीक बनाएब। ठाकुरजी तत्परताक संग कमप्यूटर ओ अखबारी साफ्टवेयरमे दक्षता प्राप्त केलनि। अखबारक तनाव भरल वातावरणकेँ ओ अपना तरहें तनावरहित बनेबामे कोनो कोर-कसरि नै छोड़थि। हमर चारू कात ईर्ष्या-द्वेषक एकटा नमहर आ मजगूत छहर देवाली बनए लागल छल। एहि छहर देवालीकेँ अपन हास्य बोध अथवा एना कही जे भाष्यबोधसँ तोड़ि देबाक ओ चेष्टा करथि। बहुत दूर धरि ओ सफलो भेला मुदा पूर्णतः नै। परिणामतः हम 30 जनवरी 2013केँ अखबार छोड़ि देल। ठाकुरजी मुदा जमल रहलाह। बदमे पता लागल जे जाहि छहर देवालीमे हम घेराएल रही, सएह छहरदेवाली हुनका घेरि लेलकनि अछि। फोनपर ओ अपन पीड़ा कहथि मुदा हमर एकैटा तर्क रहए—'जा धरि अहाँ छी ता धरि अखबार अछि। अहाँ निकलबै अखबार बंद भऽ जेतै'। आ लगभग सएह भेलै। ठाकुरजी एक दिन जय मैथिली कहि निकलि गेला। तकर बाद किछु दिन नरेंद्र सर प्रभारी संपादकक रूपमे अखबार सम्हारबाक चेष्टा कयलनि आ किछु दिन कुमार शैलेन्द्रजी, बादमे अमलेंदु शेखर पाठकजी सेहो, मुदा अखबार नै चलि सकलै आ 22 अप्रैल 2014केँ बंद भऽ गेलै। एतेक दिन अखबार जे चलल तकर एकटा मजगूत पाया रहथि अरविन्द ठाकुरजी। हुनक संपादकीय चर्चामे आबि गेल छल। हमरा लग बहुत गोटे प्रत्यक्ष अथवा फोनपर एकर प्रशंसा करथि। ओहि समय हिंदी अखबारक संपादकीय आ ठाकुरजीक मैथिलीमे लिखल संपादकीय केर जँ तुलना करबैक तँ ठाकुरजी बीस नै एक्कैस पड़ताह। हमर तँ इच्छा अछि जे हुनक संपादकीय केर पोथी भऽ जाइक।

मिथिला आवाजमे एक समय एहनो छल जाहिमे किछु दिनक लेल हमरा आ ठाकुरजी बीच मतांतर भऽ गेल छल। बाजा-भुक्की सेहो बंद। हम अपना तरहें स्थितिकेँ सम्हारबाक बहुत यत्न करी मुदा सफल नै भऽ पबैत रही। एक दिन नरेन्द्र सर एकर फरिछौंट कएलनि ताहूमे ठाकुरेजीकेँ धन्यवाद जे ओ हमरा प्रति सभटा कटुताकेँ एकहि क्षणमे बिसरि गेल रहथि। अरविन्द ठाकुरजीसँ पहिल भेंट कहिया आ कोन स्थितिमे भेल से ठीक-ठीक नै कहि सकैत छी मुदा 1993 केर गप्प थिक प्रायः। हुनक पहिल पोथी 'परती टूटि रहल अछि' कविता संग्रह आबि गेल रहनि। हम केदार काननजीसँ भेंट करबा लेल मासे-मास सुपौल जाइत रही ओहि समयमे। हमर गाम हटनी सँ सुपौल मात्र 18 किलोमीटर दूर छै। बीचमे मुदा कोसीक धार। नाहपर चढ़ी आ ओइ पार सुपौल। लगभग चारि घंटाक रस्ता आ खर्च पड़ैक

अधिकतम दस टका। तहिया मैथिली साहित्यक एकटा प्रमुख केंद्र रहैक सुपौल। एहि केंद्रक धुरी रहथि केदार काननजी। हुनक मित्र मंडलीमे डॉ. शिवेन्द्र दास, डॉ. नवीन कुमार दास, अरविन्द ठाकुरजी सभ रहथिन। ओही गोष्ठी सभमे कहियो हिनक विद्वता आ ठहक्कासँ प्रभावित भेल हएब हम। ठाकुरजीक जिंदादिली आ उन्मुक्त भाव हमरा विशेष प्रभावित केलक जे हम एक्कहि श्वासमे उक्त संग्रहक हिंदी अनुवाद कऽ गेल रही। मुदा अनुमति तँ लेने नै रही आ डर सेहो रहए मोनमे जे यदि अनुवाद पसिन्न नै पड़लनि तँ अपन अयोग्यता सेहो देखार होयत। अनुवाद केलाक बहुत दिन धरि हम एही गुन-धुनमे रही जे अनुवादक ई कॉंपी दियनि कि नै। अंततः राजविराजमे सगर रातिक गोष्ठीमे हम हुनका ई कॉंपी देखेबाक साहस जुटा लेलहुँ। ओ मुग्धभावसँ हमर अनुवाद कार्यकेँ देखलनि आ प्रशंसा केलनि। गोष्ठीमे उपस्थित अनेको साहित्यकारकेँ ओ एहि संदर्भमे कहलखिन्ह। मैथिलीमे लेखकसँ बेसी प्रकाशक छथि एकर अछैत पोथी प्रकाशनक स्थिति बहुत बेसी दयनीय अछि। बिक्री व्यवस्था एहि स्थितिकेँ आर संकटमय बनबैत अछि। एहनमे अनुवाद कएल एहि कृतिकेँ छपबामे दिक्कत आएल जे की स्वाभाविक छल। बहुत बर्ख धरि ई अनुवाद अन्हारेमे रहल। लगभग 17-18 बर्ख। बर्ख 2008मे हम 'नवारंभ' नामक प्रकाशनक स्थापना केलहुँ। पोथी छपबाक किछु हुनर सेहो अर्जित केलहुँ। प्रकाशित पोथी सभहक चर्चा होमय लागल। तँ एक दिन हम ठाकुर सरकेँ उक्त अनुवाद संदर्भमे जिज्ञासा केलियनि। ओ छपेबाक लेल तैयार भेला। एहि बेर ओ अपने गंभीर छला छपेबाक लेल। हमर काज असान भऽ गेल। 'परती टूट रही है' सोंझा आबि गेल। खूबे चर्चा भेल। मैथिली कविताक किसानी संस्कृति आ प्रतिरोधक आभाकेँ हिंदी जगतमे प्रशंसा भेटलैक। हमरामे कतबा अरविन्द ठाकुर छथि आ हुनकामे कते हम छी एकर पड़ताल या प्रमाण देबाक खगता नै अछि, मुदा ई बात पूरा सत्य अछि। हमरामे जतबा ओज, जतबा जिद अछि से हुनके थिक। अरविन्द ठाकुरजी कतबा हमर मित्र, कते जेठ भाए अथवा अथवा हमर अभिवाभक छथि सेहो एखन प्रमाण देब उचित नै, मुदा ईहो बात शत-प्रतिशत सत्य अछि। हुनक कथा संग्रह 'अन्हारक विरोधमे' यद्यपि हमर प्रकाशनसँ नै छपल मुदा एकर सभटा काज-ब्योंत हमरे धराओल अछि। भूमिका सेहो हमरेसँ लिखबेलनि। हद तँ ई जे लोकार्पण सेहो हमहीं सेहो कएल सुपौल कथा गोष्ठीमे। हुनक जिद जे नव लोक आगू आबए। नवतुरिया लेखककेँ आगू बढ़ेबामे सभ तरहक मदति करबामे ठाकुरजीक जोड़ नै अछि। प्रायः इएह कारण अछि जे मैथिलीमे सर्वाधिक नवतुरिया लेखक हुनकेसँ जुड़ल अछि। नवतुरियाकेँ अपन संगतुरिया

बनेबाक कला कियो हुनकेसँ सीखि सकैत अछि। संघर्ष आ दरिद्रा हमर संगी रहल अछि। एक समय तँ एहनो छल जे हम 'मिस्ड काल' केर मास्टर रही। आ एकर शिकार मैथिलीक अनेक साहित्यकार भेल हेता मुदा सर्वाधिक 'मिस्ड काल' हम ठाकुरजीकेँ कएल करी। ओ तत्काल 'काल-बैक' करथि आ बड़ी देर धरि बतिआबइथ। आब ओना हमर ई आदति बंद भऽ गेल अछि मुदा बड़ देर धरि बात करबाक ठाकुरजीक आदतिमे कोनो बदलाव नै भेलनि अछि। भरि पोख गप ओ जा धरि नै करताह ता धरि हुनका संतोष नै होइत छनि। हमरा तँ कखनो कऽ होइत अछि जे ई अपन छह मासक मोबाइल बिलकेँ बचा लेथि तँ हिनक दू पोथी अरामसँ छपि सकैत अछि मुदा बात कहबाक अर्थ भेल हुनक संतोषक मार्गकेँ अवरुद्ध करब। हमर मिस्ड कालक चर्च ओ अपन गजल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेशमे' केर भूमिकामे विस्तारसँ केने छथि सेहो सार्थक अर्थमे। एहि संग्रहक दूटा शेर हमरे लेल लिखने छथि। उक्त दुनू शेरमे हम कतबा फिट छी कतबा अनफिट से हमरा जानए बला कहताह मुदा हमरा लेल ओ एकटा मार्क अछि जतऽसँ हम निच्चा नै जाए चाहब। हमरा ऐ बातक गौरब अछि जे ओ हमरा आग्रहपर गजल दिस प्रवृत भेला आ मैथिलीक श्रेष्ठ गजलगो प्रमाणित भेला। हुनक गजल संग्रह मैथिलीक एकटा माडल गजल संग्रह थिक ई बात समीक्षक लोकनि सेहो मानैत छथि। हिनक किछु आर गजल संग्रहक अपेक्षा अछि। मैथिलीमे गजल विधा आइ स्थापित भऽ गेल अछि मुदा एकर गाड़ आर गँहीर हेबाक खगता छै। ताहि संदर्भमे ठाकुरजीक भूमिका महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। अरविन्द ठाकुरजी आइ-काल्हि गद्य लेखनमे अपनाकेँ रमौने छथि। समीक्षा आ निबंध हिनका बेस रुचि रहल छनि। कालमनिष्ट रूपमे ओ अपन झंडा ई पहिनहि गाड़ि चुकल छथि। हिंदी पाक्षिक 'लोक प्रसंग'मे हिनक काज बेस चर्चित भेल। आक्रामकता हिनक लेखनक मूल पूँजी थिक। विचारमे धार आनब आ सही जगहपर एकर उपयोग करब हिनक नैसर्गिक गुण थिकनि। बर्ख 2009मे नवारम्भ पत्रिका निकालबा पाछू हिनके उत्प्रेरण काज केलक। पत्रिका कोना लोक धरि पहुँचैक तकर ब्योंत धरेबाक चिन्तामे सदिखन ओ लागल रहथि। ओही क्रममे हमरा ईहो लागल जे हिनकामे श्रेय लेबाक प्रवृति नाममात्रक लेल छनि। अपनाकेँ पाछू राखि लोककेँ आगू बढ़ेबाक उद्दाम लिलसा हिनक एकटा खास विशेषता थिक। मैथिली लेखक संघक स्थापना 2008मे भेलापर ओ एकर आजीवन सदस्य बनला मुदा एहि संस्थाक क्रियाकलापसँ असंतुष्ट भेलापर ओ एकर विरोध करब नै छोड़लनि। अध्यक्ष आ महासचिवसँ हुनक तकरारक चर्च हमरा लोकनि मींटिग धरिमे करी। प्राय: एहि सभहक कारणें संस्थामे किछु

गुणात्मक सुधार सेहो भेलै। मैथिली लिटरेचर फेस्टिवल 2014मे कविक रूपमे ओ पटना आमंत्रित रहथि मुदा आयोजक संस्था मैथिली लेखक संघसँ किछु मुद्दापर हुनक नाराजगी बनले रहल। प्रतिरोधमे ओ कविता पाठ नै केलनि। हमरा हुनक प्रतिरोधी स्वभाव प्रभावित करैत रहल अछि। हमरा भीतर जे किछु आगि अछि से असलमे हुनक अगिन ताप थिक जे हमरा सिमसिमाह हेबासँ बचबैत अछि। हमरा असगर नै होबए दैत छथि ठाकुरजी। एही बर्ख हमर कंपनीसँ संदर्भित एकटा मामिलामे हमरा जहल जाए पड़ल छल। जहलमे बहुत रास बात सभ जानल-सीखल। ओतऽ एकटा चर्चा बहुत होइक...'अस्पतालक बेडपर आ जेलक गेटपर जे भेंट करऽ आबए सएह भेल अपन'। अरविन्द ठाकुरजी एक दिन अनचोके जेलक गेटपर भेटलाह। हमरा बल भेटल। हमरा प्रति हिनक विश्वास एक बेर आर परिलक्षित भेल। असलमे जहलक गेटपर हुनक आगमन हमरा लेल क्लीन चिट सेहो छल। ओ हमर रिहाइ केर दिन सेहो आबऽ बला रहथि मुदा हमहीं मना कऽ देने रहियनि। आइ सुपौलमे केदार भाइ सक्रिय नै छथि मुदा सुपौलकेँ एकटा साहित्यिक केंद्र बना कऽ ठाकुरजी रखने छथि। आइ सुपौलक अर्थ अरविन्द ठाकुर होइत छै। सुपौलक आस-पासक क्षेत्र यथा त्रिवेणीगंज, मधेपुरा, पूर्णिया आदिकेँ सेहो साहित्यिक रूपें सक्रिय बनेबामे हिनक योगदानकेँ नकारल नै जा सकैए। प्रलेसकेँ कोसीमे विस्तार आ अर्थ देबामे सेहो हिनक महती भूमिका रहलनि अछि। पुरस्कार आ चाटूकारसँ कोसो दूर अरविन्द ठाकुरजीक संपूर्ण प्रतिभाक सार्थक उपयोग यद्यपि आइ धरि नै भऽ सकल अछि मुदा जतबा ओ देलनि अछि ताहिसँ आर किछु भेल होइक की नै मुदा प्रतिरोधी तेवरकेँ धार अवश्य भेटलैक अछि। हिनक उर्जा आ आगि, दृष्टि आ सृष्टि, कथनी आ करनी एवं जीवन आ लेखनमे कतहुँ विसंगति नै भेटत। सभ ठाम एक रूप एक रंग। लेखककेँ जँ अपन रीढ़ नै तँ फेर ओ केहन लेखक? अरविन्द ठाकुर ने सिर्फ अपन रीढ़पर छथि अपितु मैथिली साहित्यिक रीढ़ बनल छथि तँ एहिमे हुनक मेहनति आ जीबटपनक योगदान छनि। आ 'विदेह' जँ हुनकापर केंद्रित अंक निकालि रहल अछि तँ हमरा लगैए जे किछुए लोक सही मुदा छथि तँ जे अरविन्द ठाकुरजी सन समकालीन साहित्यकारक परिवर्तनकामी लेखनक 'नोटिस' लैत छथि। एतऽ तँ ई हाल अछि जे जिबैतमे के कहए मरलोपर लेखकक नोटिस लेनिहार कियो नै। धन्यवाद विदेह।

जेहने खोजलऽ हौ कुटुम्ब
लक्ष्मण झा सागर

डा वीरेन्द्र मल्लिक हमर कविता संग्रहक भूमिका लिखबाक क्रम मे हमरा फोन केलनि जे हमर समकालीन साहित्यकार के सभ छथि ? हम अवग्रहमे पड़ि गेल रही। तत्क्षण हुनका कहलियनि जे जहन हम मैथिली मे लिखनाइ शुरु केने रही तहन हमरा संगे सर्वश्री हितनाथ झा 'हितेश', विनोद भारती, कालीकान्त झा 'बुच' आ स्व फुलेश्वर सिंह 'नौशाद' छपैत छलाह। 'बुच' जीक कोनो रचना किछु बर्ख पूर्व कत्तहु अभरल छल। बांकी गोटेक कोनो किछु कहां भेटइए पढबाक लेल। साहित्य मे हमरा बैच केँ ग्रहण लागि गेलैक। हम टुग्गर भऽ गेल छी। हमरा लोकनिक बाद जे लोकनि लिखय लगलाह से आइ कतय सं कहां पहुंचि गेलाह अछि। हुनका लोकनिक नाम लेब अप्रासंगिक नहि हैत। ओ लोकनि छथि सर्वश्री प्रदीप बिहारी, विभूति आनन्द, रमेश, नारायण जी, नवीन चौधरी, कुणाल, शिवशंकर श्रीनिवास, मधुकान्त झा, विभा रानी, शरदिन्दु चौधरी प्रभृति। व्यक्तिगत हम जिनका लोकनि कें अपन साहित्यिक गुरु मानैत छियनि। हमरा एहि बात कें स्वीकार करबा मे ने कोनो संकोच आ ने ग्लानिबोध भऽ रहल अछि। सत्य यैह छैक। आदरणीय वीरेन्द्र मल्लिक जी कें हमर बात नीक लगलनि। हमरा लोकनिक बहुत बाद सर्वश्री केदार कानन, तारानन्द वियोगी, श्याम दरिहरे, अजित आजाद आ अरविन्द ठाकुर सभ लिखय लगलाह। हम हिनको लोकनिक लेखनक लोहा मानैत छी। हिनका सभक रचना जखन कत्तहु पढैत छी तं अपन लिखलाहा झूस लगैत अछि। साहित्य समीक्षक किंवा पाठक जहन कोनो रचना पढैत छथि तं ओ ई किएक विचार करताह जे अमुक गोटे निठल्ला बैसल छथि किंवा सरकारी सेवा मे छथि वा निजी कंपनी मे बहुत व्यस्त जिनगी सं पलखति निकालि कें लिखैत छथि। हुनका पढबा मे नीक लगैत छनि। यैह ओहि साहित्यकारक

लेखनक सार्थकता भेल।

हमरो मन्तव्य एही दृष्टिकोण सँ प्रभावित अछि। यैह ईमानदारी भेल। हमर विषय आइ 'अरविन्द ठाकुर' छथि। एहि सं पूर्व हम ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति ठाकुर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रुपकान्त ठाकुर, रामलोचन ठाकुर, लुटन ठाकुर, बच्चा ठाकुर, केष्कर ठाकुर, श्यामानन्द ठाकुर, विवेकानन्द ठाकुर, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल', गजेन्द्र ठाकुर, वीणा ठाकुर आ विनयभूषण ठाकुरक नाम सं परिचित रही। मैथिलीक कोनो पत्रिका मे अरविन्द ठाकुरक गजल पढबाक सुयोग भेटल छल। अन्तिम पांतीक 'अरबिन' हमरा मोन कें मोहि लेलक। हम स्व कलानन्द भट्ट, गंगेश गुंजन, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल' आ विभूति आनन्दक गजल पढने रही। ई अरविन्द ठाकुर के? हित-अपेक्षित सं हिनक खोज-खबरि लेनाइ शुरु कऽ देलहुं। सुपौल घर छनि। जमींदार परिवारक वंशज छथि। पटना में दबाईक कारोबार छनि। बाल-बच्चा सैंतल सम्पन्न छनि। बड़का लोक छथि। मैथिली सं प्रेम छनि। बड़ बेसी प्रभावित भेल रही। लऽग सं देखबाक उत्कंठा जागल। श्री मधुकान्त झा जीक अमल मे चेतना समिति, पटनाक 'विद्यापति पर्व समारोह' मे काव्य-गोष्ठीक लेल कोलकाता सं डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक, श्री रामलोचन ठाकुर जीक संग हमहूं आमंत्रित रही। मंच पर अरविन्द ठाकुर सेहो रहथि से तखन बुझलियैक जहन ओ अपन कविता पाठ कऽ कें पुन: मंचासीन भेलाह। लग जाए कें परिचय करबाक साधंस नहि भेल। स्वभाव सं कने घमण्डी सन बुझेलाह। मुदा, हुनक कविता हमरा बेस प्रभावित केलक। हम हुनका प्रति यैह धारणा बनेने रही जे ओ भीड़ सं अलग हटि स्वतंत्र व्यक्तित्वक लोक छथि। बहिर कें बहिरा कहनिहार आ बौक कें बौका कहनिहार श्रेणीक लोक छथि। तकरा बाद एहन भेलैक जे अपन पहिल काव्यसंग्रह श्री केदार कानन कें पठेबाक क्रम मे एक प्रति डॉ. सुभाषचन्द्र यादव आ श्री अरविन्द ठाकुरक लेल सेहो पठा देने रहियनि। किछुए दिनका बाद मोती सन आखर मे श्री अरविन्द ठाकुरक पोस्टकार्ड आयल। पोथी पूरा पढि गेल छलाह। पत्र पाबि कने हूबा भेल। फोन केलियनि। लागल जेना दुनू गोटे कतेक दिन सं परिचित रही। हुनका प्रति धारणा आइ नीक बनि गेल। मुदा, लऽग मे बैसि कें भरि पोख गप करबाक लालसा लागले रहल। से पूर भेल अगस्त, 2013 मे। भोजपुरी-मैथिली अकादमी, दिल्ली सब साल जेकां ओहू साल राजधानी दिल्ली मे काव्य-संध्याक आयोजन केने छल। ओहिमे अरविन्द ठाकुर, अजित आजाद, सदरे आलम गौहर आ स्वाति शाकम्भरीक संग हमहूं बाहर सं गेल रही। 'बाबा बादशाह होटल' मे सभक जुटान भेल। अरविन्द ठाकुर

अजित आजादक संग एक्के कोठली मे ठहरल छलाह। दुनू गोटे मे खूब अपेक्षितारय देखलियनि।'मिथिला आबाज', दरभंगा मे अजिते, अरविन्द ठाकुरकें संपादक बना कें अनने छलाह से बूझल छल। हमरा लोकनि सभ गोटे (जे जुटल रही) अरविन्दे जी वला कोठलीमे बैसल करी।'मिथिला आबाज'क अवसानक खेरहा सुनैत रही। गौहर आ स्वाति ओंघाय जाथि आ अपना-अपना कोठली मे सुतऽ चलि जाथि। मुदा, हम अजित आ अरविन्द जीक संग रातिजगा कऽ व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक आ साहित्यिक परिचर्चा करी। नीक लागय। बहुत रास जानकारी भेटल। बहुत किछु सीखलहुं। अरविन्द ठाकुरकें, हुनक स्वभाव कें आ हुनक साहित्यिक प्रतिभा कें लऽग सं जानबाक,चिन्हबाक आ परखबाक अवसर भेटल। दुनू गोटे भजार बनि गेलहुं। शर्बती सम्बन्ध बनि गेल। जिनगी जीबाक लेल एकटा एहन मीता चाही जकरा सं सुख-दुख बांटि सकी से हमरा लेल आइ'अरविन्द ठाकुर' छथि। दिल्ली सं बिछुरबाक काल उपहार स्वरूप अरविन्द ठाकुर हमरा अपन प्रकाशित दू टा पोथी देलनि— अन्हारक विरोध मे (कथा-संग्रह) आ बहुरुपिया प्रदेश मे (गजल-संग्रह)। दुनू पोथी पढ़लाक बाद अरविन्द ठाकुरक प्रति मोन मे कए तरहक चित्र उभरैत अछि। गजल-संग्रह पढबा काल ई अनुभूति भेल जे ओ उर्दू साहित्यक गहन अध्ययन केलाक बादे मैथिली मे गजल लिखलनि अछि। ई ईमानदारीक काज भेल।'अन्हारक विरोध मे' मे जे कथा सभ ओ गढलनि अछि से पढ़लाक बाद लागल जेना ओ एकटा मुखर समाजवादी आ प्रखर राजनीतिक चिंतक होथि। हमर अभीष्ट एखन हुनक पोथी सभक समीक्षा करब नहि अछि। जाहि अरविन्द ठाकुर सं पटना मे परिचय करबाक साहस नहि भेल छल ताहि अरविन्द ठाकुर सं दिल्ली मे ठेहुन-छावा वला सम्बन्ध बनि गेल। जहिना कोनो साहित्यिक रचना पढ़लाक बाद ओहि साहित्यकारक प्रति लोक कें धारणा बनैत छैक तहिना कोनो व्यक्ति सं भरि पोख गप केलाक बादे ओहि व्यक्ति सं लगाव बढैत छैक। सम्बन्ध मे मीठास अबैत छैक। प्रयोजन छैक ईमानदारी सं प्रयास करबाक। मैथिली साहित्यक जगत मे आइ एकर घोर अभाव भऽ गेल अछि जे एकटा चिंतनीय विषय थीक।

अरविन्द ठाकुर आ 'मिथिला आवाज'

चंद्र मोहन झा पड़वा

गौर वर्ण, नमगर धुआ, चौड़गर छाती आ पैघ-पैघ आँखि लेने मौजूद छला, अरविन्द ठाकुर। हम ठाकुरजीसँ परिचित नै छलहुँ। मानस पटलपर ई नाम नाँचि रहल छल। डॉ. दिलीप कुमार झा 'गौतम होटल', तात्कालीन समयमे आगत-अतिथिक लेल विश्रामालय निर्धारित छल। दरभंगा सन शहरमे एकटा पैघ अखवारी प्रेसक स्थापना लेल अहर्निस कार्यरत छला अजित अजाद। उत्पादनक लेल संपूर्ण आवश्यक तत्वक क्रय केर भार दऽ चुकल छला डॉ. सी.एम. झा, जिनका मिथिला निर्माता 'निमि' केर कोटिमे राखल जा सकैछ। जहिना निमि महराजपर इंद्रक कुचक्र प्रभावी भेल तहिना सी.एम.झाक मिथिला आवाजपर सेहो। मिथिला आवाजक प्रमुख पदाधिकारीगणमे 'अ' वर्ण प्रभावी छला-अजित, अरविन्द, अशोक, अमरनाथ, अमलेन्दु आ अमिताभ।

हमरा अरविन्द ठाकुरजीसँ पहिल भेंट गौतम होटलमे भेल से एकटा संपादकक रूपमे। अग्रज-पूर्वजक मिथिला-मैथिलीक आंदोलनकारीक सपना साकार भऽ रहल छल, अपन माटि-पानिक भाषामे रंगीन अखवार। ठाकुरजीक पहिल दर्शनमे तीनू गुण ओज, माधुर्य आ प्रसादसँ अवगत भेलहुँ। हुनक पैघ-पैघ आँखिमे ओज छल तँ वाणीमे माधुर्य आ साहित्यमे प्रसाद। हम हुनकासँ प्रश्न कएने रही—अपने अरविन्द ठाकुर?' ओ कहलनि हँ आ अपने?, हम-चंद्रमोहन झा पड़वा। अच्छा, अच्छा, आएल जाउ। अपनेक नामसँ परिचित छी।

ठाकुरजीक विहंगम दृष्टि देखबामे आएल। हम कंप्यूटरक की-बोर्डपर कहियो आँगुर तक नै देने रही आरो बात तँ दूर। तँइ हमर नियुक्ति आनुवादकक रूपमे भेल छल। ओना स्वयं डा.सी.एम.झा बादमे विचार करबाक भावना स्वयं तत्क्षण व्यक्त

केने रहथि। तहिया ठाकुरजीक दरभंगा आगमन नै भेल छलनि। हमरा कोनो स्थान नै भेटि रहल छल। सूपक भाँटा जकाँ गुरकैत रही। मुदा अजित आजादक 'दुत्कार' आ माँ जानकी जीक कृपासँ की-बोर्डपर दसो आँगुर काज करब शुरू कऽ देने छल। कंप्यूटरपर पेज बनब शुरू भऽ गेल छलै मुदा हमर काजक कोनो उपयोग नै। ठाकुरजीक कंप्यूटरक विशेषता छलनि, ओ केकरो कंप्यूटरपर कएल गेल विषय-वस्तुकेँ देखि सकैत छला। एक राति ओ भरल हाउसमे घोषणा केलनि-हमरा लोकनि पड़वा जीक उचित उपयोग नै कऽ रहल छी। ठाकुरजी हमरा स्वतंत्र कंप्यूटरपर स्थापित केलनि आ हम कुमार शैलेन्द्रजी जेनरल डेस्कसँ जोड़ल गेलहुँ।

अरविन्द ठाकुरजी गंभीरताक संगे हास्य विनोदक प्रेमी रहला। ओ केकरो काजसँ उबय नै देथि। जखन हुनका बुझबामे आबि जानि जे सहयोगीगण उबि गेल छथि तँ कोनो चुटुक्का की केकरोपर व्यंग कऽ हास्य रसक धार बहा देथि आ सभ हँसि कऽ अपन थकान दूर कऽ लैत छल। एक दिन हम एकटा पत्रिका 'श्यामा सन्देश' देलियनि। ओहिमे एकटा भगवती गीत छल-हे अम्बे हम अहिंक शरणमे आयल छी। ठाकुरजी कहल करथि-हे पड़वे हम अँहिंक शरणमे आयल छी, एहिठाम अहाँकेँ कोटि-कोटि प्रणाम।अरविन्द ठाकुरक मात्र धुए टा जमीन्दारक नै छलनि, अपितु हुनक क्रिया-कलाप सेहो जमीन्दारक स्वरूपकेँ देखार करैत रहल। एहन कोनो सप्ताह नै जाहिमे पैघ वा छोट पार्टीक आयोजन नै होइत रहल। जाहिमे सभ विभागक सहयोगी सहभागी होइत रहला। एक बेर कोनो कारणवश कर्मचारी लोकनिक वेतन काटल जेबाक विचार आएल। तकर कारण ठाकुरजीक उपर देल गेलनि। अरविन्द ठाकुर एहि बातपर सहमति नै देलनि। ओ अपन खातासँ बीस हजार टाका कर्मचारी लोकनिक वेतन लेल दऽ देलनि। अरविन्द ठाकुरजी अनुशासन प्रिय रहथि, स्वयं अनुशासित रहथि आ अपन अधीनस्थ सहयोगीकेँ तकर शिक्षा देबामे नै चुकथि। हुनका समयमे ओ कहावत चरितार्थ होइत छल—बाघ आ बकरी एक घाटपर पानि पिबैए। ओ व्यर्थक गलथोथीमे समय नै बर्बाद करथि मुदा हुनक वाग्पटुता कोनो विशेष अवसरपर सुनबा योग्य होइत छल। साम-दाम-दंड-भेदक प्रयोग समयानुकूल करबामे मिसियो भरि पाछू नै रहैत छला।मुदा कहल गेल छै—सीता जन्म वियोगे गेल, दुख छोड़ि सुख कहियो ने भेल। सीताकेँ मैथिली सेहो कहल गेल अछि तँइ हुनक भाषा मैथिलीक संग वएह स्थिति रहल। नान्हिटा रही तँ माए एकटा खिस्सा कहथि- 'आधा चान गढ़ि कऽ घर आएल, सातो भाँइ विदेश चलि गेल, आँजुरकेँ दुख दइये गेल। इएह स्थिति मिथिला आवाजक संग रहल।सत्य बात तँ कटु होइते छै। अरविन्द ठाकुर मैथिलीक

नामपर समझौता केलनि से निश्चय रूपें हुनक गलती साबित भेलनि। गौलौसीक अभियोगकेँ जनितहुँ, हम रही की नै रही 'आवाज' रहै तकर आकांक्षामे भीष्म पितामह बनल रहला। 'आवाज'केँ कैंसर रोग धऽ लेलक। प्राण ताधरि नहि छुटैत छैक जा धरि माया ग्रसित केने रहैत छै। जखन अपन लोकक मूँह टेढ़ होबऽ लगैत छै, हृदय आ ठोरक स्वरमे भिन्नता आबि जाइत छै तँ प्रतिष्ठाक रक्षार्थ प्रस्थान कऽ दैछ अपन धरा धामसँ। हमरा जनैत अरविन्द ठाकुरकेँ सेहो एहने मार्गसँ गुजरऽ पड़लनि आ अंततः कऽ लेलनि अंतिम प्रयाण।

सोझाँमे अरविन्द बाबू

भीमनाथ झा

तारिखक हिसाबें अरविन्द बाबू हमरासँ तीन दिनक जेठ छथि, इसवीमे बारह वर्ष आगाँ। लेखनोमे पाछाँ किन्हुँ ने! माने, पचपन वर्ष धरि कलम-घसन्तमे जे हमरासँ नहि भऽ सकल, से पचपन मिनटमे कऽकऽ देखा देलनि ई। गजल, जे हमर बोधसीमासँ बाहर रहल सभ दिन, अपन रचना-परिधिमे नहिएँ आबि सकल, तकरा ई चुटकी बजबैत बजा लेलनि। ई ओकरा पोल्हाकऽ-पुचकारिकऽ कागतक आसनपर बैसोलनि कि ओ हिनक नरेटिए धऽ लेलकनि! ''आब कतऽ भगबह बच्चू! हम तँ तोहर करेजमे पैसिकऽ बैसि गेलियह। आब चलह हमरा संगे 'बहुरुपिया प्रदेशमे!''

ताहिसँ पहिने, बहुत पहिने, टूटि रहल परतीपर कविताक जजाति लहलहाइत देखने रहियनि। एम्हर, तकरो कम दिन नहि भेलैक अछि, सात-आठ वर्ष अबस्से भेल होयतैक बढ़ैत, इजोत ले' लड़ैत, सेहो भेटल रहथि। ईहो क्षेत्र हमरा लेल सभ दिन अन्हारे रहि गेल। कवितामे गजल आ गद्यमे कथा जे लिखैत छथि, तनिका हम आँखि मुनिकऽ अपनासँ सेसर मानेत रहलियनि अछि। किएक?

पहिल कारण तँ ई जे जकरा छूबोक साहस हम नहि जुटा सकलहुँ, ताहिपर चढ़िकऽ अपन धूजा ओ लोकनि फहरा लेलनि।

दोसर कारण कथा लेल भिन्न अछि, गजल लेल भिन्न।

कथा जेँ कि गद्य शाखाक थिक, तेँ एहिमे सूत्र अथवा संकेत भाषा नहि चलत। पाठकक बुद्धि-सामर्थ्यपर अहाँ अपन कथन वा भावकेँ ने छोड़ि सकैत छी, ने गोड़ि सकैत छी। अहाँकेँ जे कहबाक अछि से कहऽ पड़त, ओकरा शब्द देबऽ पड़त। कथाक फलक बड़ छोट होइछ, गद्यमे ओकरा समटब, जरूरी किछुओ छूटय नहि आ बाइली किछुओ जुटय नहि, वेग कनेको कतहु कम ने होइक मुदा पानि

उछलैक नहि कतहु, मोकर कतहु फुटैक नहि, ठोकर एकदम तुकपर बजरैक—बाप रे! जे एकरा सधने छथि, असलमे साहित्यसाधक वैह थिका।

गजल जादू थिक। ओकर एक-एक चरण एक-एक करतब थिक, जे अहाँकेँ चकित करैत अछि, मोहित करैत अछि, अहाँक मुँहसँ वाह-वाह बाहर करा दैत अछि। गजलक प्रत्येक चरण फराक-फराक सूक्ति थिक, जे परस्पर सम्बद्ध रहितो सभक स्वतंत्र सत्ता छैक, जे अहाँक भावनाकेँ छुबैत अछि, करेंट मारैत अछि, झनझना दैत अछि आ आगाँ बढ़ि जाइत अछि। गजल द्रुतगामी होइछ। मैथिलीक प्रकृति शान्त अछि, भाषा मधुर अछि, असरि रसे-रसे करैत अछि। भीजैत अछि तँ निसाँ लगले उतरैत नहि अछि, बड़ी काल धरि बनल रहैत अछि। ई सभ गुण गीतमे छैक—मैथिली गीतमे। गीतक प्रभाव अंशतः क्रमशः बढ़ैत अछि आ संपन्न भेलापर समष्टि रूपेँ पड़ैत अछि।

कहि सकैत छी—गीत भाङ थिक, गजल मदिरा! जे लोकनि मदिरामे भाङक रमकी अनैत छथि, अनबाक प्रयास करैत छथि, हम तँ हुनका स्रष्टा मानैत छियनि।

अरविन्द ठाकुरसँ हमरा घनिष्ठता नहिएँ जकाँ। 'मिथिला आवाज' मे हुनक दरभंगा-प्रवाससँ पहिने एकदम नहि। मुदा हुनक पाठक हम पुरान। सुपौल ओहुना मैथिली साहित्यक एक प्रमुख केन्द्र। किसुनजीक बाद, केदार काननक चेतन भेलापर एक बेर फेर ओ जगजियार भऽ उठल। ओहिठामक गोष्ठी-समाचार, साहित्यिक हलचलक विवरण तथा रचनासभ तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे बराबरि अबैत छल। अरविन्द ठाकुरक नाम परिचित-आत्मीय होइत चल गेल। 1992-93मे तेहन एक साहित्यिक घटना (कहू दुर्घटना) घटलैक, जाहिसँ सुपौल कने बेसिए आलोड़ित भेल। सहरसा-सुपौल नेतृत्व अपन हाथमे लेलक आ जनजागरणमे जुटि पड़ल। विपक्ष छले नहि, तेँ अभियान लगले सफल भऽ गेल। अरविन्द बाबू अपन लेखनसँ आकृष्ट करऽ लगलाह।

कतहु कोनो समारोह-गोष्ठी मे सोझाँ सोझी भेलापर, नमस्कार-पाती भऽ गेल करय। हम सभदिना फटीचर, ई मुदा पूरा सीटल-साटल, भव्य व्यक्तित्वक, गम्भीर, मितभाषी—तेँ कदाच जँ गपशप करबाक उत्कंठा जगलो होयत तँ आगाँ बढ़बाक हिआओ नहि भेल।

1993 मे एके समयमे, तीन प्रतिष्ठित युवा कविक पहिल कविता-संग्रह अयलनि—केदार काननक 'आकार लैत शब्द', नारायणजीक 'हम घुरि रहल छी'

एवं अरविन्द ठाकुरक 'परती टूटि रहल अछि'। तीनू एक आकार-प्रकारक, एक तेवरक, एक शिल्प-शैलीक। भरिसक एके ठामसँ छपलो। हमरा तीनू संगहि भेटल। तीनू पोथीक नामपर छोट-सन एक कविता फुरल। ओहिना, कोनो गम्भीर प्रतिक्रिया नहि, 'हँसी-हँसीमे' बुझबाक थिक। लिखिकऽ राखि देलिऐक। 'नाम तँ थिक वैह' छपयबा काल, की फुरल की ने, ओहो कविता उपान्तमे दऽ देलिऐक। तीनू कविमे केवल नारायणजीक प्रतिक्रिया आयल। कहलनि जे 'लोक कहैए जे आलोचनामे लिखने छथि, मुदा हमरा तँ से नहि लागल।' हम एतबे कहलियनि—'सैह कहू तँ!' पछाति, मनमे भेल—केदारजी जानिबूझिकऽ किछु नहि कहलनि। अरविन्दजी नोटिशे नहि लेने होयताह।

ओ कविता फेरसँ एतऽ, कहि ने किए, देबाक मन होइए—

सैह नीक

'आकार लैत शब्द' जँ हुराड़ बनि जाय
'परती टूटि रहल अछि'
किएक तँ ओहिपर कतराक झाड़ उपजत
'हम घर घुरि रहल छी'—ई सुनिते
जँ हो जे कपार फोड़ऽ पहुँचल
हुहुआइत-गुड़ुआइत
अरे ब्बा! के?
—समाङे छी हे!
—तँ शुभे-शुभे!
बाढ़िकेँ बान्हसँ कते काल बान्हब
बहऽ दिऐ!
बहि जाय दिऐ एकरा
अपने टहलि जाइ ताबे!

अरविन्द ठाकुर जतबे कथा लिखलनि, बड़ साफ-सुथरा लिखलनि। किए ने हिनक कथाक व्यापक चर्च भेलनि, किए ने आलोचक लोकनि अपेक्षित गम्भीरतासँ लैत गेलथिन, तकर हेतु बुझबामे अबैत नहि अछि। हमरा जतबा बुझबाक अवगति अछि, ताहि हिसाबेँ कथा-लेखनमे हिनक क्षमता, दृष्टि, गति,

अवगति आन विधासँ अधिक प्रखर-मुखर, सधल कसल, बढ़ल-चढ़ल छनि। विषय-चयनक दृष्टिएँ, बनावटि-कसावटिक दृष्टिएँ, भाषा-प्रवाहक दृष्टिएँ, चरित्र-निर्माण आ ओकर उपस्थापन-निर्वाह-निष्पत्तिक दृष्टिएँ हिनक कथा समकालीनताक मानदण्डकेँ पूरा करैत छनि—चारू खूट दुरुस्त छनि। व्यंग्य ओकरा आर धारदार बनबैत छैक। संग्रहक दसो कथा वास्तवमे 'अन्हारक विरोधमे' ठाढ़ छनि। खिस्सा सियार-यार, मूस तथा अथ गिरगिट गाथा तँ हमरा विशेष रूपेँ चमत्कृत कयलक। खेद अछि जे एहि विधा केँ ई एम्हर गौण मानि लेलनि अछि।

मुख्य रूपसँ गजलपर लट्टू भऽ गेलाह अछि। शराबक निसाँ कते दूर धरि लगा सकलाह अछि, से तँ ओकर रसिके कहताह। हम तँ भाङो नहि पिबैत छी, तेँ ओहू निसाँ दऽ नहि कहि सकैत छी। हँ, वर्तमानक वास्तविकताक रमकी अवश्य कतहु-कतहु मनकेँ झुमा देलक अछि। कतोक अंश तँ हृदयक पौतीमे बन्द भऽ गेल अछि, यथा—

कहलनि तँ किछु ने मुदा हमरा उघारि गेला।
...
जहियासँ उपकरण बनबासँ बाज अयलौँ
तहिएसँ 'अरविन' ओ हमरा धिक्कारि गेला।
...
दाउन बेर धानक तँ मारिते महाजन छल
एक्कहुटा जऽन नहि नार उठेबाक बर
...
माटि भेटलै, पानि भेटलै, रौद भेटलै
तखन जाकऽ बीज कोनो ठाम पनुकल।
...
किछु नहि चाही, पेट भरल अछि
रोटी मङलहुँ, थप्पड़ खयलहुँ।
...
निज नजरिमे अरविनक ई गोर मुँह करिया बनल।
...
जे हमर ठोँठ धरत, तकरे भगवान कहब।
...

तिमिरक तानल घोघ देखिकऽ
सूरूज केर मुँह करिया भेल।
...
लोके लग सुदिभरना लोक
लोक चूल्हि आ जरना लोक।

वास्तवमे समाजक छोटसँ छोट एकाइ, एते धरि जे एकसर मनुक्ख सेहो, बहुरुपिया भऽ गेल अछि। कवि ताही प्रदेशसँ टहला अनलनि अछि। देशाटन मनोकेँ रमबैत अछि, शिक्षितो करबैत अछि। —एहि अंत:यात्रासँ हमरा दुनू लाभ भेटल अछि।

अरविन्दजीकेँ लगसँ देखबा-बुझबाक अवसर भेटल हिनक दरभंगा-प्रवासक समयमे, जखन ई दैनिक 'मिथिला आवाज'मे सम्पादक बनिक एतऽ अयलाह। दैनिक अखबारक प्रकाशन-समाचारसँ दरभंगाक प्रबुद्ध समाज आह्लादित छल। सम्पादक-रूपमे हिनक नाम उजागर भेलापर बहुत थोड़ लोकक मुँहपर आश्वस्तिक भाव बुझयलैक। दैनिक पत्र-संपादनक अनुभव राखऽवलाक अपेक्षा छलैक लोककेँ।

ई अयलाह आ अपन काजमे रमि गेलाह। से तेना रमलाह जे आन सभ कथूक सुधिए बिसरि गेलनि। जतबा दिन दरभंगामे रहलाह, कोनो सार्वजनिक सभा-गोष्ठी सँ परहेज करैत रहलाह। व्यक्तिगतो स्तरपर किनको ओतऽ ई देखल नहि गेलाह, कमसँ कम हमरा तँ नहि भेटलाह। 'मिथिला आवाज' कार्यालयमे जे क्यो पहुँचलाह, हिनकासँ बहुत आदर-सम्मान पबैत रहलाह, पत्रक विकास लेल सुझाव मङैत रहलाह। अनुखन व्यस्त रहलाह, तटस्थ रहलाह। हड़ाहीमे पानि घोँकल रहौक कि उड़ाहल रहौक, कातेकात देवालय रहौक कि विद्यालय रहौक कि शौचालय रहौक, हिलकोर लम्बा उठौक कि मन्द तरंग कलकल करौक, पछबा लपटौक कि पुरबा बहौक—हिनका लेखेँ धनसन!

अरविन्द ठाकुर अपन कविकेँ सुपौलेमे छोड़ने अयलाह, कथाकारकेँ गोटी खुआकऽ सुता देलथिन, सामाजिकताकेँ आवाज-परिवारे धरि समटि लेलनि, मुँह सीबि लेलनि, दरभंगाक आवाज, मिथिला-मैथिलीक आवाज, देश-विदेशक आवाज हिनक कंप्यूटरसँ होइत पत्रक सम्पादकीय कालममे बाजऽ लागल, से जोरसँ बाजऽ लागल, साफ-साफ बाजऽ लागल, दू टूक बाजऽ लागल। जतबा दिन पत्र चलल, ताहिमे जहिया धरि ई रहलाह, सम्पादकीय स्वयं लिखथि—से हमरा

बुझल भेल। पत्र ओतबे दिन किए चलल, ई बिच्चेमे किए चल गेलाह—ई विषय अवान्तर थिक। एतबा अवश्य जे मैथिल समाजक दुर्भाग्य थिक। हिनक सम्पादकीय समयक आइना थिकनि। ओहि शीशा केँ ई तत्कालीन बुलेटप्रूफ बना देथु, माने पोथी-रूपमे आनि स्थायी कऽ देथु, से हमर इच्छा अछि, अपेक्षा अछि।

जहिया ई त्यागपत्र दऽ देलनि, तकर प्रात, दरभंगा छोड़बासँ पहिने, डेरापर अयबाक कृपा कयलनि आ करीब घंटा-डेढ़ घंटा बैसलाह। सम्पादकक मुखड़ा मिथिला आवाजक कुर्सिएपर छोड़ि आयल रहथि। कवि-साहित्यकार अरविन्द बाबू सोझाँमे बैसल छलाह। एहन सहृदय अनुजकेँ पाबि हम धन्य भऽ रहल छलहुँ।

आत्मकथ्य

बुल्लियाँ की जाणां मैं कौन
(अपनाकें खोजैत किछु अप्पन बात)

एकबेर एकटा जिज्ञासु एकटा दार्शनिकसँ चारिटा प्रश्न पुछलक। एहि संसारमे सभसँ नमहर के अछि? उत्तर भेटल—आकाश। संसारमे सभसँ हल्लुक काज की अछि? उत्तर भेटल—बिन मांगल सलाह देब। दुनियाँमे सभसँ कठिन काज की अछि? उत्तर भेटल—स्वयंकें चिन्हब। आ अन्तिम प्रश्न छल—दुनियाँमे सभसँ गतिशील की अछि? उत्तर भेटल—विचार। अखनि हमरा आगू-पाछू जीवनक आकाशक नमहर पसार पसरल अछि आ स्वयंकें चिन्हबाक सभसँ कठिन काजक लेल स्वयंहिकें बिन मांगल सलाह दैत सभसँ गतिशील विचारक शरणमे छी। अखनि जिज्ञासु हमहि छी आ दार्शनिकक भूमिकाक निर्वाह सेहो हमरहि करबाक अछि। जिज्ञासु लग विचारल प्रश्न रहए आ दार्शनिक त प्रत्येक क्षण मनन-चिन्तनमे रहैत जीवन आ प्रकृतिक अन्वेषण-अनुसंधानहि करैत रहैत अछि। हमरा लग ने ई दुनू स्थिति अछि आ ने सुविधा। एकहिटा रस्ता अछि जे अपन जीवनक पछिलका किछु अध्यायसभकें उनटाबी आ देखी जे ओहिसँ किछु बहराएत अछि कि नहि!

आठ वर्ष तक सुपौल जिला रेड क्रॉस सोसायटीक मानद सचिवक रूप मे एकर विधिवत स्थापना आ लोकोपकारक अनेक रास काज कएलाक बाद जेना एकरसतासँ उबिया गेल रही। हमर मान्यता रहल अछि जे एकरसता जीवनक धर्म नहि अछि आ तें हम एहि पदक जिम्मेदारीसँ मुक्त हुअए चाहैत रही किन्तु कोनो जिलाधिकारी (जिला रेड क्रॉस सोसायटीक पदेन अध्यक्ष) हमरा छोड़ए नहि चाहैत छला। हमरा होइत रहए जे एहि पद पर रहि हम अपन हिस्साक काज कए चुकल छी आ आब हमरा अपन साहित्यिक काज दिस बेसी समर्पणक संग लागैक चाही। अन्ततः हमरा एकटा अवसर भेटल। अकस्मात डॉ. एन. सरवण कुमार, भाप्रसेक स्थानान्तरणक आदेश आबि गेल रहए आ हम झट द अपन त्यागपत्र लिखि हुनका

हाथमे थमा देने रहियनि आ हुनका ठामपर पदस्थापित भेल जिलाधिकारी कुमार रवि पर दबाव बनाए रेड क्रॉस, सुपौलक नव कमिटीक चयन हेतु चुनावक आयोजन सुनिश्चित करबाए लेने रही। एकटा सम्मानित पदसँ स्वेच्छापुर्वक एना भागब बहुतो गोटेकें अजगुत जकाँ लागल छलनि। हमर अनुजतुल्य आ रेड क्रॉसमे हमर संयुक्त सचिव रहल मिथिलेश दत्त तहिया लोकक जिज्ञासाक उत्तर दैत कहने रहथिन — ''भैया वैरागी लोक छथि। कोनो पद-सम्मानकें पकड़िकए अपन चांगुरमे राखब हुनकर फितरतमे नहि छनि।'' एहिसँ कुछेक वर्ष पहिने तत्कालीन जिलाधिकारी संजीव हंस द्वारा हमरा मादे जिज्ञासाक उत्तरमे एकटा एडवोकेट मित्र बच्चन जी हुनका कहने रहथिन— ''अरविन्द ठाकुर क्षमतावान लोक छथि, सर्वगुणसम्पन्न छथि किन्तु मिजाजमे कनेक टेढी छनि, घमण्डी लोक छथि।'' एहिना मन पड़ैए जे एकबेर हमर एक राजनीतिक प्रतिद्वन्दी खिसिआकए हमरा पर टिप्पणी कएने छला— ''ई अरबिन ठाकुर अपनाकें बड्ड काबिल बुझए छथिन। ओ केकरो पोस माननिहार नहि छथि आ तें परम अविश्वसनीय छथि।'' बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनसँ सोलह वर्ष तक जुड़ल रहलाक बाद हमरा लागल जे एतय हमर योग्यता-क्षमताक सही-सही उपयोग नहि भए पाबि रहल अछि आ हम जतेक पात्रता राखए छी तेकर प्रतिदान हमरा नहि भेटि रहल अछि। एहि संगठनक सर्वेसर्वा परसन कुमार सिंह(जे बादमे एहि संगठनक अखिल भारतीय महासचिव सेहो भेला) हमर बहुत घनिष्ट छला किन्तु हम अपन पक्षक प्रदर्शन लेल हुनक विरोधमे झण्डा उठाए लेने रही। परसन जी ओहि चुनावमे विजयी भेला त हम हुनका बधाइ देबए लेल मंचपर गेलहुँ। ओहि विजयोल्लासक वातावरणहुमे हमर बधाइ स्वीकार करैत परसन जीक आँखि नोराए गेलनि आ ओ बाजल छला—' हम त संगठनक राजनीति करै छी आ हमरा संख्याबलक ध्यान राखए पड़ैत अछि तें हम अहाँक योग्यता संग न्याय नहि कए सकलहुँ। किन्तु इहो तथ्य अपन ठामपर अछि जे ई जगह (व्यावसायिक संगठन) अहाँसन बौद्धिक लोकक लायक नहि अछि।' सामाजिक सक्रियताक क्रममे कोनो चुनौती भेटितहि हम जिम्मेवारी सम्हारि लैत रही आ एहि क्रममे अनेक संगठनक हम संस्थापना कएल आ ओकर संचालन सेहो खूब सफलतापूर्वक कएलहुँ किन्तु ई सभ हमरा आत्मिक संतुष्टि नहि दए सकल। लागए जे एतय ठमकल जकाँ छी, बेसी पसारक कोनो गुंजाइश नहि। डॉ. नवीन कुमार दास कखनिओकए कहथि जे हम एहिसभ लेल नहि बनल छी। जखनिकि ठीक एकर विपरीत एकबेर सुपौलक विधायक(वर्तमानमे बिहार सरकारक मंत्री) वीजेन्द्र प्रसाद यादवक हमरापर ई

मन्तव्य अएलनि जे हमरासन लोक राजनीति लेल एसेट/पूँजी होइत अछि। हमर पत्नीक त उठौनापर ई नियमित आ शाश्वत टिप्पणी होइत रहै छनि — ''हमर भायसभ केना नौकरी करै छै आ अपन परिवार कें केना सुखसँ राखए छै, से अहाँ बुत्ते कहिओ भेल! कीदन-कहांदन करैत रहलौं अहाँ...अहाँसँ हमरा कहिओ सुख नहि भेल!!!'' ओ की चाहए छथि आ हुनक सुखक की परिभाषा छै, से आइ धरि हम नहि बुझि सकलहुँ। हँ, एतेक बुझएमे आबै ए जे ओ प्रकारान्तरसँ हमर कमौआ आ पत्नीभक्त नहि हएबाक ओलहन दए रहल होइत छथि। विषयान्तर नहि हएत जँ ई चर्चा करैत चली जे ओ सभसँ बेसी प्रसन्न आ गौरवान्वित रहलीह ओहि दस मासमे, जखनि हम ''मिथिला आवाज''क सम्पादक पदपर काज करए लेल दरभंगामे रही आ हमर पारिश्रमिकक राशि व्यय करएमे ओ स्वच्छन्द छली। हमर मा आ बाबुजी (माता-पिता) हमर युवावस्थाक कुछेक कुटैब आ अल्हड़पनाक जानकार होइतहु सभदिन हमरा प्रति आश्वस्त रहलथि आ हुनका दुनूगोटेक नजरिमे हम सपूत छलहुँ। हमर तीनू पुत्र हमरा प्रति अत्यन्त आदर आ भक्तिक भाव राखए छथि आ हिनकासभक दिससँ कहिओ कोनो नकारात्मक टिप्पणीक जानकारी हमरा नहि अछि। हमर एकटा वरिष्ठ मित्र सुखाय साहु किताबी शिक्षासँ त दूर छथि किन्तु दुनियाबी अनुभव आ ज्ञानसँ खूब भरल-पूरल आ समृद्ध छथि। हुनकासँ हमरा अपन लेखन लेल मारितेरास अमुल्य खोराकसभ भेटल अछि। बेसीकाल ओ हमर विचार आ किरदानीक छिलके उतारएमे लागल रहै छथि किन्तु जखनि हुनकर भाओ जागए छनि त ओ कहता—''हओ अरबिन बाबू, तोरा सन राजा कोय नै। जे करबहक से अपन मर्जी आ मूड सए। कहियो केकरो पाछू जाइत, केकरो नकल करैत आकि धन-परतिष्ठापर भागैत तोरा नै देखलियह। तू वैह करबह जे तोरा रुचतह, चाहे बहिन्चो... ई दुनिया एन्ने सए ओन्ने किए नै चलि जाय।'' एकदिन एकटा पुत्रवत युवा रणधीर बाजल छल —''काल्हि अपन मीटींगमे तोहर चर्चा करलियह, चचा। ओतए सभगोटे मुंहदेखौंसी गप करैत रहै। हमरा तामस उठल आ हम कहलिअए जे एहि गोल-गोल गपसभसँ पार्टी संगठनक कल्याण नै हेतै। फेर तोहर उदाहरण दैत कहलिअए जे हुनके सन ठाहिं-पठाहिं आ राफ-साफ बाजनिहारक बेगरता छै जे स्पष्टरूपसँ रोगक जड़िकें देखार करए आ तखनिए ओकर उपचार सम्भव छै। तैपर जे ताली पड़लह से की कहियह।'' एकर ठीक विपरीत, हमर बुढिया भौजीसभक उपराग रहैत रहनि— '' एह! एहन मौनी बाबा नै देखलौं। मुंहमे बोल नै आ हाथ-गोरक खचरपनीक सीमा नै। गओ माय!''

मैथिली लेखक संघक छठम स्थापना दिवस(12 जुलाइ,2013,पटना) के अवसरपर ललितक लेखनदृष्टिपर धाराप्रवाह 65(पैंसठ) मिनट, जवाहर नवोदय विद्यालय, सुपौलक छात्रसभक बीच रचनात्मक लेखनपर 75(पचहत्तर) मिनट आ राष्ट्रीय नाट्य अकादमीक प्रशिक्षण कार्यशालाक समापन समारोहमे 90(नब्बे) मिनटक हमर अभिभाषणक चर्चा विभिन्न महफिलसभमे होइत रहल अछि। आनहु अवसरपर हमर दीर्घ, मध्यम वा लघु आकारक भाषण बहुत पसन्द कएल जाइत रहल अछि। जखनिकि पत्नी कहैत रहए छथिन— ''अहाँ लग मुँह भुकाबएसँ कोनो फैदा नहि। कुच्छो आ केतबो पुछैत जाउ, अहाँ कुछ बाजबे नै करबै!'' मैथिलीक योद्धा-युवा रचनाकार कुमार शैलेन्द्र कहैत छला— '' अहाँ सन सनेही लोकसँ हमरा आइ धरि जीवन मे भेंट नहि भेल छल। निरन्तर कलुषतासँ दहाबोर होइत एहि विकाल-काल मे अपन हृदयमे प्रेमक एतेक अथाह सागर अटाए कए अहाँ कोना राखने छी, सर!'' लगातार तीन वर्ष तक 'लोक प्रसंग'(हिन्दी मासिक पत्रिका) मे हम 'ठाकुर का ठाँव' कालम लिखने रही जे बहुत लोकप्रिय भेल छल। ओ पत्रिका आइओ बहराइत अछि आ ओकर सम्पादक आइओ आग्रह करै छथि जे हम ओहि कालम कें फेरसँ कन्टीन्यू करी किन्तु समयाभावमे हम चाहिओकए हुनकासभक आग्रहक मान नहि राखि पाबि रहल छी। ओहि कालमक एकटा नियमित पाठक एक बेर दूरभाषपर कहलनि जे हम ओहि कालममे नकारात्मक दृष्टिकोण राखए छी आ हमर शब्दसभ घृणाक प्रचार करैत अछि। हमर साहित्यिक लेखनकें विक्षोभ, असन्तोष आ आक्रोशक साहित्य कहनिहारलोकनिक कमी सेहो मैथिली साहित्य-जगतमे कम नहि अछि।

तें जखनि हम अपना प्रति लोकसभक टिप्पणी आ नजरियाक ध्यान राखैत स्वयं अपनहिसँ अपन आत्मावलोकन, आत्मनिरीक्षण करै छी त सन्त बुल्लेशाहक ई शब्द बेर-बेर उभरिकए हमर चेतनासँ टकराबैत अछि —''बुल्लियाँ, की जाणां मैं कौन?'' बुल्लेशाह त प्राय: अपना-आपकें चिन्ह गेल छला, हम अपना-आपकें चिन्हि सकलहुँ कि नहि, चिन्हि सकब कि नहि, कहब कठिन अछि। अलबत्ता हम एहि प्रश्नक उत्तर लेल निरन्तर अपनासँ जवाबतलबी करैत रहब, ताहिमे हमरा कोनो संशय नहि अछि।

हमर ई मानब अछि जे साहित्यकार सृष्टि-संरचना आ जन-जीवनक गंभीर पर्यवेक्षक त होइते अछि, ओकरा अपनहु अन्तसमे बेर-बेर हुलकी मारि अपन थाह सेहो लैत रहबाक चाही। एहिसँ ओकरा अपन मुल्यांकन करएमे सहुलियत होइ छै आ ओ बेसी सन्तुलन साधि पबैत अछि, आत्मानुशासनक तमीज जागए छै, से

अलग। स्वयंकें अन्डरस्टीमेट करब जं ओकरा अपना लेल घातक छै त ओवरस्टीमेट करब ओकर लेखन आ पाठक-समाज लेल घातक छै आ आत्मानुशासन नहि रहने त सभटा खेले चौपट। जे अपनाकें सही-सही नहि तौललक से अपन लेखन वा आन कोनो सामाजिक गतिविधि लेल इमानदार नहि रहि पबैत अछि। तें हम समाजक विभिन्न क्षेत्र आ ओकर क्रियाकलापकें जं अपन पर्यवेक्षणक दायरामे राखए छी त स्वयं अपनहु कें एहिसं नहि बकसए छी। ई आत्मावलोकनक प्रक्रिया आ ओकर फलाफल ततेक जटिल छै जे कएक बेर हम एहिमे ओझराए जाइ छी, कखनिओ स्पष्ट इजोत देखाइत अछि आ कखनिओकए एहि ओझरीक बीचसँ कोनो महीन सन एकपेरिआ डगर सेहो देखाइ पड़ैत अछि।

जँ भारतीय पंचांग केँ मानी त हमर जन्म फागुनक दुआर चढि ओकर दरबज्जा खटखटाबैत माघक पुर्णिमा केँ भेल जाहि दिन देशभरिमे संत रविदासक जयन्ती आ उड़ीसा मे अग्नि उत्सव मनाएल जाइत अछि। ओहिदिन स्नान-दान-व्रतक महिमा सेहो मानल गेल अछि। अंगरेजी कैलेन्डरक अनुसार हमर जन्मतिथि 14(चौदह) फरवरी केँ पड़ैत अछि जहिया विश्वभरिमे प्रेमक मसीहा मानल जाइत संत वेलेन्टाइनकेँ स्मरण करैत वेलेन्टाइन-डे मनाएल जाइत अछि आ इएह ओ तिथि अछि जहिआ स्वामी दयानंद सरस्वतीक जयन्ती सेहो पड़ैत अछि। तेँ प्राय: संत रविदासक फकीरी मौज, स्वामी दयानंद सरस्वतीक मूर्तिपूजा आ कर्मकाण्डक प्रति विरोधी तेवर आ संत वेलेन्टाइनक प्रेममयता हमर मन-मिजाजमे रचल-बसल अछि। स्नानक शुचिता, दानक पवित्र उदारता आ कोनो काजकेँ व्रत जकाँ मानि ओकरा मिशन बनाए लेब हमरा सोहाइत अछि।

जाति भारतीय समाज-संरचनाक एकटा अप्रिय किन्तु अपरिहार्य(अखनि तक) वास्तविकता अछि आ ताहि तल पर हम ब्राह्मण छी—भुमिहार ब्राह्मण-कर्णाटवंशी। पुर्वजसभ कोनो जमानामे मैसूरसँ आएल रहथि, तेँ मूल अछि-मैसूरिया, गोत्र—पराशर आ गोत्र प्रवर छथि—वशिष्ठ,शक्ति आ पराशर। नवका सर्वेसँ पहिनुका पुरनका खतियान देखए छी त ओहिमे एक-एक खतियानमे सैकड़ाक- सैकड़ा बीघा जमीन पुर्वजसभक नामपर देखाइत अछि। बटाइत-बटाइत हमर हिस्सा कट्ठापर चलि अबितए जँ पिताजीक कीनल-अरजल कुछ बीघा नहि रहितए। खेतिहर कहाएब गौरवक गप बुझाइ ए। ई अलग बात जे समयान्तरसँ ''उत्तम खेती'' आब निषिद्धक कोटिमे आबि गेल अछि। किन्तु रौदी-दाहीसँ अप्रभावित रहि श्रमक मान राखैत दाताक पवित्र-भावसँ अन्न उपजाबैत रहबाक जनहितैषी किसानी संस्कार हमर रग-रगमे,

गत्र-गत्रमे घाम जकाँ बसल अछि, देहक धमनी आ मनक गह्वरमे खून आ विचार जकाँ दौगैत अछि। केकरो कुछ दएमे सुख आ आत्मिक संतोष भेटैत अछि। से अपन जीवनक प्रत्येक गतिविधिक प्राय: हर क्षेत्रमे हम अपन एहि प्रवृतिकेँ सदैव उत्साहित कएल अछि आ विपरीतहु परिणाम अएलापर तेकर कोनो अफसोच कहिओ नहि भेल। केकरोसँ कुछ लएमे सदैव संकोच भेल अछि आ एहि संकोचकेँ हम जिदियाह इनकार तक पहुँचाएल अछि। हमरा ओतबे चाही जेकर आ जतेक हम पात्रता राखए छी। से नही भेटए ए त दुख होइए, से सकारैओमे हमरा कोनो संकोच नहि अछि।

बेदरेसँ दुआरिपर विभिन्न क्षेत्रक विशिष्ट व्यक्तित्वसभक आगमनक साक्षी रहल छी आ अपन मानस आ व्यक्तित्व निर्माणमे हम ओहि व्यक्तित्वसभक योगदान मानए छी। ललित नारायण मिश्रसँ फणीश्वरनाथ 'रेणु' आ रामधारी सिंह 'दिनकर'सँ ललितेश्वर प्रसाद शाही सन विलक्षण अतिथिसभक अपनत्वमय उपस्थिति आ हुनकासभक स्वागतमे माला पहिराबए लेल बड़की दीदीक संग 'पहिने हम त पहिने हम'बला नोंक-झोंक कल्हुका घटना जकाँ स्मृतिपटलपर अंकित अछि। हुनकासभसँ प्राप्त प्रेम आ स्नेह पकठोस भेल एहि वयसहुमे हमरा ललायित करैत अछि आ हमर अमुल्य धन जकाँ अछि। एहि विभिन्न क्षेत्रक व्यक्तित्वसभक परस्पर विरोधाभासी वैविध्य आ समन्वय दुनू हमर व्यक्तित्वमे साफ-साफ देखल जाए सकैत अछि। हिनकासभक व्यक्तित्वक तेजोमय आभाक प्रभावसँ जे औत्सुक्य आ जिज्ञासाक प्रादुर्भाव हमरामे भेल से निरंतर अपन चरम दिस अग्रसर रहल अछि। हमर ई जिज्ञासा ता तक हमरा चैनसँ नहि बैसए दैत अछि जा तक कि हम कोनो 'किए'क 'किए'क आखरी 'किए' नहि जानि लए छी। दोसर दिस ई हाल रहैत अछि जे जेकरा जानए-बुझएक जरुरत वा जिज्ञासा नहि बुझाबए त ओ आनक लेल केतबो महत्त्वपूर्ण हुअए, हम ओकरा दिस हुलकी तक नहि दए छी।

पढनाइ हमरा लेल सांस लेनाइ जकाँ अछि। लेखनक विविध विधाक पोथीसभ धुरझार पढए छी आ विभिन्न पोथीसभक पथार हमर स्टडी-रूममे अलमारीसँ टेबुल आ रैकसँ चौकी तक देखल जाए सकैत अछि। स्वाद-परिवर्तन लेल धार्मिक पोथीसभ त पढिते छी, सिनेमा आदि आन-आन कोनो विधाक कोनो पोथी-पत्रिका सेहो बिना कोनो पुर्वाग्रहक ओतबे रुचिसँ पढए छी जेतेक रुचिसँ साहित्यक कोनो विधाक कोनो पोथी-पत्रिका। माथाकेँ विश्राम देबाक लेल पढनाइ बंद नहि करए छी, विषय बदलि दए छी। जीवनक शुरुआती दौरमे आचार्य चतुरसेन, कृश्न चन्दर, बच्चन, शरतचन्द्र, बंकिमचन्द्र, टैगोर आदिकेँ हिन्द पाकेट बुक्सक माध्यमसँ पढ़लहुँ-चिन्हलहुँ

त दोसर दिस गुलशन नंदा, प्रेम वाजपेयी, प्यारेलाल आवारा आ कुशवाहा कान्त आदि सेहो हमर पढबाक परिधिसँ नहि छिटकि सकला। जासूसी आ थ्रिलर सेहो हमर पाठान्तर्गत रहल आ ताहि क्रममे ओमप्रकाश शर्मासँ शुरु सूची कर्नल रंजीत, वेदप्रकाश काम्बोज, इब्ने शफी बीए, एस एन कंवल आदि तक गेल।बादमे एहि सूचीमे सुरेन्द्र मोहन पाठक, चन्दर आ राजहंस सन-सन नाम जुड़ल आ अनुवादक माध्यमसँ जेम्स हेडली चेज आ डान पेन्डलटोन(जैक द बास्टर्ड बोलन सीरिज) आदि सेहो। तेकर बाद स्वाद परिवर्तन लेल सीधे मूल अंगरेजी दिस गेलापर मामला अगाथा क्रिस्टी, चार्ल्स डिकेन्स, इ एम फोस्टर सँ होइत हेराल्ड राबिन्स, इर्विंग वैलेस, सिडनी सेल्डन, राबिन कुक, खुशवन्त सिंह, आर के नारायण, मनोहर मालगोंकार, डिक फ्रांसिस, जेफरी आर्चर, डी एच लारेन्स, विल्बर स्मिथ, आर्थर हेली, डान ब्राउन, राब कीन, एलिस्टेयर मैक्लीन आ मारियाना कोल सन-सन नाम आ चेतन भगत तक पहुँचल अछि। हिन्दीक कोनो विधाक कोनो साहित्यकार एहन नहि छथि जिनकर कोनो ने कोनो पोथी वा अंश हमर पढनाइक बतहपनीसँ वंचित रहि गेल हुअए। सुपौलक पब्लिक लाइब्रेरीक ध्वंस होइसँ पहिने अंगरेजीक अनेक अमुल्य पोथी पढैक सौभाग्य भेटल जाहिमे एडगर राइस बरोक टारजन सीरिजक दुर्लभ पोथी सेहो छल।

कृषि, समाज-सेवा आ साहित्यक त्रिमुर्ति-संस्कार हमरा अपन पितासँ भेटल अछि। हमर पितासँ उपरका अर्थात बाबा, परबाबा बला पीढी शुद्धरूपसँ खेतिहर छल। हमर सम्पुर्ण गोतिया-दायादीमे खेतीएक प्राधान्य, पढब-लिखब प्राथमिकतामे नहि। विशाल आकारक दायादीमे हमर पिता एकटा विलक्षण व्यक्तित्वक रूपमे उदित भेला आ अनेक विघ्न-बाधाकेँ पार करैत अटूट लगन आ साहसक संग शिक्षा प्राप्त कए साहित्य, पत्रकारिता आ समाजसेवाक क्षेत्रमे अपन पएर दए एकटा अलग डगर बनएलनि—शायर, सिंह आ सपूत जकाँ। स्वतंत्रता संग्राममे पड़ि अपन राष्ट्रीय जिम्मेवारीक निर्वहन सेहो कएलनि। जीवनक विभिन्न गतिविधिमे अपन योगदान देबाक क्रमहुमे ओ सभदिन खेती-किसानीक प्रति अपन जातीय-पारिवारिक परम्परागत संस्कारकेँ अंगेजने रहला। सैकड़ाक सैकड़ा जन-मजूर आ अनगिनत बोझाक बोझा धान, गहुम, मकै, मूंगक टाल हम अपन खरिहानमे देखने छी। दू दर्जनसँ बेसी बड़द, महींस आ गाय अपन गोहालमे देखने छी। खेती-किसानीक प्रति हुनक समर्पण आ दीवानगी बिहार सरकारकेँ हुनका 'कृषि-पंडित' के उपाधि-सम्मान देबाक लेल वाध्य कए देने छलनि। कृषि विभागक पदाधिकारी लोकनि हमर दुआर आ खेतकेँ

धंगने रहैत छला। हमर खेतक धत्तापर तत्कालीन कतेको मंत्री, सांसद आ विधायकलोकनि खेतीक सौंदर्य-संस्कृतिसँ मुग्ध आ आनन्दित हएबाक लेल आबैत रहैत छला। सुतरीक सीधमे होइत रोपनी आ पिताजीक उत्साहवर्द्धन (मुट्ठाक मुट्ठा बीड़ी एहिमे उत्प्रेरकक काज करैत छल) सँ बहराएल बोनिहारिनसभक समवेत गानक आनन्ददायक अनुभूतिक स्मृतिसभ हमरा लग अछि। हरित-भरित खेतसभक बीच बनल दू कोठरीक फार्महाउस आ ओतय लागल बाबूजीक लम्ब्रेटा मोटरसाइकिल हमर स्मृतिक आँखिमे सजीव आ स्थायी चित्र जकाँ अखनिओ उपस्थित अछि। अनेक बेर काँग्रेस कमिटीक बैठक तक ओहि धत्ता पर भेल। हाँड़ीमे बनल चाह पीबैत आ मकैक भुट्टा खाइत पार्टी आ चुनावक गपबला अभिनव बैठक। ई सभटा पैतृक संस्कार हमर जीनमे अवतरित भेल अछि। एकतरहें हम डेनियल बेब्स्टरक ओहि प्रसिद्ध उक्तिक सत्यता-शास्वतताक साक्षात प्रमाण छी जाहिमे ओ कहने छला जे जखनि खेती होइत अछि, तखनिए आन-आन कलासभ पुनकैत अछि आ तें खेतिहरहि लोकनि मानव-सभ्यताक निर्माता छथि। बाबूजीक असीम सामर्थ्य आ पुरुषार्थक शतांशहु हमरामे नहि अछि आ ने ओहिसभक लेल सकारात्मक समय-समाजहि रहि गेल किन्तु हम ओहिसभक आभासीए प्रतिरूप सही, छी। समाज-सेवा हमरा आनन्द दैए, साहित्य त ब्रह्मानन्द-सहोदरहि अछि, किन्तु परमानन्दक अनुभूति हमरा माटिएक संगतिमे होइए। पहिने घंटाक घंटा कोदारि पारि लैत रही, से आब हाड़मे बोन-मैरोक कमीक चलते पार नहि लागैए। खेतिओ-बाड़ी आब बहुत हद तक समटाइए गेल अछि। तैँ एकर विकल्प आब हमरा लेल हमर घरक (विप्लव भवन) आगूक फुलबाड़ी अछि। एकरा चिक्कन-चुनमुन आ सुन्दर बनाए कए राखएमे हमर शारीरिक बर्जिशहु होइत अछि आ ओहि दौरान हम कोनो अव्यक्त, अदृश्य परमात्माक सानिध्यमे सेहो रहए छी। साहित्यक बेसीतर रा मैटेरियल हमर मनो-मस्तिष्कमे ओहि दौरान आबैत रहल अछि।

हमर फितरत विपक्षी अछि। भावनात्मक वा क्रियात्मक स्तरपर जेकरा संग दए छी, अपन पुर्ण क्षमताक संग दए छी। किन्तु जखनिए ओ सत्तात्मक रूप धारण करैत अछि, हमर मन रसे-रसे ओकरा प्रति वितृष्णा आ आक्रोशसँ भरए लागैत अछि आ ओकरासँ हमरा अरुचि हुअए लागैत अछि। सत्ता-प्रतिष्ठान यथास्थितिक पोषक होइत अछि, ओहिमे गत्यात्मकता नहि रहि जाइ छै। केतबो प्रगतिशील विद्रोह हुअए, सत्तामे आबितहि लकीरक फकीर भए जाइत अछि, नव प्रयोगसँ हड़कए लागैत अछि, अपन जीवन्तताकेँ समेटि काछु-चरित्र ओढि लएत अछि। तैँ सत्ता-

प्रतिष्ठानसभ हमरा कब्रिस्तान जकाँ लागैत अछि—मरल मुर्दासभक विश्रामस्थली। आ तेँ सदैव हमर समर्थन विपक्षकेँ भेटि जाइत अछि—भाव आ क्रिया दुनू रूपमे। हमर एहि फितरती नियमक एकमात्र अपवाद लालू–राबड़ी आन्दोलनहि टा रहल अछि।

राजसी, तामसी आ सात्विकमेसँ हम कोन वृतिक लोक छी, से हम आइ तक नहि तै कए सकलहुँ। समय–समय आ ठाम–कुठाम तीनू गुण जोर मारैत रहल अछि हमर जीवनमे। एकर अलग–अलग मात्राकेँ फरिआएब जहिना असंभव लागैत अछि तहिना एकर क्रमबद्धताक विवरण देब सेहो। एकटा विराट चण्डी–यज्ञक यजमान बनि अग्नि, आहुति, मंत्र पाठ आदि–आदिक पवित्र आध्यात्मिक वातावरणक साक्षी बनि अनेक दिन तक सौंसे दुनियां केँ बिसरि तपस्वी जकाँ रहल छी। अनेक सतसंग आ रामकथाक आयोजक बनि ओकर समर्पित श्रोताक रूपमे आनन्दविभोर भेल आकण्ठ डूबल रहल छी आ उच्चस्तरीय गायक–कथावाचक संग ओकर भजन–कीर्तनमे सहभागीए टा नहि बनल छी बरन स्वयं भजन गाबि हुनकासभक संग–संग अपनहु मित्रमण्डलीकेँ भौचक्क कए देने छी। धार्मिक ग्रंथ पढबाक सूर चढल त रामचरितमानस, रामायण, महाभारत, भागवत–पुराण, दैवी–पुराण आदिक संग–संग अनेक उप्लब्ध उपनिषद आ संहिताक हजारो हजार पन्ना चाटि गेल छी। एतबे किए, पवित्र बाइबिल आ कुरान सेहो हमर पढैक जनूनसँ नहि बचि सकल अछि। अवसर अएलापर अपन धार्मिक मित्रमण्डली आ परिवारीजनक बीचमे प्रवचन सेहो कैए चुकल छी आ मानसक सस्वर पाठ त कतेक बेर। किन्तु एकरा अपन जीवनक अनिवार्यतामे हम कहिओ सम्मिलित नहि कए सकलहुँ आ ई जीवनक एकटा पुरान अध्याय मात्र बनिकए रहि गेल अछि।

अल्पावधिएक लेल सही, एकटा अलग टाइपक मित्रमण्डलीक संग सुरा–पानक महफिलसभकेँ सेहो गुलजार कएने छी आ से खूब धमगज्जर रूपमे। बोलबम–यात्राक क्रममे भांगक सेवन आ गांजाक सोंटक स्वाद सेहो बुझल अछि। एकबेर एकटा गरीब मित्रक जन्मदिनपर देसी दारू पीबि हुल्लड़बाजी सेहो कएल अछि। युवावस्थामे होली आ बरातीक अवसरकेँ एहि काजक लेल नियामति मानैत रही आ एकर अनेक रास खिस्सासभ हमर स्मरणमे संचित अछि। ई अलग बात जे प्राय: पछिला 30–35 वर्षसँ एकदम हम विशुद्ध टी–टोटलर बनल छी आ पीबैक नामपर पानि, चाह आ यदा–कदा कोनो शरबत मात्र लएत रहल छी। सांख्यिकीमे जेबाक प्रयोजन एतय नहि अछि किन्तु यथेष्ट मात्रामे प्रेम आ भोगक सुखद–दुखद अनुभवसँ

मातवर सेहो भेल छी। स्वकीया-परकीयाक विवरणमे जएबाक प्रयोजन सेहो अखनि नहि अछि आ ने वांछित। खेतीक प्रति अपन प्रेमक चर्चा हम पुर्वहुमे कए चुकल छी। एहिमे जे श्रम अपेक्षित अछि से दान करब आनन्द दए ए। एहि क्रममे खुरपी, कोदारि,दबिया, कचिया आदि औजारक प्रयोग यथेष्ट आ निरन्तरतामे करए छी आ एहिमे आत्मिक-अध्यात्मिक सुख भेटए ए, किछु मित्र(?) द्वारा एकरा सोल्हकनक काज नामकरण कएलाक बादहु। एहि मामलामे भगवान परशुराम हमर इष्ट छथि जिनका लग शास्त्र आ शर दुनूक अद्‌भुत समन्वित वितान भेटैत अछि। शास्त्रक अर्थ वा व्याख्या जेना सभ करैत अछि तहिना हमहु एकर माने पुस्तक-पोथीएक रूपमे लए छी किन्तु शर वा शस्त्रक हमर अर्थ वा व्याख्या खेती-बागबानी आ लेखनक लेल उपादेय औजारसभ अछि।

पारम्परिक अर्थमे हम कतहुसँ धार्मिक नहि छी। पुर्वमे वर्णित हमर धार्मिक गतिविधिसभकेँ हमर जीवनक एकटा अस्थायी फेज कहल जाए सकैत अछि। पूजाक पांच प्रकार (अभिगमन, उपादान, योग, इन्या आ स्वाध्याय) मे हम मात्र स्वाध्यायकेँ स्वीकार कएने छी। संयमक चारि प्रकार (इन्द्रिय,समय,ध्यान आ विचार) मे सँ कोनो प्रकारसँ हम स्वयंकेँ नहि बान्हि सकल छी। कोनो प्रतिबंध जे हमर आत्माकेँ रुचैत नहि हुअए, हमरा स्वीकार्य नहि रहल अछि। एहि संयमकेँ हम अपन विवेकपर छोड़ने छी आ ओ अपन काज अवसर अएलापर खूब नीक जकाँ कएलक अछि। संसारक तीन गति (उत्पत्ति, स्थिति आ प्रलय) मे हम स्वयंकेँ मात्र स्थितिमे स्थित कएने-राखने छी आ बकिया दूटापर सोचब, चिन्तन करब हमरा फिजूल आ मुर्खतापूर्ण लागैत अछि। ई अवश्य ध्यान राखैक प्रयास कएल अछि, करए छी जे हमर अजुका कोनो कर्मसँ अगिला पीढी वा अगिला दिनपर कोनो नकारात्मक प्रभाव नहि पड़ए। भावी पीढीक चिन्ता कएने बिना सभकिछु भोगि ली वा भोगैक चक्करमे नाश कए दी, एहिसँ बढिकए आन कोनो पापकर्म हमरा नहि बुझाइत अछि।

हमर ई मानब अछि जे एकटा इकाइक रूपमे हमर जन्म, जन्मसँ प्राप्त काया आ एहि कायामे स्थित मन-प्राण, बुद्धि-विवेक, श्रमशक्ति आदि निरुद्देश्य नहि भए सकैत अछि। प्रकृतिमे कोनो काज अनावश्यक नहि छै, ने भेल छै। एहि मेदिनीपर हमर उपस्थितिक मूल उद्देश्य की अछि, तेकर अण्वेषण हमरा कोनो एक काजपर स्थिर नहि रहए, हुअए देलक अछि। जतय कतहु हमर आवश्यकता वा प्रयोजन जकाँ हमरा बुझाएल, ओतय-ओतय हम अपन योगदान लेल बढैत आएल छी आ ताहिमे सदैव हमर सहयात्री रहल अछि हमर विवेक जेकरा हम यत्नपुर्वक सदति

जगएने राखए छी। बहुतो लोककेँ हमर ई विविध गतिविधि हमर निरर्थक भटकाव जकाँ लागि सकैत अछि, लागलहु अछि किन्तु अपन गतिशीलताक ई विविधता हमरा पुर्ण अर्थवान आ औचित्यपुर्ण बुझाइत अछि। अपन निजता आ सार्थकताक मोलपर केतबहु बेशकीमती सफलता हमरा स्वीकार्य नहि रहल अछि। ला ब्रुयेरक मान्यता अछि जे संसारमे सफलता प्राप्त करबाक आ उन्नत हएबाक मात्र दूटा मार्ग अछि। एक त स्वयं अपन श्रम द्वारा आ दोसर दोसराक मुर्खतासँ लाभ उठाकए। अपन श्रम पर हमरा भरोस अछि, अपन प्रवृति आ बुद्धिक अनुकूल मार्गपर हम प्रशस्त छी आ अपन कर्मसँ संतुष्ट छी, स्वयंकें मानसिकतामे उन्नत पाबए छी। एहिसँ इतर सफलताक कोनो परिभाषा हम नहि जानए चाहए छी। ब्रुयेरक बताएल दोसर मार्ग धड़ब ने हमर आत्माकें कबूल अछि आ ने तेकर लुरि अछि।

संगठित आ परस्पर सहयोगी समाज हमर प्रिय कामना रहल अछि आ एहि कामनाकेँ मात्र वैचारिक स्तर तक सीमित नहि राखि एकरा लेल अपना बुत्ते जतेक पार लागि सकल, से कएलहुँ अछि। हमर विभिन्न सांगठनिक गतिविधिसभ हमर अपन एहि स्वप्न आ कामनाकेँ धरातलपर उतारैत रहबाक प्रयासक प्रतिफलन अछि। एहिमे कतेको बेर किछु गोटेक क्षुद्र-क्षणिक स्वार्थक कारण भेल क्षतिसँ हमर आशा-आकांक्षापर तुषारापात सेहो भेल अछि, ताहिसँ दुखी आ क्षुब्ध सेहो भेल छी किन्तु एहिसँ हमर गति कखनिओ-कखनिओ कने कम भने भेल हुअए, बाधित नहि भेल अछि। अपन एहि फितरतक चलते तेँ कतेक बेर अपना लेल 'जिदियाह' शब्दक प्रयोग सेहो सुनने छी आ सुनि-सुनि अनठिअएने छी। विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यमे अपन उपयोग करबाक लोभपर हम आइओ कोनो तरहेँ नियंत्रण नहि राखि सकल छी। आलस्य हमर एकटा अभिन्न अवगुण अछि आ एहिसभक समवेत कारणक चलते हम स्वयंसँ साहित्य-सृजन लेल जे अपेक्षा राखने रही तेकर बहुलांश अखनिओ लिखल जाएब बचलहि अछि। साहित्यकेँ अपन सर्वस्व देनिहारसभसँ तेँ डाह सेहो होइत अछि।

मैथिलीक एकटा प्रबल संभावनायुक्त कथाकारक ओलहन रहनि जे सम्पादक गौरीनाथ हुनकर कथाकेँ कपचिकए 'अंतिका' मे छापलनि। ई चर्चा गौरीनाथसँ कएलिअनि त एहि मादे वार्तालापक क्रममे गौरीनाथ कहलनि जे मैथिलीमे जे चारि अच्छर लिखि लेलक से अपनाकेँ वेदव्यास बुझए लागैत अछि। गौरीनाथक ई टिप्पणी ओहि कथाकारक मादे भनहि उचित नहि हुअए किन्तु हमर अपन अनुभव कहैत अछि जे गौरीनाथ अपन ठामपर वाजिब कहए छथि आ एकर प्रमाण सेहो हमरा

कएक बेर भेटि चुकल अछि। एक त जातीय श्रेष्ठताबोध आ ताहिपर साहित्यकार हएबाक गुमान—मैथिलीमे सक्रिय अधिकतर लेखककेँ हम एहि मनोविकारसँ पीड़ित-सीदित देखने छी। एहन अनेक खटमिट्ठी अनुभवबला खिस्सासभ हमरा लग अछि किन्तु तेकर चर्चा फेर कहिओ। एकर आलोकमे जखनि हम स्वयं केँ देखए छी त हमरा संतोषपुर्ण गौरव होइए जे ई व्यास-विकार हमरामे नहि अछि।

हम अपन सभसँ बड़का खासियत कि खूबी ई बुझए छी जे हमरा अपन औकाति बुझल अछि। 'औकाति' शब्दक प्रयोग हम एतय जानि-बुझिकए कएने छी। एहि शब्दक ध्वनि 'सीमा', 'हैसीयत', 'बिसात', 'बुत्ता', 'हद' आदिक तुलनामे हमरा बेसी संप्रेषणीय आ भावानुकूल बुझाइत अछि, भद्रताक दुराग्रह तक जाएबला लोकसभकेँ ई भने नहि अघरए। तें हम निष्कपटतासँ इ बात कहि सकए छी जे कविता हमरा अपनेटा लिखल नीकसँ बुझाइ ए। दोसर कविक कविता पढैत कतेक ठाम कतेको बात हमर माथपरसँ ससरि जाइ ए। (ओना एकर अपवाद सेहो अछि) तेँ अभिधा, व्यंजना, लक्षणा आदिक व्याकरण वा भामह, मम्मट, राजशेखर आदि आचार्यलोकनिक सैद्धान्तिकीक परवाहि हम कहिओ नहि कएल। एकरा हमर आत्मरक्षाक तर्क बुझल जाए सकैत अछि किन्तु तखनि जखनि हम अपन रचनाक श्रेष्ठता, महानता वा विलक्षणताक दाबी करी आ तेकर एवजमे स्वयंकेँ पुरस्कार-सम्मान-पारितोषिकादि लेल सर्वोत्तम प्रत्याशी मानी। हमरा लेखे ईसभ धनि सन! ई निर्लिप्तता कतहु ने कतहु हमरा सत्याग्रही आ दुस्साहसी बनएलक अछि। एकर प्रदर्शन हम साहित्यसँ इतर आनहु क्षेत्रसभमे अनेकानेक बेर कए चुकल छी आ तेकर परिणामस्वरूप अपना लेल 'अभिमानी', 'घमण्डी' आदिक अतिपवित्र सम्बोधनसभसँ धन्य भए चुकल छी। हमरा किन्तु एहि लेल कोनो पश्चाताप अखनि तक त नहि अछि। हम एकरा आत्मसम्मान आ अभिव्यक्ति-अधिकार-सम्पन्नता मानए छी आ एकरा अपन व्यक्तित्वक आभा आ सौन्दर्य मानि गौरवान्वित होइ छी आ तेँ दुनियांदारीक आकांक्षा वा दबावक गरजे स्वयंमे कोनो संशोधन-परिवर्तनक बेगरता नहि बुझए छी।

हमरा एहि बातक गुमान अछि जे हमर आँखि शुद्धरूपसँ आँखि अछि, मैथिल आँखि नहि। एहि पुर्वाग्रहमुक्त आँखिसँ हम दुनियाँकेँ, दुनियाँक कोनो वस्तुकेँ ठीक ओहि रूपमे देखए छी जाहि रूपमे ओ वास्तवमे छै। दक्षिणा, लाभ, पुरस्कारक सम्मोहिनी गागल्स चढल आँखि हमर आँखि नहि अछि आ तेँ हमरा सत्य आ

यथार्थकेँ साफ-साफ देखि सकएमे कहिओ कोनो दिक नहि लागल अछि। एहि आँखिसँ हम स्रृष्टिक असीम विस्तार देखए छी त आरि-धूर आ चौहद्दी सेहो खूब नीक जकाँ अकानल पार लागल अछि। कोनो व्यक्तिक प्रति प्रेम, स्नेह वा आन मानवोचित वा संबंधगत कमजोरीक चलते भनहि ओकरा अनेरो उघार वा देखार-चिन्हार नहि करैत होइ किन्तु केओ केतबो बहुरूप धरिकए, विविध मुखओटा लगाकए आबओ, देर-सवेर ओकर वस्तुगत मूल्यांकनमे हमरा कहिओ कोनो भांगठ नहि भेल। एकरा हम कोनो अदृश्य शक्तिक वरदान बुझए छी जे जीवनानुभवक क्रममे यदा-कदा शाप सेहो साबित भेल अछि। किन्तु ताहि लेल की ? हम जे छी से छी। हमरामे जे ए से ए।

या अल्लाह! हमरा महसूद बनाबह, हासिद नहि बनाबह!!!

[''ई केना संभव अछि जे केओ अपन रस्ता चुनए, आ ओहिपर असगरहु नहि हुअए ? राजमार्गपर चलनिहारसभ रस्ता नहि चुनैछ; रस्ता ओकरा चुनैत अछि।''—अज्ञेय]

संक्षिप्त जीवन-वृत

अरविन्द ठाकुर

पारिवारिक

पिता	:	स्व. बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'
माता	:	स्व. गायत्री देवी ठाकुर
जन्म	:	14 फरवरी, 1957, सुपौल
शिक्षा	:	विधि-स्नातक
पत्नी	:	श्रीमती वीणा ठाकुर
संतान	:	तीन पुत्र—अभिनय, किसलय, अनुनय
स्थायी पता	:	'विप्लव भवन', वार्ड नं. 7, सुपौल नगर परिषद, सुपौल-852131 (कौशिकी जनपद), बिहार

साहित्यिक

प्रकाशित पुस्तक	:	'परती टूटि रहल अछि' (कविता) - 1993
		'अन्हारक विरोधमे' (कथा) - 2007
		'बहुरुपिया प्रदेशमे' (गजल) - 2011
		'सबद मितारथ घाय्या' (कविता) - 2016
अनूदित पुस्तक	:	'परती टूट रही है' - 2011 - अनु. अजित आजाद
सहयोगी संग्रह	:	'श्वेत-पत्र' - कथा - 1993
(मैथिली)		'सृजन केर दीप-पर्व' - कथा - 1993

		'एक्कैसम शताब्दीक घोषणापत्र' - कथा - 2001 'कथा-पारस' - कथा - 2011 मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक उत्कर्षमे संत कवि लोकनिक अवदान - आलेख - 2016
सहयोगी संग्रह (बांग्ला)	:	'अनुकृति' - साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित - 1999 मैथिली कविता - सम्पादक-अनुवाद : कालीपद कोनार - 1998
सहयोगी संग्रह (हिन्दी)	:	'स्त्री होकर सवाल करती है' - कविता - 2012 'कोसी के किसान' - आलेख - 2019
सम्पादक	:	'मिथिला आवाज' - मैथिलीक पहिल रंगीन दैनिक समाचार-पत्र - जुलाइ 2012 - अप्रैल 2013
सम्पादन-सहयोग (मैथिली)	:	'संकल्प' (मैथिलीक अनियतकालीन पत्रिका) - 1993 'सृजन केर दीप-पर्व' (कथा-संग्रह) - 1993
सम्पादन सहयोग (हिन्दी)	:	'प्रॉब्लेम्स' - लघु समाचार-पत्र - 1970-72 'अकेला' - लघु समाचार-पत्र - 1979-80 'सुपौल टाइम्स' - लघु समाचार-पत्र - 1980 'स्मारिका-सुपौल जिला स्थापना दिवस' - 2010
स्तम्भ लेखन	:	'लोक प्रसंग', हिंदी मासिक पत्रिका मे 'ठाकुर का ठाँव' शीर्षक सँ लगातार तीन वर्ष तक - 2010-2012
अन्य प्रकाशन	:	(1) 'मिथिला मिहिर', 'कर्णामृत', 'वैदेही', 'समय-संदर्भ', 'संकल्प', 'आरंभ', 'मंडन-भारती', 'प्रवासी', 'घर-बाहर', 'देसकोस', 'अर्पण', 'मिथिलांगन', 'मैथिली अकादमी पत्रिका', 'अंतिका', 'विदेह', 'मिथिला चेतना', 'नवभारत टाइम्स', 'मिथिला दर्शन', 'नवचेतना', 'मिथिला दर्पण', 'जखन-तखन', 'समय-साल', 'मिथिला सृजन', 'पक्षधर', 'पूर्वोत्तर मैथिल', 'अनुप्रास', 'नवारम्भ' आदि पत्र-पत्रिका मे मूल मैथिली रचना प्रकाशित।

(2) 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'इन्द्रप्रस्थ भारती', 'विपक्ष', 'भाषा-भारती', 'समकालीन परिभाषा', 'उत्तराधिकार', 'कथ्यरूप', 'साहित्य भारती', 'गोदारण' आदि पत्रिका मे मैथिली रचनाक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित।
(3) 'आर्ट एण्ड पोयट्री' नामक पत्रिका मे मैथिली रचनाक अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित।
(4) 'लोकमत समाचार' मे हिंदी रचनाक मराठी अनुवाद प्रकाशित।
(5) 'अज्ज दी आवाज' मे मैथिली रचनाक पंजाबी अनुवाद प्रकाशित।
(6) 'कथानक', 'सरोकार', 'कला', 'मुहिम', 'सारस', 'अक्षत', 'आत्मकथा', 'हिन्दुस्तान दैनिक', 'औषधि जगत', 'संवेद', 'अकेला', 'संवाद', 'प्रॉब्लेम्स', 'सिलसिला', 'बया', 'वर्तमान साहित्य', 'संवदिया', 'प्रगतिशील वसुधा', 'जन-तरंग', 'उद्भावना' आदि मे हिन्दी रचना प्रकाशित।

विशेष भागीदारी : (1) साहित्य अकादेमी द्वारा पटना मे आयोजित 'अनुवाद कार्यशाला'क अठारह अनुवादक साहित्यकारमे एक। अंग्रेजी टेक्स्ट सँ मूल मराठी कथाक 'भीजल इजोत' शीर्षक सँ मैथिली मे अनुवाद। 12-18 नवम्बर, 1995
(2) साहित्य अकादेमी द्वारा भारतीय परम्परा अध्ययन केन्द्र, राँटी, मधुबनी मे आयोजित 'अखिल भारतीय कवि सम्मेलन' मे भागीदारी आ काव्य-पाठ- 2-4 दिसम्बर, 1995
(3) साहित्य अकादेमी द्वारा चेतना समितिक सहयोग सँ पटना मे आयोजित 'हरिमोहन झा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' मे सत्र-संचालन 18-19 मार्च, 2008
(4) साहित्य अकादमी द्वारा सहरसा मे आयोजित

'मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक उत्कर्ष मे संत कवि लोकनिक अवदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी मे आलेख पाठ—10-11 जून, 2011

(5) मैथिली लेखक संघ द्वारा पटना मे आयोजित 'सुप्रसिद्ध मैथिली कथाकार-उपन्यासकार ललितक लेखन दृष्टि' विषयक संगोष्ठी मे संभाषण—12 जुलाई, 2013

(6) मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली द्वारा स्वतंत्रता दिवसक उपलक्ष्य मे आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन मे काव्य पाठ—10 अगस्त, 2013

(7) साहित्य अकादेमी द्वारा परसरमा, सुपौल मे आयोजित 'संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं पर केन्द्रित परिसंवाद' कार्यक्रम मे आलेख पाठ—7 सितंबर, 2014

(8) कौशिकी क्षेत्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मधेपुरा द्वारा आयोजित 'समकालीन प्रेम कविताएँ एवं पावस काव्य गोष्ठी' मे एकल काव्य-पाठ क्रम मे 30 सँ अधिक प्रेम-कविताक पाठ—31 जुलाई, 2016

(9) किरण जीक जयन्ती समारोह मे मुख्य अतिथिक रूप मे संभाषण एवं कवि-गोष्ठी मे काव्य-पाठ—1 दिसंबर, 2016 धर्मपुर

(10) स्वामी सहजानन्द सरस्वती विचार मंच, मधुबनी द्वारा लक्ष्मीपुर कनुआही, पंडौल मे आयोजित 'रामचरित्र पाण्डे अणु स्मरण समारोह' मे मुख्य अतिथिक रूप मे 'अणुजी एवं मैथिली साहित्यक पुरोहितवाद' विषय पर संभाषण। 7 मई, 2017

(11) साहित्य अकादेमी द्वारा राँची मे आयोजित मैथिली कवि सम्मेलन मे काव्य-पाठ—10 सितम्बर, 2017

भ्रमण विशेष : साहित्य अकादेमी द्वारा 'ट्रेवल ग्राण्ट टू ऑथर' योजनान्तर्गत महाराष्ट्र-भ्रमण - 1995

अन्य विशेष : मैथिलीक त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय'के चारि आयोजनक श्रेय। एकर 61म (2007), 68म (2009), 72म (2010) के आयोजन सुपौल मे आ 78म (2012) के आयोजन दरभंगामे। एकर अनेक आयोजनक अध्यक्षता आ विभिन्न गोष्ठी मे जीवकान्त, जगदीश मंडल, गजेन्द्र ठाकुर सँ लए कए योगेन्द्र पाठक वियोगी आदिक पुस्तकक लोकार्पणकर्ता होएबाक सौभाग्य।

साहित्यिक संगठन : (1) 'जागृत युवा संस्थान' नामक संस्थाक स्थापनाक संग-संग पुस्तकालयक स्थापना-1972

(2) प्रगतिशील लेखक संघ, जिला शाखा-सुपौलक संस्थापक अध्यक्ष। 2006 सँ 2015 तक एहि पद पर।

(3) प्रगतिशील लेखक संघ, बिहार इकाईक प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य-2006 सँ 2012 तक।

(4) प्रगतिशील लेखक संघ, बिहारक प्रदेश उपाध्यक्ष-दू टर्म। 2012 सँ 2018 तक।

(5) मैथिली लेखक संघक स्थापना मे सहयोग आ एकर आजीवन सदस्य-2006

(6) चेतना समिति, पटनाक सपत्नीक आजीवन सदस्य-2006

(7) विप्लव फाउंडेशन, सुपौलक संस्थापक चेयरमैन-2007

(8) राष्ट्रीय कवि संगमक मार्गदर्शक

पुरस्कार/सम्मान : (1) चेतना समिति, पटना द्वारा 'परती टूटि रहल अछि' काव्य-संग्रह पर 'डॉ. माहेश्वरी सिंह महेश ग्रंथ पुरस्कार'। 6 नंवबर, 1995

(2) साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'सुरभि', मधेपुरा द्वारा पंजाबीक सुप्रसिद्ध कवि मनमोहन एवं प्रसिद्ध गीतकार गोपीबल्लभ सहाय के हाथेँ साहित्य सेवा हेतु 'सुरभि-श्री' सँ सम्मानित-21 जनवरी, 1995

(3) प्रगतिशील लेखक संघ, मधेपुरा द्वारा 'कामेश्वर पोद्दार स्मृति सम्मान-2005' सँ सम्मानित-4 फरवरी, 2007

(4) भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा 'अन्हारक विरोधमे' कथा-संग्रह पर भारतक शीर्ष कवि केदारनाथ सिंहक हाथेँ 'कांचीनाथ झा किरण शिखर साहित्य सम्मान' 22 मार्च, 2009

(5) अखिल भारतीय शांति-मैत्री संघ, अररिया द्वारा भरगामा, अररिया मे आयोजित कार्यक्रम मे प्रसिद्ध चिंतक डॉ. ब्रजकुमार पाण्डेयक हाथेँ 'शांति-मैत्री सम्मान'-13 दिसंबर, 2010

(6) साहित्य साधना स्थली, मधुबनी द्वारा 'साहित्य-साधना सम्मान' 15 सितंबर, 2014

(7) तरुणोदय सांस्कृतिक विकास परिषद, खगहा, मीरगंज, पूर्णिया द्वारा सुप्रसिद्ध गीतकार प्रेमचन्द्र पाण्डेयक हाथेँ 'साहित्य-गौरव'क मानद उपाधि सँ सम्मानित—21 सितंबर, 2014

(8) भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा 'बहुरूपिया प्रदेशमे' गजल-संग्रह पर 'पं. काशीकान्त मिश्र मधुप राष्ट्रीय शिखर सम्मान' - 21 जून, 2016

(9) भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा 'सबद मितारथ धाय्या' कविता-संग्रह पर 'कवीश्वर चन्दा झा राष्ट्रीय शिखर सम्मान' - 21 जून, 2017

(10) राष्ट्रीय कवि संगम द्वारा बेगूसराय मे आयोजित समारोह मे संगठनक राष्ट्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारी सभक उपस्थिति मे समग्र साहित्यिक योगदान लेल 'दिनकर सम्मान' - 23 सितंबर, 2019

सामाजिक/सांस्कृतिक :

1970 : 'न्यू ब्लड ड्रामेटिक सोसायटी' नामक संस्थाक स्थापना। एकर संस्थापक-सचिवक रूप मे नाटक आ अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन कए सामाजिक क्षेत्र मे पदार्पण। टिकटक माध्यम सँ सशुल्क नाट्य-प्रदर्शनक अभिनव आ सफल प्रयोग।

1972 : 'जागृति युवा संस्थान'क स्थापना। संस्थापक सचिवक हैसियत सँ समाज सेवाक क्षेत्र मे सक्रिय। सफाइ अभियान आ निम्नवर्ग केँ साक्षर बनाबए पर जोर। एकर पुस्तकालय मे प्राय: तीन सय पोथीक संग्रह।

1975 : कांग्रेस पार्टीक क्रियाशील सदस्य।

1977 : सुपौल प्रखण्ड युवक कांग्रेसक अध्यक्ष।

1985 : —बिहार युवा कल्याण परिषद्, जिला शाखा-सहरसाक अध्यक्ष।

—स्वर्गीय पिताक स्मृति मे 'बलेन्द्र नारायण ठाकुर मेमोरियल लॉ कॉलेज, सुपौल'क स्थापना एवं एकर संस्थापक सचिवक रूप मे कार्यरत।

1987 : सुपौलक महत्त्वपूर्ण संस्था 'राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति'क मंत्री पद पर निर्वाचित। एहि पद पर रहैत अनेक परिवर्तनकारी कार्यक संग-संग जवाहर नवोदय विद्यालय, सुपौलक स्थापना मे केन्द्रीय भूमिका।

1988 : सुपौल अनुमण्डलीय केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएशनक स्थापना आ एकर संस्थापक सचिवक रूप मे कार्यरत।

1989 : —सुपौल नगर कांग्रेस कमिटिक अध्यक्ष।

—सहरसा जिला कांग्रेस कमिटिक कार्यकारिणी सदस्य

—सुपौल प्रखण्ड कांग्रेस शिकायत सेल के संयोजक

—'सुपौल जिला बनाओ' अभियान मे केन्द्रीय भागीदारी आ 1990 मे जिला बनय तक निरन्तर सक्रिय।

1990 : —सुपौल जिला केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएशन के स्थापना। एकर संस्थापक सचिव पद पर 1994 मे अध्यक्ष होइ तक कार्यरत।

—कांग्रेस आ दलगल राजनीति सँ विमुख।

1991 : नगरपालिका बन्दोबस्तदार सह करदाता समितिक महासचिव। एहि पद पर रहि नगरपालिका कर संबंधी मनमानीक विरुद्ध जबरदस्त आन्दोलनक नेतृत्व।

1993 : —बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएनक संयुक्त सचिव निर्वाचित।

—अखिल भारतीय ब्रह्मर्षि महासंघ के सुपौल जिला अध्यक्ष मनोनीत।

1994 : —राइफल क्लब, सुपौलक संस्थापक सह आजीवन सदस्य।

—सुपौल चैम्बर ऑफ कॉमर्सक स्थापना। एकर अध्यक्ष पद पर अद्यावधि कार्यरत।

—सुपौल जिला केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएशनक अध्यक्ष निर्वाचित। एहि पद पर 2006 तक लगातार पाँच टर्म निर्वाचित।

1995 : —बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएशनक संगठन सचिव मनोनीत।

—बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स, पटनाक छः सदस्यीय एक्शन कमिटी मे सम्मिलित।

1997 : बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएशनक संयुक्त सचिव निर्वाचित।

1999 : —बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएशनक संगठन सचिव मनोनीत।

—सहस्त्र चण्डी यज्ञ (18-26 जनवरी) के यजमान।

2000 : हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र मे साक्षात्कारक माध्यम सँ संवाददाता नियुक्त।

2001 : बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएनक संगठन सचिव मनोनीत।

2003 : इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, सुपौलक मानद सचिव मनोनीत। एहि पद पर मनोनयन उपरांत एखन तक समाहरणालयक एकटा फाइल-मात्र रहल सोसाइटी केँ उपस्कर-उपादान सँ सुसज्जित स्वतंत्र कार्यालयक व्यवस्था, बाढ़ि राहत कार्य, एक्स-रे प्लांट सँ न्यूनतम शुल्क पर एक्स-रे सुविधा, अल्ताफ रजा नाइटक सांस्कृतिक आयोजन कए सोसाइटी केँ आर्थिक रूप सँ सशक्त करब आदि अनेक उल्लेखनीय कार्य। 2009 मे स्वेच्छा सँ पदत्याग।

2004 : बिना कोनो दलगल जुड़ाव के, व्यक्तिगत प्रयोगक रूप मे लोजपा प्रत्याशी रंजीता रंजनक लोकसभा चुनाव मे निर्वाचन अभिकर्ता/प्रभारीक जिम्मेदारी स्वीकार कए चुनाव प्रबंधन। रंजीता रंजनक चुनाव मे विजयी भेला उपरांत पुन: राजनीतिक गतिविधि सँ अलग।

2007 : —नवबिहार दैनिक समाचार पत्रक सुपौल जिला ब्यूरो प्रमुख।

—अखिल भारतीय शांति-एकजुटता संगठन (एप्सो), बिहार राज्य परिषदक सदस्य।

2008 : —अखिल भारतीय जातिविहीन समाज निर्माण समिति के संरक्षक सदस्य एवं सुपौल जिला इकाइक संयोजक।

—सुपौल चैम्बर ऑफ कॉमर्सक अध्यक्षक हैसियत सँ प्रमंडलीय वैट सलाहकार समिति, पुर्णियाक सदस्त मनोनीत।

2009 : रेड क्रॉस सेवा लेल बिहारक तत्कालीन राज्यपाल द्वारा राजभवन, पटना मे आयोजित भव्य समारोह मे 'रजत पदक' (व्यक्तिगत पुरस्कार) सँ सम्मानित।

2010 : मैथिली टीवी सीरियल (अप्रसारित) 'चौबटिया' मे मंत्री गिरिधारी लालक भूमिका।

2013 : —नवी मुम्बई के पनवेल महोत्सव मे विशिष्ट अतिथिक रूप मे 'बिहार-महाराष्ट्र की सांस्कृतिक समानता' विषय पर संभाषण।

—नवी मुम्बई के खारघर मे आयोजित डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयन्तीक अवसर पर उद्‌घाटनकर्ता सह मुख्य अतिथिक रूप मे उपस्थिति आ संभाषण।

2017 : कलाग्राम, जितवारपुर, मधुबनी मे 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मरण समारोह' मे विशिष्ट वक्ताक रूप मे संभाषण।

2019 : करुणा, बासोपट्टी (मधुबनी) मे स्वामी सहजानन्द सरस्वती विचार मंच, मधुबनी द्वारा आयोजित 'श्रीकृष्ण सिंह जयन्ती समारोह' मे मुख्य अतिथिक रूप मे संभाषण।

सम्मान :

2009 : रेड क्रॉस सेवा रजत पदक

2013 : देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद सम्मान

2013 : डॉ. श्रीकृष्ण सिंह शिखर सम्मान





शशि प्रकाशन

स्वतंत्रचेता

अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व



संपादक

आशीष अनचिन्हार

स्वतंत्रचेता अरविन्द ठाकुर : व्यक्तित्व-कृतित्व

संपादक
आशीष अनचिन्हार

शशि प्रकाशन

अरविन्द ठाकुर अपन भौतिक व्यक्तित्व मे जतेक दिव्य छथि, ततबे दिव्य अछि हुनक भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभा। जेहने दिव्यता कविता, कथा, गजल मे, तेहने स्तंभ लेखन आ सम्पादकीय अग्रलेख मे। इएह दिव्यता हुनक सामाजिक सरोकार मे सेहो सदैव उपस्थित। विविध विधा मे हुनक लेखन पाठक कें चमत्कृत करैत अछि आ ई निर्णय करब कठिन भऽ जाइत अछि जे हुनक दिव्यताक श्रेष्ठतम कोन विधा मे छै। विविधता सँ भरल हुनक जीवन-कर्म हुनक रचना-संसार कें एहन अभिनव भाव-भूमि प्रदान कएलक अछि, जे मैथिलीक लेल अखन धरि अज्ञात आ अबूझ रहल अछि।

अरविन्द ठाकुर व्यवस्थाक प्रति चिर-असंतोषी आ शाश्वत विद्रोही मानसिकताबला एक्टिविस्ट रचनाकार छथि। एकरा अहि तरहें सेहो कहल जा सकैत अछि जे व्यवस्थाक विरोध आ सुन्दरम् केर खोज लेल संघर्षरत हुनक व्यक्तित्वक एकटा महत्त्वपूर्ण हथियार साहित्य सेहो अछि। हुनक जीवन-वृत (द्रष्टव्य – 'अन्हारक विरोध मे' संग्रहक अंत मे उद्धृत) मे वर्तमानक प्रति तीव्र असन्तोष, अकुलाहटि, छटपटाहटि आ बेहतर भविष्यक लेल एकटा अनुसंधानात्मक विश्लेषणात्मक आ क्रियात्मक गतिशीलताक उपस्थिति साफ-साफ देखाइत अछि। राजनीतिक, साहित्यिक, सांगठनिक आ अन्य कोनो सामाजिक-जीवनक गतिविधि मे हिनकर संलिप्तता आ निर्लिप्तता दुनू विशेष गौर करऽ जोगर अछि। सत-रज-तम तीनू गुणक जेहन अद्भुत समन्वय हिनकर अपन जीवन मे छनि, से प्राय: ओहने समन्वयक संग हिनकर रचनासभ मे सेहो देखल जा सकैत अछि–जीवन आ रचना मे कोनोटा विरोधाभास नहि। जीवनक जाहि क्षेत्रसभ कें हुनकर सक्रियताक सानिध्य भेटल अछि ओतय अरविन्द ठाकुरक रचनाधर्मिता प्रचुर दिप्तीक संग प्रकट भेल अछि। ओ विश्वकर्माक तल्लीनता आ कर्तव्यबोध सँ एक-एक वस्तु कें यत्नपूर्वक रचै छथि, मुग्ध होइ छथि, रचैत जाइ छथि, मुग्ध होइत जाइ छथि।

वैचारिक धरातल पर अरविन्द ठाकुर सुच्चा प्रगतिशील आ परम स्वतंत्रचेता छथि। ओ अपन विशाल अध्ययन सँ छानि-छानि कऽ ओतबे वस्तु लए छथि, जे हुनका जनहिताय आ परिवर्तनकामी लगए छनि। हुनक उद्देश्य अपन प्रशंसक बनाएब, ओकरा विमुग्ध कऽ ओकरा सँ थपड़ी आ जयकारा लेब नहि छनि। ओ जन-समाजक रुचि परिष्कृत करऽ लेल कोनो भौतिक वा

शेष अगिला फ्लैप पर...

साहित्यिक रचना करऽ मे विश्वास रखए छथि आ ताहि लेल ओ दोसर पक्ष केँ कुपित करबाक हद धरि जा सकै छथि। हुनक निर्भीक स्पष्टवादिताक साक्षी हुनक प्रत्येक कार्य-परिसर रहल अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे ई कहल जा सकैत अछि जे अरविन्द ठाकुर अपन सम्पूर्णता मे कोनो कविक पद्य जकाँ लालित्यपूर्ण नहि, कोनो गद्यकारक गद्य जकाँ यथार्थवादिताक प्रतिरूप छथि।

अरविन्द ठाकुर लेखन-कर्म केँ सऽख वा प्रसिद्धि लेल नहि, परिवर्तनकामी अभियान मानिकऽ अपनैने छथि। अपन लेखनक माध्यम सँ ओ लोकप्रियता नहि, सार्थकताक पैरोकारी करै छथि। 'मिथिला आवाज'क प्रत्येक सम्पादकीय अग्रलेख एहि बातक प्रमाण अछि। सदैव किछु नव, किछु विशेष करबा लेल आतुर अरविन्द ठाकुर लीक वा डिडिर पीटैक सख्त विरोधी छथि, भनहि ओ स्वयं हुनकर अपनहि बनाएल वा खींचल किऐ ने होअए। तेँ एकटा रचनाकारक रूप मे ओ मैथिली साहित्य मे अनन्य (Exclusive) छथि–प्रतिद्वंद्वीविहीन। हुनक प्रतिद्वंद्विता वा स्पर्द्धा आन केकरो सँ नहि, स्वयं अपनहि सँ छनि। हुनक तुलना आन केकरो सँ नहि, स्वयं हुनके सँ भऽ सकै छनि।

सम्पादकक रूप मे प्रबन्धनक समक्ष हुनक चट्टानी दृढ़ताक साक्षी भऽ हम गौरवान्वित भेल छी, हुनक मानवीय उच्चताक स्नेह-छायाक सौभाग्य पाबि भाव- विभोर भेल छी, त कलुषता सँ दहाबोर भेल एहि विकराल-काल मे हुनक निष्कलुषता आ प्रेमिल-भावक अक्षुण्णता देखि चकित-विस्मित सेहो भेल छी। एहन अपन ज्येष्ठ 'अरविन्द सर' लेल अनन्त शुभकामना।

–कुमार शैलेन्द्र
14 फरवरी, 2013

आशीष अनचिन्हार



मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) 'अनचिन्हार आखर' http://anchinharakharkolkata.blogspot.com केर संस्थापक ओ संपादक। विशेष परिचय जनबाक लेल विकीपीडिया केर लिंकपर जा सकैत छी- https://mai.wikipedia.org/s/zi

ई-मेल : ashish.anchinhar@gmail.com

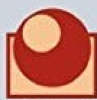


शशि प्रकाशन
गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ,
वाया-बलुआ बाजार,
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)

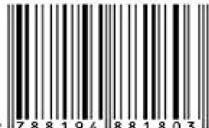
मूल्य : ₹ 400/-

ISBN 978-81-948818-0-3





मूल्य : ₹ 400/-



शशि प्रकाशन
गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ,
वाया-बलुआ बाजार,
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)